"वर्षे अर्ने शाप्ति।" रविषे रविषे वर्षे भप्ति, अन्य अस आश्रुन।"



स्था किन स्मनाध (DMC 2-69)

and the west of the second

वीमक्षीनहार हा है। भाषा इस क

मस्त्रामिए।

असीय यहम्य

ا إن الله مؤسونات



क निकाल।

हरणा दशाम जिल्लांगाथ वान्सांभागाय कर्त

मुणित स अकाशिकः

1 5 2 45

मुला: क्षिमीक्ष म्हमक अर्थक

সূচিপত্র।

বিষয়		*	18
অসহার শাস	физ	v • •	34
অভিজ্ঞান শকুন্তগ	9 4 B	,	59
जानेसम्बर्ध	>	,85,500	,584,
		2519	283
wigis Versus f	वेगार्	J	२२ ४
করনা	* *	• • •	ÞŒ
कंग्रनाकार्यं वर	ानवर्ग		200
कृषिण्य	* 4 %	r Ar er v	₹8∘
न्कन कथा गडा		16 B 4	' ५३
व्यग्रं व वर्गाप्तः	वन	• •••	>8
भागारमा	• • >	300,39	¢,265
ফুলের ভাষা	* * #	333	, zer
यटण शिवन	» • #	4 * •	40
বহুপতিছ	• • •	***	529
बक्रस्थान भदारी	ানভা	V	3 % 0
नामाणित्र छे९भि	•	1 • •	>>,68

বিষয়			51
वाकालांत्र कटलव	कांभक	,* • •	18*
বাঙ্গালা ভাষা	* * *	/ * • • •	296
यानी कित्र सम		* = 4	२,५१
জ্মিষ্ঠ শিশুর প্রা	ত	4.4	> 7 ×
महाश्रा त्राका त्रा	परमाष्ट्रन	सास	۹ ۲۰
मां धवील जा		4 + 6	2 \$
८मचनामवसका वाः	मयरक व	व्यक्ति कथा	24.
युक्तिमिक मत्स्र	TH	7 F B	3 * 13
रगार गम	• • •	•	\$ <u>2</u>
(याभवन	ele de co	* * *	> 1- 1
মতুরহ্সা	4	588,	Se of
दमगडी कावा	• • •		** *** **
র স্	* * *	«	3 4 5
मार्यक मन्त्राक	a vich	3 (Shire	** <i>!</i>
সাইন করা 🗸	4 11 14	10 p. 10.	7 章 蝶
अञाद कि अध	माहे १	4 # #	¥ 17, 24



757747

৮৫ मर्या।

जानम गर्छ।

होग कामन, -- এए जन घराकाय, मलहीम लिक इरेगा व्यागमन्ग इरेग। (मरे ष्यानमध्य खोकारक कात-भगद कान्यतन, " थानकानिएत," मछानम ठेाकुद विश्विष्ठ विनिया मशाक्षिक क्षिएक-८६म। काट्य यिम्सा खीवानमा ध्यमन मंग्रस ज्यानम ग्रह्स मिश्हरक भरम लहेश जामिया डिमिडिड इहेल। उन्न-छात्री विनाविकावास्त्र मक्ताहिक कतिएड माशिस्मन, त्कर त्कान, कथा कहिएक मार्ग कविन ना। भवि मधास्कि मंगार्थन स्ट्रिल, खबानन, बीवानन छेल्डा छ। शादक व्यागाम कतिर्वाम अवर भमन्ति अञ्च श्रक विभीषणात्व जैनद्यामा कतित्वन। त्यापम पाठि विश्व ७,व्यक्ति छक्त व्याकार्थ।

अकामना अतिराह्म । वाहिरत नहेता रायाना कि करणान-वाजि व्यक्तां रहेशारह। ८मरे जनः कथन रहेल, खाए। जामस बानिना। ভাষার পর উজমে মনিয়ে প্রভাবতান कविटल, अक्काबी मकक्रण महामायम्दन गट्डाटक , यलिएनम, '' यांचा दकामांब ছঃথে আমি বাভান্ত কভির হইয়াছি, **८करण ८गरे मीनरक्त क्रशाम ८**णामात जी कनारिक कान बाजिएक आधि बन्धा कदिएं भावियाहिलांग।" । धरे बल्या उमहारी कलाानीत मकागुलांक वर्निक कतित्यन। जात भन यनित्सम् (स् "हम 'ভাষারা বেখানে আছে ভোমাকে সে-थारम महेत्रा याहे।"

वरे बिन्ना जनगरी करन करन गटहळ भण्डांद भण्डांद टलवांचात्र-चान्डाळटळ व्याद्यम क्षिर्णम । खाद्यम क्षिया मर्द्यस क्षन मजानम क्यानमध्य देशिक कतिया । जरे नवाकत्वातिक खाख:कादम, यथन

निकिष्ट कामन स्र्गार्गारक शिवक- विकास मा शिष्टियद खिलिट्क (क क्यम क मिर्स विभाग मकाम ।" कणाम श्राम कामकाता यहत्वम् किञ्च महस्सा दक मिन कि बार्ष गरकम अथरम जारा (मिंगरक अभा ममदक किन्द्र। बस-बर्म माडेश मा-- तिशिष्ड (मिशिष्ड) एमिशिष्ड भाउत्। धासमे १ %, भिरित्र हम। (मिथिएक उन्देश (मिथिएक भाहेल, जक व्यका ७ हरू क गृहि, माद्यहळा ग्रामान प्र शाही. (कोखन्ताहिन-म्हाता, मध्राल श्रम्भनित्रकः ध्वीमनिशात जानिक। मधुरेक छे छ अना १ १ होते । शामा १ विश्व मध मृधि कविक्शाविकवद हि जिंक स्टेमा ममुत्रा रहिहार्छ। नारम नामी कानु नागिकक्षन। भक्तकमानामिखिएः सर जखात्र नाम मे। ए। हेशा व्याटकन । मिन्द्र गवश्री धुक्क, बानायब, भृष्टियान साग उं। जिनी था जिल्लाबरविष्ठि रहेशा भाषा रैया चार्छन। नर्काश्रह, विक्न याचाद खें भरत छेळ भरूच नहरातक में जिल्ला बामरना-शिविष्टे। धक त्यांत्रभी मुहे--लाकी मत अश्रीत याधिक सुन्तवी, मनी अवप्रकीत श्राधिक देवियाविद्या । शक्ति, कित्रत, तस्त, गफ, रक डीसारक शका रुबिट्यरहा अभगती काण मधीत, कांग जीन चरत गर्दन्यक किछामा कतिर्दान, "मक्न त्मिरिक भारेरिक्छ।" मरहस यमिन, "शाहेदलि ।"

तका डेंगदा कि चाएए (मिन ग्रांह् ।

यदर। (मिश्रमाहि, दक डिनि ?

ব্ৰহা सा १

भारत्य भारक १

ख्या लक्षा के का बसारक के का बाद गहेशा (शत्नन । । "अवादस महस्य एकिन ट्यांन विक अभक्ष कालाक्ष्मण्यक्षा मुक्री कत्रपक्षिण। साम्या भी भूति । महस्त्र भिकाशा करिएण के "केश्रेम एक ?"

A 1 711-4, 1/1/2 1-2, 27

म । दस्या ।

उ। ऐस्त प्रमानी अङ्ख चनामक मकन स्थान क क्रिया किया, गन चालिक को एक विकास है। सम्बन्धिक १ भावती सम्बन्धि कित्वम । हेर्द्ध गण्य वर्षाना मकत-अभवाभाविनो । ", " भागाम कत्।" भावज्ञित्य क्षेत्र क्षेत्र क भर, उसाउ।ती QLEICA WA MWW. WYA CHAISAI विशिष्ट्रमान ''व्यक्त र विश्व अवर बार्श करा । भारताम । भारताम अवस्था AID ALE PLANTED AND THE BILL जनवात टारका, ३ १ कारण विवास भागाना CALCALL MATERIAL CAS. MINI-त्यादक जन कर्ने क्षेत्र कर्ने कार्

अभागांती गुर्भाष्ट्र

লেখা।

लियामधी । छजनस्त्रां धरे जना नधिका। क्रमासमासिनी। जासमात्र सिव आश-नाव अम्ख्या तिनिर्ध्यक्त- रात्र मा !

अञ्चलको न उत्क भन्न मह भारा शिएटच लाजिन। गरश्च दिखामा क्रियम-"हाटक ८महर्क अर्जन ८कन १"

अभा कायश म्हानः ध्रमा गाउ क है भिषा हिंदे भाग -- नम यदम भाज तर ।

धवरम योजवः" वनिया भरत्य कानी-्य आयाभ करिया। एसम उत्तराधी श्वाराजन, " है शहस आहम।" अहे क्षिका विभिन्न विभीत स्थल प्यारतास्य कर्वाक लाजिएसम् । मध्या केस्पिन्दर्भव हा अ इंडिन्यू मित इभितालि अञ्चितिन उद्देश । ठालिभिक व्हेट्ड मधुराकर्श्व भाक्षक्षा गालिया दिविता (भिनासन এজ গ্ৰাম প্ৰায়ন্তি বিশিষ্ট প্ৰশাস সন্দিৰেই भरता स्वतंत्रिका मन्त्रा नवास्थिकद्र (आक्रिसंशे इन्धा द्रामि-रक्षरहा अभारावी द्वानाम कवित्रा पनि ्सम,

" अहे या शा इहिट्यम । भनाइक मन्तिरम खेगाविछ,—जाशाट नामा जा युवनारण मोना मिकिएमाडिङ, भर्करन मक्किविमसिक, ममाधिक वीवरकनवी मकः निक्षाक्षा निमुख्या निम्यूषा "--विक्ष विणएक मकामिक अन्यम कर्ड विकिट्ड नाजिन "मिन्द्रवा—नाना अस्त्रभवादिनी

मदश्या करम विला, 'कांनी ।'' कार्या नी दर्ख पूर्व विराधिनी – मिक अ। काली-अद्यकावमभाव्हद्या का- त्म नाभी छात्राक्रिनी--वारम यानी विषा-विश्वागमामिनी – मध्य वनक्षी कार्डि-जानि किला मर्वाल मानाम - छाडे या दक्य, कार्यामिकिक्रणी गर्मण। धम जाप्या गारक डेस्ट्र खानाम करि। ७ यम हुई बान युक्करव छिक्षेत्राय, এक कर्छ डाक्टि गाणिन, ^{भा} भन्धिकल्-मण्डल्ड भित्त मन्ति। प्रनाशिक, भवत्वा जायदकः भीति नातावनि नत्याञ्च (छ।"

> উভয়ে ভক্তিভাবে প্রাম করিশা नारकाणान कतिरम, गार्म नामान कार किछामा कतिन, ध्याय ध्य मृहि करन **भि**रिष्ठ भाहेर ।"

> अभए ती बिनन, " पर्व मांत्र भक्त महान गारक मा विनिधा छ। किर्ना (मह लिन डेनि अमन स्ट्रेंट्ना :"

> भट्डल महमा कि कामां क दिल 'काभाद क्षी करण दकाश्रात्र ?"

दक्ष। हन-दम्बिद्य ५०।

भारता । जारारणा करनावगांक कावि ८म थिया निमाध जिल १

जना दकन विमाय मिर्व १

भ। आभि এই महामञ्ज श्रंभ करित। लभा। दमाना विमान मिटन।

माञ्चल कियदक्ष हिन्द्रा किया कहि-(लग, 'कांगात शृह्द (क्ष्य नारे, आगात আৰ স্থানত নাই। এ সহামারীর সম্ব आद रक्षाम वा छान नाहेन।"

उना प्य भएय जगान जामिल दम्हे भाष मिनिद्दन वाहिएन गाल । मनित-काटन ट्यामान की कन्माटक दमायटक

भाई दर। कनानी ज भगाय जन्या। रायान काहाता विषया कार्क, त्मरे- रूकेन, कममात्र इंडेक, केर्नियात जान-थारन छक्ता मांग्जी शाहेरव। छाहारक ভোজন করাইরা ুতোমার বাহা অভিকৃতি खाद्यां कति थ. এकद व यांगानिश्वत यात কাহারও দাকাৎ পাইতে না। তোমার मन यनि धडेक्रण थात्क, उत्त छेभयुकः! समस्य, ट्रामादक त्मधा मिन्।

जयंन धकदाए कान भाष तमाठाडी ष्मस्थित इहेन। मण्डल शृन्ति अतृहे अरथ निर्भयनभूक्तंक एमचिटमन, नाष्ट्रमन्द्र क्लानी कना। नहेश यिष्या जाए ।

ध मिटक गणानन यना स्दक्ष मिन्ना অবতরণপূর্মক এক নিভূত ভূগর্ভককায় मागिद्या । दर्गयात्म जीतामन ७ जता-• नन्त विभिन्न है। का भिन्न धदन धदन मानाई टिल्हा (महे घरत भूटन खुटन अर्व, त्रोथा, डास, हीतक, खवान, मुख्या मिष्किक दक्षिराष्ट्र । १७ इंट्रिय मुर्छेद होका, देशवा माखानेका तथिएक । ,ज्ञानन (महे कक्षमाता अत्यन कतिया विदिल्लन, "जीतानमा भट्डल प्राप्तितः। चामित्य मिया जिल्लाम बाट्या ८कन ना खादा इटेटल ऐंदात পুরুষান্তরুমে সঞ্চিত অর্থরাশি সার সে-वाय व्यक्ति इक्ट्रेंट्व। किन्धु यक्तिम भ काश्रमत्नावादका त्याङ्ख्यः नां इत्र, जङ-मिन खाद्यां क छाद्य करिय ना। एकामा-मिर्शिय शास्त्रत काक गगास इंदेरण, ভোগরা ভিন্ন ভিন্ন শময়ে উহার অনুসরণ कति । ममग पिराल, उद्दादक शिविषु-

मखर्भ उत्रिक्त क्षित्र। कात नगरम त्रका क्रिन् । त्कन ना क्रमन इत्हेब मांगन मखादमत धर्य, मिद्रहेंद्र तका उ **टमरेज्ञल क्यां।**"

चामन भन्ना ।

व्यत्नक प्रश्येत श्रद महरूक्ष व्यक्ति कला। नीत्क माकार इहेन। क्षानी कैक्सिया नुहारेश পড़िन। मार्स्स का कु के किन । কাদাকাটার পর চোথমুসার শ্র পড়িয়া গোলা বভাবার চোধ মুখ্য যায়, ভাত-नात्र व्याचीत बन भर्छ। कल्पणा वन प्रतिवात करा कलाली कातात कथा পাড়িল। বৃঙ্গারীর কে সঞ্জ । থাবার नाश्यिम शिवारक, कनानी का १०६क डाहा थारेट विनम । श्रीकिटकः नम यम ताक्षम भारेदात टकाम मकः नार्धे गार्थे, किछ (मर्टन) यादा आरङ, सहस्थत कार्ट्स তাহা সুল্ভ। ধেই কানন সংশ্ৰুব মনু-Cयात कालमा। Cयशास्त्र ८: भारक, ८४ मल इस, ऐलवानी मसुमाधल एका था-क्ति। विद वह जाना अत्रानात गार्डित कल, बात ८क्ट शार्य मा । वह जना उत्रचातीत राष्ट्रत राष्ट्रप्त सनाग्रहा 'ड क्डि इक जानिया ता**षिका क**हिएड शासिताकिया। कथाांगीय कार्यक्षां य-टरक थाथरम कि**द्ध (खान्नम** क्रिक्समा তাহার পুর ভুক্তারশেষ কল্যানী বিষ্ণলো यमिया किन्नु याहेगा। इस सम्बद्धि किन्नु

अंश्रेष्ट्र) था अशिष्ट्रेग, कि हु मक्षिक करिया ताथिल, हिला। ध्यभिया महस्य के हे देश हिल উভাষে পীড়িত হইলে, উভায়ে শ্রমদূর यशिषा भारत निजाकाकाक भन्न छेकाम श्रीमारे याणा, ''छामहा अ गतन चारमाठ्यां क्षिट्ड माशिर्यन, ध्ययन क्लांबास याहे। कलांबी बिंगल, वांडीटन विश्वत वित्वहमा कवित्रा शृक्छाश कवित्रा षामिया ছिनाम, धयन दमिए हि, याड़ी द णात्यका वाशित विशम् विशक्। जाव एस, राष्ट्रीटक्टे गिन्तियां याहे। पदन-(अत्रेक नारा किल्लिन। भरहरस्य हैन्हां कलानीटक शृंद्ध वाभिशां दकान धिकारत धक्राम अञ्चलक नियुक्त क्विमा भिन्ना अहे भव्य त्रमनीय काभावित श्निष्टापुरु भागूरम्या उठ ठार्न क द्विम। एउदाद लिमि मह्छाई मध्र इटेटनम । जनम इहेल्या शहरूम इहेग्रा कर्गा (लाल जुलिया शमिहिक्शांजमूर्य यांगां कविद्यान।

निष्ठ भषिद्धः दकान भट्ट याहेटल १३८व, त्मरे इर्जिंग जरनाभी मत्या कि हूरे चित्र कतिएक शांतिरमन मा। छै।-श्तां बिद्यहमा कतिगाहित्सम, (य, यम क्ट्रेट वाक्ति क्ट्रेट भातित्व भश পाইবেন। किन्छ उस इटेट्ड बाहिज इरेवात ७ लाय लायमा यात्र मा। संत्मकक्ष नत्मत्र फिल्ब प्रिट्ड माजित्मम, प्रित्रा पुतिया त्मरे मर्ठरे किविया कामिर्फ माशिद्यम, निर्मदमन भए भाउमा याम ना। अभूदम अकमन देवकायदकामांत्री हिल्हान, मट्या, कणानी धन्छाद अन्छाद जगिति वक्क विकेश में कार्रश हागिएंड- हिनियन। शैत्रानम अंडि इत्र भग

व्यानांत्र वालग्राहेट्य। जात्र शत्र निसाग्र कामा कत्रिद्रभन, "दर्शमाई हाम ८कन १"

टार्यम कतिरन कि डाकारत्र ?"

गररखा। (यथाकारतरे रूडिक, व्यातम করিয়াছি।

গৌসাই। প্রবেশ করিয়াছ ত বাহির रहेटल भाविटल्ह मा दकन ? एहे विष्याः देवकव जावाद श्रामित्न माजिल।

क्रिहे रहेगा गट्टक विलिन, पहान হাসিতেছ, তুমি বাহিব হইতে পার গু''

देवस्थव विभिन्न, ''आभात मरम साहित, अप (मथारेया निष्टिछि। (जामदा कार्या कान महाभी लक्षा है । महन लाइन कतिया थाकित्व। नक्ट अ मर्छ आमिं वात या याधित रहेवात भग भाव (कहरे षारम ना।"

एकिया गरहता विलिल, ''धार्मान मछान ?"

देवमध्य बिल्ला, ''ही खाशिख भखान, जागांव मध्य काहेग। कागांदक भथ (पथादेश पितांत कनारे आणि जारन माञ्चिया चाहि।"

मदरस किछामा कतिल, 'लाभनात नाम ****** ?"

देवसवय यानम, "काभाव नाम धीतानक **टगाश्वाभी।"**

धरे विनशा भीवानम जांग जांग

का मिटन किছू मृत्य गर्कशास्त्र कावस इरेक्ट लाखन जरू जिल्ल, यटनम साद्य भादय साध्यम्भा । धार्य-श्रांटन काबनामधा निया जन्ति भूतः नमी कलकन भएक विश्व छ। अन षां । शिविष् । भाष्य यक कांटना । युष्टेशाटल न्याभन ल्याखामस माना काडीत द्या गमीटक छारा कविया चारक, नामः करतीय शकी दरक वामधा मानाविধ রব করিভেছে। দেই রণ—ংমও मध्त-भन्त नहीत तरवत मध्य मिलि তেছে। তেমনি করিয়া রকের ছারা कान हत्त्व वर्ग विभिन्नात्छ। कलानीत मम अ ज्वा (महे ছाরার मणে मिलिल) कलाषी महीलीस अक मुक्तम्स निम टमन, खामीदक निकाष्ठ दमिएक दिन-(सन। श्रीमी विभित्यम, कणानी श्रामीह दकाल ब्हेटड क्नाएक ट्काटल लहेटलन। यानीत हाठ हाट्ड बहेश दिहुमण नी-उटव विभिन्ना प्रशिक्षणामा कतिरलन, '' लाभारक जाबि वक् निमर्श (मिबिटिक १ विश्वम शहा छ। इ। इडेएक **छकात्र भाहेग्राहि-- ध्रमम ध्रक्त निवाम** ८कम १११

" गरह सीर्धिन याम जाग कविया यनि-काभि कि कतिय व्याटिक शांति ना ।"

मिशा छ। हामिश्रक वाहिन किन्ना निर्देश, यह । "टकामारक हानाहरून अन धका चनमर्था भूनः बार्यम कतिरणमा जामात्र याद्या याद्या परित्राहित समार्थ धर प्यानमात्रना क्ट्रेट जाराजा नाहित्व निया गारा गारी पंतिपाछिन भट्स टारा गांवछ। दव यसिना ।

कलाभी विणिटलंग, 'बामस्त्र अध्यय-कहे, अध्नक विलाप निश्वाहर । कृति छनिया कि करिंद्य १ एडिमा रिशापक व्यागाम रक्षाम करत पुत्र का क्याछिण विकार अ भारत मा-किन्न कानि मान र भन ताटक प्राहेशाणिभाग । प्राहेता अध (सिमित्राहिलाभ । (सिमिलाम--' र प्राप्तत यिनात्म भाविना--वामि अकः । प्राप्त निशक्ति। त्मथादम याधी काळ ्कथण चारिनाव मण वर्ष्ट गर्भुद करण्याः १.४-सारन मञ्चा नारे दक्तन भारतः रूप कर्त टम**ाटन मक नाहि (करन क**ं र ' र १मन कि मधुत भील २ (भ) इकेट आ अ भाग धक्छ। अञ्च । अञ्चला ८म्स स्टब्स स्टब्स सार्छ ध्यानि शक लक मिक् म ाजी शंक्रवाद्यव शंक्र । त्यथाद्य द्यत प्रक्रीमव देनदत मकटलर भन्नीय श्राटन *८% राज*ा चारकन,दमन नीम भवीत कतिक्ष हिमा किउट्त गमा भना कालिए उट्छ। का किए ए न्ष्र किन्नोिं किंकान भाषांच । क्रांच (यक क्रंचि-राज। जात्र इसे भिरक कि आधि के अंबरक नाविनाम मा- त्याच दश दीम्हि, किह जिल्ला, जिल्ला किंद्र, जिल्ला है। टमन-''जानि जाम जागनात नहि— जानि ट्रिमिटक छाब्दिन निवस है देख नाजिनामः छाहिएक नाविनामं ना एक्सेक्ट का दक्तर

कृ दान मग्राण मेक्टियां आप अप की विद्यालन खिलानिक क्रिटिक मालिन। सिटक त्यथः, यास्रा छात्र वास्ति एते इंट्डिए ना, आत्माह तुसा याहे एक एक एक भीनी जिस का कि ज्ञानवादी मर्पानी फिला दकान जी मृष्डि कै। निर्दर्श । नामार्क त्यम स्थाक यक भवन रिका बहिता (एक निक्छ मिक्छ स्मार्थ छक्छ्र बात मिः।-मगर्म कानिया (याणना (यम प्रमे रमयमिखिना भीनी की सामाटक दियारेसा विनिन, 'अरे ८म-रेश्बरे छटना नारक अपनामां अ दकादम ना ।' ভ্ৰন যেন এক অতি পরিছার স্মধুর वाणीव मारमक यउ मक इहेन। रगहे छलू-कुंब (यन काशांक विकासन, 'कुबि यागीरक इंकियां कामत कारह धम। करे (जामारभन्न मा, क्यांमान यामी क्येत क्यांपिय-इम शृह्द एहि। त्मदा कविरव । कृषि यामीच कार्छ था- क। त्यथात्न स्मन्छ! <u>र्</u>डायादक किरम क्रेंद्र भिता इट्टिंग । जुनि हिल्मा यारेट बटमन जूनि मिरेगारन गांध-'याशी छाड़िया चामित कि धकारद्र।' त्नारन मिरम्म। कपन कावाब महि बाभीत भटन भन । गट्डल कना। टकाटन बहुवा बिकामा रुदेश ' आमि यामी, आमि मान्छः, आमि कतिलान "आत्र कृषि—कृषि काथान्न निखा, जामि भूख, जामि कना, जामात कारक जम। जाभिक बिनाम मरम नारे। जामात पुम का जिया लाग।' अरे जिला माथा हिलिया बित्रा यशिन, विशा क्यांभी नीयव हरेया बरिएमन।

मरक्स विभिन्न, खिक्क, कींक ब्हेबां विनिधार्यन वानित रमहेबारन याहेत।" नीयर्य यदिसमा अवामात्र डेलाब स्मार्यान यहात कविटक काशिता नातिया चटत जा-काम अधिक कविदक नामिन । दक्षिन

मृष्टि! दम् अवाणियारी किय छात्रि कीमद्वाल कनकर्छ मानन किलाह क-बिट्ड माभिसा भवडरम जिस्मी युद् करमान कतिएक छिन। बाबू बनागूरभात मुद्द शंक ज्योनिया पिटकिया। द्याणाल यत्था यत्था नतीकात्म (बोल किकिमिकि कतिरहिन । काथान कामभव मृह প্রনে মর্মার শাস করিছেছিল। দূরে मौत भक्ष हत्यनी साथ गाईएक हिला। कुरे करन कारनककन मुद्ध हहेया नीबरव त्रिशामा। व्यवस्थान शहर क्यानी भून हिंग किलामा कतिरामन " कि छावि-(OB ?"

> मरभ। कि कित्र काश्रे जानि— च्या दक्वन विजीविक्याण, जाभनाव मत्म किमियां कालिन सद भाष, की बरनत्र

षादेम।'--यामि (यन केलिया विलिया), अहे विलिया कलावी कसाएक चानीत

वाहें "द--"

कमानी इहे हाटड इहे टाक ''आभारक छ एम दका द्यंशारम याहे दक

नरश्च हमकिया छेठिन, यलिन " दम . (काणा, कि व्यक्ति राहेट्य ?"— कलानी विरयत स्किति एकथाहरलन।

मरश्या विशिष्ठ इंदेशा विशिष्टान, ''मा भिष्मा लाग- सक्यांसी छ। सं लाभिन। कि १ विस साहित्य हु"

कगाभी भीवन एउँबा छानिएड लागि-हैटल माजिन। कमानी कार कथा त्यम मशक मानविम हरेन महे। खाश कतिल या त्विया घरर्क विकामा मार्जन (काकारा-स्कूमारी विक्रि मूर्य करितनम,

"किंश कि विवाद हिटल १"

कः थाधेव भटन कतिशाहिनाम--किछ ट्रांगारक श्राचिया— उत्गरीरक वा-करत गा। चा भिति गा।

देवीता यातीए याचिएमन। जगन घ्र कार्ष त्यदारि त्यला कदिए कदिए विषयिक चाम मूर्य क्ष्मी लागि भा हिन--निरमत कोषा कृणिया महेन। किन्ह लाशं ८क्षिटलन मा।

(अनिवात शिनिम। (को हे। ने अक्यात है। निकशिया। अखबार कोहे। हैं धुनिया "अक्ट्रे कि ल्यारे ब्राह्म हैं। त्राम - विकृषि । किया त्राम । यमिक व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त

गरन करिल, ध्रेष्ठ जात्र धंकिंग स्थिनियात क "षष्टिक महत्र कदिशाष्ट्रिलाय, किस--" किशिम। एकोंग्रे। एकलिया विश्रा थावा मातिया चिक्ठि कुलिया लहेल ।

टमगिं गर्ड्डा डीहात भूच हाहिता दकोहाति खुक्यात्री टकन चारल रमन यहिला अजिनगटक वरमत त्वाष छ- मारे यिलाट नाति मा-क्रिक विकित পুরিল। সেই সময়ে তাহায় জীপর মাব मनत गड़िन।

'कि पारेन। कि बारेन। ऋहेनाम।" क्लाली देश विषया, क्लाल भूटवत थियां — देवद्र्षेत वामाव राहेर्ज हेन्द्रां किन्त्र वायुन भूतिन। एए व केल्द्राहे दमिष्टिम दम, विदयत दक्षि भावि भ एके कथा निवा कवाकी विषय िया चारक। ऋक्यांकी अन्य खान खान कुछ ७ जिन्दार्भक्ष कार्यानकथन में एक भेकि । शिया—मार्व अहे ६७ मिक कवित्य मातित्वन। कथाव कथाव केष- केविवादक्-यात्र मुचर्भात्न हार्य दरहे जनामगर हरेटलमा এই जात- निर्ण माश्रिल। हेल्मिरम अस हरू . देश ना किंदू भरत (मास का मान में। ज छाड़िया तिल, कनाानी यड़ि यरं ॥ व तिला रहकूमारी मत्न करिश, क्रीं रिम्म रिक्निया निर्मित। स्मर्थ केर्नित मा-िन स

वै। राष्ट्र धतिया पारिन शास्ट त्यम कतिया विका मानिएक पछिता व्यक्ति वर-जांशांक हानप्रदेन, जान नम मारिन नानी नमी इहेटल खाँहन किया है भ जन शांक धरिया ने शांक काशंत्क छानका- व्यानिया त्यत्यत मूट्य निर्मान वाकि रेग। जात भन करे शांक भनिया है। ना- मकारूटस मरस्टार किसामा करियान,

वादणत्र कार्णदर्व उपव एवि छाति। -- द्ववादनकविक छानवाबादम् अवस्ट.

काविक कार्यका । महरूक कर्ना रवरमान बाहि यक्ति। श्राटक अवसा भारतकारन श्रीत्रता अयरक्षा करिता जारह कृतिक गांक गां निर्देशका कतिया विभारताम, ''त्याम' रहा भारता कालिया कालियाम, ''त्याम' रहा । काटनकरे। बाहेशारह

कनानित्व कारमंद रमह नियाम एरेम । व्यटमक्क्य महिल्ला किमिन यहि हाटल धरेषा मित्रीकन कतिरम्म। जः बिटक, धारत एवं इहें जर दहांक निविद्या-छिन, जाशावरे चटन विष्ठ विक्रकावर्गः लाल धरेन। किहू छहे पहें, कबिटक थाशिय-रामिट्ड गाशिय-त्निय कि व्यवसम्ब हरेश। लिखा। कथ्य कल्यानी शामीरक बांगरलय, ''जात रमय कि १ रम नारणे रिवरणाय जाकिसारक, स्मारे भार अक्रमादी छिलिय--न्यामारक । याष्ट्रि ₹₹**८**₹ 1"

धारे विनिद्यां, कमानी निरम्ह विन सुरम CEL ST 1

"बिह्नान खारू, क्यां किट्टन क्या याक्टिय, ज्याचि हिन्साच ।"

ंक्षणाः निक्कतिरमः" विषया सरस्थाः

(मन, जाकि (मन्याका सक्तम कविट्ड-त्य विक्रिंग कारम कर वह हिल । जाक हिलान-जाहे कार्यात त्यात त्यात । कार्य

> दकाशक नाशिया जानिजाय-जामारपत्र काल भिक्ष इहरण जांबाब एकाबादक ल-हेका श्रणी इहेन्स्य। कन्यानी, स्थामात णन! दक्ष कृषि ध्यान काल क्रिट्न! त्य शाटजत द्वाटत जामि जत्रवास भनि-ভাগ, সেই হাতইত কাটিলে! ভূমি ছাড়া याति कि।"

कलाभि। ''काथाय जामाय नहेगा मारेट छ--काम दकाशा ब्याट १ मा, वाभ, यम्पर्ग कर माक्न इःमुम्रस भक्ति छ गवित्राटक। कात बदल छान काटक, ८का-थाम वाहेगांच थथ ब्याट्ड, द्याभाष महिना घारेटव ? जानि दिशाना भणदार । जानि भविलाग जागई कविलाग। जागाम ८क लिया विद्या न्या निवास । किया । दिक्त - जानी कीन कत्, दयन जानि टमरे-टमरे काटनाक्यत्र ट्याटक निशा व्यादात्र ट्यामात्र गर्हण (यागन कविया विभारतम, ध्रमा भाष्ट्र।" एक विभा यागानी "िक किरिया—कनार्शिक कि किविरम।" भावात जामीत भगरतन शहन कित्रा कहा। श्री किह देखत ना कतिया था- भाषाम भिटलम । भटएस टकान देखत गीतः भागप्ति गण्डक शस्त्र कविद्यानः, ना किरिष्ठः भावित्रा व्यासीत्र की-मिट्ड माशिलामा कमानी सावात विशिधन,—क्षि मुद्द क्षि मधुन क्षि Cयहमय कर्श-काराय नामरणम, वर्षाय, िकाम कतियो कामिएक मालिका। चार्क त्यवान केव्या काम माना मच्यम करव। नेर्यात केशानी अधिद्य भाषित अधित जानात त्यकाय नाइटक लाका कविताwind with the actual way can, with actual to difaco PILE STANDING STANDIN

दक्ष मामिन । जाति मनिया कार्य कवि भाग महाम निवा महास्थ THE REPORT OF THE PARTY. "काममानाचारका जाहा कि कम, न्यूना "श्रदम स्वादम समुरक्षण्डारम" हिर्देश । जामात्रक जाहारज, अर्थगाङ ह- जनम जातिषिक हिर्देश भागि स्टेरज होत्य प्रकास क्षमा अनय वर्ग गाणिक Column alas 1". " Eta Auflagenta,.

मायनाहेल-लाहात त्यादे विष त्य बद्ध नाशिन. शक्षिमार्थ शिद्यां किंग, संक्ष्म भारत्यक "क्रम मुत्राटन मधुदेक छेकारन" नर्षः। किछ दम मनरम् दमसिटक भर्षः निरीत कमक्रमण दयन भक्ष प्रवेटण त्याव अन किन नाः हिनि कनारिक कना। नीच ८कारण मिश्रा डिक्सरक नाए चालिशन कतिया चित्रिक कानिएक ज्यान मध्या (भाक्षाण कृष्टिया । श माशिरमा । जयम (यम चर्णायया वहेर्ड मृद् व्यवह दमयश्वीह भक्ष छन। दश्य ।

" "राज्यात्व मधुरकित्सारव ्रांशाम् लाविक सुक्क त्रोद्य।" ক্ল্যাণীৰ তখন বিষ ধৰিয়া আসিতে-हिन, दहाना सिंह मानस्त इहेट हिन. िनि त्यार्क्ट श्रमित्यन, त्यन त्यके * देवकृष्ठ अन्ड हार्थ्य तः गीधानिएड नाहिन C3(# :--

"क्रज स्वादक मधुटेक छेकार स क्षन कन्यानी चन्त्रवानिक्षिष्ठ कार्थ

ं अभिरक दालिकारि अकवार इथ कुलिया। उपने दयन गार्ट्स भाषीशास मिल्फ

मानिस,

"क्टन भूगारन मधुरेक छे छारन" • लाग—डेमाड करेया कलाशिक महिड धकडारम छाकिट्ड मागिरमम,

"इति मुतादि मभूरेकिए छ। इ ं कानन इंडेटब (यन डाइन्ट्रिक मटन धकडारन भक रहेरल मानिल,

''क्टन भूगारत मधुरेक हेनारक'' कमानीय कर्त करम कीत बहुका च्या-गिएंड नानिन, उत् डाक्टिइस,

"इटन भूतारक सभू देक हैं कारन"

खबन जारम करम कंश निवास देशन, ्राशाम दर्शिया मून्स दर्शिया । कमाभित्र सूर्य आहे नय संस् निशिलिक हरेल, जम नीजल वर्षण, ्राह्म स्वादक मधुटेक हे छ। एक ।'' स्वादक'' फाकिट छ। किए के देशक शहर व आश मिलिन, 'सानाधिक यम, अभन कविद्यारकन । क्रमन नागरक मान sex isten une against. कामतिर्वेश मध्य पत्र कामनीत्र अभिनात्रक स्थापन क्षित्र क्षित्र ANTE AND DESIGNATION OF THE PARTY OF THE PAR

कथरा उनके अगरकत म क्यामय, उनके गरहलारक क्यार करिया विमालका

"स्टक महारत मधुरैकि जिलाहरू" आनश्च काउनामहरू । कामख भागाविनी न भ (महे सगरम एक जानिया छोहारक बीबमग्रीरथ छ्रेक्टन धनाखन नाम जीक शाह व्यालिक्स कविशा छ। दोक मरक कविर्देश भागित्समा भूख भूकी सीवत, (कर्मान हैटेक्ट बट्टा क्रांकिटक माजिम, शृथिनी अर्थे ल्याक ग्रामी— रहे हुउम. "इदा भूबारत यथुरैकिंड छादत" भी दितः छिभगुक मनित । महा नेन

वाङ्गानित छे९भछ।

शक्षा श्रीतिटहरूम । অনাগা নাসালি ভাতি।

वाकालाव गर्धा गांल अ गांदला चलियां प्रदेषि काणि कार्षाः नाष्ट्रास्य दल्लान षार्गालाया करक् मा। किन्न यात्रांति-यादलका राजांना कथा क्या क्या क्या क्या यनिया अवा । टक्टनद्रम कानिःशाम था-ीन द्वासीय लायक शिनि रहेट इरेडि राका उष् ७ किया (मथारेग्राटन्स ८ए, उथन उ निर्देश विभाग जाकि जाउउवर्ष किया भूताना किएक मान्द्र व व्यानक प्रमाक्षः रमभा याम ध्ययः रम्पत्र्रं

मालग्रिरशंब नांभ डेएसथ आएछ । एवंड-ध्यत ध्राम ८नशम शांतकां कि आहम, खाठीन मामकाण्डिस स्महेन्न किया। किन शिन त्य कार्य वर्गमा कवियारहन, कार्याटक दनांस सम दग, मारनदा वांचा-चार्यां माननामाद्विता विलया धार्यक व्यक्ति श्रीक धरीक धरीक धरीक धरीक क्षनार्याद्यां कार्ष्यः , काराया क्यान क्रिन । क्षानायम क्रानिःशाम वर्णन, या है जिल्ला मार्गा है जिल्ला मार्ग गीर मण्डकार्डि। उटलमिनियिख मण्डन कां डि आधुनिक मुख (कागणाहि, विभिन्ना वास्थित बहेबार्छ। विकासनि अर्रहर असूगान कार्यन (य. के क्षिनित मिनिक मःलक्षां उज्याकात सामाणि माल। " अथन राष्ट्रांस वाहिट्ट द्रामारन रम्थारन माण नाम भारे, टमहेगाहन टमहेगाहन

In his late work on the ancient Geography of India, General Cunningham quotes a passage from l'iny in which the Malli are. mentioned, as occupying the country between the Calingae and the

कार्गार्गिकादक रमिष्टिक शाहे। कान्यू ८५६ विकान, क यान या याला या नामक कठि कहाना अनागाकावित रक समिया वर्ण क व्यन्ग्रीकार्ग सानकृत

Ganges. The passage is this :- "Gentes. Unlinges proximi mark, et supra mandei malli, quorum mons mallas, finisque ejus tractus est Ganges." In another passage we have, ab its (Palibothris) in interiore sita monedes et Suari quorum mons maleus, and patting the two passages together, General Cunningham thinks, "it highly probable that both names may be intended for the celebrated Mount Mandar, to the south of Bhaugulpore, which is fabled to have been used by the Gods and demons at the churning of the ocean." "The Mandei General Cunningham identifes "with the inhabitants of the Mahanadi rivor, which is the Manasha of Ptolemy." "The Mali or Malei would therefore be the same people as I'tolomy's Mandalse, who occupied the right bank of the Ganges to the south of l'alibothra -" the Mandalo or Mandali having been already identified with the Monedes and the modern Munda Kols, "Or" adds General Cunningham "they may be the people of the Rajmahal Hills who are called · Maler, which would appear to be derived from the Canarese Male and the Turnil Males, a "hill." It would, therefore, be equivalent to the Hindu Pahari or Parbatiya a "billman." Putting this last suggestion aside for the present, it seems to me that there is some little confusion in the attempt to identify both the Monedes and the Malli with the Mundas If the Mandei and the Malli are distinct nations—and it will be observed that both are mentioned in the same passage—the former rather than the latter would seem to correspond with the Monedes or Mundus. The Malli would then correspond rather to the Suari "Quorum Mons Maleas" -- the bills bounded by the Ganges at Rajmahal. They may therefore be the same as the Mals. In other words, the Mals-the words Maler or Malhar seem to be merely a plural form-may possibly be a branch of the great Sauriyan farily to which the Rajmahal Paharias, the Oraons and the Sabars all belong and which Colonel Dalton would describe as Dravidian. Fifteen hundred two thousand years ago this people may have occupied the whole of Western Bengal." Bengal Census Report 1871. P 184-185. क्यार्कान वड युविएक नाविशाम मा---(को प्रक्री) भाउटकत्र सिक्ड उपराव निवाय भागरमर देश एक क कियाहि।

* Dalton-P 299.

यात्र किंग्रेसक् मायक व्यायका नात्या व्याटकः। के धर्मानाककविद्यत नाम धूत (जगाब जिल्हात यन)णाकित मध्या भारतय वित्या क्रक विनायाकांकि मिन माहित्यम्। कांश्विरशत्र माहिता विविधा धकिकां कि कार्र । वाक्रभश्योत गाम लाश्किणिरभन्न कथा शुर्वारे बिनामाहि। भक्ताखरत कार्यामिरगत मस्या मस भक्त षाः हि—षात्मात्म नत्मन, कहे मादगत्रा आर्ग महा। आर्ग मह स्ट्रिक मानकाषित छित्मिखि । ना - जानाया महाराग न । स-गुटक कुमभी वृशिया आर्थानामास वार् **ट्याकात माम मह रहेगारह १: मारशता** त्य व्यागिवाणि क्रेटण केंद्र हरेगाटक **जारा वक्यकात हित्र ज्ला मार्टेट** পাৰে ৷

मीजिलामित्यम लोहाप्यत्या हम नात्य कि धनावादाकि चारहा छ।हा-मिर्गत रहेट्ड यात्रामात एउ।म्बाक्ति উৎপত্তি इहेशाएइ, इन्डेंग मार्ट्य धमन खस्यान करतना । देश महा यटि ६४

श्रामणाक यामण्य वा जास्य बारना कामग्रीका नीस विस्थारित मात्र रखारमग्री जानमहासम् जानिक्यरंगीतः वानायाः थाः जानम्मितात त्रोटनाहिका जञ्च करत शक्तिगटक वाटलय कांकि याना। केंकि सा। एक्किलिला अवस् अर्थालक पुँच्या नामक जक अनार्पाको कि कार्ष, भिष्ठ। जिस्सा एकारमञ्जूष पाय काशास्त्र धकि पारक्ष नाम गाम- अग्नः पारनक स्वित्राहि। स्निभारमक ज्हेश। " युकासम क्रांमिन्टेम ज्ञांभारी सिकटि जुनी सारम जक कार्याधाकाकि . जामिन याम करतः श

> इन्हें भारद्य (प्रथाहेब्राट्ड्स (क, ज-स्मक जनावाद्यारिक नाम जनावाडादाव मध्यावाठक मक्वित्यय हरेट छ हरेग्राट्छ । ८५। भक्ष देशक शृत्क डेमाइक्न (मध्या গিরাছে। সাওতালী ভাষায় খাড় শবে मक्षा। देश करेट जिल जिल्लान करत्रन त्य, हाफ़ि जनायीवः न

शूर्व विश्वाहि (१, करक्षीय अ त्यामनीय किन्न सात्रल व्यन्तक मणुषा-बाकि लाए, डाराह मध्या कान दर्भन জাতি অভাৰতঃই অভিশয় কৃষ্ণবৰ্ণ। আছি-कात निष्धाता देशात है मातव । दक्रम द्योद्यन देखारण उत्हादा ५७ क्यान जगर नर्द, दरमन छश्चरम् का क्रिन याम जारह, ट्रमिन कश्राम्य त्रीत्रवर्ग वार्य। यो मजदमत वान काटहः काटम-विकाब दय व्यक्तिम हे जित्रानिमान वर्ष टगाहिक टम्ब्रे खादमञ्जू भाषान्यः नीय-

^{*} Dalton P 145.

⁺ Dalton P 293.

¹ Non-Aryan Dictionary P 29.

⁷ Non-Aryan Dictionary P 29.

विटलक वर्ग दशीय : जिल्लाचार्य परक्ष विद्य । यादक्रम ८ग, व्यक्तियां व कथाद भूत स्टिट CSER। दशेष्ट्रमञ्जादश करुकमूत्र कृषण्डाः किंगिएक शास्त्र थर्छ। जावजीय कार्या-(मकः स्वाद किङ्क मृत कविष्याद महन्त्र मारे। डाइएमच भट्या ८कर ८भीड, रक्ष भागमा, किन्न विश्वानक्टित विश्व है। वामी कडक्छनि धानागाकाडि उरक्सारव ममीकुमं। निकृत्वादन छ।शानिदशत वर्गना चाट्यः कथिल चाट्यः त्रम त्राकाद উन्दिन इंट्रिक मध्यार्थ नाग भवर्षकांत्र कहिंगा धक शुक्तम कार्या क्रे वर्षनाथ भवा छ। इर ७ त वर्षा कृष्ठ कड़िया कुक्कशंत्र जगर्गार्गितिगरक भाउपा यांता है भूजम नियान नाटम मः छ। छ **र**हेसार । के देश हरे यश्रण नियानाथा जानायाकाछिट उरणास नं स्वियः । साभा यानिया भूगक् काकि स्केश्वाकः ट्यरमंत्र देशायाच्या केद्रभ विभिन्न ग्रेश के भूक्षप्रक नियान अ धीववद्याणिक आणि । जिल्ला प्रमाणिक भाउमा प्राथ । अस्

गाव देकश्वाद्याद्य इस धाई। कांचलाद्य, द्रानादक कुटमास्था प्राप्त कदल स्था--दक व्यक्तिक भागित्व व्यक्ति । क्या व्यक्ति व्यक्ति वा भाग कत्य । यभीयर् व्यमाध्यायो अवक राम कति- व्यायायर्क छारानिश्र में देकर्य राण व ष्यमहरकाषाचिधारन देकच्छित्ररश्च नाज "टेफवर्क माम धीवतः" शूटकाँ (प्रथान जिसाटक एक करजार नमाटलाहरूक माम नारम अनार्याकां जिल्ला का माम, बीवर, टेकवरी जिनहें जरू। या भाम छ धीवन कानामा हहेन, हरत क्रिन्छ कार्यामाकार्षि । जक्दल स्थानाः क्रिकेदः रकेंद्र भारता कलकलानि छ।य। रेकबर्न ; कडकछिन दक्षरभ टेकवर्छ। गुक्त भक-रगरे मरमावादमाधी शीवन किंग मरमाह नाहे। जाशानिध्यत मध्या पुष्कि रहेटल क उक्क कि । कृषिवायमाध्य अवस्थाय क तिम, फार्सिक छात्रा टेकवर्ड । अश्रीनाता जैक्म (कह दकह हांच क अप । । । ।

पुष्ठ वा त्योख नारम खाडी समाहित शूज्य विद्या वर्गना चारह : यस विन- निस्त्राद्यन त्य त्यो क काकृष्टि भावि

गर प्रमुख जायाति कह (प्राक

^{*} किः कः वामी कि जान मर्कान विकास चार म ठाउूकः मिमीश्विक छन्डू ८७ निषाम ८९४म ८माइ७४६।

र एक मार्ग बिकासर प्रभागर क्या ज्यादकः नियासारण उथा काजा त्यनकवानमञ्जयाः।

[‡] नियात्य अकर्तात्रो सञ्च रक्ष्णाः यसः बीवनामश्रकाणि (ननकवामश्रदान्।

या नियारमा गार्ने वर एएए पानरं भोक्ये की विनर देक् वर्षमिष्टि यः व्याद्र अशावस्थानसामिषः।

जिमारमाभरत्र त्रमाच लाख र्रवारह। भूखामिणांच नाम्रापय जयः दक्षेणिक ८भोश्व कारकोड्ड जाविड़ा कारवाका यवमाः

लायमाः १ स्म्यानिष्याः कित्राका मन्त्रा

पमांद

क्रेडरवय जास्य जारक ''कासा প্তঃ সৰ্ধা পুলিনাা মৃতিবা ইত্যালয়া दश्रवा •खविष्ठ।" महाञात्राङ्ख अहे ण् अभिरत्रत कथा च्या छ। मकाभर्क चाटक् ध्य कीम मिचिन्नदम चानिया

ट्योश किएशन मदश्र काम दय मक्ता कक्ष्यांभी मद्योगा नाका अहे हुई यहा-व्याजितात्रमा कविष्याद्वमा जावामिद्रात्र यासा वया निवास चित्रक निवास कितिया यक्त का श्राम्य काष्ट्रकार्यक वास्तिया। त्रणवाद्यत व्यक्ति वाक्तान इस्टिश्म। मि उद्यव मक्न लिहे ज्याचा यथा-- वन जायूनिक वामानात भूक्छ। नटक यशिक। ज्यम अभावत स्मादक स्माइ खारमभारकके वयरमण वरण। छीम ल-न्धिम इंटेट का मिया ८२ मिन कास कतिया। याज्ञानात भूकिएण खाद्यम कत्रिलम, मा दान क्या वाकालाव निकासारा । डिहेन मन मारहत । चक्र विकृत्रावास-वाटन स्थाप्रकार्यत (को भागिक स्थाप्ति स्थाप्ति । भवकारम बामानात भिक्तारामरे भूख-का जिस्के मः शान कियार छन ।*

* "Pundras the western Provinces of Bengal, or as sometimes used in & more comprehensive sense, it includes the following district: Rajshahi Dinagepore, and Rungpoor; Nadiya, Beerbhoom, Burdwan, part of Midnapoor, and the Jungle Mehals; Ramghur, Pacheti, Palamow, and part of Chunar. See an account of Pundra translated from what is said to be part of the Brahmanda Section of the Bhavishyat Purana in the quarterly Oriental Magazine, Decr 1824." Wilson's Vishnu Puranus.

व्यामानिश्व शिष्ठक विश्व वर्ष विश्व वर्ष वर्ष नाजी किविदान्यानि मधान क-िया (पश्चिमारहमें (कवियाभूकान कवियाद भूजान नरह ; उन्नायक जन्नाक येक मरह; ध क्षा (हाहे (हाहे मारहरी खुन) हेश्र कर काणि मश्यूक करनरक षारहा भूषियानि पण्डि, यामाम मनिभूद स्ट्रेट्ड ब्याउस क्रिया कामी भ-र्गाष्ठ मयख दगरणज विरम्प विवत्ने छिष्टि द्वस्ता चार्टा किंत. वास्थानि পড়িয়া ভঞ্জি ইয় না। शहरानिट्ड विमाः स्माद्येश शह चाहा मानिमः इ कर्क दर्नारवन बाक्यन वनिक जारहा। चनमाधिकारवन छात्रिण्ड बरमत भरत **विशासिक के देश भागक जातात्र देश मुक्क इस कारात वर्गना काटक। विरंग**न शह-काटबर समरमाम महमा ज्यामाय,हाइक जरूर मनिग्र भगाय व्यक्त क रहेशारक। जरू प्रवास भाष्ट्रमा । जाहाटक जाटक ट्यान्ट्रमा अटमा भाक जाटम वि-जिना (मीक्सम् मारमाष्ट्रिम, मीव्ज, यमात्रज्ञि, व्यानान, मामीयंत्र ও विका-

कांत्र तथ श्रीश मध्य भंडां की एक दिएक माड मामक वीयशविद्याकक व व्यदम्दर्भ व्याभित्रा श्रेक्षिरश्च साम्यभागे रभोश्च नहिन रमस्त्रिया निवादक्षन । रणमा-एकम क्षानिःसाम मार्ट्य के तीमगति-द्वाबरकृत निभिन्न किन् छ प्राचा महेशा लोख वर्षम त्याणात क्रिया छ। सिस्र भन क विवाद (हरी भारेबारकम । जिलि किছ हेउएकः कविशा **काश्रु**निक भाषमादक (भोक्षिक सनिका दिन कतिबादकर । भावना मा इहेगा नाणागात साहीन प्राय-धानी मानाम् (कनाष जयग्र अश्मद्याञ

नमती लाख्या पिलाल, ट्योख वर्षस वाक्ष मरश्रात गरिका कात्र गत्र मणकुशात क्षां द्वारा जाटमः "'जास्यात विवाद-प्राप्त सक ठकर क शुख्यां बर्गामास विकट्डबर 🖓 व्यक्तिर साम् एमण का क्रियर 🔻 यमा कनिश्च काटा विश्वापश्चीएक मथ-कता व्यथाद टेमनाहि विद्य हैका कति-काहि। " प्राकृताक्ष्मिक कार्युक्तक मार-इक वार । जेशिशिश के कि अमाहिए देमिणिन ताकाम के कि, कारूवा मन्याप्र यथम व्यक्ति इत्र उपमत् पूर्व ह मिथि-मात्र निक्टेयागी।

भार्यः এই मक्ल एएटमत स्मिक इष्टे, स्टांत, ग्रामात्रनियण ऐसामि के आपि। त्नोज्रासाम्य व्याचान नगदमभूष्ट्य गर्या त्योशिमधानाम (मुम्निमायाम नगरमर मर-म्वानिषावाष नाम ५५-४ मार्टन एव, खादाब नार्टन खेळार युक-खाबाम बनिक बनिया है यह दिहेति वाक् (दमरम ऐक व्यादह) कुठयाः अल्यामि ১৫० वरमस्तत मर्या निचित्त विलिश द्वात एवं । दमीक्रमप्न त्रोक्रवद्वत উল্লেখ माहे। পाश्वमात्र केलिय मारे। यदब्रक्तित व्यथान मगत पुरिक्षा म हात्वा हराया (त्यर्थामकात्र याया खाया) काकगारी। नीवृष्टत्यत्यत्र खायानः भगत्र कळ्ण नमत विवधभूत ७ विदाय। समभूति वाली बाला। नाहीपरण्य नाहान ्भनत देशमानाथ, त्यवगफ कता त्यापासूची देखानि। यदाजृत्यत व्यथान वनत सयुनाषभूत धरम हेलामि। यहाँगामित खाधान नगत यहाँगान, स्यशीन, श्वासूत्र, क्षानाव हेजाकि। विकामार्थि धाषान नगत सम्मन मूलाबान ७ वमही कुक्क धाम। এই नकन दमरणत आहात्र शावदात छ हकु:भीमा आहि। आहरणत चजनुव मानिक द्याव जाएक छोक्टिक द्याप वत्र हजुःनीमा ज्यानक जीक्यस ना। क्षांकृष्यत्मत्र केखदर भवासमी ७ मन्मित्न वर्षमान। जामम लोकसभन

देशक गर्या भांडल ना । उदेशमन नारस्य के प्रांत प्रांत्र विश्विद्यात्म (य, प्रांचावर्ग्य किव्यान कारक छक्टबाविश्यर व्यवादिक बाक्य स्थादक मुख् वाक्यियारका स्थितिक व्यक्तिया वर्षक स्हेशारकः जे त्याकी जामका देन क कांत्रकृष्टि,

समीर दर्शामान्त्रीर देवन मर्मादमनाम् भागान्त्र करेष सामा एक शृष्टारक ह्यानान, बाखारक दक्षणार । " मण्डमान प्रतिष्ठ कृष्टीन केल्प्रांत ।

रेजिस्म पाकि क नकत्मत्र ममस स्टेट्ड कार्याद । काकि मुक्तिकाक । इट्ट एमक्रांत ज विकासमारक्षत नगत स्ट्रेटक लेगाच शुख्नादम खारण कांकि बाजानाम लिक-मार्टम बाम कतिल । जन्म व वामानाम या यामावाच विक्रे या छात्रखर्एद टकान खरणरम भूख नारम दकान बाहि नारे। धरे प्रश्नाणि जान दकानाग (शय ।

मःक्रुक **श्रंक ''**'''' शाकिद्य वाजागाव প্রচলিত ভাষার ভকার, ভকার ছুইয়া गात्र। आत नकात न्थ रहेगा न्किन्डी हल यदर्ग उस्र विम् कदम भिन्न हम । यथा जारकत च्राम लाइ, मरकत च्राम मीड, लटक सरम खड़। जात मस्कृत इत्रेट व्यवस्थलाखं हरेयां वाभागामित्व भवि-ग्र इरेटड रग्रम भरम्य तकावामित गडवाड्य ट्यांन स्य वया—खाम यटन लागा, लांस हत्त लाग हेजाणि। लाज-व्य भूख्भम क्लोकिक काशाय हिन्छ रहेटल खबरम दब्रक मुख कवित्रा भूष भारम भित्रमुक स्ट्रेट्स। जात भात द्यमन लाव द्राय लाक रम, वव द्राय के ह हत (जमनि পुक ऋरम भूक वा भूरण रहेट्य। श्रुट्या वामामाम क्रमेडि मर-याम वायान कार्कि

जामना भूटल माश उप ए क्रिनाहि, Sixtem cant water ea gacan sit. नारम ख महरू हो। जनामिकादिस स्क, ग्रामुद्दरी मिटे क्या दिनिया जान-TEN MARKET WENT TOTAL

याजवारं धार्या गोरेटजार त्य जाया जाते वासी यात्रीत गारामाहरू नामानि-कारिं।

> भटकत कामखरमा जक्षाकात रत गा। वाठीम जातात टकान नम जाराउदत ष्णमञ्चे रहेया धार्यम कहिरम हरे छिन क्रिश कारता धक मश्कृत स्रोम भक् नामामा खावाय (काषाख बान त्कावाव ठाँदे। उस अभ क्वन हमार कथन है। मा - दियन हुआ अस बाआशिय উচ্চারণে চনার হয়, ভত্র শব্দ ভদ্ম হয়, তল্পাপ ভাষার হয়, ভোননি পুঞ্ শাস্ साम वित्मरम भूषंत्र इहेरव। खाणिवाठक यार्थ कथन कथन वामानिता भारतत भट्स धकेंगा क्रेकांत्र द्वणीत खांत द्यान किशा मिशा थाटक ; यमन माजकाल, मां उठाकी, शयाम शयानी, दिण उत्रनि क्टेट्ड (मण उत्रामी। अहेत्रान क्रेकांत्र त्यादन शुख् नम शुख्य हरेया शुख्यी छ भारत्व रहा। भूवरी विका अकृष्टि वहमःयाक वामानि छ। छ चाहि, भू एखुना जरर नेएकारा यक्ति कानामा करन পুওরীয়াও অনার্যাঘাতি।

भुजरी रहेटच भुजरीक व्यक्ति सूत्र मरह। जारमक् देखतानारक महा मधा माभू डाया जानवादम जवर महस्वरे मत्न कटत्र ८व योग चाजित्र नाम भीयं नमानयूक मरह ७ **नट्स** तमा याः, **डाहा इहे**टल জাতির বড় গৌরব বৃদ্ধি হয়। ইতর-दनाकरभन वृद्धिक यक बाज्यक ना बा-मात्र काल खहाईटङ दकान कारमह

भागाया नाह । अञ्चल अंक केलि काक है जान अंत यान काहारक न्वती करम न्यतिक त्यन न्यतीकांक जिल्लामा करा निवारक न्यतीकांक कि रहेगा दाष्ट्रीहल। जन ১৮৭১ लात्वात चाकि युक्टिक भाविनाम नार क्रथन त्मान विर्वार्ध मार्गन वाकान नामान जाम जाम दन देखन कविमार कामन दनान । स्वरीकाक वाकि निवस द्योगिक वाकिक स्थाप नेक श्रु मक व्हरण हरेबारक। ज काद जरूपि गारहनी मिलाम क्रेटिक लारदा जनः भूख नग ज्य। याखिक श्वरीकाक विविधा इक्टेंबर लोग नाम क्षिमाधारक रेश (काम क्षक्री भूषक् साकि गारे। बागात विश्वाम इत्री (लारमबाई जाननामिनरक श्वतीकाक विका পরিচর দিয়া থাকে।

मिक्निन अभारत मार्च मार्च त्लारमञ्जू श्राः कत्थानकश्रम कतिया क निषद्म कुर्रानिका स्ट्रेशिছ। यथन क्लान (णाम् क विकामा क्षियां हि क्रिंग कि बार्डि त्म क्यमरे लाग्न अथस्य मः इड न्यकाष्ट्रपटत कािंटिशोत्रव वाष्ट्राहेबाब बना विविद्यादक ''बादक बाबि প्रविद्यो

. (य मकन क्या विमा शिल, डाहाटड द्वास हम लाखीकि समित्रः शक्तित त्य, शूँ एका भूखती भूखतीकाक कार भाग छातिष्ठी कारमी এक काछि अयः हातिष्ठि यापि वार्तिन भूख वास्ति भक्षान। পুर्धिता वानागामाचि छिल, व्यञ्जन यामानि मगाद्यम चिक्र काम होतिही अनाया कांकि भाउगा शहरकर ।

जनकातनाञ्च ।

जनसंदर्भारस्य नाम लिनिटन हेस्ट्यांब-माशाजनद्भारक जटन करह, जम्मदान THE PERSON PICT OF STREET OF THE PROPERTY OF T

चाराक्षांत्रभाञ्च काश्रांक वरण, बागि चाराक्षांत्रिकता रच कर्षां वर्गभक्ष वर्षश्च ष्याक त्यहेंने बुबाहेटक दहें। कबिन। कद्वम, माधातगटलाटक दम कर्ध्य याच-कात्र कटत्रम ना। प्रक्षात टक्ष्मकत्र ८प ख्यानाव जाशामगढक द्यांगा गांव, नश- मध्यात जनकात शिंदण देशक रखना क्षण्यानाव रित पिया छन शटका यामणीश जूना है:रविक्यानाक क्षणकाव नारक उन्ह हुए। दुवन, छामा बानरक बरमब मान रहा नांकरन त्नारक भूमिक नाम नाम नाम मान आकर्णाम में स्थापन THE WATER CHAICH CHAICH REMAINSTRATE AND SECURITION OF THE PARTY OF TH (सम्बारमम् अस हित्यन। किस तम मार्जन रम जारा जनमात्र करें। इ जानकादभाष्टे (लांटक दक्षवण वर्गविनाम इस ना। कतिरें भिश्विमाञ, आप रकानकें आमना दलियान छ। ना इस उरवे हैं श यन मिनिक ना। गयन भवार्यिका। अनकात्रभारत्व त्नार नटर, जनकात जाटलाहमा आवस रहेम, जनम भारक निकाद भाषा मगर्य मगर्य सन्त्राह-खन्दानमाञ्च चमात विनिधा পतिज्ञान शक्तित दिक्त दिन्दा प्राप्त कामकात्राहरू दिक्ता कतिल। यिनि नेनार्थिनिगात अथम नथ (प्रशान, जिनि काशीर वर्ष (तकन काल-क्षाविक्षिरशत लाखि काछा ४ एछ। हि- भषार्थितमापित्र माप्त व्यवस्थ लालाका-(लन। ञ्चतार नर्फ त्यकरमत्र राजालि (ज्या अभिया व्यक्तिमियाशन कालकाव भागभाञ्च त्यानेश्वि धविटल त्रात्य, भारत्त्र छेभव धरिवार्छन । क्छि दनकम प्रमहात्रभारमञ्जूष छेन्द्रभाषिका मानिएकन, गिनि (कवन्याः खे भारत्व चार्याहनां न की बना िवाहिक क्रिएडन (यक्न एक्वन छ। हात छेल नहें 5ते। दिख्यम। किस छै। हात नियानव रानभाजभाज माभ कि ८०७, नाभभावनभारक है कारन षाञ्च रमग। मरकुछ देः दब्रिक्यानाचा बद्यान, जान-कातभारत बमरवाध ना इतेया दक्तन কতকণ্ডলা নীরস বাগাড়ম্র শিকা হয় মাত্রে; কৃতকভলা অলমার, ক্তভলা (भारवत नाम, कडकछमा कावारेस्वाप नाम मुस्य कविया महिट्ड इस माख ध्ययः के कविष्टांत मक मकुष यखस्यनि क विडे खिल , जागभावध्यमि का वानिज छ।-विक शिक्षिश्या ऐमाउ अथया देशह गः एष्टि अथवा अवाकी साव मकत এहे

महर, ७६ रा किनिविवर्द्धनहे जलहाइ भारतार खेरमभा कताभ मरहः छेरा नीग्रंख वराहे।

তিন প্রধান ভাগে বিভক্ত, নিরুক্ত, বাক त्रव एउ व्यवकाता । गाहावाता भगकानि किताभ नुष्टलि इय, छाहात अनानी अदश्क रुख्या गाय, छ। हात नाम निक्छ याश्थाया भज्ञन्य, लाकामत्या किस्टिश निर्विभित्र इश्, खाशाह खनानी सामा विद्यां मा (परिशः, व्यनक्षांत्रणाद्यन याथ, डाङ्का माम नाकत्। এবং এই गक्न वाका भरम्भव (याजना कतिना वङ्डा कतिवाब, टाइ निश्चित्त अवः ध्यवकाषि निथियात खानानी यादावाता अव গত হওয়া বাম তাহার নাম অল্ফার। अजगार याक वनामि ध्यन्य खेन छानी अनकात्र (मरेक्या व्यास्क विध-रचन धनकात्र ना भिष्या कि वस्तुला करा याश ना, ना अह (नथा नंस्र ना, ना नकत लायगाररे आमदादिक। यभि मा इस खर्ग कलकाष्ट्रभारस्य खर्गास्य विः १ याम्या यशि चाकित्रंनं मा शिष्ट्रलाई कि मरेत्रा त्था मखनहरू हि एवं गांवा। कथक रूख्या यात्र ना, ना, राका बहना वामन याद्याटक क्रकिं नित्रवर्धन ७ भति- क्या यागै ना नावमादा ना निष्टि कि

তৰ্ক কয়া যায়, না, না ভৰ্কশক্তির উত্তা-बन इस मा, एटव कि साकरण ७ माप्त कारमाबर ना। उस कि क्यारी मासा ग्रांग रहेर्य, जारा गरह। काल-छात्रणाद्धन्न ज्यस छिएमा, नर्ट (प् **উ**राटि (माक्र क कल्डा क तिट्ड भिया-हित्त, উহাতে কেবল বক্তাকে বিশুদ্ধ व्यवानी दल्यारेदा, दमग्र गांछ। दयमन न्याकत्रन भारते व्यक्षक भन्नश्राद्याद्य व्यक्ति विक्था जमारिया दमय जवर एक শক্তহোতোর উপায় কেথাইয়া দেয়, ঘেমন ন্যায়শান্ত তক কবিবার হ-जानि निशारेश (पत्र जरु जर्रमाय यदिवाद छेनाय दम्यादेश दमय, दमरेजन धानकारता वक्षात छे एक छ आया गी अ ष्मरका रका रहेट शाह्यन ना, श्वक्रि क्वि इहेर्ड भारतम मा। किन्न क्वि यबि कालकात्र भिर्थ डाहा इहरल कामिन-नीय कवि इस, ७ यका यमि व्यवकात भिरंग, छाद्या इटेटम (म स्रानिस्गीत वक्ता इहेटल भारत। अकाव याहा (पन नाहे ভাষা শালপাঠে कथन कत्य ना ; मनी छ भाट्य छ १६ त्याक त्यमन त्काषां छान-लक्षविद्यां ध तिथित्न हिंदे यान, त्मरेक्ष कालकातमाञ्चल काट्या या यक् ठास अक्रिकित द्यान द्याय रमिश्लिके हिन्ना यान । जनकात भार्क व्यवनिक (जाक विभिक्त वर्ग ना ; विभिक्त छोछ न्द्रकारात्रात्रक ।

जनसाब अफिटन टलाक जारा अवश्व रून । त्यमन अञ्चलभामि जिल्ला धनियदमाहे द्यारक श्चि इस, याणवा व्यक्ति इत, किन्त टक्स गुमि या अधूमि ६हेन छाहा गिनान मिरान खना अक्छन विषायक ठारे, टमर-ऋग ८कान अस् भड़िया ८क्ट भूति इत Cकर प्रश्रुपि इय: किस्ड (कम रंग क्यान रहेन छार। मकरम जाभनि वृद्धित भारत सा। या थान षाश्चित शाक्क १६५ विद्या मिट्ड भादा रमहे वास्त्रित व्यवस्थात-भाक्ष পाঠের ফল হইয়াছে, জিলি গ্রামা-जिक किन जालकातिक मामाजिक रहेट उ উচ্চতর, ভিলি সামাজিকদিগের উঞ্জের क्रित अथ (प्रथारेग्रा (पन।

আলম্বারিকের কার্যা অভি প্রক্রের। তাঁহাকে সামাজিকের ফচিসংঝার ক-রিতে হয়: কৰির রুচিসংস্থার ক্রিডে र्म; (लाटक मिक्तिकात क बिट्ड रुप्त ; मिरे माज जिल्ला का ती भिराप्त छ क्रिनिश्यात कतिर्फ रुग्र। जानका विक क्रिणाटक्रद किलाक्षमात्र, क्रिट क्यान भट्य याहेटब, दकानी मदक्ति, दकानी क्षकि जरे मगरा छ। हारक व्यारेशा पिटल इस। यमि भना यटि " चित्र कि हिं (आक:।" প্রকোক বাজির কড়ি जित्र जित्र, किछ मूल नित्रत्मय प्रामण्डिका ८६ ए जिल्ला विस्ता । दगहे गून निकरमब श्रामक आमहात्रिक।

न्छ। नीजामि दश्यियाद, सम्मा स्वा मियान, उठम कविषा कमिनात हेन्हा ग्रमादन यादा अकृति विवास भित्रिक जाकाविक, द्य मदमायुष्टि भाका व्ययुक्त

वह मक्न बावुंखि दव कारीय नाम करि। नाहे, डेश्न श्रेरदिक नाम Esthetic faculty। गरुषागारवात्रहे कहे गरना-वृद्धि चार्छ, किन्न कामकारमध्य देशव ञ्चिकाण स्य मा, षाकाख मकारणरण ञ्चिकिक वाकियां देशक भूहिमांबन भिकात এक जम रिनित्रा शैकात करत्रन। ८म शृष्टिमाधन किस्तर्भ इंडेटन ।

यत्नक विद्याष्ट्राञ्च द्विष्टिक निद्यान्ति वा गाळा जैनिएक भियाहि, याळाखवालात वा विवादिवयानात छिएमना श्रमा. ट्याकटक दामादेया ना कॅमिटिया, जारा-निगरक जात्यांच विद्या, किट्ट जार्थभः शह করা। স্থতরাং অদিক লোকে যাহা **जान वाटम लाहाता टमहेक्रम याजा वा** अভिनय कविरय। यिनि कवि जिनि कार्यकांत्र रहेन कांत्र ना श्डेन, करनरक लिथिदवन। यणि अञ्जल छलिया यात्र णश इहेटल **क्टम** ८म याका वा किनम जानना रहेशा छेडिएव: कात्रन बाहाटड ध्रे जकि कुलावृद्धित उर्दछन्ना इत याया यहमात्माक स्कृतिमण्यास त्याक त्रिका शक्त हम, क्रांत्रका माज व्याप्त मान्य वर्गन मून्य व्यापारमन रमरण जानक्षतीत त्रमञ्जान कर मना रहेगा-गाया कि देव व्यक्ति क्षणमा इत्याहिल, हिला व्यक्तिय प्रत्य गर्था एक भा-

जारत कराना देशा देशियाटक जोश्रतक शहे कि जिल्ली त्याब क्य किया वाबदाव क्या याक काजन त्य पर्वकारण व व्यवहान भग्भन देशक जिल्ला विज्ञा है स्वार्क टमक्मिमियाद्वत भूट्स इरलएखत तम-° ज्ञित्र ७ व्यवषा धर्कत्र (माठनीत्र 'हिन, कथन थिवाछीटन जगङ छीएकान दहेल, दि এक माईश भवास लाक प्राहित्क পারিত না, গোল মাল, মার ধোর, রক্তা-तिक इरेड, मभएम मगरम मर्भक-बुग छोहाटंड भाग निया यहा जारमान करिया छेठिएकन, क्राय स्कृतिमञ्जूत लाक शिशाणीट्य यक त्यांश किर्फ लाशिट्यम. एउड़े के मक्न भागमान क्यिया व्यामिन। भर्व यथन रमक्मिनियांड, दवन्-জन्मन् खञ्च अश्कविशन कि विशय CBका मिट्ड लाशिटनन, ज्याने हैर-मञीय नाष्ट्रिय मगुप्रकि बाज इहेर्ड याशिया। व्यञ्ज्य दम्द्रम् यहमा चल-भरश्यक द्वकिमन्त्रात त्वाक व्यक्त जावगाक, किन्नु यमि भागाटन द्यास थाकः भर्यासरे ह्य, जनः जानकातिक टलाक ना पारक, डांश इश्टल कानापि धकरपास मासिया याभ ; क्रिज असियर्खन गांधात्रण (लांदक (महे मकल किनिष एक- एव ना उप्तार मकरणहे जककित चार्-थिटक काम बादमा यकि पर्नकत्रकार भर्ग करता शहे भगरम कामहारत्र का-य थार्कम छोशा स्ट्रेश मार्किक्ति धर्वे कावारम्या पात्रस स्त्र, कविश्विति। गक्न उद्यासक वस्तर् भविभून इस्र। समाक कृष्टि इस्र मा। कालिशारमत भव व्यवस्थान वर्ग वामासिटमंत्र त्रमञ्जा मकल मानिक वर्ग करणहे कितामक गरनावृद्धित

সমাক পরিচালনা হয় না, উল্লাহ্ন অনা
আলহারিক চাই। নুজন নৃতন অনুতিপদ্ধতি উত্তাবন করিছে পারেন এক্লপ
লোক চাই, চলিত কাবারহ সকল
হইতে নৃতন নৃতন ভাব সংক্ষণন করিছে।
পারে এরপ লোক চাই, কবিদিনের
মত নৃতন নৃতন পদার্থ মনোনীও করিতে পারেন এরপ লোক চাই। বিনি
ভারা পারেন তিনি ব্যার্থ আলহারিক।
কারিকা পড়িয়া আলহারিক হয় না।
কারিকা যে সম্ব্যে লিখিত হর উহা সেই

সময়ের পলে কাটে, পারবৃত্তিসমারের লোক যদি সেই কারিকা সকলের অন্তর্গ করে ভাষা করলে কার্যপায়ের অব্যোগতি হয়। পারবৃত্তি কার্যপায়ের অব্যাগতি হয়। পারবৃত্তি উপ্তিলাখন করিকে পারে ভাষা করলে কার্যপায়ের উন্নতি হয়। কারিকার প্রতিহাসিকজ্ঞান হয় উহাতে রুচি সম্বেন্দ্র কোন জ্ঞানলাভ হয় না। উহাতে আমরা এই মাত্র জানিতে পারি যে কম্ক সময়ে ক্ষতির স্বস্থা এইরূপ ছিল।



भाधवीन्छ। ।

CO

सनकिन नथी नयरक निषम नागना
याद्या विनाइहिन, छाद्या मिथा। नरह।
जिल्लान इरन मकाण नमन सनकिन कर ग्रेटएड दास निमा नागरिन, जिला हारिन ना, काशरिक्थ छाकिन ना, स्किन्य रम काल्का हेज्लाहः सन्दर्गाकन क-विरक्त मालिन: त्यह याहा स्वस्त्रकान करिर्छिन, छाद्या प्रतिमा छनिन्ना त्यमा एक्स नमा हेस्सार्छ स्म नाम क्रिज । भूर्क नमा हेस्सार्छ स्म तम क्रिज । भूर्क नमा हेस्सार्छ स्म तम क्रिज । भूर्क नमा हेस्सार्छ स्म तक स्वहिनी क्रम माण्डिक्षा क्रकान नामनीकिना रम्छन्न नमाहिक्षा क्रकान नामनीकिना रम्छन्न नमहामाहिक भाषी हाहेर्ज रम्बिन बाराण। याधनीत या धरे वाहीएड बाह्रियत कमा। यशिया त्रिक्छा: छाश्राय विश्वया गाङ्यमा छाश्रादक अध्य याख्र त्राविश्वाहित्यम।

समाधिन महाशि उड़ अधिक एउ छ-लिशा शास्त्रम ना, स्मिट्टे वाडीय मण्डास अक अवध्यम् निया विमासन, उथाय वाजियानन कविश्यन स्थिया धूनिय कार्छ मण्डाह कविल आविश्यन, स्मित्र वाजि सम्बद्ध कविल आविश्यन, स्मित्र वाजि समाज कविल करेंग्रे, कविल धूनि

alvalum araba ay an maga Malum araba ay an maga

ं भाग जिल्लात इस नार्ट। भाषरीत मा নিরুপায় হট্যা এক একবার কাতর-नग्रान भागीत म्थ अिं हाहिर छिल्।

शामी गामा जन कति एक हिएनम, आव এक अक्यांत बनिएडिइएम "अध्नाहै; काली तका कतिर्वन।" ब्राधि करम् प्रे किया छेतिन, भाषवीत मा निरुतिया भाष-बीटक टकाटफ कृष्णिल, माधवी ष्टाराव णां छल्ल (गम मिसियः: उक् भूमिक ছিল, হঠাৎ একবার চকু ঘূলিয়া পেল, श्लिया दफ् श्रेम, किन्ह जागाटक मृष्टि आभिता विभिन्न। "कामि द्रशा वद्ध"निम्या, भावतीत मृद्ध . जनगिकाः कतिएक वाजिल ।

वहे मनग वाणित विद्दार्ग भाग धान इहेटलिन। गामनीत या जहा किह्रे खनिर्ड भाग गारे, युकाखं जारा कानिएक भारतन नाई। छारारमञ् नमन वाषीट्ड भारतम नाजियाहिन, त्य नागारेबाहिन, तम नियात एटल राजयम्हन भागन कतिया बाटहा व्यक्ति शब्द मिल इहेम, वाभरम गुरुषरभारत्या बाशिया दितिम, बा- साहित्त साहित्त वाभिया वृष्टिक वि-भारत कारणाता कारणा किरिया कृषिया कामा क्याना क्यान क्यान नाहित्रा निर्वाटक नातिन, काकाम भन्न विकिता किंग क १

जात्मरक जाभनावा विशिवः शिक श्रेक् श्राक् व्यक्तिवानीस्पत्र ज्ञानिमान शिकामात्रि मात्रि त्वत्र हत्रनाम्क थाख्याहेया शिवाद्यिन, दिनटक नामिन; व्यक्तित व्याद्यादक किन कोशाक कारतन नाश्व इस नाहै। काशानत त्यक नतीन केयर तनाक ''कामाभाष '' भाउपाम इहेगाएक ख्यामि (प्रशाहित्क माणिया। दक्वन जक्रि .कटलां डे डिफ्न गां, नीट्ड वनिया नस्य गमा वाए। देशा रेखखाः भाषिटक लागिल, **डाहा**त नीएंड क्डेंडि भावक हिमा।

বাটীর চতুম্পার্শে শত শত লোক षांनियां क्रीया। अकत्वर नाज, शक-त्तरे ठी९कांत्र कतिएक गाणिल, अक-लिए सन जानिएक विवास वाजिल : किन निरम क्रम क्रम क्रानिवात ८५%। कतिल ना, मकरलहे है। कतिया व्यधित कीणा मिथिएक नामिना किर बिलएक लाशिय, 'आहा। मर्कनाम इहेस, मर्क नाम इहेम।" (कर रनिएक मानिन, नारे, हमू भावत राष्ट्र रहेगा। या यूप "राष्ट्र यात्र । जाव किहू नाः, गरव औ कितारेम। भाना किलिया तृक्षा निकटि इना इन्त । (कर यनिन, "रेभ्। ध्मय दम्य । जाखदमत दहछ दम्भ 💥 छहे-वाय मनव्याद राम, धरेवात स्वारेश, आव কার সাধ্য ভিতরে যায়।"

> धरे ममन् धक्कम तृष्ठ ही कात्र क-बिट्ड कब्रिट**ड जा**निया मकराटक बनिट्ड लालिन "त्य दक्र एक खानी चीठारेन कांत्रि डाटक धक्षण डोका किरा । ज-क्या मक त्यारे जिला, निख दकर जाजमत रहेंग ना वा ८कर ८कान डेखन जिल ना । ८गम मनाफिन मन्त्रा 'खारकत्र धुरा।

, अका निकास दिन, अपने दे मिन. व्याचि भागने । कर्ताः । यशिकानि, अनुसारि THAM

स्थान्य। ३७ छाका १ युद्धा अक्रमक हाका। युद्धिकेलक श्रीय कर्य खात क्यान श्रमण मह क्या गा। स्यास्ता। धक्षाच व्याप है कि ए ह्याक है :

मुक्त । हो । लाव स्थान स्थान ।

कर्नाक्ष । ट्वामाय नाम कि क उक्त। वासकश विवाधिष्ठि, काष्ट्रा मुर्ग । गुष्टि, जनशाक्षेत्र दस्य मखास्त्र । भागित्रका करन था कर देवस्त्री।

दमाक्रम कविम, त्यिम पूर्व क्रिकी। नामन लाङ्गा बिगारस, नमर्ल लास षाब कामिन परिया दश्य, राक बाक कामिन्नाबि, दश्यास दिवास करिन " चित्रिक काकामनाव दिशा मकान क्षेत्र विवास क्षानीय व्यापात मध्य ष्याभाषा बहेशा त्महे भिदक द्योक्ति, चथन धनार्थन क्ष भीष सथक महेगा ज्यामिन, अकन्यक मित्रा यहिटक यश्निन, गकत्य भवित्रा शिक्षाहिल, व्यावक पश्चित्रा शाहेरक योगम, त्नारक जावत माविया देशका क्षत्र पूत्र स्टेटक क्षत्राहिय माक्षक बट्डा ट्योनिया ज्यात्रिया जेक्टक

CACK MINISTER & MENCACA I MENCACA Africa aillin, and naith Exien अधिकारक । ज्यानिक विभारत काम्यानसूत्री नावकात्रा प्रतिकात्रात्राक्षां नाविषा द्यान , MATCH WEN FROM ARM, MINE WIN क्षित आहे क्षेत्र देशक देशक क्षावित करिएक काशिय, युक्ति मनाभी युक्ति। निष्ठाकः। को नगा जनान्द्रमञ्जू सानि खमा रंभण, कमार्यन मनिर्द्धाण, "करनारिक कृषि अध्यक्ष विश्वा जाक ।"

विकारम करमानी कांच्य व कंगगार . कर्त काणिएकएक, जुड़े विश्वक श्रुष्टित्रहरू, कर्लाडी हानिभिदक स्क्रिएकरह, न्यांदन वर्षे अभिया क्रमान्त हेल्खहः कर- खराटन रमिटक्टर, क्रामात्र क्रिक्ष मीएड व्यागिरण्डस्य। नीवाकता वाक्रिक इरेग्रा ठीरकाव कांत्रारुष्ट्र । खनार्षम बनिन किराहेशं, जार्षमध् कान जानमंत्र कविया। ''नुशिष्टि, माथा। ज्यामि छए त हिराह

धर्म करियो खाराच जांगकात्र जांगर यदिम, त्यंत्र मध्य मध्य छ । हिस् है ३: इंग्, "मग्रामी ८५:६ चाटल" योजरा शहि दम्ब दम्राटकता महात्कानाञ्च क्रातियां देशियां क्या माधक स्मिट्ड स्थिएड हजीयंख्य न्यान कवित, हजीयक्ट्य 'अमेशिक प्रातिक । द्यारिकता विश्व छ-कत करिया अक नरफ वयरात्र केल्यान क्रिक्श अवस्थित समामी हजीनकरण था-WINDLE FORM WITH WINDLE FORM WITH WAR TO SEE THE FORM WITH WAR TO SEE T

छ खीम ख প প ড़िट जा शिल । महा । मी न छ ए दात्रा नी क छा जिया मिल। भावक তুইটি ভূমে পড়িয়া গেল,জনার্দন তাহাদের পক্ষ ধরিয়া দোলাইয়া প্রজ্ঞলিত হতাশনে निक्मि कित्रम्। कल्पांजी जाहा निः भारक (प्रथिन। मन्नामी ज्थन नश्रफ्-হস্তে তাহাকে তাড়না করিল। শোকা-কুলা কপোতী ভরে উড়িল, চতীমত্ত-পের বাহিরে জাসিয়া উর্কে উঠিল, কিয়দূর উঠিয়াই অগ্নির উত্তাপে অগ্নিতে পড়িয়া পেল। সন্ন্যাসী বলিল, ''তোর অদৃষ্ট ! আমার দোষ কি ?''

চণ্ডীমণ্ডপে একখানি পট ছিল, এত-कल मनामी जाश ८५८४ नारे, व्याप्त व्यात्नारक प्रिचिष्ठ भारेग्रा এकनारक পটের সমুখে গিয়া যোড়হন্তে দাঁড়াইল। পটখানি কালীমূর্জি। জনার্দন বলিল, এখানে আছ ভাই এতক্ষণ এ ঘরে आखन लारा नारे, जामि जाश ना जितन অভিন দিয়াছি। ইষ্টদেবি! আমার অপরাধ ক্ষমা কর।"

98

त्मिरे मगग्र माधवीत मा तमिला, ममूर्थ **এक ভ**ग्नानक भूर्खि । मत्न कतिन, यमन् उ गाधवीक नरेट जानिशाह, जाजवव याथवीरक वृत्क धतिया ठी९कात कतिया किन्छ देष्टरमवीत माम आत উঠিল। আগন্তক চীৎকার শুনিয়াও

मावकारम आंशंखक गांधवीरक नहेगा ছুটিল, পশ্চাৎ পশ্চাৎ বৃদ্ধাও ছুটিল।

जागद्धकरक यमपूज विषया वृद्धांत सम হয় নাই। আপাদমন্তক কর্দ্মাক্ত বলিয়া আগন্তকের আক্ততি ভয়ানক দেখাইতে-ছिन। वृका वाहित्व व्यानिया वृक्षिन त्य, আগন্তক অগ্নিভয়ে আপনার সর্বাঙ্গে प्टाटन भिग्नाट्य। কাদার আগন্তক भाषवीरक পृष्टि वाधिया উত্তরের প্রাচীরে উঠিল। এবং তথায় দাঁড়াইয়া সেই প্রাচীর সংলগ্ন অন্য এক গৃহস্থের জিতল অট্টালিকায় উঠিবার নিমিত্ত মাথা তুলিয়া দেখিতে লাগিল; অট্টা-লিকায় বালির জমাট কিমা চুণকাম नारे, এर जना जाराट डिजिस्न डिजिटन পারা যাম ; কিন্তু সে অতি ছঃসাহিসিক কার্য্য। কিন্তু আগন্তক আর অধিক 'মা! আমার অপরাধ হয়েছে, তুমি ইতন্ততঃ না করিয়া এক দীর্ঘনিশ্বাস-ত্যাগ করিয়া উঠিতে আরম্ভ করিল। সেই ভয়ানক হুঃসাহসিক কার্য্য দেখিয়া বুদ্ধার क्रक्ल इरेडि लाशिल, जाननात विभन जरकवादत जूनिया वृक्षा जकमृष्टित्व मिटे অপরিচিত ব্যক্তির বিপদ দেখিতে লাগিল; প্রতিমূহুর্তে তাহার পদখলম আশকা হইতে লাগিল। বুদা উৰ্দ্বাদে त्रश्निः विभाग देश्यम्बीय जाकिया, षांत्रित ना।

শুনিল না; হন্তপ্রসারিয়া মাধবীকে ধ- বছক্টে অপরিটিভ ব্যক্তি দ্বিতল অতি-तिल। गांधरीत मा मूर्छा राल। रमरे क्रम क्तिया कार्निरम माँ एवं है लंक वात

(मरे मरक प्रभाग कितिया जामिल। কভটা উঠিতে হইবে, ভাহা আর একবার অপরিচিত ব্যক্তি মাথা তুলিয়া 'দেখিল, তাহার পর আবার পুর্বমত উঠিতে লাগিল। এবার আর বৃদ্ধা চাহিয়া पिथिटि भातिन ना, मछक नड कतिया हकू यूनिल, कर्वक পরে বৃদ্ধা আবার চাহিয়া দেখিল, অপরিচিত বাজি ঢাদে উঠিয়াছে। তখন বৃদ্ধা আসনবিপত্ত বাজির ন্যায় ক্লাস্ত হইয়া পড়ল, তা-হার পর ক্রমে ক্রমে আপনার অবস্থা मम्भून जामू जव कतिराज ना शिम। वृतिन, लाग जात (कांग कारम त्रका इस ना; চণ্ডীমণ্ডপ পর্যান্ত অগ্নি আসিয়াছে, তাহীর উত্তাপে অন্তঃপুরে আর থাকা इहेबा शिष्या चाटक, तम घत हेष्ठेक-এব মৃত্যু নিশ্চর আগত বুঝিয়া বৃদ্ধা সেদিকেও অসহা। ঘরের ভিতর গেল।

এই সময় পুর্ক্তক্ষিত অপরিচিত ব্যক্তি আবার অট্রালিকা হইতে অবতরণ জনাদিন। তুমি কে? তুমি কি অ-.করিয়া গৃহপ্রবেশ করিল। তথায় গিয়া খির দেবতা? নতুবা এই জলম্ভ ভতা-गाधवीत गात थि जि जि जि ए हिया भारत गर्भा क्या करत जमानवारन त्रिलं, (भव विननं, "निष्ठिणं। यां विष्रिरेष्ठ ? যাতা, নিজা যাওু, অনেক করু পেয়েছ, অপরিচিত। আমি যে হই, তুমি

নিশাস ফেলিল, র্দ্ধার শরীরে যেন জাগিয়া আর গ্রাভ কি ?" তোমার निजारे এখন আবশাক।

ভাহার পর অপরিচিত ব্যক্তি ঘর হইতে वाहित इहेग्रा देख्यकः मिथिए मानि। (पिथन औरनाकरंपत्र भनाहेवात दकान भश्र नारे। वहिकाणिक पिरक शिया (पशिन, ७-थात्र চারিদিকের চালাছর পুড়িরাছে,পুড়ি-তেছে—দেকিও পথ নাই, তথাপি বিশেষ পর্যাবেক্ষণ করিবার নিমিত্ত আগ-ম্বক কিঞ্চিৎ অগ্রসর হইল। তথন **जनार्धन मर्का পটहर्छ छ**छीम्छ्रपह-हैटि नामिटिश्न, आश्चकरक पिथिटि भारेल ना. पिशिला किनिए भारिक ना। किछ जागरुक जाशांक जिनिन। चनका थाकिया पिथिए नाशिन, धना-र्फन উঠাन मित्रा याहेट एयन जमक, यांत्र ना। (य चरत्र माधवीत मा मृष्टिं ज व्यक्षित्र मिरक চाहिर ज भात्रिर जर्ह ना, চকু কুঞ্চিত করিতেছে, উত্তাপ যেন নির্মিত, কিন্তু তাহার ঘারে অগ্নি তাহার অসহা হইয়াছে। সন্ন্যাসী लाभिएं जात विलक्ष गारे। जशिमग्र करम्क भव शिमा फित्रिल; प्रिशिल, वाछी इहेट जात कान कोमरम वहि यहता द्या; छ्छीमछत्मत छेमत जीव র্গত হইতে পারা যায় না। অত- তরঙ্গ তুলিয়া থেলিতেছে। উত্তাপ

রুদ্রাক্ষনালা মস্তকে বাঁধিবার নিমিত্ত অপরিচিত ব্যক্তি তথন এই সময় ञाजनत रहेगा विनन, "भनाख, आत विनम कत्रिश्व ना।"

না, এখনও পলাও। আগুন আজ কাছে বল ? পাপ, পাপ! পাপ ত ক্ষেপেছে, আজ ক্ষেবভারও বশ নহে, জুরাচোরের কথা, পরসা রোজকারের কাহার 🗳 কথা শুনিবে না, তোমারই জন্য 💮 কথা। পাত্র পেলে আমিও পাপের ভয় •জ্ঞলেছে, দেখিতেছ না তোমাকে ফাঁদে দেখাই। বোধ হয় তবে তুমিও সতলবি (ফলেছে, তোমার চারিদিকে আগুন। লোক। যদি সাধ্য থাকে এথনও পলাও।

তেছি, কাণ হুহু করিতেছে।

অপরি"। তবে এইখানে বদে পর-কাল চিন্তা কর।

८मरे পথে আমায় लहेबा हल।

অপরি। আমি পলাব না; অগ্নি ধাসতার ফল; পাপের ফল কিসে ? निर्काण পर्याञ्च चामि এইখানেই দাঁড়াইয়া थाकिव।

সহা করিবে ? এ উত্তাপে তোমার কি কুষ্ট হতেছে না 📍

অপরি। কিছুমাত্র নছে; অগ্নিতাপে বরং আমার শরীর শীতল হতেছে, আমার অঙ্গে হাত দিয়া দেখ।

জনাৰ্দন। তাই ত। আশ্চৰ্যা শীতল। তবে তুমি দেবতা; আমায় বঞ্চনা কর না। সতাবল।

ज्ञानि। कानांत्र मर्क ममना गांथि-য়াছি। আমি দেবতা নহি, আমি নরা পাপের প্রায়শ্চিত্ত করিবার নিমিত্ত রহি-য়াছি।

भगाव, गुज्रा তোমাप्र প্রাণরক্ষা হইবে জনার্দন। ও মেয়ে ভুলান কথা কার

অপরি। তুমি পাপ মান না? ভাল, জনার্দিন। আমার আর সাধা নাই, এ আগুন ত তুমিই জেলেছ, এখন দেখ মাণা ঘ্রিতেছে, চক্ষে যেন কি দেখি- দেখি দেই আগুনে তুমিই পুড়িতে विमिला। ইহা कि পাপের দণ্ড নছে?

জনার্দন। অমন কতবার হয়ে গেছে; কত স্ত্রীহভ্যা, কত ব্রন্মহত্যা করেছি, জনার্দন। যে পথ দিয়া তুমি পলাবে তার জন্য কত ফল পেরেছি, কয়বার পুড়ে মরেছি? অপঘাত মৃত্যু অসাব-

> অপরি। অনিয়ম কাজকেই পাপবলে; তাহার দণ্ড আছে।

बनार्फन। এই উত্তাপ তুমি কির্মপে बनार्फन। পাপের দণ্ড! ছয়মাসের শिশু (नोक। ডুবি হয়ে মরে; সে কোন পাপের দণ্ড ? ছয়মাসের শিশু কোন भाभ करत्र हिन ? चाए काक मत्त्र, तम কোন পাপের দও ? কাক কি করিয়া-ছিল ? তুমি বলিবে কাক বেদবহিভূতি কোন कार्या करबिष्टल, जाथवा कान ভট্টাচার্য্যের ম্বতে মুব দিয়াছিল। তাহা इरेल ज्ञि मूर्य न्त्रांति এरेगां गरन करत ছিলাম তুমি দেবতা; বুঝিলাম তুমি निर्काक । পारभन्न य नि मण थारक তব धम, পृथिवीटि व्यामि क्वित व्यापनात भूषात्र अपछ व्यादह; किन ना निङा (मथा यात्र व्यत्नरेक श्रवा कार्या कति-(उट्ट, अर्थन माम माम कहे । भौरे उट्टा

स्थ-ए: थम प्रस्क भी भेष्ण ममान । जामि दिन दिनाष्ट भेर्ए हि, मकल हे जाँ थात्र, मकल हे जास्त्र दलथा—भी मांश्मा नाहे। जामल कथा—स्थ ए: त्थत दल् जा दांशाः यि हा ना हत्व, जत दल दल्थि, हेस्ट भूभ ताका दक्त, जात्र जामात्र बहे पातिस्राप्तभा दक्त ?

অপরি। ওথান হইতে একটু দূরে আইস। অগ্নি তোমায় লক্ষ্য করেছে, ঐ দেখ চন্ডীমন্তপ হইতে তোমারই যাথায় পড়িবার উদ্যোগ করিতেছে।

এই বলিতে বলিতেই চণ্ডীমগুপের একাংশ ভাঙ্গিয়া পড়িল, পূর্বের সভর্ক না হইলে তৎক্ষণাৎ অনার্দনের শেষ হইত। চণ্ডীমগুপ পড়িয়া আরও উ-ভাপ বাড়িল; জনার্দন বলিয়া উঠিল, 'আমি মরি,আমার বাঁচাও। না হয় বল আমি আগুনে ঝাঁপ দিক্লি, সে বরং ভাল, শীঘ ফ্রাবে।''

অপরি। আমি ভোমার কিরুপে রাঁচাব, ভাহা বলিয়া দেও।

জনার্দন। তা আমি জানি না, তুমি দেবতা, উপায় তুমি সকলই জান। আমায় বাঁচাও, আমি জার দাঁড়াতে পারিনা।

অপরি। ই।চিতুত, কি ভোমার এত সাধ?

জনার্দন। আসায় বাঁচাও। আমি কাটাকাট করে মরিতে পারি; এমন র্থা শৈড়াইয়া মরিতে পারি না। এ সর্পের বড় বস্ত্রণা।

অপরি। তুজি কোন্পথ দিয়া আসি-য়াছিলে?

জনার্দ্ধন। আমি ঐ সদর দরওয়াভা লাফাইয়া আসিয়াছিলাম, আমি এখন আর তা—

এই বলিতে বলিতে সন্নাসী পড়িবার উপক্রম করিল। অপরিচিত ব্যক্তি তা-হাকে ধরিয়া গুয়াইয়া দিল। জনার্দন চক্ষু বুজিল, আর কথা কহিল না। অপরিচিত ব্যক্তি চীৎকার করিয়া ডা-কিল, ''জনার্দন!'' তথন ক্যুপ্তোখিত বাক্তির ন্যায় জনার্দন চক্ষু চাহিয়া আবার চক্ষু মুদিল।

অপরি। জনার্দন । আমায় চিনিতে পার ?

खनार्फन उथन धीरत धीरत, जनएम, रयन निमात जारवर्ण विलाख नाशिन, "পারি, তুমি দেবতা, স্থা, আমি স্থাসগুলে এদেছি। পুড়ে মরি! রক্ষা কর, আমি শরণাপর।"

অপরিচিত ব্যক্তি আবার ডার্কিল,
কিন্তু আর কোন উত্তর না পাইয়া,
ভানার্দনকে বুকে তুলিয়া, নিমেষমধ্যে
দগ্ধন্থার অতিক্রম করিয়া তৃণাভাদিত
মৃত্তিকায় তাহাকে শয়ন করাইল, তথায়
ক্ষণেক দাঁড়াইয়া ভানার্দনের মুখপ্রতি
একদৃষ্টিতে চাহিয়া ভেখিল। তাহার
পর চীৎকার করিয়া বলিল, 'পরিচিত
কে আছ, সয়াাসীর শুকাষা কর।' সে
চীৎকার শভ শত কণ্ঠনিঃস্ত কোলাহলের উপরে উঠিল, যেন বিলীরবেয়

উপর সারস্থ তাকিল; অমনি সভয়ে থিলীরা নীরব হইল। অপরিচিত বাক্তি আবার ফিরিয়া দগ্ধ গৃহে প্রবেশ করিল। একজন পরিচিত বাক্তি সে কণ্ঠ শু-নিশ; শুনিবামাত্র ছুটিয়া আসিয়া সন্না-সীর শুশুষা করিতে বসিল।

পরক্ষণেই সেই জ্পরিচিত রাজি আবার বহির্গত হইল। এবার বৃদ্ধাকে আনিয়া, মৃত্তিকায় স্যত্তে রাথিয়া পুনর্বার গৃহ প্রবেশ করিল। বৃদ্ধা রক্তবর্ণ হই-য়াছে, তাহার অল্পজ্ঞান আছে; লোকে ভাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিল, "এ ব্যক্তি কে?" বৃদ্ধা পথের প্রতি চাহিল; কোন উত্তর করিল না।

তথন বাবের সমুখে সকলে আসিয়া
দাড়াইল। সে ব্যক্তি আবার এথনই
আর একজনকে আনিবে, এই প্রত্যাশায়
সকলে গিয়া জমিল; আসিতেছে কি না
দেখিবার নিমিত্ত সকলেই পরস্পর ঠেলাঠেলি করিয়া অগ্রসর হুইতে লাগিল। সমুখে
আর স্থান নাই, তথাপি সকলেই ব্যস্ত
হুইয়া অগ্রে দাড়াইবে বলিয়া ঠেলাঠেলি
করিতে লাগিল। এই সময় মাধবীর
মাকে ক্রোড়ে লইয়া সেই অপরিচিত
ব্যক্তি অতি বেগে আসিয়া লক্ষ্ দিল।
কিন্তু সমুখে স্থান ছিল আ, বেগ সম্বরণ
করিতে গিয়া দক্ষমারের উপর পাড়য়া
গেল। চারিদিকে মহা কোলাহল হুইয়া
উঠিল।

অপরিচিত ব্যক্তি বিহাদ্বেগে অমনি উঠিয়া দাঁড়াইল। তথনও মাধ্বীর মা ভাঁহার ক্রোড়ে। কিন্তু অগ্নিসংস্পর্শে
যুবতীর বস্ত্র স্থানে স্থানে জলিয়া উঠিয়াছে। অপরিচিত ব্যক্তি তাহাকে নামাইয়া, উলঙ্গ করিবার নিমিত্র উদ্যোগ
করিল। যুবতী তাহার অভিসন্ধি বৃশ্বিতে
পারিয়া তৎক্ষণাৎ সেই জলস্ত বস্ত্র
ধরিয়া জলস্ত অগ্নিতে ঝাঁগালুলিল।
সকলে হাহাকার করিয়া উঠিল। অল্লক্রেন মধ্যে সকলই ফুরাইয়া গেল।
মাধবীর মালুলজ্জার ভ্রের গৃহত্যাগ
করিয়াছিল, এবার লজ্জার ভ্রের দেহত্যাগ করিল।

लाक्त्रा मकल मैं। ज़िश्री भवनार দেখিতে লাগিল। যতক্ষণ পারিল খড়, वाँभ, वज्र, माधवीत मारक मध कतिन्। তার পর অগ্রি নির্বাণ হইয়া আসিতে লাগিল। ক্রমে শবের অঙ্গার্মৃত্তি স্পষ্ট (पथा यारेट्ड नाजिन। दकरन वामभन খানি অগ্নিতে পড়ে নাই স্কুতরাং পুড়ে নাই; তাহা অলক্তসংযুক্ত এখনও রহিয়াছে; नगरत जिशिषा এখনও প্রতিবিশ্বিত হুই-তেছে। অনেকে তাহা দেখিতে ও দেখা-ইতে লাগিল; কিন্তু একজন যুবা তাহা দেখিতে পারিল না : " আমি সপ্তকার্ছকী पिरे,''
विया कडकक्षना एक कार्छ ञानिया (महे कांभन भाषानि जावतन कतिन। তাহার পর আবার কাষ্ঠ আনিয়া নিষ্ঠুর লোকের কঠোর দৃষ্টি হইতে খবের ম-র্বাঙ্গ গোপন করিল। আবার অগ্নি व्यगिया উठिन, भवनार मन्भून रहेन।

रेगतिक बुज्ञधाती यूका-बुक्क हाती, आया-

ब्राजियांभन कविट्छिन, गृश्मार स्मिश-বার নিমিত্ত মাতঙ্গিনী যুবার বেশে আসি-माहिन।

90

দূর হইতে জনার্দন শর্মা দেখিল মাধ-দীর মা দগ্ধ হইয়া প্রাণত্যাগ করিল। ভাবিল, ''উত্তম হইয়াছে, আমার কার্য্য সিদ্ধ হইয়াছে, একণে মাধ্বীর সংবাদ भारेतनरे र्य।''आवात जाविन,"माध्यी अ त्रका भाग नारे, दकन ना दमरे जभतिहिछ बाक्ति क्वितन वृद्धांक आत गांधवीत মাকে বহন করিয়া আনিয়াছে, কিন্ত माधवीरक छ जात्न नारे, माधवी তবে **टकाथा (शल ? मांधवी अवना मित्रमाट्छ।''** यत्न यत्न এই আলোচনা করিয়া জনা-र्फन উठिया विम्ला आङ्लाम विलल, ^{নে}জগদীশ্বর আমার মনস্কামনা সিদ্ধ করি-यारहन। प्रेक्टनरे मित्रग्राह। कलारे " शिम्रा मशाम पिव, प्राथि दावी कि शादि-তোষিক দেন।''

এই সময় পূর্বক্থিত বৃদ্ধ আসিয়া जनार्फनरक जिल्हामा कतिन, "कर्फमारक वाकि त्य ट्यामारमत्र छेकात्र कतिन तम **(**₹ ?"

खनार्फन। तम जायात পরিচিত বটে, षाणीय वरहे।

८काथाय ?

পূर्यगितिष्ठि याञ्चिनी। टेड- निर्फ मिस्यथ करत शृह्छ। भार्छ त्रवी প্রভৃতি চারিজন এই প্রামে আপনারা কেছ তাহাফে চিনিতে পারেন, **এই ভরে মে গায়ে মুখে কালা মাখিয়া**-हिन।

> वृक्ष। आमत्रा তাকে हिनित्स स्माय फि? जनार्फन। त्माष এक ट्रे चार्छ; তা षाभनात जात खत्न कांच नाहे; (म जा-भाग्र विरम्प करत्र निरम्ध करत्र श्राष्ट्र, जाभि আর ভাহা কলিব না।

> বুদ। ভাল আমরা ভ কেছ উহাকে গৃহপ্রবেশ করিতে দেখি নাই।

> कनार्फन। शृह्मार्ट्स श्र्क इटेट के বাক্তি অস্তঃপুরে ছিল, নিতাই থাকে।

> ব্ৰদ্ধ। কিন্তু ঐ ব্যক্তি এ বাটার কেহ नर्ह, এ वानि ए श्रम्यभाष्य नारे।

कनार्दन। श्रुक्ष हिल ना, किन्न देपानीः জুটিয়াছিল, আমরা সর্গামী, এরূপ কতই দেখিয়াছি। সে যাহা হউক এখন आत ज्िित ना, याशत जना ज्ियाहिन এপন ত সে গেল।

বৃদ্ধ। তুমি কি বলিতেছ, আমি बुविनाम ना।

অনাদন। সে সকল কথা যাকু; आপनात ব्वित्राञ्ज काम माहे। विनि मित्रियम, जिमि जाशनामित किसी जाश-नारमञ्ज आद्यात्र अध्य कि कि ना, শান্তিশতগ্রাম হইতে আসিয়াছিলেন। विभि जामारमञ्ज উकात्र कतिरलन, जिनिउ वृषः। উহার, নাম কি, নিবাস শান্তিশতগ্রাম হইতে আসিয়াছিলেন। (महेथीरनहे जावात रंगरनन। यावात बनार्षन। • ७। जामि विद्य ना ; व · भगरा जागात्र छ। कात कथा वर्ष (शरमन । বুদ। কোন্টাকার কথা?

जगर्मन। जाञ्चान (य छोका निदिन मदण छ। दक्ष् छिक जात्न ना। বলিয়াছিলেন। এক একজন এক এক শত টাকার হিসাবে তিনশত টাকা ভাহার পারিভোষিক দিব না। পাপ্তনা, তা আমি বলেছি যে, व्यागात हिमान हिए एए ए जामि नाहि রের লোক। হইশত টাকা ভাহার ন্যায় পাওনা; তবু আমি আপনার হয়ে বলেছি যে, একজন ত মরে গেল। তা সে গুনিল না; সে ৰলে 'প্ৰামি ত উদ্ধার করেছিং তার পর কে এখন জলে **जू**रव मतिरव, कि शलाश मिष् भित्रा मतिरव, তা আমার কি ?''

বুদ্ধা। তা, তারে কাল আসিতে विवादन (मशा यादि।

জনার্দন। আবার তাকে কেন ? তবে আমি বলিলাম কি? সে যদি আপনা-দের निक्रे भूथ দেখাবে, তবে মুখে कामा गाथ्दव दकन, এই সোজा कथा আপতি বুঝিতেছেন না?

वृक्षा। वृत्यिष्टि, किन्ध (म व्यक्ति ध्यम धर्मिष्ठं लाक, अयन वीत, म जायामित्र निक्षे दक्त मूथ (प्रधाद ना १

जनार्फन। के त्य विकास, त्य यू-वर्षो धरमाख जन्म रहेन, छेरात्र निर्णंड অমুরোধে পড়ে এ গ্রাম পর্যান্ত মে এসে-हिन, তাতেই ভদ্রলোকের ছেলে ল-जाय महत्र (भट्टा किन्द्र भान्तिभन्जाटम (यथारन উक्टब्रज वाफ़ी त्मशारन खेंदाज

বীর মা কুলভ্যাগিনী হয়েছে, কিন্তু কার

दुष। এমন পাপিষ্ঠকে আমি কৰাচ

व्यनार्फन। ८कन फिर्टन ना ? প्राप्तिके रुरेल होका मिर्यन ना এমত ত कथा हिल না। যে উদ্ধার করিবে তাকেই আপনি টাকা দিবেন, এই ভ কথা ছিল। হলই वा त्म निष्क भाभिष्ठं, निष्मुद्रेत्नारकत्र कि मश्रा थारक ना ? ना, त्यर थारक ना ? लाम्लिडी (पाट्य प्रश्नांत्र कार्या कि कथन कन्षिত हम्। (म वाक्ति नम्भे विनम् कि जामारित ल्यानत्रका इय नारे ? ना, षांगारमंत्र शार्वत्र दकान कमरवणी इहे-য়াছে ? ধর্ম সভত পবিত্র; চণ্ডালে धर्म कत्रित्राष्ट्र यरन धर्म कथन कि व्यथिक হয় ? আর এক বিশেষ কথা আছে; আপনি হুইশত টাকা দিয়া এই ধর্ম ক্রয় করিতেছেন; এ ধর্ম ত সে অপাত্তে থাকিতেছে না—ধরিদ করিলেই ধর্মা व्यापनारक व्यामित्यः अतिम ना करत्रन এ ধর্ম তাহারই থাকিবে। তুইশত **ोकात्र शानत्रका वफ् मछा।**

বুদা। কথা ঠিক বটে, তবে আর **छावा हिन्छा कि ? बाहेम, बामात्र मदन** षादेम, षामि यत्निहि मित, जान प्रमाथा इरेटव ना। ভবে कि जान इरेनंड টাকা—অনেকগুলা টাকা; কিছু কম नर्त जान रश।

জনাৰ্দন। তা আমি কি করিব; कान कलक नारे, लाटक कांटन माथ- आमि ज लहुट हि ना, जा रहेटल जान-

পূर्यभितिष्ठि गांजिनी। टेंड- निष्ठ मिनस्य करत श्रिष्ठ। (भन्न বার নিমিত্ত মাত্রিলী সুবার বেশে আসি-माहिन।

90

দূর হইতে জনার্দন শর্মা দেখিল মাধ-ৰীর মা দগ্ধ হইয়া প্রাণত্যাগ করিল। ভাবিল, 'ভৈত্তম হইয়াছে, আমার কার্য্য সিদ্ধ হইয়াছে, এক্ষণে মাধ্বীর সংবাদ भारेटनरे र्य।''आवाद जाविन,"गाधवीख त्रका भाग नारे, दकन ना त्मरे जभतिहिङ बाक्ति क्वितन वृद्धारक आत्र गाधवीत मारक वश्न कत्रिया व्यानियाटल, किन्ह माधवीटक क काटन नारे, माधवी करव কোথা গেল ? মাধরী অবশা মরিয়াছে।" মনে মনে এই আলোচনা করিয়া জনা-र्फन छेठिया विनिन। व्यास्नारम विनिन, "অগদীশ্বর আমার মনস্থামনা সিদ্ধ করি-ग्राट्म । प्रकारिक मित्रिग्राट्म । कनारे शिया मशाम निय, दमि दानी कि भादि-তোষিক দেন।''

এই সময় পূর্বক্থিত বৃদ্ধ আসিয়া जनार्फनरक जिल्हांना कतिन, " कर्फभांक वाकि य তোমাদের উদ্ধার করিল সে **(**₹ ?"

खनार्फन। त्म व्यामात्र পরিচিত বটে, षाणीय वरहे।

८काथाय ?

जनार्फन। • তা जामि विद्य ना ; व · नगरा जागात्र টाकात्र कथा वृत्न (शरमन । ·

त्रवी श्रेष्ठि छात्रिक्यन এই গ্রামে আপনারা কেছ তাহাফে চিনিতে পারেন, त्राधियोभन कतिरङ्घिन, গৃহদাহ দেখি· এই ভরে মে গায়ে মুখে কাদা মাথিয়া· हिन।

> बुक । आमरा छाटक हिनिटल त्ना्य फि १ जगर्मन। ताष এक ट्रे चाइ ; তा षाभनात जात खत्न काक नारे ; तम जा-गात्र विष्मिष करत्र निष्मिष करत्र श्राष्ट, जागि আর ভাহা বলিব না।

> বৃদ। ভাল আমরা ত কেহ উহাকে গৃহপ্রবেশ করিছে দেখি নইি।

> कनार्फन। शृङ्गाष्ट्रत शृक्ष इटेट के বাক্তি অন্তঃপুরে ছিল, নিতাই থাকে।

> বুদ। কিন্তু ঐ ব্যক্তি এ বাটীর কেহ नर्ह, এ वागिष्ठ श्रूक्षभाष्विहे नाहे।

जनार्फन। शुक्रम हिल ना, किन्न देपानीः জুটিয়াছিল, আমরা সন্নাদী,এরপ কতই দেখিয়াছি। সে যাহা হউক এখন आत जुरित ना, याशत जना जुरियाहिन এথন ত সে গেল।

বৃদ্ধ। তুমি কি বলিতেছ, আমি ब्बिमाम ना।

जनार्षन। (म मकल कथा गांक्; षापनात्र व्वाया काम मारे। यिनि मतिरमम, जिमि जाशनारमत किया जाश-নাদের গ্রামেরও কেহ ছিলেই না, শান্তিশতগ্রাম হইতে আসিয়াছিলেন। ियिन जामारमञ्जूषात्र कदिरलन, जिनिष् वृक्ष। উহার, নাম কি, নিবাস শান্তিশতগ্রাম হইতে আসিয়াছিলেন। (मरेशात्नरे जावात्र (गर्दनन। यावात

जगर्भन। वाक्षनि एव छोका नियन मण जा कि कि जात्न मा। বলিয়াছিলেন। এক একজন এক এক শত টাকার হিদাবে তিনশত টাকা ভাহার পাश्वना, তা আমি বলেছি যে, यागात हिमाव ছেড়ে দেও, यागि वाहि-রের লোক। হইশত টাকা ভাহার ন্যায্য পাওনা; তবু আমি আপনার হয়ে वलिছि (य, এक अन ७ मत्त्र (भंना। তা দেগুনিল না; দে ৰলে "আমি ত উদ্ধার করেছি, তার পর কে এখন জলে **जू** व मतिर्व, कि शनाश मिष् भित्रा मतिरव, তা আমার কি ?"

বুদা। তা, তারে কাল আসিতে विषयिन (मथा यादि।

জনার্দন। আবার তাকে কেন ? তবে আমি বলিলাম कि? সে यদি আপনা-দের নিকট মুখ দেখাবে, তবে মুখে कामा गाथ्रव (कन, এই সোদ্ধা कथा আপত্তি বুঝিতেছেন না?

वृक्षा। वृत्यिष्टि, किन्छ भ वाङ्गि धमन धर्मिष्ठंदलाक, धगन वीत, दम जागामित्र निक्रे दक्त मूथ (प्रशाद ना १

क्रमार्फन। के त्य विद्याम, त्य यू-বতী এইমাত্র ভঙ্গ হইল, উহার নিতান্ত অমুরোধে পড়ে এ গ্রাম পর্যান্ত মে এসে-हिन, তাতেই ভদ্রলোকের ছেলে ল-জ্ঞার মরে গেছে। কিন্তু শান্তিশতগ্রামে (यथारन উভয়ের বাড়ী সেথানে উহার

বুদ্ধ। কোন্টাকার কথা? বীর মা কুলভ্যাগিনী হয়েছে, কিন্তু কার

द्व। धमन भाभिष्ठेटक यामि क्यां ह পারিতোষিক দিব না।

खनार्फन। दकन मिर्दन ना ? পार्शिक रहेल छाका मिर्वन ना अग्र उक्था हिल ना। (य উদ্ধার করিবে ভাকেই জাপনি টাকা দিবেন, এই ত কথা ছিল। হলই वा भि निष्य भाषिष्ठं, निष्युदेशादकत्र कि मन्ना थाटक ना ? ना, दन्न शिक ना ? लाम्भेडे। (मार्य प्रयात कार्या कि कथन কলুষিত হয় ! সে ব্যক্তি লম্পট বলিয়া कि आयामित खानतका इस नारे ? ना, व्यागामित व्याप्तित काम कमरविभी हरे-য়াছে? ধর্ম সভত পবিত্র; চণ্ডালে ধর্ম করিয়াছে বলে ধর্ম কথন কি অপবিত্র হয়? আর এক বিশেষ কথা আছে; আপনি হুইশত টাকা দিয়া এই ধর্ম ক্রয় করিতেছেন; এ ধর্ম ত সে অপাত্তে थाकिएए ना- थित्रम कित्रिंगरे धर्मा व्यापनाटक व्यामित्तः अतिम ना करत्न এ ধর্ম তাহারই থাকিবে। তুইশত টাকায় প্রাণরকা বড় সন্তা।

वृक्षा। कथा ठिक वर्ष, जरव जात ভাবা চিস্তা कि ? আইস, আমার সঙ্গে षादेम, षाभि बल्लाह्यिन व, जान प्रमाथा इरेटन ना। जटन कि जान इरेनज **ोका**—जातक शना होका; किছू कम नरेल जान रम।

জনাৰ্দন। তা আমি কি করিব; कान कलक नारे, त्लारक कांत्न माध- आमि ज लहुर हि ना, जा हरेल आंश-

এখন यॅमि चांभनि- সমুদর পুরা, রোক **डोका मा (एन, जा**शनाटक शर्म পতিত হইতে হইবে। আপদি ধর্মিষ্ঠ; व्यांभिन किन चाल्रत बना जाभगात धर्मात ক্ষতি করিবেন। বিশেষতঃ এ ধর্মা বড় अभागा न दर, इहे शकांत्र होका वात्र करते थ কেহ প্রাণরক্ষা করিতে পারে না; এ ঘটনা ত সর্বাদ্ধি ঘটে না, আপনার বড় দেহাবশেষ।" ভাগা তাই এই পৃহদাহ হইয়াছে, মাত। ছঃখিনী, অনাথিনীর দেহাব-**८** पश्ने (पश्चि धर्यात्र कि व्याण्डर्गा स्थला— একজনের পৃহদাহ হইল, আপনার ধর্ম-मक्षय इहेल !

যুদ্ধ। তবে আর কোন কথার কাজ নাই ?" **बक्टा** कथा चाह्य ; यिनि मित्रत्नन छिनि

জনার্দন। তিনি রামদাস শর্মার বিবাহিতা স্ত্রী-কুলটা ; রাজা ইন্তভূপের প্রেণী। আর অধিক পরিচয় জিজাসা ক্রিবেন না।

এই বলিয়া টাকা লইয়া জনাদিন চলিল। পথে আসিয়া একবার আন্তরিক होंनि हांगिया विनम, "(म (वर्ष) এখন কোথায়; আসিয়া দেখুক, ধর্ম্মের জয় কি পাপের অয়! আবার এ বুড়া বেটা धन्य किनिष्ठ हात्र ! हान क्लान **(करन, कारक्ट्र धर्मां छ किनिरन, छात्र छात्र** व्यान्ध्या कि ? धर्म छान नात्नत्र मरधारे वछ।"

नात जमूताय जामाम तालिए इरेड। शाति তायिक न्मरेट गारेत, এर मन করিয়া জনার্দন পূর্বকথিত অখথমূলে গিয়া বসিল। এমত সময় একজন দীর্ঘা-কার পুরুষ আসিয়া জনার্দনের অনতি-দূরে আদিয়া দাঁড়াইল। তথনও ক্র-চারিবেশধারিণী মাভন্সিনী চিতার নিকট माँ ए। देश हिना। मीर्घाकात श्रुक्य ভाराटक खेशनक कतिया विनन, ''এ यে नत-

শেষ।

দীর্ঘাকার পুরুষ মৃত্ত্বে বলিল,''মাত-ঙ্গিনি, তুমি অদ্যাপি শান্তিশতগ্রামে যাও

नारे, जूमि টাকা मरेमा यां ; किंख गांजिमनी हिनिन। रेव्हा जूमिशे र-हेग्रा अनाम करत, किन्ह कतिन ना। विनन, ''महाताम जाञ्चन, जात এक हू मृद्र शिया जकन कथा विन एक ।" দীর্ঘাকার পুরুষ রাজা মহেশ্চন্দ্র। মাত-शिनी किक्षि९ पूरत शिया बिखामा कतिन, "आপितिरे कि এইমাত্র গৃহবাসীদের উদ্ধার করিয়াছেন ? আপনি ভিন্ন এরূপ বীরত্ব আর কাছারও সম্ভবে না; কিন্তু তাহা হইলে আপনি এখনও দাঁড়াইয়া चाट्टन किज़्रि श्रामि च्राटक त्रिथ-রাছি আপনার পা হাত পুড়িয়া গিয়া-ছিল।"

गर्हमहस विलियन, "आमि मिवित इ-हेट अहेबाज जामिट हि, गृह्मार इ वृक्षां उ नक्ल आशांत्र वल; आभि किहूरे जानि ° রাত্রি প্রভাত হইলে শান্তিশত গ্রামে না।" মাত্রিনী আপনার জানামুসারে

चिंति मर्मिष्ठ छानित्नम, "এরপ রিয়া চলিয়া গেলেন; আমার বোধ এ অঞ্চলে কে আছে ?" তাহার পর এই কার্য্য করিয়া গেল। छोरांत्र जाकांत्रमचरक (कान हिरू पात्रन করিয়া বলিতে পার।''

মাত निनी विनन, " তিনি সর্বাচে কি লেপন করিয়াছিলেন, তাঁহার শরী- পুড়িয়া গিয়াছে, তিনি যখন অমন त्त्रत वर्व कि हिरू किছूरे वृक्षिष्ठ भाति कत्त्र आश्वामत छेभत भएए शिलन, নাই। তবে একটা কথা এখন আমার স্মরণ হইভেছে, যে তিনি আপনার মত मीर्घाक्ति कि विनिष्ठ नरहन।"

মহেশচক্র। তিনি কাহারও সহিত কথা কহিয়াছিলেন ?

निर्मारवत्र मर्था कत्रज्ञानत श्रीगत्रका क-

বীরত্ব কে করিয়াছে? এরূপ লোক হইল,যেন ঝড় আসিরা মানুষের রূপ ধরে

মাত সিমীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "তুমি মহেশচন্তা। তুমি না বলিতেছিলে তাঁহার অঙ্গের হুই এক জায়গা পুড়িয়া গিয়াছে ?

> মাতলিনী। নিশ্চয়ই তাঁহার অঙ্গ তথন অবশাই ভাঁহার অঙ্গ পুড়িয়া গিয়াছে।

মহেশচক্র। তবে নিশ্চয়ই আমি তাঁ-হার অনুসন্ধান করিতে পারিব। এখন আমি যাই; আমার সহিত আবার मांजिनी। नां, একেবারে নাं, তিনি সাক্ষাৎ না হইলে যেন শান্তিশতগ্রামে यां अत्रा ना इत्र।



(यादिश्रंभा ।*

যোগেশ-গ্রন্থকার বঙ্গদর্শনের পাঠক-वर्शित निकृष्ठे व्यथितिष्ठि नर्द्दन ; वर-সরাধিক হইল, আমরা ভাঁহার চিশ্ত-মুকুর নিশ্চিত বলিতে পারি, যে ভাঁহার যখের ममालाइना कतियाहि। ७९काल था-মরা ভাবিরাছিলাম, যে এই কবি এক যোগেশ একথানি কাব্যোপন্যাস---

ममरम विष्यं यथनी इटेरवन, अकरन ভাঁহার যোগেশ পাঠ করিয়া আমরা স্ত্রপাত হইয়াছে।

किमानहस यत्माभाषात्रियगैछ। ৮৪ नः त्राधा-***** যোগেশ कावा। বাজার কলিকাভা প্রেসে মুকর্জি কোম্পানির হারা মুদ্রিত। मुना > धक छोका।

वाम्भ मर्ग विञ्का श्रह्त नाग्रदकत নামে গ্রন্থের নামকরণ হইয়াছে। যো গেশ ধনবানের পুত্র, স্থানিকত, সকল-প্রকার সদ্গুণশালী, কবিহাদয়, রূপবান্। কিন্তু দৈৰ্ঘোগে তিনি তাঁহার অতুল-গুণসম্পন্না পতিপ্রাণা ভার্যা। নর্ম্মদার গভীরপ্রেম তুচ্ছ করিয়া, তাঁহার বাল-বন্ধু-পত্নী মন্দঃকিনীর প্রতি অহুরক্ত इरेटनन। गन्नाकिनी (यार्गमटक मरहा-मरतत नामा (मिरिजन, छै।इ। क (महे মত रे (पि थिटिंग नाशित्न । रेगम (या-राम वहे अन्याभारन गृहन्या भूर्यक অতি শৈশব একমাত্রপুত্র, মাতা, लाजा, जी, जकनरे जूनिया— সমুদ্রতীরস্থ टिअवनामक अक् शर्वाङ किवन मना-किनीत्र थान कत्रिष्ठ नागित्नन। त्यार्भः শের শরীর ক্রমশঃ ' শ্মশানে প্রো-থিত জীর্বংশথও মত" হইয়া আসিল। এইখান হইতে গ্রন্থারন্ত হইরাছে।

विकारिकारिकार मनाकिनीमक्रक স্বপ্ন দেখিয়া যোগেশের নিদ্রাভঙ্গ হইল। স্থোখিত যোগেশ চমকিত হইয়। নি जारक मरबाधन পূर्वक चन्न हु ममछ वृञ्जाञ्च काञाञ हत्क (मथाहेत्क विलित); निजा (यार्गमरक अक्षृष्ठे वृखास (मथारे-লেন। তাহা চাকুষ হইবামাত্র যোগেশ

इहेल, जियः श्लाशिष्यं छातृभ व्यवशा দুষ্টে বাথিতান্ত:করণে তহিকে বংক ज्लिया जाभनात क्षीत नहेया (शल। (मथारन शिया वााध (यार्गमरक তাহার পরিচয় জিজ্ঞাসা করিল, কিছু (यार्गण (म कथात्र कान छेखत्र ना मित्रा वाास्त्र अञ्जादम उमारखन्न नाम " अहे जागात की वन" वित्रा जाकारणंत्र मिरक षात्रुनी निर्फिण कतिएक नागि-লেন। বারম্বার ঐরূপ করাতে ব্যাধ निर्मिष्ठे श्राथ पृष्टि निरम्भ क्रिया, ७९-(मिथि ा भारेन ना— या भिष्य का-वशाय (काथाय हिना शिया एक न। वाध বিসিত হইয়া দাঁড়াইয়া আছে, এমন সময়—

শিশু পুত্র শবরের আসি পার্শ্বে তার ডাকিল ভাহায়"বাবা !"—সিহরিয়া ব্যাধ হেরিল পারশে পুত্র, ভুলিয়া সকল লইল সম্ভানে বক্ষে হাসিতে হাসিতে। वााधित निक्षे इहेट जानिया, এक मन ভৈরবপর্বতের গুহায় যোগেশ উপবিষ্ট আছেন, এমন সময় তাঁহার মৃত পিতৃ আতা উপস্থিত হইলেন। তিনি পুত্রকে বলিলেন, ভাহা গম্ভীর মেঘ-নির্ঘোষতুলা, পাঠকালে শরীর রোমাঞ্চিত গভীর কাতরোক্তি করিয়া মৃচ্ছিত হই- হয়, অণচ করণরদে আপ্লুড— অস্ত-लिन। क्रमभः প্रভাত হইল, যোগেশ তল ভেদ করে; সে কথাগুলি অতীব চেতনা পাইয়া পড়িয়া আছেন, এমন দীর্ঘ, কিন্তু আমরা পাঠকবর্গকে তাহা সময় তথায় এক ব্যাধ মুগয়াবেশে উপস্থিত না দেখাইয়া থাকিতে পারিলাম না—*

[&]quot; এই পুস্তকে উদ্ভ করিবার বিষয় অনেক আছে, কিন্তু স্থানাভাববশভঃ ভাহার অধিকাংশই উদ্ভ করিতি পারিব না।

"আমি পিতৃ-আত্মাতব — প্রেতপুরে আজ लियि हिमाम श्वार टेव उन्नी-जीत्त, ভাগ্য প্রেভদনে দেখা;—হেরিয়া আমীয় কছিল সৈ বাঙ্গ করি 'তনয় ভোসার इ'राइ अहु ज की व यागात क्र क, ভৈরব পর্বতে এনে খাপদের সনে বিহরিছে, পরিহরি আত্মপরিজন। জীবনের সূত্র তার দিয়াছি ছিঁ ড়িয়া আশা, স্থতি, স্থ্য, তার ত্রাশার স্থোতে, এমনি কৌশল করি করেছি বেষ্টন, জাগ্রতে নিদ্রায় তাহে মগ্ন অমুক্ষণ।' কি ছুরাশা ! ভাবিলাম জীবন ভোমার— পরিহর জীবলীলা আসিত্র যথন, নিভান্ত কৈশোর তুমি,—জননী ভোমার (भारक ऐना। मिनी । जाश क उरे का मिन ধরিয়া চরণ মম; ভগনী ভোমার ध्वाय পড়িয়া বালা, ''বাবা বাবা'' বলি কাঁদিল চীৎকার করি, সহোদর তব ष्यक्षभूर्व (नाव हाहि वमरन षागात विषारित चाकृत र्'रत्र तरिल माँ पारता। जूमि—(म गमम नाहि व्वारम कि रभाकः कैं। एम भागा, कैं। एम जागा, कैं। एम जशी, (इति कॅंगिलि भात्रभ विति मुम्बू भगाति। किनिष्ठे मञ्जान विन (जामाम अधिक বাসিয়াছিলাম ভাল, দেখিতু চাহিয়া व्यानज भवनकारम वादवक दंगानाव (त्रह गांशा मुश्शानि,—जश्चिम हिन्दाप्र উদিল স্মরণে মম, 'कि করিমু তব १ তরঙ্গসঙ্গুল এই ভীষণ সংসারে ष्यत्वाथ मिखरत ष्याद्य ! ष्यमाण कतिका **हिन्द्र (कमरन'—इःरण अतिल नम्रन** ।

जाकि मर्शामदा जव, कत धति जात— ভোমার যুগল কর রাখি ভার করে, किञ् मखनाति — 'त्रिन शातिमं— ष्यदाध मञ्चान वाष्ट्रां, জात्म नां, উश्रा পণের ভিথারি করি কবিমু প্রায়ার ; পালিও উহারে বংস!—যতনে তোমারে দিয়াছি বিপুল শিকা,—কৃতী পুত্র তুমি, पिथिख (यार्शम (यन कीवरन উश्व क्रिण गाहि शाय कज्,'—विनिष्ठ विनिष्ठ জীবতারা অস্ত গেল; তদবধি আর (पिथ नाई, ভाবि नाई (छात्राय कथरना, मद्राख्त कान िष्ठा कार्य नाई गरन, শুনি ভাগাপ্তেত কথা হইল বাসনা দেখিতে বারেক মম পার্থিব ভবন। গেলাম তথায়—কিন্তু নির্গিন্থ যাহা প্রেত্রাত্মা মম তায় হৈল বিচলিত। वियादम পूर्वित त्महे डेक छो। निका, উত্তপ্ত নিশ্বাদে পূর্ণ প্রন তাহার, षाष्ट्र कि ना षाष्ट्र छ्या नरतत वम्छि ट्टिति (म नी तव शृष्ट इस ना धात्रना। অগ্ৰন্ধ তোমার সদা বিষয় বিষাদে, শাখাহীন তরু প্রায় গিয়াছে শুকায়ে, आहीना जननी उन कांत्रि कवित्र . হারায়েছে চক্ষুঃ হুটী,—ভুত্তল শ্যাায় পড়িয়া সতত শোকে; ভগিনী ভোমার मङ् विषक्ष इरथ मामत वितर । আর—পরিণীতা সেই রম্ণী তোমার कि बिनव !— (म प्रभाः हिछ विमातक ! विकंठ भोवना वाला स्वर्णं कृत मारूण एडाटम (पर शिवाद एकार्य, अम्झ भन्न मूथ उति कार्ड (मन

रहेश्वारक मक्तिक, देश्वन भनीत मृणान (म जूजनणा--- मिन विर्दन जज़ाद्य एकाद्य रचन পড़िया ब्रह्म । চম্পকের কলিমত শিশু পুত্রটিরে कारमा क दिया वाहा, निर्कान व्यक्तार है शवाटक विभिन्ना भना চाहि প्रथेशात्न। निष्य भी जांकू अभय छेख अ मिनन উथिनिष्ट चित्रिक, भिखि ि जारात ट्टरत्न चाट्ड चनिमिष्य मारत्रत्र वण्टन, थूनिशाह অভাগিনী অঙ্গ আভরণ मध्यात हिर्माण (त्रस्ट ननारि ক্ষীণ রেখা সিন্দুরের পরম যতনে। काथ, क्यां**ड, यू**जंभं डेनिया यानस्म প্রেত আত্মা বিচলিত হইল আমার। (म कक्न मृणा नित्व नाविस महिष्ठ 'ভোমার উদ্দেশে ক্রত আসিত্র এখানে '' "यात्त्रम।"शङीति हात्रा कहिला व्यावात्र, "বড় আদরের পুত্র আছিলে আমার প্রাচীন বয়দে মম অন্তিম জীবনে ছিলে তুমি একমাত্র আনন্দ পুতলি, कछ जामा উছिनिত श्राद्य उथन ट्रित्रिया ट्यामात्र यूझ यहन कमल ! ভাবিতাম জগতের যা কিছু পবিত্র या किছू जानम खरव, या किছू वामना, जकिल जमष्टि कति, मग्रावान-विधि তোমা (इन পুজনিধি দিয়াছেন মোরে। विष्ता, थम, यभः, मान, श्रा, मवि माध कतिरव मक्षत्र जूभि जीवन विकारण! माधिष्ट कि এই ভাবে जनम जीवरन? कनमपाणांत थान भाषिष्ठ कि ज्याक,

निज्ज धरात्र कि तथम उनामत्म १ প্রেম পুন কার? ছি ছি-শত ধিক তোমা পরের রমণী থেই পর প্রণয়িনী কলুষ হৃদরে তারি কর উপাসনা? পিতৃ-আত্মা আমি তব রাশ বাক্য মম 👵 ভবনে ফিরিয়া যাও,—হেরিয়া তোমারে কুতান্ত-ক্বল নাম্ভ জননী ভোমার শুক সর্বলতা তব পদ্মী অভাগিনী এখনো বাঁচিতে পারে, নতুবা এ শোকে— श्रित्रकन वित्रहत्र माक्न यञ्जना নর পিশাচের তব নির্মাম অন্তরে नाहि दम अञ्चू ७ — अमानन (मारक गांजा भन्नी लांजा लबी जाकित बीवन। এত কষ্টে এত যত্নে জীবন দশায় रुक्ति । ছिलाम (यह स्टब्स मःमात কুপুত্র আমার তুমি জারা মম কুলে নিবি বৈকে করিভেছ শ্মশান ভাহায় ? ধিকৃ শত ধিকৃ তোমা ! পাষাণ অস্তরে कारंग ना कि এक वात्र, भए जा कि मत्न १ जननीत (म मगठा, जिनित (मरू, भागरतत कानवामा, भन्नीत व्यवस् श्रुपाय प्रकारिय थे एवं प्रकार भानिना जननी जन, मित्र कि (भार्य ভোমারি দংশনবিষে?

তোমা হেন পুত্রনিধি দিয়াছেন মোরে। এই বলিয়া প্রেডআত্মা বোগেশের বিদ্যা, ধন, যশঃ, মান, পুণা, সবি সাধ শোকাত্রা মাতা, স্ত্রী, জগিনী ও করিবে সঞ্চয় তুমি জীবন বিকাশে! ভ্রাতার তৎকালিক চিত্র শুন্যে জনসোৰ আমার পুত্র!—সে চিরবাসনা— হিত করিয়া পুত্রকে দেখাইলেন। সাধিছ কি এই ভাবে অলস জীবনে? চিত্রগুলি প্রশংসার যোগ্য। শেষে জনমদাতার ঋণুশোধিছ কি আুল, একটি ঘর দেখাইলেন, তাহাতে যো-

त्भिण विनिष्ट्रम, ७ ভাছাই ভাঁছার পাঠ-शृष्ट हिन। दिनान हिजानुरहे याशिम श्रुक्त वत्र एवर योग विकार काल द ?'' অত্যধিক কাতর হন নাই, কিছ এই শেষ চিত্তের অত্যধিক আবেগবলতঃ চিত্ৰ দেখিয়া তিনি উন্মন্তর नाम অতিশন্ন আক্ষেপোক্তি করিলেন। যোগে-(भत्र (म याजना चांजाविक इरेग्नाटह। পরে যোগেশ পিতাকে আপনার ভবি-यार जिल्हांमा कतिरमन, উতরে প্রেত যোগেশকে যথোচিত তিরস্বরণপূর্কক স্থপথে যাইতে অনুরোধ করিয়া স্বধামে প্রস্থান করিপেন।

এই "পিতৃ-আত্মা" শীৰ্ষক সর্গের कद्मना स्कार

मका। रहेग —

मिवाकत अख्यान धूमत वत्राव थी। त थीरत श्रेरण एक ध्रक्ति मिनन, স্থার পশ্চিমে যথা সীমান্তে ধরার মিশিয়াছে নভন্তল—আরক্ত তপন অনল গোলক মত নামিতেছে ধীরে। তপনের নিম্ভাগে স্বর্ণের ছট। পড়েছে ছড়ায়ে চূর্ব জলদের গায়, **मिवाक्रत मञ्जाबिय नहेर** (यन वा স্বর্গের স্থ্রপ্রার খুলিছে অমর। ধূদরবরণা মহী উচ্চতক্ষ তার, म्नार्खनी भितिमृत्र, मागत छिनी, विवश्व ভাবেতে বেন মেলিয়া নয়ন ८मरे त्रवि अख्यारन त्रद्यार ठारिया

धमन ममरम रेखन्य भर्कर्डन স্থান হইতে ''রমণীর মন বিধি কেন এত ইত্যাদি শব্দে গীতধ্বনি উঠिन; গীত থামিলে যোগেশ আপনা আপনি ৰলিতে লাগিলেন,

"त्रमनी श्रम एक । एक थिय एम नाजी ? উক্তরাণ তুই চারিটি কথা চীৎকার করিয়া বলিলেন, তাহা পর্বতবাসিনী ° এক ভৈরবীর কাণে গেল। প্রোক্ত সঙ্গীত-গ। बिका जिनिहै। ८ महै निर्फात या रिशार्श-শের স্পত্তোচ্চারিত কথাগুলি সহস৷ শুনিবা-गार्व रेखत्रवी छोहा मत्न गत्न चात्नाहना कतिर छिएनन, এমন সময় পূर्स्त পরি-ব্যাধ তথার আসিয়া, যোগে-শের সহিত তাহার সাক্ষাৎ ও বোগে-भार व्यक्ता र अया र क्या र कर र कि इती र क শুনিবামাত্র ভৈরবী ভচ্ছুভ চীৎকার যোগেশক্বত मत्मह कत्रिया वा। विषय विषय विषय । द्यार्गिक मकानार्थ (मोज़िल। टेज़्रवी छाहान বাসগৃহে—ভৈরবনামক শিবমূর্তি-প্রতি-ষ্ঠিত এক মন্দিরে—প্রবেশ করিলেন।

ক্রমশঃ রাত্তি হইল, পৃথিবী অন্ধকারা-বৃতা—

डीयना यामिनो एयन एम् विद्यात्रिया পড়িয়াছে শৈল অঙ্গে চাপিয়া হৃদয়। **এমন সময় যোগেশ** ব্যাধকর্ত্ব ভৈরবী-मगीरभ जानीज दहेरनन। टेखबरी कथाव কথার বোবেশের ত্ঃথের কারণ कानित्वन। পद्र यात्रिभद्क एषाक मिवात खना भवना कतिया विलित्नन, (य (यार्त्रात्मंत्र शत्रकत्य मन्नाकिनी छै। हात्रहे পরিণীতা হইবেন। অনম্বর যোগেশের পাপথওন নিমিত্ত অষ্টাহ ভৈরবদেবের

পূজা করিবেন ইত্যাদি বলিয়া, যোগেশও भवदरक च च छाटन याहेर् विनित्न। কথা ভাবিতে ভাবিতে ভৈরবীর নিজের জীৰনের অভীত ঘটনা সনে পড়িতে नाशिन; ভাহার পর ভৈরবী যোগেশের বাটীতে তাঁহার সংবাদ স্বয়ং দিতে ক্লত-সম্বল্লা হইলেন; আবার ভৈরবীত্রত ত্যাগ করিয়া আপনার বাটী ফিরিয়া यादेवात कथा कछ ভाবিলেন।

ভৈরবীর নিকট হইতে আসিয়া যোগেশ পর্বতশিধরে দাঁড়াইয়া প্রকৃতির শোভা দেখিতে ছিলেন। তাঁহার— मछक-डेপরে শ্না অনন্ত বিস্তারি ক্ষীরোদ সমুদ্র মত কিরণে ভাগিছে। भम्छटन देननगाना ऐठिया পড়িয়া নেত্র-পথ অতিক্রমি হয়েছে ধাবিত। (यार्गम "मनाकिनी" व-সহসা लिया **ही एकां क्र किया है किला ।** त्म हे নিস্তব্ধ রাত্রিকালে সে চীৎকার চতুদি কৈ প্রতিধ্বনিত হইল। সে প্রতিধ্বনি আ। মরা যেন এখনও শুনিতেছি—

শূন্য গগনের বক্ষে কঠোর শবদে ছুটিল সে ভীমরব অনস্ত আকালে। সাগরে পড়িয়া রব তরক্তে তরকে **हिन्न हिल्लाल जा**कि जाकून मिल्ला। উঠিয়া পড়িয়া শৈলে প্রভিধ্বনি করি ছুটিল সে ভীমরব সীমান্তে গিরির। পল্লবে প্লবে বুক্ষে শিখায় তৃণের कड़ारंत्र कड़ारंत्र तय हूरिन शास्त्र । - ध्यम नगर जागा (यार्गरभूत नगूरभ

উপস্থিত হইরী যোগেশকে বলিলেন, যে ভাঁহার জীবন ঝার অধিক দিন ভাহারা চলিয়া গেলে যোগেশের স্থায়ী নহে, অতএব যোগেশকে আজী-क्न कहे भिन्ना जिन छ। शत এकि অন্তিম বাসনা পূর্ণ করিছে शक्क बाह्न। (यार्गिण (कंवल मन्तर्-किनीएक (पश्चिष्ठ हाश्टिलन, आंत्र मनाकिनो कथन ७ छ। हारक ऋत्र करत কি না, তাহা ভাগাকে জিজ্ঞাসা করি-(लन। छात्रा विलित्नन, "मना (म कथ। कथन ७ ভाবে ना, यि । त कथात हाग्रा-মাত্র কথনও মলার মলে আইদে, তবে তখনই ভাহা নিদ্রিতকর্তৃক বক্ষবিক্ষিপ্ত সরীস্পবৎ অপস্ত করে।" তথন क्लांटि यार्गण यादा विनातन, जादारि তাঁহার প্রণয়ের "নিঃম্বার্থতা" ছত্তে ছত্তে প্রতিপন্ন হইতেছে—

> ''তাও জানি'' धौरत धीरव कहिला यार्शण "७५ व्यथनम् नाहि करत्र मनाकिनी ভূজন ভাবিয়ে মোরে করে পরিহার। তথাপি আমার এই নিভূত অন্তরে (त्र १ हि चनस (श्रेम मनाकिनी जरत । সেভাবে পাপাত্মা আমি—পাশব পিপাসা করিবারে চরিতার্থ অমুরক্ত তার। (महे छ्थ--(महे घृषा--(महे लक्का यय, (मरे हिसा जर्मिण जस्त जामात्र मः भित्रा (भाविक्रम् त्राय्ह मि**भि**त्रा। व्यिजिमान नाहि मिन नहि छूथी छात्र, ত্ণী শুধু তার সেই দারুণ মুণার। ष्यामा ज्या विमर्जिया मसन नयरन পদ প্রাত্তে পড়ি ষবে কছিলাম তায়;

"ক্লপের ভিথারি নই—নুহ যৌবদের
দর্শন পর্শনে তবু নহি অভিলাষী
শুধু এই হৃদয়ের—হৃদয় ঢালিয়া
উন্মন্ত সামক মত, নিঃস্বার্থ প্রণয়ে
বাসিয়াছিলাম ভাল অন্তরে অন্তরে।
আঁথির মিলনে কিম্বা মুথের বচনে
আশাতীত প্রতিদান হইত আমার।
তাও কি কঠিন এত ?—ভাল একবার
কহ দেখি অন্তরেও ভালবাস কি না।"
কিন্ত যে উত্তর তার করিলা পাষাণী
মর্শান্থলে আ্রজা তাহা রয়েছে বিধিয়া।
এত যে কঠিন মন্দা আমি কিন্তু তারে
স্থাপ্রোভিম্বনী বই ভাবি নাই কভ্।

তাহার পর যোগেশ মন্দাকিনীকে আবার দেখিতে চাহিলেন, ভাগ্য তাঁহাকে অনেক ভিরস্কার করিলেন; যো-গেশ ঈষৎ হাসিয়া ভাগ্যকে "অন্নদী-দেবতা" বলিয়া গালি দিলেন, তখন ভাগ্য উচ্চহাস্য করিয়া বলিলেন,

"ভাগ্যি আমি—চিরবৈরী যোগেশ ভোমার ভোমা প্রতি স্থাসর নহি আমি কভু; ভবে যে কহিমু এত ছলনা কেবল। লাভালাভ ছলনায় নাহি কিছু মম আমার স্বভাবি হেন ব্যথিতে ত্থীরে। ভাই ভর্পনার ছলে স্বৃতি পথে তব আলিয়া দিলাম ভীত্র যন্ত্রণা ভোমার।

পরে ভাগা মন্দাকিনীর চিত্র দেখাই-লেন; ভাষাতে ভাগোর কষ্টদারক প্রবৃত্তি বিশেষ পরিস্কৃততা প্রাপ্ত হইয়াছে। চিত্রতী ভামরা উদ্ভ করিলাম, এই চিত্র ঈশান বাব্র কল্পনা শক্তির বিশেষ পরিচয় দিতেছে—

ৰামবাহু পতিকণ্ঠে করিয়া বেষ্ট্রন স্থাপিয়া দক্ষিণ কর পতির হাদয়ে হাস্য বিক্ষিত মুখে চাহি পতিপানে कति यूक् (श्रमानाभ हल यनाकिनी। যোগেশ সে চিত্র হেরি শিহরি উঠিয়া जिष्ड मतारेया निन भिष्टिय वनन। व्ययनि शिमग्रा जागा পশ্চিম প্রাস্তরে यारगरभत्र निज्ञ । यार्थि श्राणिना। श्रुवरव मदारत्र निव र्याराभ वनन शित्रा शांभिना छागा तम हिळ পूत्रत्। উত্তরে যোগেশ ত্রস্তে স্থাপিলা নয়ন, উচ্চে হাসি ভাগা চিত্র স্থাপিলা উত্তরে। অবনত করি আঁথি চীৎকার করিয়া কহিলা যোগেশ'আর চাহি না দেখিতে৷'' "(एथ (एथ''क्टि जागा भूनः (नजभर्थ श्रां भिना (म हिज् शमा कित्र हैटेक: यदा। অবশেষে তুই করে আবরি নয়ন यোগেশ পড়িল বসি"মन्ताकिनौ" वलि। তবু नाहि পরিত্তাণ, ভাবিলা যোগেশ अञ्जू की ভाशांत रयन धति मनाकिनी করিতেছে আকর্ষণ দেখিবার তরে। পতি পত্নী হুইজনে হুই শ্রুতিমূলে ज्लार्भ कति उर्छ दयन करह''मिश्र मिश्र।'' উर्क अमातिया वाङ् मूनिया नयन मकालिया कत्रवय—मर्ग्याजनी चरत কহিল। চীৎকার করি যোগেশ তখন "কোথা ভাগ্য কোথা ভূমি ক্বপা করি **८गा**दत

क मृभा नम्न र'ए कन्न जभक्छ।" भूना र'ए जीम वस्का रहेन ध्वनिज "যোগেশ যে চিত্র আন্ধ করিলে দর্শন
অহকণ স্বৃত্তি, তব দগ্ধ হবে তায়
কি জাগ্রতে কি নিদ্রায় শোণিতের সহ
এই স্পর্শ মিশে রবে মর্মান্থলে তব।
কল্প কর স্বৃতি—কিম্বা ভগ্য কর হাদি,
এ স্বৃতি জীবনে তব নহে অপনেয়।"
বলিতে বলিতে ছায়া আকাশে মিলাইয়া
গেল, যোগেশ সৃচ্ছিত ছইলেন।

र्यार्गम এইরূপ যন্ত্রণা পাইয়া জীবন काठोहरू नागिर्गम। এक प्रिन-চক্রকরে বিভাগিত অকুল জলধি धू-धू कतिराउ ए धु अभरनत माज (यार्शम यञ्जनाम क्षम माजा नम्य क. অনম্ভর জগৎকে সম্বোধন পূর্বক মর্মা-वाथा खानाहेरलन। ममर्तिमनाम कविछ मरशाधन कतिश्रा অনেক **প্রকৃতিকে** কথা বলিলেন; সে সকল অতি হুক্র। যোগেশ কাতরোজি করিতেছেন, এমন সময় যোগেশের ছারারপী পিতৃ-আত্মা পুত্রকে আবার দর্শন দিয়া অনেক अञ्घाश कतिरान। याशिक रम मव কথার উত্তর দিতে দিতে বলিলেন— किन्छ भिजः! भाति करे व्याट शमरत्र! হৃদয়ের ছায়া মম মুছিবার তরে, কি যত্ন না করিয়াছি—বুঝাতে হুদর कि वाथा ना महिमाहि, मिवम यामिनी পাপ পুণা ছই স্ৰোভ উন্মন্ত ভৱকে আছাড়িয়া ৰক্ষে মম গিয়াছে বহিয়া, षाज প্रजिषारण हिख रुप्तरह विकल, त्राक त्राक चराक स्वाविक, किन्न के भातिगाम मूहिए एम हामा!

আর যে পারি না পিতঃ! আর যে সহে
না,
এ প্রাণ বহিতে আর পারি না যে আমি;
দিবানিশি বুক যেন উঠিছে ফাটিয়া,
তবু যে জীবন নাহি হয় বহির্গত,
বহ্নিম্থী ভূজনিনী জলস্ত দংশনে
নিরস্তর দংশিতেছে অস্তর আমার।
এ জীবন আর আমি পারি না বহিতে
লহ—পিতঃ! পদপ্রাস্তে তাপিত

मखात्म।

যোগেশের এবত্থকার কাতরোজিতে
সে প্রেতহৃদয় উদ্বেলিত হইয়া উঠিল; তিনি করে ধরিয়া যোগেশকে
উঠাইলেন, ও যোগেশের জীবন নিতান্ত
হর্জিসহ বৃঝিয়া সেই দিনই ক্লতান্তের
নিকট পুজের মৃত্যু যাক্রা করিতে প্রতিশ্রুত
হইলেন, এবং আগামী কলা প্রাতে যোগেশের দেহত্যাগ ইইবে বলিলেন। জনস্কর
প্রেকে, জনেক সান্ত্রনা করিয়া ছায়া
মিলাইয়া গেল।

रयार्शम मित्र दिन—मित्र येखनी, क्ताहेरव—छिनिया योशिएम हर्ष हरेन।
मिन क्ताहेन मान कित्रया योशिम
कर्ताहेन मान कित्रया योशिम
कर्ताहेन मान कित्रया योशिम
कर्ताह जानिया । जरममूनय किविद्यवाक्षक। जाहात नित्र नानाध्यकात विज्ञीसिका योशिम नत्रनाशाहत हरेलि
नाशिम ; क्ष्र्र विश्वन विश्वन विश्वन विश्वन विश्वन
हेरेन, जिनि छेयाख्य मुक् रेमकरक
क्षिया द्यारिक मानिरम्न।
क्षित्र योशिस व्यक्तिया कित्रमा

কিয়দিবস পরে তাঁহার মাভা প্রাণ্ড্যাগ कतिरमम। नर्जाम् शिकामस्य जामिया थाकित्न। मनाकिमी नर्ममात्र পिতृ-(ममञ्रा। डीहाता उछ एत्र वानमधी, वदः टेमीन खनम উভয়ের হাদয়েই তুলারূপে वक्षम्म। এकिमिन मनािकनी विषव्क পড়িতেছিলেন, এমন সময় নর্মদা তথায় चानित्नमः, जथन कवि घ्रेक्षत्नत्र क्रियर्गन করিবার জন্য পূর্ক্গামী গ্রন্থকারগণের ष्यञ्जवन कविया जवश्वीवनाना कवित्वनः; वनाणि सुनाद इहेबाएह, हेहाएड कवित क्षारयत जिल (पती भागान तिश्वारक । चा-মরা রূপবর্ণনাগাত্র উদ্বৃত করিতেছি— इरेंगे स्मत्रमूखि—इरेंगे यूवजी (योवन-छम्।। इह विकठकूस्म, भूषनारे ज्ञापवडी; किन्छ गनाकिनी छेषात्र मीहात-(धोड श्रमूझ निमनी मरल मरल श्रिश्वकां छि পড়েছে विकालि অমুরাগে ফীত বক্ষঃ গরবে উন্মুধ। माम्राट्यत र्गाम्यी निष्टां नर्माता, সন্ধৃচিত দলগুলি অবনত মুখ क्षत्र शहरव छाका स्वगा जक्षे। मनाकिनी वगरखन जूत मरनाकृश निम। एचत मधका खिक्यूम नर्यम। মন্দাকিনী শরতের পূর্ণিমার শশী ८ इमरखन चलामी मनाक नर्माता। मनाकिनी ट्यिमिटकत्र व्यथम चर्मन, নৰ্মাণা আয়াসলক বিরহীর স্বৃতি। मनाकिनी एजनिनी जनम निक्र নৰ্মদা অবনী পৃষ্ঠে সঙ্কিতা ব্ৰত্তী।

নর্মণা আসিলে মন্দাকিনী সংস্কৃতি তাঁহাকে আপনার পার্ছে বসাইয়া অভাগি-নীর হ্রদৃষ্টভাবিভেছিলেন; সহসা যোগে-শের শেষলিপি মনে পজিল, অমনি মন্দা-কিনীর কোমল হাদয়ে গর্কাসংমিশ্রিত কো-ধের শিখা প্রজ্ঞলিত হইল; মুখে 'প্রতা-রক!'' 'বোগেশ এই কি তব নির্মল সেহ'' কথাগুলি নির্গত হইল। নর্মাণ ভাবিলেন, যোগেশ তাঁহার এবস্থিধ হর্দিশা করিয়া গৃহত্যাগী হওয়ায় মন্দা-কিনী তাঁহাকে অমুযোগ করিতেছেন। অমনি নর্মাণার চক্ষে তাঁহার আন্তরিক-ভাব ফ্টিয়া উঠিল—

সেই দৃষ্টি তার যেন কহিল কাঁদিয়া
"মন্দাকিনি প্রাণেশেরে নিন্দিও নাজার।"
নর্দান দীর্ঘনিশ্বাস ত্যাগ করিয়া
বলিলেন—

"কেন নিন্দ মন্দাকিনি প্রাণেশে আমার? তাঁর কিবা অপরাধ ? আমি অভাগিনী! আমার অদৃষ্টে বিধি না লিখিলা স্থধ। নহিলে—তেমন পতি—মূর্ত্তমান্ দেব কেন হইবেন বাম অভাগিনী প্রতি। অবশ্য আমারি কোন ছিল অপরাধ! কি শাস্ত্র না প্রাণেশের আছিল অধীত ? কি গুণ নাথের মম না ছিল সজনী ? কত মিষ্ট কথাগুলি, কেমন স্বভাব, মৃত্র মন্দ গতি কিবা, কি মধুর মন! দিনেকের তরে নাহি শুনিত্র কখন, একটি কঠোর কথা প্রাণেশের মুখে। দাস দাসী প্রতিবাসী আত্মপরিজন সকলেই প্রাণেশের কহিত স্ক্রম্ম।

এত গুণবান্ ভগ্নি! প্রাণেশ মানার তার নিন্দা অভাগীর বড় বাজে প্রাণে।'' यसाकिनी कड शादाध मिट्ड नाशि-(लग, कछ जामत कत्रिलम, जावांत ष्ट्रः थिकी नर्यामा विलिदनन— ভবেশের মুগপানে আবার যখন टिस पिथि—मधूमाथा हातिहैक् छात हन हन हकू: इहि— आंध जांध कथा ক্ষুদ্র হস্ত পদগুলি করি সঞ্চালিত বাছার সে উল্লেস্ত মধুর ক্রীড়ন (इब्रियान इब्र नाथ की विक निक्षा। এত যে স্থলর বাছা হইল আমার ন। দেখি প্রাণেশ তায় ত্যজিবে কি প্রাণ ? এই বলিয়া नर्ग्रमा कैं। पिया छिठित्नन। यक्ताकिनी, मर्कन्य পণ—প্রাণ পর্যান্ত भग · शृक्वक च्यहित्त (या भित्र मकान क्रिया मिर्वन विलया, छांशरक भयनगृरह পाठाहरनन। नर्जाना हिन्या (भरन मना किनी (य मकल अशंज कथा विलिन, তাহা অত্যধিক বলিয়া উদ্ভ হইল ना : किन्छ (म क्शार्शन ना পড़िल मनाकिनीक किर्वेशक शाहित्वन मा। मनाकिनी अनर्यमात ५२ कर्याशकश्रान গ্রন্থকার প্রণম্বের গভীরতা উচ্ছেলবর্ণে, ছত্তে ছত্তে চিত্রিত করিয়াছেন।

নর্মদা মন:কন্তে কাল্যাপন করিতে-ছেন, ইতিমধ্যে যোগেশের সংবাদ লইয়া ভৈরবী মন্দাঞ্চিনীর নিকট আসিলেন। রাত্রিকালে একটি নীরব প্রকোষ্ঠে তিনটী বিষয়া স্ত্রীলোক বসিয়া আছেন; একজনের বাসনা—

वाष्ट्र व्यमातिका वर्क धहत कड़ारेका रेनम गगरनत रमरे गार जसकात। व्यथवा ভাবিছে বেন চিরিয়া হৃদ্র যন্ত্রণা ঢালিয়া দেয় তমসার অঙ্গে। त्म नर्मामा; जानव इरेक्टनत अक्जन, ———বিস অবনত মুখে বিক্ষারিত তুনরনে চাহি কক্ষতলে। ভাবনায় অভিভূত ; যেন চিন্তাগুলি काटनरथा अक्षिष्ठ जात नग्रदनत भरथ। দে মলাকিনী; অপরা ভৈরবী। मकला विषया আছেন—किছू পরে মনা-किनो (यारगरभत छ्त्रिक्षिमाधमभरक देखत-वीरक व्यानक कथा विलालन; कथा शिल ও গৰ্কে নিৰ্গত, ভাহাতে মন্দার চরিত্র আরও পরিষ্ঠার বুঝা যায়। यारगम मनाकिनीत (श्रमाकाष्क्री ७ डाँश्वरे जना (मणडाागी, डाहा मना-किनीत मृत्थ এই প্রথম(?) छनिमा नर्यका मुष्टि ত। इटेलन ; मना ७ टेडबरी व्यानक কণ্টে ঠাহার মৃচ্ছাভঙ্গ করিলেন; নর্দা मःखाशाशा इरेल मनाकिनी छाहारक **ज्यानक जामत कतिएक माशिक्सन। भरत** टेख्तवी, डांशांत्र मरक याः टेख्न्तवभक्टि यारेया त्यारभएक वाति चानिवात कथा मनाकिनी (क विलासन, अ शास्त्र मनाकिनी (यार्गणरक क्रष्ट्र, व्यक्तना द्यापदांत ये के बिरिक मकन कथा व्याहेश विनाद मनारक वासूरबाध कतिरहात। जाहा শুনিবামানে সে-গব্দিতভ্যম গর্মে উছ-लिया উठिन। मनाकिनी टिड वाश

উত্তর করিলেন, তৎসমুদর ধকবল যোগে-শের প্রতি অমাক্ষিক সোদরক্ষেহে পরি-পূর্ব। বাস্তবিক আমরা মন্দার এই গর্ক-টুকু দেখিতে বড় ভাল বাদি।

रजरबंद महिक करमक कथा विनिन्ना शिया यनाकिनी यागीत मिकछ टेडबरी-কথিত সমস্ত বৃত্তান্ত বিবৃত পূৰ্বক, ভৈরবণক্তে জাহার সহিত যাইতে স্বামীকে অমুরোধ করিলেন। মন্দার পতি কাতরা নর্দার প্রবোধার্থ পত্নীকে নর্দার निक छे थाकि एक विलया श्रयः (यार्गमरक व्यनिवात सना याहर छेना छ हहेर नन ; ज्थन (अरुमन्नी मन्माकिनी विलितन-"আসিও যে সঙ্গে যাব,—ভোমার কণায় इंब्र ७ (यार्गमं नाई फितिरव छवरन. व्यामि शिया नर्जनात यञ्जना करिया, वाक्न कतिया हिछ जानिव कितारा। আজীবন আমি নাথ সোদরের মত रयारगरम रवरमिक जान — रम रयग जारवाध তা ব'লে 🍑 আমি তায় করিব অলেহ ! ७ हुँकू ना कत्रि यमि नर्जामात्र छत्त व्यवज्ञान नर्जामात्र घटि यमि नाथ, **८म चारक्म कित्रमिन तर्य रामात !** যোগেশ শুধুই নাথ! স্থদ ভোমার ? আমার সে প্রাণাধিকা নর্ম্মদার পতি त्म मग त्मामब र'एक कथिक दल्दरत । णांत्रि विना नर्जानात्र এ সংসারে আর (करहे य नारे नाथ। दम य आभा छाड़ा नाहि कारन जाता जात ; जनक जननी मात्रिका शैष्ठि—न हि हाट्स

कगाभारम।

शिखातत मसस ७ शियाटण प्रतिया, जनाशिनी श्वाटण श्रेत न प्रीपा ज्यामात । जामि कि तक्षित श्रित এ विशेष जात ! हम नाथ मटक लाय, याहे छहेकान।"

তাহাতে মুবা, মন্দাকিনীর অমুপস্থিতিতে নর্মাদাকে প্রবোধ দিবার কেছ
না থাকা হেডু, তঃখের আতিশ্যাবশতঃ
নর্মাদার আত্মহত্যার ভর পত্নীকে দেখাইয়া,
তাহাকে নর্মাদার নিকট গাকিতে পুনরায়
অমুরোধ করিলেন। সন্দাকিনী হাসিয়া
বলিলেন—

আমরণ সব ক্লেশ সহিবে রমনী
তথাপি পতির আশা পাকিতে তাহার
জীবন ত্যজিতে নাহি পারিবে কথন।
শেষ নর্মাকে গৃহে রাখিয়া পতি পত্নী
উত্তরেই একজে যাওয়া স্থির হইল।
মন্দাকিনী ও তাঁহার পতি যোগেশকে

মন্দাকিনা ও তাহার পাত যোগেশকৈ বাটী ফিরাইয়া আনিতে ভৈরবীর সহিত যাত্রা করিলে, একদিন নর্মদা চিস্তাযুক্ত মনে একটি নির্জ্জন প্রকোষ্ঠে বিসয়া আছেন—

কত চিন্তা কত ভয় কতই বাদনা
ভাগিতে নিবিতেছিল অন্তরে তাহার।
আনমনে তুলি কর স্থাপিতে ললাটে
সিঁথির সিন্দুররেখা মুছিল ভাহায়।
নির্থিতে অধংপানে করতলৈ তার
পড়িল নয়ন দেই—হেরিলা সিন্দুর।
শিহরিত কলেবরে ছুটিয়া নর্মাণ
গোলা দর্পনের কাছে—হেরিলা ললাটে
চির যতনের তার সিন্দুরের রেগা,
হতাশ জীবনে তার শুধুই সান্তনা,

পতিস্থ-বিরহিত অদৃষ্টে তাহার,
সধবার একমাত্র যে চিক্ন আছিল ।
অয়তনে আজ তাহা আপনি মুছিল।
"হতভাগিনীর ভাগ্য ভেঙেছে নিশ্চর"
কহিয়া চীৎকার করি পড়িলা ভূতলে।
এমন সময় এক অপূর্ব্য কামিনী মূর্ত্তি—
এক অমরী,সেই ঘরে প্রবেশ করিলেন—
তুষারের মত তার অক্ষের বরণ
হিরপ্রয় ছাতি তার পড়িছে ঝরিয়া,
কি এক গভীর গদ্ধে অক্ষ স্থরভিত
প্রেশিতে পূর্ব হইল কক্ষ সে সৌরভে।

रमर्घ ठक्क-करत (यन এक তে मिनिया সেই স্থময় দেহ হয়েছে উদ্ভব। আছে অঙ্গ—আছে মূর্ত্তি—কিন্তু যেন তায় • नाहि मछ। भन्नी दन्न न खधूरे कि तन শ্নাময় দেহে তার উঠিছে উথলি। धकात क्रिकान कालिमारमत (यात्रा। ष्मत्री षानित्रा नर्मनारक विल्लान, य डाँशत পতिनिष्ठ। (मिथता हेनानी স্কুত্তে তাঁহার জনা অর্গে স্তাকুঞ্জ প্রস্তুত করিয়াছেন, তথায় তাঁহাকে যা-ইতে হইবে। নর্মদা ভয়বিহ্বলিতম্বরে बिद्धामा कतिरागन, "किन्ত काणा প্রাণেশ আমার," অমরী বলিলেন,"(যাগেশ আর किम्र०क्कन भरत्रहे श्रानजान कतिर्वन, मठीत देवथवा नाहे— ভোমাকে যোগে-শের মৃত্যুর পূর্বেই অনন্তধামে যাইতে **इट्टा' ७**ट्टे विधिया अमती नर्मामात क्रमात्रण क्रिट्लन-

" প্রাণশূন্য দেহখানি অমনি ভাহার

ঢশিয়া পড়িক ভূমে ছিন্ন লতা প্রায়। षायोवन পতিপদ পুঞ্জিতে পুজিতে, चारघोरन महि क्लिम পण्डि-चनामद्र, অন্তিম জীবনে শ্বরি পতির চরণ, नर्यमा ত্যाबिन आण नरीन र्योवत्न। ध निष्क (यार्शिष्णत्र अ निन क्त्राहेन। ধে রাত্রিতে যোগেশের পিতৃআত্মা পুত্রকে দিতীয়বার দর্শন দিয়াছিলেন, দে রাজি পোহাইল। বেলা প্রথম প্রহর, মৃত্যুচরের প্রতীক্ষায় যোগেশ উর্দৃষ্টে এক তরুতলে বসিয়া আছেন, অমন সময়— मदारेया छ्रे करत खनरमत मन, ছারাময় মূর্ত্তি এক হইল বাহির। নিমেষমধ্যে মৃত্যুচর যোগেশের পার্শে '' धूमथखमङ '' माँ ए। हे या, छ। हारक নির্বাণলাভ করিতে অমুরোধ ভাহার উপায় বলিলেন। যোগেশ উক্ত নির্কাণ প্রাপ্তির কামনায় বসিলেন— বিদিলা যোগেশ জড় মূরতির মত স্থিরভাবে বক্ষঃস্থলে বেষ্টি বাহুদ্ধ। অচঞ্চল নেতাৰয় হইল ক্ৰমশঃ, শান্তির বিমল জ্যোতিঃ ভাতিল নদনে, অন্তরের প্রাণময়ী গভীর বাসনা क्रिय क्रिय हिंख इ'एव थिनएक नाशिन হইতে লাগিল দৃষ্টি ক্রমে স্থিরতর। धमन ममम निष्मम (याभिष्मं कर्न कामिनीकर्श्व-निर्मेख " द्यार्शम " " द्या-গেশ" শব্দ ''তড়িতম্পর্শের'' মত প্রবেশ कत्रिण। यार्गण भिरुतिया जिल्लिन— मनाकिकी देशन-अरम छेडिए हुए मा। শ্লথ কলেবর তার কাঁপিল বারেক,

তথনি সংষত চিত্ত করিরা যোগেশ

মৃত্যুছারা-পির্ব্যাপ্ত শুক্ত ওঠাধরে

বিকাশিরা ক্ষীণ হাসি দৃষ্টি সরাইলা।

মন্দাকিনী আসিয়া চীৎকার করিয়া

বলিলেন, " যোগেশ এ দশা তব আপনি
করিলে!" শুনিয়া শ্রীমকঠে যোগেশ
উত্তর করিলেন—

"वकः एल म्ना जाज—नहिल এथनि **(मिथा** তেম চিরি বুক হাদয় আমার ; ত্যজিতে এ পাপ ভৃষ্ণা, এই দীর্ঘকাল এত युवियाहि जामि श्रमस्यत मत्न, নর-প্রকৃতিতে তত পারে না যুঝিতে। ভাবিয়াছি কতবার তীক্ষ ছুরিকায় চিরি বুক পাপভৃষ্ণা দিই ফেলাইয়া। তথাপি সে পাপভৃষ্ণা পারিনি ত্যজিতে ঘুণায় লজ্জায় নিজে মৃহর্তে মৃহর্তে মরিয়াছি কতবার—প্রাণের ভিতর ভীষণ-নরক-কুগু ছিলাম ধরিয়া; षाज (म भिभामा मम (ग्रह खकारेग्रा किन्छ जेमामित्र छान यत्रावत्र जाता!" हेिजरधा मनाकिनीत यांगी ७ टेंड तवी ज्यात्र जातित्वन। ज्यन मनाकिनी কাতরকণ্ঠে আবার যোগেশকে বলি (लन-

————"আমিই পাষাণী
আমারি সেত্রম প্রাতঃ!—কিন্তু জ্ঞানহীনা
রমণী—ভগিনী ভব—কনিষ্ঠা ভোমার
অপরাধী যদি—কেন এ কঠিন পণ ?
আপনা ভূলিলে ভাই—দেখ দেখি চেয়ে
এই কি যোগেশ—সেই জ্ঞানরত্বাকর ?
এ কি বেশ,এ কি দেহ,এ কি ভাব তার

সে কান্তি—সে রূপ কোথা ?—কোখা সে বরন ? কোথা সে প্রকৃতি—কোথা সে জ্ঞান গন্তীর ?

সততার চিত্রপট—নীতির দর্পণ, महत्त्वत नौनाज्ञि—পूर्णात वाज्ञम, গান্তীর্যার প্রতিক্বতি—করণার থনি বরদার প্রিয়স্ত—কমলার আশা যে যোগেশ, আজ তার এ দারুণ দশা ? কি ছঃখে—কিদের ছঃখ—কিদের অভাব অমরে বঞ্চিত করি অপার্থিব ধনে मिला विधि পূर्व कित्र कीवन याहात এ ক্ষুদ্র সংসারে ভাই কি অভাব তার ? প্রাণমের আদ্যাশক্তি নর্ম্মদা যাহার প্রণয়ে তাহার কেন আক্ষেপ আবার ? এদ ভ্রাতঃ !—গৃহে চল—নর্মদা আমার কণ্ঠাগত প্রাণ আজ বিরহে তোমার।" याराभ कछ नाडियन इटेट वायू টানিয়া পুনরায় মন্দাকিনীকে বলিলেন— এ नर् क्षेथ्य हिळ—नहिर्न (यार्श्य জিজাসিত এই দতে তুমি কি অমরী! नित्रखत्र—निभि मिन—निश्वारमत मह বহিত এ স্বপ্নয় প্রশ্ন অহরহঃ। বিমুক্ত সে স্বপ্ন আজ—জাগ্রত নয়নে দেখিতেছি দেবীমূর্ত্তি সমুধে আমার, ष्यात्री ना इ'रव य नि— दिनान् व्यरमास्त . नज्ञाधम (यार्गिष्णदं अथरना कक्ना ? य। कहिल जू ग-नजा, - এक मिन यय वाहिल विश्व कृष्ण कीवरन वामात विषा।—धन—यभ—गाग—छान— পুণ্য-ভরে;

কিন্ত কেন !—কোন স্থাপ!—কোন অভিলাবে !—

যোগেশ সে রত্বালি করিত সঞ্চর!
ভাবিতে কি—বৃঝিতে কি—অথবা আবার
হেন প্রশ্নে যোগেশের কিবা অধিকার!
সে আলা—সে অভিলাব—গেই স্থা তঃখ
আমূল বিলুপ আজ অন্তরে আমার
ভীবভারা অন্তমান—নহিলে যোগেশ
প্রতিক্বতি নির্দ্মাইয়া মলাকিনী তব
পথে ঘাটে হাটে মাঠে পল্লীতে নগরে
ভারতের যথা তথা করিত ভাপন।
নিম্নভাগে স্থাক্ষরে লিখিতাম তার
'মলাকিনী এ সংসারে নারী-রত্ব সার।'
তাহার পর—

"এস সংখ" বলি কর প্রসারি যোগেশ
মন্দার পতির কর ধরিলা সাদরে,
"এ সংসারে স্থা তুমি তুমি তাগ্যবান্
ধন, মান, জ্ঞান, যল, পুলা স্থপাকার
এই মন্দাকিনী সথে সংসারে তোমার!
প্রতিষ্ণী—প্রতিযোগী—চির প্রতারক
আন্ধীবন নরাধম যোগেশ তোমার,
কিন্তু এ অন্তিমকালে কমি অপরাধ
শৈশবের আলিঙ্গন দেহ একবার।"
অতঃপর মন্দাকিনী সম্বেহে অঞ্চলদ্বারা

যোগশের অঞ্চ মুছাইয়া তাঁহার হন্ত ধরিয়া উঠাইতে চেষ্টা করিলেন, যোগেশ মন্দা-কিনীর প্রতি কর্মণাবিক্ষারিত দৃষ্টে চা-হিয়া আবার গন্তীয় নির্ঘোষে বলিলেন, 'মন্দাকিনি! রুথা যন্ত্র—বুথা কেন ক্লেশ! কাহারে ফিরিতে গৃহে কর অনুরোধ? যোগেশে?—কি পরিতাপ! এখনো

মমতা ?
দেখ চেয়ে দেহে মোর—কি আছে ইহার
দেখিছনা—মৃত্যু ছারা ব্যাপ্ত কলেবরে
দেখিছনা—অস্তমান নরনের তারা
দেখিছনা—নাশারক্ষে বহে প্রাণবার্
কি দেখিছ—কি ভাবিছ—ভীত কেন
হও ?

रुज्जाभा (यार्ग्यमंत्र मत्रगरे मलना। কিন্ত এই ক্ষোভ মম—মমতাণতোমার বহু বিলম্বেডে চিত্তে ঢালিলে আমার। দেবী অবতীণাঁ সমা ভাবিতাম তোমা अक्षी भाषांभी विन हिन किन्द छान। वास व्वामा (सरी-नामान श्राचिमा । किन्न वन्द्रभीनावाही दम ऋ दम कक्रना। गनाकिनि! এই ब्लाङि! पिनकङ আগে विভরিতে যদ মম দগধ জীবনে এভাবে যোগেশ আৰু তাজিতনা প্ৰাণ! या ७ ७ व व न गृह या ७ -- ना वि छ द्या जन পাপাত্মার তরে ক্লেশ সহি তাকারণ। পতিস্থে আজীবন হ'ও দোহাগিনী (यार्शिष्मत (भव याभा এই मनाकिनि। वािम हिनिनाम—किन हिनिनाम (काथा। অহো ভবিষাৎ মম গাঢ় অন্ধকার।"

অনন্তর বোগেশ অঞ্চ মৃছিয়। অবনত
মৃথে চক্ষু মৃদ্রিত করিলেন। তদ্গৃষ্ট
মন্দাকিনী উটেচঃশ্বরে "যোগেশ"
"যোগেশ" বলিয়া ডাকিলেন; যোগেশ
ইঙ্গিডয়ারা ভাইদের অস্তরে যাইতে
বলিলেন। তখন মন্দাকিনী বলিলেন,
"যোগেশ! নর্মানা তব—ভবেশ ভোমার"
"আর কেন মন্দাকিনী" বলিয়া
যোগেশ দূরে ধুমাকার প্রেতমৃত্তি দেগাই-লেন। কিয়ৎকাল সকলে বিশ্বয়ে সেদিকে চাহিয়া রহিলেন, পরে যোগেশের
দিকে ফিরিয়া দেখেন—

ব্যাহিন বান্ত সহাস্য বদনে
বিষয়ে হৃদয়ে বান্ত সহাস্য বদনে
বিষেত্র ক্রে কৃত্তে মন্দাকিনী পানে।
ফির নয়নের তারা ক্রমে যোগেশের
বিন্দু বিন্দু জ্যোতিঃহীন হইতে লাগিল।
ক্রমে হির নেজতারা হইরা চঞ্চল
নয়নের তুই কোলে ঢলিয়া পড়িল।
অধরের স্দীন হাসি গেল শুকাইয়া
চাহি মন্দাকিনী পানে হাসিতে হাসিতে
যোগেশ তাজিলা চির হতাশ জীবন।

হাসিতে হাসিতে সে প্রেমপয়োধি শুকাইল—যোগেশের ছঃখনর জীবন ফুরাইল। তাহার গর—

স্দীর্ঘ নিশাদ সহ ''ঘোগেশ'!' বলিয়া মুন্দানিনী প্রাণশূনা দৈহ পানে ভার স্থিরদৃষ্টে কভক্ষণ রহিলা চাহিয়া।

অবশেষে মন্দাকিনী ত্যজি গাঢ় খাস ধরিয়া পতির কর তুলিলা ভাছায়। পতিপত্নী তুইজনে ধরাধরি করি टेमन र'एज नामारेका (यारशर्भत एकर। অমুচরগণে ডাকি কহিলা রচিতে मागतरेमुकरा िंछ।— (শ্रে इन्टेंबरन र्यार्श्यत मृडराष्ट्र ध्राथित कति জ্বলম্ভ চিতার বক্ষে করিলা স্থাপন। প্রজ্ঞাত তৃণগুচ্ছ স্বহন্তে করিয়া यनाकिनी पिना वङ्कि (याशिष्मत यूर्थ। एए भरक वर्रिभिशा উष्टिन किना আরক্তিয়া সিন্ধুনীর ভৈরব শিপর, আরক্তিয়া শূনাদেশ সৈকত ভূমির। निर्निध्य य मनाकिनी त्र हिला ठाहिना हामामग्री हि छाब एक (बारगटमंत्र भारत। थक्न कमिडीदा-मनात मनूद्य চিতার হইল জন্ম যোগেশের দেহ। সহতে সাগর হ'তে কলসি করিয়া जुलिया मिला मन्ता छ। लिल हिजाय। নিৰ্বাপিত চিতানল হইল যখন कलिन (कलिया पृत्त,—পण्डित श्रमस्य চालिया वनन गना कहिना कांनिया "िष्ठा (य निवित्त नाथ!"—এই সে

থোগেশের তরে মন্দা অশু বিসর্জিলা।
''চিতা যে নিবিল নাথ।'' বলিয়া আবার
মন্দাকিনী উচ্চে:শ্বরে করিলা রোদন।
এই সকল কবিতা অম্লারত্বশেষ।
আমরা বিলক্ষণ যলিতে পারি, এপ্রকার
অমুত্মর কবিতা বাঙ্গালা সাহিত্যসংসারে

व्यक्ति वित्रमः वित्ममकः छेभद्राक् छ भः किनिहरम् न स्था " हिका (य नि-विन नाथ" এই চারিট কথার ঈশান বাবু যেরূপ আশ্চর্য্য ক্ষমতা প্রকাশ করি-য়াছেন, তাহা বর্ণনাতীত। এই চারিটি মন্দাকিনীর তৎকালীন হন-কপায় कुछ लिथक मरूख पृष्ठी मिथियां । जारा श्रकांभ कतिएक शांतिएकन ना। (म চারিটী কথার ভাব কথার সমাক্ ব্যক্ত হইবার নহে; ভাহার ভাষা মনের ভিতর— कथांत्र नारे। यिनि मनाकिनीत्र এरे (वाषन वृचिवाएहन, जिनि द्वाध इव মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিবেন, যে বাঙ্গালা কাব্যপাঠে এত স্থ্য বৃঝি শীঘ্ৰ ঘটে नारे। आमत्रा आशामी वादत्र अहे द्वापटनत्र व्यर्थ व्यारेट ए हो कतिय।

যোগেশ প্রাণত্যাগ করিলে তাঁহার আত্মার বামকরধারণপূর্বক মৃত্যুচর ''ধূম-শিখা' মত উর্দ্ধে উঠিতে লাগিল। তাহার অনতিউর্দ্ধে নর্মদার আত্মা অমরীর কর-ধারণপূর্বক উঠিতেছিল—

বিহাত-প্রতিম রশ্মি অঙ্গ হ'তে তার ঝরিয়া সে শুনাপথ উঠিছে উজলি।

মৃত্যুচর যোগেশকে নর্মদার আত্মা দেখাইল। যোগেশ নর্মদার প্রেভাত্মা দেখিয়া ভাহার মৃত্যুর বিবরণ প্রভৃতি মৃত্যুচরকে জিজ্ঞানা করিয়া সমস্ত জানি-লেন। তথন--

"নর্দ্যাদে! নর্দ্যদে!" বলি কাতর বচনে যোগেশ ডাকিল উচ্চে—প্রতিধ্বনি তার শ্নাধাম ভাসাইয়া হৈল প্রবাহিত।

''প্রাণেশ ! প্রাণেশ !'' বলি কাতর বচনে
নর্মাণ চীৎকার করি ডাকিলা বোগেশে।
যোগেশ ডাকিলা প্নঃ''মর্ম্মদে! নর্মদে!''
সেই তুই সম্বোধনে শ্না উথলিল।

হইবে। আর একজন শপোপরি লম্ব-মান কল্যাণীর মৃতদেহটাও ধরিতে याहेट छिन-किन (मिन देश, अकरे। क्षीत्नात्कत मृত्रांच — मशुर्गमी ना इहे-**८न७' इरेट** भारत। आत धतिन ना। বালিকাকেও ঐরপ বিবেচনায় ত্যাগ করিল। পরে তাহারা কোন কথাবার্তা ना विणया इरेजनक वै। थिया लरेया চলিল। কল্যাণীর মৃতদেহ আর তাহার वानिकाकना। विनातकरक (महे वृक्षभूरन পড়িয়া রহিল।

প্রেণমে শোকে অভিভূত এবং ঈশ্বর-প্রেমে উন্মন্ত হইয়া মহেক্র বিচেতনপ্রায় हिला। कि इरेजिहन, कि इरेन वू-बिर्ड शारतन नारे, वन्नत्नत्र खें ि कान षां शिख करत्रन नारे, किन्न घ्रे ठातिशक राल व्विर्वन (य, जामानिशरक दें। थिया লইয়া যাইতেছে। কল্যাণীর শব পড়িয়া त्रिल मरकात हरेल ना, भिक्कना। পড়িয়া রহিল,এইফণে তাহাদিগকে হিংস্র পশু খাইতে পারে, এই কথা মনোমধ্যে উদয় হইবামাত মহেক্র তুইটি হাত পরস্পার হইতে বলে বিশিষ্ট করিলেন, একটানে বাঁধন ছিঁড়িয়া গেল। সেই गृहूर्ल এक পদাঘাতে অমাদার সাহে-বকে ভূমিশয়া অবলম্বন করাইয়া এক-জন সিপাহীকে আক্রমণ করিতেছিলেন। তথন অপর তিনজন তাঁহাকে তিনদিক্ रहेटल धतिया पूनर्कात विकिष्ठ ७ निएन्डे করিল। তথন ছঃথে কাভর হইয়া সরকারে এভালা পাঠাইয়া দিয়া ত্রন্ধ मर्ह्य मञ्जानन बन्नहात्रीक वनिद्यन, हात्री ७ मर्ह्य क मच्छि काहेक त्राधि-

य ''आभिनि । একটু সহায়তা করিলেই এই পাঁচজন ছ্রাত্মাকে বধ করিতে পারিতাম।" সত্যানন্দ বলিলেন, "আ-मात्र धरे लाहीन भंतीरत वन कि-णामि যাঁহাকে ডাকিতেছিলাম, তিনি শিন্ন আমার আর বল নাই—তুমি,যাহ। অবশ্র ঘটিবে ভাহার বিক্ষাচরণ করিও না! আমরা এই পাঁচজনকে পরাভূত করিতে পারিব না। চল কোথায় লইয়া যায় (पथि। जगमीयंत्र मकन पिक् त्रका क्तिर्यन।'' তथन छाराता प्रहेकरन ष्यात (कान मुख्यित (ठष्टे। ना कतिया मिशाशीमित शम्हा भम्हा हिना । कि দূর গিয়া मजानम मिপाशीमिशक किछाना कतिरलन, "वाशू आिय इतिनाम कत्रिया थाकि—हितनाम कत्रात्र किছू वांधा चाह् ?'' मजानमादक ভानमास्य विनया जगानारवव त्वाथ इरेयाहिन, तम বলিল, "তুমি ছরিনাম কর, তোমায় वात्रन कतित ना। जूभि वृष्। बक्क ठात्री, বোধ হয় তোমায় খালাদের ভিকুমই इरेटन, এই वषमान काँनि यारेटन।" তথন ব্রহ্মচারী মৃত্ন মৃত্রেরে গান করিতে वाशिकात ।

> श्रीत मभीदन, यमूनाजीदन, বস্তি বনে বন্মালী। हेजानि

নগরে পৌছিলে ভাছারা কোভরালের निक्छ नीठ दहेग। (कांडवान वान-

टकन ना विकात्र कत्रिवात्र ट्यांक छिल ना। हेश्द्राद्यम् (मन नय—ज्थन हेश्द्राद्यम क्ठांत्र हिल ना। जाज नित्र मित्र— क्रथन चनित्र दमत्र किन। नित्र दमत्र किन चात्र चनिय्रायत पिरन जूनना कत्र।

ठकुर्मम পরিচেছদ।

कांत्रीवात्रमधा वह महानिस महिल्दिक क्लिएनन, ''আজ অতি আনন্দের দিন। (कन ना आमत्रा कात्रागाद्र वक रुरेग्राहि। বল হরে মুরারে!" মহেন্দ্র কাত্রস্বরে विनिन, ''श्दत भूतादत !''

অবশা ত্যাগ করিতে। আর ত কোন সম্বন্ধ থাকিত না।

মহৈ। ত্যাগ এক, যমদণ্ড আর। যে শক্তিতে আমি এ ব্রহ গ্রহণ করিভাম, (म चिक जामात को कनात मक्क शियाट्य।

সূত্য। শক্তি হইবে:। আমি শক্তি मित। ग्रहामट्ड मोकिए इ.S. यहाउँ **ए** গ্রহণ কর।

गरहक विव्रक इरेवा विनय (य ''आं मात्र क्षी कन्गारक मृशारल कुक्र त थाहे-(डएड—जागारक (कान बर्डिंग कथा विषयिन ना।"

লেন। সে কারাগার অভি ভয়কর, যে সভ্যা সে বিষয়ে নিশ্চিন্ত থাক। যাইত, সে প্রায়, আর বাহির হইত না, সস্তানগণ ভোমার জীর সৎকার করি-मार्छ-कनारक नहेमा छे शयुक्त छ। स রাথিয়াছে।

> मरहल विचित्र हरेल, वज़ चिचाम कितन ना, विनन, ''आश्रीन कि श्रकादत कानिरवन ? जाशनि ७ वतावत जागात मद्य ।"

> সতা। আমরা মহাবতে দীক্ষিত। मिवजाता आंगामिरगत श्राजि महा करतम। व्यक्ति वाद्वारे कृति (म मञ्चाम পाहित। আজি রাত্রেই তুমি এ কারাগার হইতে मुक्त इहेरत।

गर्बे किंग कथा किंव गा। भंजा-नम व्विष्टान, य मह्द्य विश्वाम कति-(७८६ ना। ७४न गजानम विल्लान. সভা। কাতর কেন বাপু ? তুমি 'বিশ্বাস করিতেছ না-পরীক্ষা করিয়া এ মহাত্রত গ্রহণ করিলে, এ জীকন্যাত দেখা' এই বলিয়া সত্যানন কারা-शादात द्वात अधास चानित्वन। कि कतित्वन, असकाति गरश्य किছू দেখিতে পाইলেন না। किन्न काशंत्र मदन कथा किहित्न हेश वृत्रित्नन। कित्रिया चानित्न, मरश्क किछ। न। कतिन ''कि পরীকা ?"

> সতা। তুমি এখনই কারাগার হইতে মুক্তিলাভ করিবে।

> এই क्षा विलिड विलिड कांत्रांशाद्वत चात डेमवािंड इंटेल। এकवािंक चरदत ভিতর আসিয়া বলিল,

''ম হেজ্র সিংহ কাহার নাম?'' मरहस दुलिल ''आभाद्र नाम।'' क्कूम इहेशांट्य—याहेट्य भात ।'' फ़िशा याहेव ना।

गत्न कविन मिथा। कथा। भन्नीकार्थ नात्व कनाश्रकादन मुक इहेद। वाहित इहेन। (कह छाहात भिडिताथ धीतानम वाहित (भन। महाानक क्तिम न।। ऋर्म ताज्ञ भगे भगेष ७ मर्ह्य कातागात्रमसा वाम कतिए हिनयां (भन।

এই অবসরে আগন্তক সভ্যাননাকে বলিল, 'মহারাজ! আপনিও কেন যান না ? আমি আপনারই জনা আসি-য়াছি।"

সত্য। তুমি কে ? ধীরানন্দ গোঁস।ই ? ধীর। আঁজা হা।

সতা। প্রহরী হইলে কি প্রকারে ? थीत। ভবানन আমাকে পাঠ।ইয়া-(इन। जागि नग्द जामिया जापनाता ছिलाम। (यथाँ माट्य পाहाताम ছिलान, निफिड चाह्न। এই बागा स्वाड़ा পাকড়ী বর্ষা যাহা আমি পরিয়া আছি, সে তাঁহারই।

সভা। তুমি উহা পরিয়া নগর যাইব না।

थीत्र। ८कन—स्म कि १ मङा। আন সম্বানের পরীকা। মহেন্দ্র ফিরিয়া অ। সিল। সভানিক जिलामा कतिरणन, "फितिरल एच ?" মহেন্ত। আপনি নিশ্চিত দিশ্ধ

আগত্তক বলিল, "তোমার থালাষের পুরুষ। কিন্ত আমি আপনার সঙ্গ ছা-

মহেন প্রথমে বিশ্বিত হইল—পরে সতা। তবে থাক। উভয়েই আঞ

लाशित्नन ।

পঞ্দশ পরিচেছদ।

ব্রহ্মচারীর গান অনেকে শুনিয়াছিল। व्यगाना त्यादकत गर्धा कीवानरमत्र कार्ण (म भान (भग। मह्हास असूवर्जी হইবার ভাহার প্রতি আদেশ ছিল, ইহা পঠিকের স্মরণ পাকিতে পারে। পথি-**এই काরাগারে আছেন শুনিয়া এগানে মধ্যে একটি স্ত্রীলোকের সঙ্গে সাক্ষাৎ** किছু धूक्ता मिलान गिक्ति नहेगा व्यामित्रा- इहेगाहिन। (म माडिमन थाम नाई, রাস্তার ধালে পড়িয়াছিল। ভাহার তिनि তাহা সেবন করিয়া ভূমিশ্যাায় জীবনদান छना জীবানল দণ্ড ছুই বিলম্ব করিয়াভিলেন। মাগীকে বাঁচাই 🕈 তা-शांक पाकि कर्म्या ভाষায় গালি দিতে দিতে (বিলম্বের অপরাধ ভার) এখন णागिरङ्किलान। एम्भिलान, श्राकृत्क इटें उरित दहेशा या । जाभि अक्रां भूमनगाम धित्रा मटेग्रा याहे उहि— প্রভু গান গায়িতে গায়িতে চলিয়াছেন।

> की वानम महाश्राञ्च, मङ्गानत्मत्र मद्भञ गकन वृक्षिर्ङन। "कूक मम वहनः मचत्रत्रहनः''—िक कत्रिटल इहेटव १ ''धीत मगीदत, यमूनाकीदत, বস্তি বনে বন্সালী।''

नमीत धारत एक इ चार्ड ना कि ? छा-विशा हिन्दियां, की वानम नमीत धादत धादत हिल्लिम। खीवानम (पिशाहित्नन, य ব্রন্সচারী সমং মুসল্মানকর্তৃক নীত इन्हेर्डिइन। এइल, ब्रमहादीद ऐका-রই তাঁহার প্রথম কাজ। কিন্তু জীবা नम छ। विलन, ''এ मह्हाउत म अर्थ নয়। তাঁর ভীবনরক্ষার অপেকাও তাঁ-हात आकाशानन वफ्-- এই कथाई छैं।-হার কাছে প্রথম শিপিয়াছি। অভ এব ভাঁহার আজ্ঞাপালনই করিব।"

ननीत भारत धारत की वानक हिलल। यारेट यारेट (मरे वृक्ष ज्ला न मी जी द (मिथिन (य अक जी नाक्तित मृज्याह आंत्र এক জীবিতা শিশুকন্যা। পঠিকের স্থাবণ থাকিতে পারে মহেস্তের স্ত্রী नारे। मत्न कतिरलन रहेरल रहेरड পারে যে ইহারাই মহেন্দ্রের স্ত্রী কন্যা। (कन ना প্রভুর সঙ্গে মহেন্দ্রকে (फर्निशाम, তाहात जी कना। (प्रथिनाम ना। याहा इडेक गांडा मुंडा, कनांडी জীবিতা। আগে ইহার রকাবিধান कत्रा ठाई—नहिल्ल वाच छानू क था-थात्र चाष्ट्रिंग, रिनि क्रीम्नाकिष्ति मए- तका कतिए भातिता हिन। कात कतिरवन, এই ভানিয়া भीवानना बालिकाटक (काटल कुलिया लहेया हिल-(लग।

(तमं कत्रित्सम। खल्म भात इहेग्रा এक-थानि कुछ श्रांटम खर्विण कत्रिरमन। शामशानित्र नाम टेखत्रीभूत। लाटक विनि छ छ इरे भूत । छ इरे भूति प्रे ठाति घत मामाना टलांटकत वाम, निकटि आंत व जाम नाहे, जाम भाई हिरेशाहे आवात **চারিদিকে জঙ্গল—জঙ্গলের** गरधा এकथानि कूछ जाग, किन्न जाग-খানি বড় স্থলর। কোমলত্ণাবৃত গো-চারণভূমি, কোমল শ্যামলপল্লবযুক্ত আম, काँगेल, खांग, जात्वत वांगान, मरश मधा नील खल পরিপূর্ণ স্বচ্ছ দীর্ঘিকা, তাহাতে জলে বক, হংদ, ডাহুক; তীরে কোকিল, চক্রবাক; কিছুদূরে ময়ূর উচ্চ-রবে কেকাধ্বনি করিতেছে। গৃহে গৃহে, প্রাঙ্গণে গাভী, গৃহের মধ্যে মরাই, কিন্তু আজ কাল ছর্ভিকে ধান নাই—কাহারও চালে একটি ময়নার পিঁজরে, কাহারও **(দিয়ালে আলিপনা—কাছারও উঠানে** भारकत ভূমি। সকলই হর্ভিক্ষপীড়িত, ক্বশ, শীর্ণ,সম্ভাপিত। তথাপি এই গ্রা-মের লোকের একটি প্রীছান আছে— कश्राण व्यानक तक्य मञ्याचिका कार्या, এজনা জঙ্গল হইতে খাদা আহরণ ক-हैर्व। ख्वानम र्घाकृत এইখানেই কো- त्रिया मिटे আম্বাদীরা প্রাণ ও স্বাস্থ্য

একটি বৃহৎ আফ্রকাননমধ্যে একটি ছোট বাড়ী। চারিদিকে মাটার প্রাচীর हाति पिटक हा तिथानि **घत्र।** शृह ट इत भाष्य कारण कत्रिया की वानम श्रीमारे शाक बाह्य, छात्रण बाह्य, धक्री मयूत म्बर्ध निविष अञ्चलक अञ्चलक थ- आहि, वक्षे गमना आहि, वक्षे हिमा

আছে। একটা বাঁদর ছিল,কিছ সেটাকে আর খাইতে দিতে পারে না বলিয়া ছাড়িয়া দিয়াছে। একটা ঢেঁকি আছে, বাহিরে খামার আছে, উঠানে লেবু গাছ আছে, গোটাকতক মল্লিকা যুঁইয়ের গাছ আছে, কিছু এবার তাতে ফুল নাই। সব ঘরের বারাগুায় একটা একটা চরকা আছে; কিছু বাড়ীতে বড় লোক নাই। জীবানন্দ মেয়ে কোলে করিয়া সেই বাড়ীর মধ্যে প্রবেশ করিল।

वाफ़ीत मस्या श्रादम कित्रां के की वा-नम এकটা घरतत वाताखात উঠিয়া একটা চরকা লইয়া ঘেনর খেনর আরম্ভ कतिरलन। (म (ছाট मिराउँ किंगन **চ**রকার শব শুনে নাই, বিশেষত: মা ছাড়া হইয়া অবধি কাঁদিতৈছে, চরকার শব্দ শুনিয়া ভয় পাইয়া আরও উচ্চ मश्रक উঠिয়া কান্দিতে আরম্ভ করিল। তথন ঘরের ভিতর হইতে একটি ১৭৷১৮ वरमद्भव (यस वाधित इहेन। (यसि वाहित्र इहेग्राहे मिकिन गए ए पिकन इएस्र অঙ্গুলী সন্নিবিষ্ট করিয়া ঘাড় বাঁকাইয়া माँ ए। इता कि ज, मामा ठतका कारि। (कन, भारत काथा (भरन, मामा জোমার মেয়ে হয়েছে না কি—কোথায় टमरत्र इरला ?"

जीवानम (मरत्रे जानिया (मरे यूव-जीव काल निया जाशांक कीन माविट्ड जेठिलन, विनलन, ''वानवी, जामाव जावांव (मर्ब, जामांक कि दिन्धि) भीति ना कि, श्रुष जाहि ?'' खशन (य यूक्डी निलल, " इस जाटक वहेकि, शादा।"

की बानम विमम, " हैं। पारवा।"

তথন সে যুবতী বাস্ত হইয়া ত্ৰ काल फिएक (भग। कीवानम कठक्क **চরকা ঘেনর খেনর করিতে লাগিলেন।** भारत्र ही भिर्दे सूव श्रीत काला शिक्षा ज्यात काँदम ना। त्यरप्रे कि छाविया हिन বলিতে পারি না—বোধ হয় এই যুব-তীকে ফুলকুস্থমতুল্য স্থলরী দেখিয়া या यदन कतिशाष्ट्रित। द्वांध इस छन्दन त ভাপের আঁচ মেয়েটীকে একবার লাগিয়া-ছিল তাই দে একবার কাঁদিল। কারা अनिवायां की वानम विलिएन ''अ नियि ও পোড়ার মুখি ও হতুমানি তোর এখনও হুধ জাল হলো না।" निशि विनन, " इराइ ।" এই विनाम (म পাথর বাটীতে হুধ ঢালিয়া জীবানন্দের নিকট আনিয়া উপস্থিত করিল। জীবা-नम कु जिम कार था था कार कि वि लिन ''हेक्हा करत य এই उश्च फुरधत বাটী তোর গায়ে ঢালিয়া দিই—তুই কি মনে করেছিস্ আমি থাব না কি ?" निमि जिज्ञामा कतिन, "তবে কে

जीवा। के ग्रियों भारत स्मथिहम् त्न, के ग्रियों कि छूप भाउता।

शादव १"

নিমি তথন আসনপিড়ি হইয়া বসিয়া মেয়েকে কোলে শোয়াইয়া ঝিফুক লইয়া তাহাকে তথ খাওয়াইতে বসিল। সহসা তাহার চকু হতে কোঁটাকতক জল পড়িল। তাহার একটি, ছেলে হইয়া মরিয়া গিয়ীছিল, তাহারই ঐ ঝিমুক ভাত বাড়িতে ব্যতিব্যস্ত হইল। ছिল। निमि তथनरे राज मिया जल মুছিয়া হাসিতে হাসিতে জীবানলকে बिकामा कतिन,

"हैं। माना, कांत्र (यदा माना ?" ড়ার মুখী।"

निभि विलग, "आंगांत्र भारति (परव।" कीवानन विनन, "जूरे भाषा निष्य कि कत्वि।4

निमि। "यामि भाषाति क्ष पाछ-য়াব, কোলে করিব, মাহুষ করিব—" আবার আদে, আবার নিমি হাত, দিয়া মুছে, আবার হাসে।

की नानम विनन, "जूरे निया कि हरव।"

নিমি। তা হয় হবে, এখন এ (गर्फ़ी मांख, এর পর ना হয় निয়ে (यछ। कीवा। का त्न, निष्य मत्र पा। चामि এमে मस्या मस्या (मस्य यात। উটি কামেতের মেয়ে, আমি চল্লুম এখন-

निमि। (म कि माना, थार्य ना ! दवना হরেছে যে, আমার মাথা থাও, ছুটি ८ ४ ८ इ राज ।

জীবা। তোর মাথাও থাব, আবার शृष्टि थाव, शृष्टे छ পেরে উঠবো না দিদি। माथा (त्रत्थ कृष्टि छाड (म।

নিমি ভখন মেয়ে কোলে করিয়া

নিমি পিঁড়ি পাতিয়া জলছড়া দিয়া, ভারগা মুছিয়া মলিকাফুলের মত পরি-कात कन, कैं। कनाहेर तत मान, अन्तिन पुग्रतत मामना, श्रुत्तत क्रहेगाएइत कीवानम विनन, "তোর কিরে পো- मूড়োর ঝোল, এবং ছগ্ন আনিয়া জীবা-नमरक थाहेरछ मिन। थाहेरछ विमन्ना कीवानम विलियन,

> "निमारे फिफि, क्व वर्ण मन्छन, ट्डा-रिव गाँदिय वृचि मचछत्र चारम नि ?

নিমি বলিল, "ময়স্তর আস্বে না কেন, বড় মম্বস্তর, তা আমরা ছটী মানুষ वल्टि वल्टि हारे পোড़ाর চকের अन चरत या चारह, लाकरक मि शूरे ও व्यापनाता थारे। व्यामारतत गाँदम वृष्टि इहेब्राहिन, मरन नाहे १—जूमि य त्त्रहे বলিয়া গেলে, বনে বৃষ্টি হয়। তা কর্বি, ভোর কত ছেলে মেয়ে আমাদের গাঁমে কিছু কিছু ধান হয়ে-**ছिल—यात मवारे नगरत रवर्ट जर्ला—** আমরা বেচি নাই।"

> कीवानम विलग, ''दानाहे काथा ?'' নিমি ঘাড় হেঁট করিয়া চুপি চুপি विनन, "८मद्र छ्टे जिन চान नहेशा কোথার বেরিয়েছেন, কে নাকি চাল ८ हरबर्छ।"

> এখন জীবানদের অদৃষ্টে এরূপ আ-हात व्यानक काल इस नाहे। की वानन আর রুথা বাকাবারে সময় নষ্ট না করিয়া গপ্গপ্ টপ্টপ্ সপ্সপ্ প্রভৃতি নানাবিধ भक् कतिया जाकि जज्ञकानगर्धा जञ्ञ-वाक्षनामि (भव कतिरलन। এখन और जी

त्रां ियां हित्यन, जाननात्रं खां खां खांन मा- शार्य भए, किस कि त्य ?' मारक मिश्राष्ट्रितम, পाथंद भूना प्रिथा। निगाई जभन এक ছাতে আর এক অপ্রতিভ হইয়া স্বামীর অল্লবাঞ্জনভাল व्यानिया छालिया कित्न । की वानम क्षात्करा ना कतिया (म मकलरे উपतना-মক বৃছৎ গর্তে প্রেরণ করিলেন। তথন नियारेयान विलल, ''नामा कांत्र यादन কিছু?"

कीवानम विनन, ''आंत्र कि आहि ?'' नियारेगि विनन, ''এक छ। পাক। काँगेल चारह।"

नियारे (म পाका कांग्रील जानिया की वानक (शायाभी कै। वाविष्ठ (मरे शिंत्रा विनन,

''मामा जात किছू नारे।"

मामा विवादनन, "তবে यां, आत्र এक-দিন আসিয়া খাইব।"

व्यर्गे जा निगारे की वानम क वाँ हारे-রাখিবে ?"

कीवा। कि ?

নিমি। আমার মাথা থাও।

निमि। कथा त्राथ् द ? जानिम् ?"

পড়ি।

निगारेमनि ७ व वामीत क्र वीता। (जात माथा । थारे-जूरे

हाट्जित बाहुमश्रीम हिभित्रा, चाफ ट्रेंडे कतिया, त्मरेखनि नित्रीक्ननं कतिया, धक-वात की वान त्मत मूच भारन छ। हिन्ना अक-বার মাটীপালে চাহিয়া, শেষ মুখ ফুটিয়া विनन, ''এक वात्र व छेरक छाक्रवा ?''

की वानम काँ हा हे वात्र शाष्ट्र जूनिया निभित्र माथात्र मात्रिए উদ্যত; विनिद्यन, ''আমার মেয়ে ফিরিয়ে দেও, আর আমি **कित्र काल काल कि किया निया** याहेव। जूहें वामत्री, जूहे পোড़ात-मूथी, जूरे या ना वनवात जारे जामारक विनम्।"

निगारे विनन, ''তা रुडेक, प्रामि वामत्री, व्यामि পোড़ाর मूथी একবার বৌকে ডাক্বো ?"

कीवा। व्यागि हन्न्य, এই विनिया कीवानक इन्इन् कतिया वाहित इहेगा यात्र,—निमारे शित्रा षादत्र माफ्टरेन, বার জল দিল। জল দিতে দিতে নিমাই দারের কপাট ক্লব্ধ করিয়া দারে পীঠ विनन, "नामा, आंगात এक है। कथा मित्रा विनन, "आंश आंगात्र (मदत क्ल, তবে তুমি যাও। বৌয়ের সঙ্গে ना मिथा करत जूमि यां भातिरव ना i"

को वानन विनन, य ''आभि क्छ कीवा। कि वल् ना পোড़ाর মুখী। লোক মারিয়া ফেলিয়াছি তা তুই

निमि। पामात्र माथा थाए भारत्र वफ की छिँरे करत्र ह— जी छ। भा कत्रव, লোক সার্বে, আমি ভোমায় ভয়

कत्रों, ज्ञिन य वार्शक मक्षांग, जाभिन कारे काश जारह बन।" (मन्नीलाक त्महे **मारभन्नै** मेळान— त्माक मात्रा यपि वज़ारेरत्रत कथा रत्न, जाबात्र त्यदत्र वज़ारे कत्र।"

• जोवांनम शिमन, "एउटक निरंत्र जात्र— कान भाभिष्ठेरक एडरक निष्त्र चाम्वि निरत्र जात्र, किन्न एम एकत यमि अमन कथा वल्वि, एछाटक किছू विन ना विन **८मरे भागात छारे भागात्क माथा मुड़ा** हैया निया (धान (छटन छन्छ। गाभाय **চ**ড়িয়ে দেশ্রে বার্করে দিব।''

निमि मत्न मत्न विनन, "आमिड তা হলে বাঁচ।" এই বলিয়া হাসিতে श्रिटिं निभि वाहित हहेगा (भन, নিকটবন্তী এক পর্ণকৃটীরে গিয়া প্রবেশ করিল। কুটীরমধ্যে শতগ্রস্থিযুক্ত বসন-পরিধানা ক্লকেশা এক জীলোক ব-मियां চत्रका कांग्रिङ्गि। निमारे निया विलग, ''वो निগ्शित्र निश्शित्र !'' वो विनन, "िं गिर्गाति क ला! ठाक्तकाभारे **(डाट्फ (मदत्रदर्घ नाकि, घा**रत्र (डल माथित्र मिट्ड इत्व ?''

নিমি। কাছাকাছি বটে, তেল আছে चदत्र ?

সে জীলোক তৈলের ভাত বাছির করিয়া দিল। নিমাই ভাও হইতে তাড়া-তाफ़ि जाशनि जाशनि टिल्म गरेमा (मरे जीत्नादकत माथात्र माथाहेत्रा मिन। जाजाजाजि अक्ट्रा हमनम् ट्यांभा वा-ধিয়া দিল। ভার পর ভাহাকে এক कोग मातिया विनन, "ভाর সেই ঢা-

किছू विश्विता इहेगा बनिन, "कि ला ভুই কি থেপেছিল্ নাকি, না ভোর ८क्ड जूरिंट्ह ?"

নিমাই ছুম্ করিয়া ভাহার পিঠে এক कील मातिल, चिलल, ''भाषी दवत कत्र, ছুরের একটা হুরেছে।"

तक (मिथवांत्र समा (म जी लाक भाषी थानि वाहित कतिल। तक प्रियोत खना, **८कन ना এ**ङ ছ: **८५७ রঙ্গ দেখিবার** যে বৃত্তি ভাহা ভাহার হৃদয়ে লুপ্ত হয় নাই। नवीन (योवन; कूलकमनजूना जांशांत नव-वयरमत रमोन्मर्या टेजल विना— दिना विना— षाद्या विना--- ८मरे अमीश्र, ष्यनसूरमम भागर्ग (महे भंजग्रीह्यूक वमनम्या नुकायित । वर्ष हावाटनाटकव ठांकना, नय्रान करे। क, अथरत हानि, हानर्य देशया। আহার নাই—তবু শরীর লাবণাময়, (वम ভृषा नाई, छत् (म भोमर्या मम्भूर्व অভিব্যক্ত। यেमन य्यम्यस्था विद्यार, (यमन मरनामस्या प्राजिष्ठा, (यमन ष्रान-(जित्र भस्मार्था मञ्जीज, (यमन महर्वित ভিতর হুখ, ভেমনি সে রূপরাশিতে व्यनिक्विमीय कि छिल! व्यनिक्विमीय माध्या, जनिर्महनीय उन्नड्डाव, जनि-र्कानीय त्थाम, व्यानिक्तिम क्लि। त्र श्रामिष्ठ श्रामिष्ठ (क्र म श्रीम (मिथल ना,) हामिट हामिट (मरे ঢাকাই শাড়ী বাছির করিয়া দিল। ব-निन, "कि ला निमि, कि स्ट्रेर्व ?" निमारे वृतिन, "जूरे शब्वि ?" . (म

विलम, "स्नामि शतिल कि इहरव ?" তথন নিমাই তাহার কমনীয় কঠে আপ-नात्र कमनीम वाङ् (वष्टन कतिमा विनन, ''नांना जरमरह, रजारक रयरज बरनरह।'' দে বলিল, ''আমায় যেতে বলেছেন। ত ঢাকাই শাড়ী কেন, চল না এমনি गारे।" निमारे जात शाल এक ठफ यातिल-एन नियाहेरमन काँट्स कांक निमा ভাহাকে কুটীরের বাহির করিল। বলিল, "চল এই न्याकड़ा পরিয়া তাঁহাকে দেখিয়া আসি।" কিছুতেই কাপড় वमनारेन ना, অগত্যা निमारे রাজি रहेन। निमारे ভাষাকে সঙ্গে नहेग्रा আপনার বাড়ীর দার পর্যাস্ত গেল, গিয়া ভাহাকে ভিতরে প্রবেশ করাইয়া ঘার ক্ল क्रिया जाभिन घाटत माँ एवरिया तरिन।

(यां ज्ञा श्रीतरम्ब ।

সের জীলোকের বয়স প্রায় পঁচিশ বংসর, কিন্তু দেখিলে নিমাইয়ের অপেকা
অধিকবয়য়া বলিয়া বোধ হয় না।
মলিন গ্রন্থিক বসন পরিয়া সেই গৃহমধ্যে প্রবেশ করিলে, বোধ হইল যেন
গৃহ আলো হইল। বোধ হইল পাভায়
ঢাকা কোন গাছে কত ফ্লের কুঁড়ি
ছিল, হঠাৎ ফুঁটিয়া উঠিল; বোধ হইল
যেন কোথায় গোলাবজলের কার্কা মুখ
আঁটা ছিল, কে কার্কা ভালিয়া ফেলিল।

यन के जनस्वाधिक धून धूना खन्सन (क्लिय़ा सिन। (मृ फ़्रिभ्मी गृह-মধ্যে প্রবেশ করিয়া ইতন্ততঃ স্বামীর অংষ্যণ করিতে লাগিল, প্রথমে জ (मिधिट भारेन ना। जात्र भन्न (मिस्टू, গৃহপ্রাঙ্গণে একটি কুম বৃক্ষ আছে, षाट्यत्र कार७ माथा त्राधित्रा कीवानम कै। निर्छि हिन। (मरे ज्ञाभनी छै। हाज निकटि शिया धीरत धीरत छाहात हन्छ-थात्रण कत्रिण। विण ना (य जाहात्र हत्क कल कामिल ना, कामी बद्ध कारनन, रय তাগর চক্ষে যে স্রোতঃ আসিয়াছিল, विद्रित जाहा जीवानमरक जानाहेशा मिड; किंद्ध मिंग छोड़ा विहेटड मिन ना। जीवानत्मत्र शङ शाङ नहेगा विनन, ''ছि, कैं। पिও ना, जामि जानि जूमि जामात्र जना कांनिटज्ह, जामात्र बना जूमि क्।मिछ न।—जूमि यथकात्र আমাকে রাথিয়াছ, আমি তাহাতেই ञ्यो।"

बीवानम गाथा ज्निया छक् ब्हिया जीक बिछामा कतिरणन,

'শান্তি! তোমার এ শতগ্রন্থি মলিনবন্ত্র কেন? তোমার ত ধনের অভাব নাই, দে বিষয়ে ত আমি ভোমাকে কই দিই না।''

नासि विनन, ''ত्মি यে धन मित्राष्ट्र, छाहा छाभात्रहे खना चाह्य। चामि छोका गरेगा कि कतिए इत्र छाहा जानि ना, यथन তুমি चानिद्रव, यथन তুমি चाबारक ' चावात्र शहन कतिय—''

জীবা। গ্রহণ করিব—ভশান্তি ? আমি আছে ? যে তোমার অঙ্গে পতগ্রন্থির কি তোমায় ভ্যাগু করিয়াছি ?

ज्र नाम इंहेरव, यरव आवात आयात नहांत्र ज्ञा (म धर्म (य जान कतिन, ভালবাসিবে—

कथा (भव ना इहेट इहे जीवानम भाखिष्क गाए जानिक्रन कतिया छाहात वतन, वन्नूक चाएए कतिया, श्रानिश्छा। কাঁধে মাথা রাখিয়া অনেককণ নীরব করিয়া এই পাপের ভার সংগ্রহ করি। হইয়া রহিলেন। দীর্ঘনিশ্বাস ত্যাগ পৃথিবী সস্তানদের আয়ত্ত হইবে কি না कतिया (भारव की वानम विनन,

ব্রত ভঙ্গ করিলে ?

আছে। তাহার জন্য ভাবি না, কিন্তু না। তার পর বলিল। "ছি—তুমি ভোমার দেখিয়া ত আর ফিরিয়া যাইতে পারিতেছি না। आমি এই জন্য নিমা- आমি বীরপত্নী। তুমি অধ্য স্ত্রীর জন্য ইকে বলিয়াছিলাম যে, দেখায় কাজ বীরধর্ম ত্যাগ করিবে ? ভূমি আমায় নাই। তোমায় দেখিলে আমি ফিরিতে ভালবাসিও না—আমি সে স্থ চাহি পারি না। একদিকে ধর্মা, অর্থ, কাম, না—কিন্তু তুমি তোমার বীরধর্ম্ম কখন মোক্ষ্য জগৎসংসার একদিকে ব্রত হোম याग यखा ; नवहे जिन्हारक, जात जक-দিকে ভূমি। একা ভূমি। আমি সকল প্রায়শ্চিত কি ?'' गमरत्र वृक्षिट्छ भाति ना ८य, ट्कान मिक् कीवानन विलालन, "প্রায়শ্চিত্ত— দান ভারি হয়। দেশ ভ শান্তি, দেশ লইয়া — উপবাস—২২ কাহণ কড়ি।" আমি কি করিব ? দেশের এক কাঠা শাস্তি ঈষৎ হাসিল। বলিল, 'প্রায়-प्रे (পলে ভোমার महेरा আমি সর্গ ভিত্ত কি তা আমি জানি। এক অপ-প্রস্তুত করিতে পারি, আমার দেশে রাধে যে প্রায়শিত—শত অপরাধে কি काल कि ? स्मर्भन्न दमारकत्र छःथ, दय छ।हे ?" 'তোমা হেন জী পাইয়া ভাগে করিল— ভীবানন বিশ্বিত ও বিষণ্ণ হইয়া णशंत्र जारमणा (मरण जात्र (क शःषी जिळामा कतिन,

দেখিল, তাহার অপেক্ষা অতুর দেখে भाषि। ত্যাগ নহে—যবে তোমার আরু কে আছে ? আমার সকল ধর্মের ভার কাছে আবার সনাতনধর্ম কি। আমি कान शर्मात्र जना (मर्भ (मर्भ, वरन জানি না; কিন্তু তুমি আমার আয়ন্ত, "কেন দেখা করিলাম!" তুমি পৃথিবীর অপেক্ষা বড়, তুমি আ-শান্তি। কেন করিলে—ভোমার ত মার স্বর্গ। চল গৃহে যাই—আর আমি कितिय ना।

জীবা। ব্রতভন্ন হউক—প্রায়শিত্ত শান্তি কিছুকাল কথা কহিতে পারিল বীর। আমার পৃথিবীতে বড় হুখ যে, ত্যাপ করিও না। দেখ—আমাকে একটা কথা বলিয়া যাও—এ ব্ৰভভঙ্গের

''এ সবল কথা কেন ।''

· भाखि। এक जिला जाहा जा· ''शांगाहे, मूथ जा जाति (कम ?'' मात्र मरक जावात रमशा ना इहरन প্রায়শ্চিত্ত করিও না।

की वानम ज्थन श्रामित्रा विनन, "(म वि-यदत्र निन्दिष्ठ थाकि । एकागारक नः प्रिच-রা আমি মরিব না। মরিবার তত তাড়া-ভাজি নাই। আর আমি এখানে থাকিব না, কিন্তু চোধ ভরিয়া তোমাকে দে-चिट्ड পाইनाम ना, একদিন অবশ্য সে (मत मनकामना मकन इहेर्व। आमि এখন চলিলাম, তুমি আমার এক অমু-রোধ রকা করিও। এ বেশভূষা ত্যাগ কর। আমার পৈতৃক ভিটায় গিয়া বাস क्द्र।

भाखि बिकामा क.त्रन, "जूमि এখन ८काथाय याहेरव ?''

জীবা। এখন মঠে ব্রন্সচারীর অমু मक्षांत्य याद्येव। जिनि य जात्य नगद्य शियार्छन, ভাছাতে किছু চিন্তাযুক্ত ছই-माहि; पिউल्प डाँश्व मकान ना भारे, नगदत्र यादेव।

मल्पमा পরিছেদ।

ভবানন্দ মঠের ভিতর বসিয়া হরিগুণ পান করিতেছিলেন। এমত সময়ে उपिष्ठ इरेट्यम। छ्यानम विल्लान,

थीत्रानम बनिरमम, ''किছू भागरपात्र त्वाथ इहेटल्ट् । कानिकात काल्हात बना (नए ता (शंक्र या का शक् (क विरंख्र हूं, আর ধরিতেছে। অপরাপর সন্তানগণ चाच नकटल है रेगित्रक जांग कतिशाद । কেবল সভ্যানন্দ প্রভু গেরুয়া পরিয়া क्रका नगत्। क्रियूर्थ शिवाद्यन। क्रि कानि, यमि जिनि भूमनगानित हाट्ड পড়েন।"

खवानक विमालन, "डाँशान चारेक রাখে এমন মুদলমান বীরভূমে নাই। তথাপি আমি একবার নগর বেড়াইয়া আসি। ভূমি মঠ রক্ষা করিও।"

এই বলিয়া ভবানন্দ এক নিভূত क क्ष्मि शिश्नो धक छ। विष् मिमूक इहेट छ, কতকগুলি বস্ত্র বাহির করিলেন। সহসা खवानत्मन क्रभाखन रहेन। (शक्या वमरनत পরিবর্তে চুড়িদার পায়েজামা, (मत्रबाहे, कावा, माथाय कामामा,, এवः পায়ে নাগরা শোভিত হইল। মুখ इरेट जिथुणानि हन्मनिङ्क मकन वि-नुशं कतिरनम। ज्यत्रक्षधक्षण्याक्षा-ভিত ऋमत म्भमखन जश्राणाडा भारेन। ७९कारन छ। शास्त्र ্মোগলভাতীয় যুবাপুরুষ বলিয়া বোধ रहेट जाशिन।

गभन रहेना गर्व रहेटल निकास रहेटलन। विषक्ष मृत्य धीतानम তाहात काष्ट्र जाभिया मिथान हहेए जाएनक मृत्व छ्हे छि

ছিল। ভবার অনেকগুলি অর্থ রক্ষিত हुहेबाहिन। मर्रेगिनिरात्र अधनाना **क्ट्रे शाम्त्र। खवानम जादात्र मधा १हे** ज वकि वार्ष উत्त्राञ्च कतिया उर्श्व चारत्राह् शृक्षक न भेत्रा छि मूर्थ धारमान इटेलन। याहेटच याहेटच महमा ভारात গতিরোধ হইল। সেই পণিপার্শ্ব কল-नामिनी जत्रिमीक्रम गगनज्छ नक्रखात-নাায়, কাদ্দ্দনীযুত বিহাতের নাায়,দীপ্ত जीमूर्डि महान (मिला। (मिला की वन गक्र कि नारे—म्ना विषय को । পড়িয়া আছে। ভবানন্দ বিশ্বিত, কুৰা, **डीड इहेम। बीवानत्मत्र नाात्र, छवा-**नम् गरहरक्तत्र द्वीकमारक (मर्थन नाहे। कीवानम (ग नकन कात्रान मत्मर कित्राहित्वन (य ७ मरहरत्कत्र जीकना। इरेट भारत—खवानत्मत्र कार्छ সে ধকল কারণ অমুপন্থিত। তিনি बक्रात्रीरक मरहस्रक क्लीखारव नीज र्टेट पर्यन नारे - कन्यानि दम्यान नाहे। कोठा प्रिशा व्वित्वान कान जी लाक विष बाहेबा मित्रबाट्य। खवा-नन (मरे भरवत्र निकष्ठे विमन, विमत्रा कर्लारन कर्नश कतिया অन्किक्न छा-विन। माथाम, वभाग, हाटल, भारम हाल मित्रा (मिथन ; चरनक क्रमश्रकांत्र चम-'রের অপরিজ্ঞাত পরীক্ষা করিল। তথ্য भरन मरन विलल, এখনও সময় আছে,

অভি অমুক্ত পাহাড় ছিল। সেই পাহা- কিন্তু বাঁচাইয়া কি করিব। এই রূপ (इत छे १ में वे के दिशा हि। (गरे छ्वांनम क्यानकक्र हिन्छ। क्रिया क्रिया ছুইটি পাছাড়ের মধ্যে একটি নিভূতস্থান চিস্তা করিয়া বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া একটি বৃক্ষের কতকগুলি পাতা লইয়া আদিলেন। পাতাগুলি হাতে পিবিয়া त्रम क्तिया (महे भरवत अर्छ पञ्चर्छम क-রিয়া অঙ্গুলীয়ারা কিছু মুখে প্রবেশ করা-हेया मिल्नन, शर्त्र हत्क ७ नामिकाय किছू किছू तम निर्मन—चरक रमरे तम মাধাইতে লাগিলেন। পুনঃ পুনঃ এইরূপ क्रिए नागिरनन, मर्था मर्था नारकत्र कार्ष राज मित्रा मिथिए नागित्नन, य नियान वहिट्ड कि ना। (वांध इहेल (यन यञ्ज विकल इटेट्डिए। এटेक्न वर्क्ष পরীক্ষা করিতে করিতে ভবানন্দের মুখ किছू প্রফুল হইল—অঙ্গুলীতে নিশ্বাদের কিছু ক্ষীণ প্রবাহ অমুভব করিলেন। ভখন আরও পত্ররদ নিষেক করিতে লাগিলেন। ক্রমে নিশাস প্রাথরতর ব-হিতে লাগিল। নাড়ীতে হাত দিয়া ভবা-नम (मथितन, नाषीत शकि इहेग्राटह। (एस जास जास श्रामिक जास প্রভাতরাগবিকাশের ন্যায়, প্রভাত-পদ্মের প্রথমোক্ষেষের ন্যায়, প্রথম প্রেমা-श्रुভारित नाम कलानी हक्क्योलन कतिएक लाभित्नन। (मिथ्रा क्रनानन **मिरे वर्षकी विक एक्ट क्युंग्रिक कृतिया** लहेबा क्रजरंदरंग चार्य हालाहेबा नगरत (গলেন।

वाखनिन পরিচেদ।

मक्ता ना इहेट इह मखानम्भाग मकलारे जानिए পারিয়ছিল, যে সত্যা-नम खन्नाती जात मरश्य प्रे जरन वनी इहेन्ना नगदबन कान्नागादन आवक আছে। তথন একে একে, ছুয়ে ছুয়ে, मर्म मर्म, मर्ड मर्ड, मखानमध्यमाय व्यामिया (महे (मवानय (वष्टेनकारी व्यवग পরিপূর্ণ করিতে লাগিল। সকলেই সশস্ত। নয়নে রোবাগ্নি, মুখে দম্ভ, অধরে প্রতিজ্ঞা। প্রথমে শত, পরে महन्त्र, পরে दिमहन्त्र। এইরপে লোক-সংখ্যা বৃদ্ধি হইতে লাগিল। তখন মঠের হারে দাঁড়াইয়া তরবারি হত্তে ভবা-न्म উচ্চৈ: यद विलिए लागिन—' यागदा এই বাবৃইয়ের বাসা ভাঙ্গিয়া, এই যবন-পুরী ছারথার করিয়া অজয়ের জলে ফে निया मित। এই न्यादात यौद्याफ আগুনে পোড়াইয়া মাতা বস্থমতীকে আবার পবিত্র করিব। ভাই, আজ সেই **मिन जामियार्छ।** जामारमञ छक्त छक् পরমগুরু, যিনি অনস্ত জ্ঞানময়, সর্বদা শুদ্ধাচার, যিনি লোকহিতৈষী, যিনি (पगहिदेख्यी, यिनि ननाडनधर्णात श्राः প্রচার জন্য শরীরপাতনপ্রতিজ্ঞা করি-য়াছেন—যাঁহাকে বিষ্ণুর অবভারস্বরূপ गत्न कति, यिनि आगारमत मुक्तित्र छे भाग्न, তিনি আজ মুসলমানের কারাগারে বনী।

रुख श्रेमांत्रन कतिया, ख्वानम विनन, "এবাছতে कि वल नारे?" - विक कत्रा-चां क कि का विना , "এ क्षार कि माहम नाहे १—ভाই ভাক, হরে মুরারে মধুকৈট-ভারে !— यिनि মধুকৈটভ বিনাশ করিয়া:-(इन-सिनि हित्रणाकिनिश्र धरःम, मखरजन, শিশুপাল, প্রভৃতি তুর্জন্ন অস্থরগণের निधनमाधन कतियाद्यन—गैश्नित চ जिन्द्र घर्षत्रनिर्पारि मृज्ञाक्षत्र भक्, जीज हरे-श्राहित्नन-यिनि चरक्री, त्रत्न क्रमांजा, আমরা তাঁর উপাসক, তাঁর বলে আমা-দের বাহুতে অনস্ত বল—তিনি ইচ্ছাময়, रेष्ठा कतिरमरे आभारमत त्रपक्षत्र रहेरव। **চল আমরা সেই যবনপুরী ভাঙ্গিয়া ধূলি**-গুঁড়ি করি। সেই শূকর নিবাদ অ্রি-সংস্কৃত করিয়া অভায়ে ফেলিয়া দিই। অনেক দিন হইতে মনে করিয়াছি যে সেই বাবুইয়ের বাসা ভালিয়া খড়কুটা वां जारम डेड़ारेबा निरे। वन-''रूद्र মুরারে মধুকৈটভারে।" তথন সেই कानन इरेट अञि धौरन नारम महस মুরারে মধুকৈটভারে!" সহস্র অসি একেবারে ঝনৎকার শব্দ করিল। সহস্র वल्म कनक महिङ छ र्क छिथिङ इहेन। महस्र वाह्र व्याप्या ए विक्रिनाम इहेरक लाशिन। महत्र छाल याक वर्शन कर्कन পৃষ্ঠে তড়বড় শব্দ করিতে লাগিল। महाकागाहरण পশু मकन छी छ इहेगा कानन इटें एक भनारेन। भक्की मकन खर्म উচ্চরব করিয়া গুগনে উঠিয়া গগন আ-তা্সাদের তরবারে কি ধার নাই ?" চছন্ন করিল। সেই সময়ে শত শত জন্ম- ভক্কা একেবারে নিনাদিত হইল। তথন

'হেরে ম্রারে মধু কৈটভারে''বলিয়া কানন

হইতে শ্রেণীবদ্ধ সন্তানের দল নির্গত

হইতে লাগিল। ধীর, গজীর পদবিক্ষেপে

ম্থে উচ্চৈ:স্বরে হরিনাম করিতে করিতে

তাহারা সেই অন্ধকার রাত্রে নগরাভিম্থে

চলিল। বস্তের মর্মার শন্দ, অস্তের ঝন্
ঝনা শন্দ, কণ্ঠের অন্দৃট নিনাদ, মধ্যে

মধ্যে তুম্লরবে হরিবোল। ধীরে,গজীরে,

সরোষে, সতেতে, সেই সন্তানবাহিনী

নগরে আসিয়া নগর বিত্রস্ত করিয়া

ফেলিল। অকস্থাৎ এই বজ্রাঘাত দেখিয়া

নাগরিকেরা কে কোথায় পলাইল, তাহার ঠিকানা নাই। নগররক্ষীরা হতবৃদ্ধি হইয়া নিশ্চেই হইয়া রহিল।

এদিকে সন্তানেরা প্রথমেই রাজকারাগারে গিয়া কারাগার ভাঙ্গিয়া রক্ষিকবর্গকে মারিয়া ফেলিল। এবং সভ্যানন্দ, মহেন্দ্রকে মুক্ত করিয়া মন্তকে
তুলিয়া নৃত্য আরম্ভ করিল। তথন

অতিশয় হরিবোলের গোলযোঁগ পড়িয়া (भग। मङ्गानम मरहस्राक मूक कति-बारे छोरात्रा (स्थारन मूमलगारनत शृह मिथिन जाखन धनारेना मिटि नातिन। किन्न এই मकन कार्या जाहारमत अधिक मभग्न नष्टे इटेग। टेज्यमात्र नगात्रत्र রাজা আসত্লজমান বাহাদ্র নগরস্থ रिमना मकल मः গ্রহ করিলেন, এবং কা-মান, গোলা, वन्त्र महेशा मसानम्खा-षाद्यत्र मञ्जूषीन इरेटनन। मञ्जानि रिगत অন্ত্র কেবল ঢাল তরবারি ও বলম। कामान, शाना, वन्त्र पिश्वा छाहात्रा কিছু ভীত হইল। তোপের মুখে অসংখ্য সস্থান মরিতে লাগিল। তখন সত্যানন্দ विलिटनन, ''ফিরিয়া চল, অনর্থক বৈষ্ণব-वर्ष व्याप्ताकन नाहे।" ज्यन পরাজিত হইয়া সন্তানেরা স্লানমূথে নগর ত্যাগ করিয়া পুনর্কার জঙ্গলে প্রবেশ করি-(मन।

medel Flows

वामानित **উ**९भि ।

ষষ্ঠ পরিচেছদ।

ष्यार्था भृत ।

शूर्क भितिष्क्रिंग आमता (य क्यिष উদাহরণ দিয়াছি ভাছাতে বোধ হয় ইহা श्रित इरेत्राष्ट्र (य वानानित्र मर्था जरनक-श्वनि जाणि जनार्यादः । जामत्रा (य कप्रिष्ठि উদাহরণ দিয়াছি, সকল কম্বটি একণে ৰাঙ্গালি শুদ্ৰ বলিয়া গণিত। অতএব ইহা অবশাই স্বীকার করিতে रहेरव, य वाजानि भूख मकन ना रहेक (कर (कर धनार्ग्यः ।

(कर् (कर् विलाड शांत्रन, (य चांमता পূर्सभितिएक्टिए य मक्न श्रमां नित्राहि তাহা সবগুলি ছিদ্রশূন্য নহে। তাহা णामत्रा कडक चौकांत्र कति, किन्न धक श्रमां किछ्छ, क्रकां काट्य। वर्ष छ আকুতি। যেখানে বর্ণ ও আকুতি আর্য্য-काजीय नरह, रमधारन रय क्यनाया भाविज বর্দ্ধমান, ভাহা নিশ্চিত। আমরা যে কয়টি উদাহরণ দিয়াছি, সকল কয়জাতি সম-(करे जनगाना क्षमाणित छेभेत्र वरे जा-কারগত প্রমাণ বিদ্যমান। অতএব ঐ কয়টি জাতির অনার্যাত্ব সম্বন্ধে ক্বত-निम्हत्र इख्या यादेख भारत ।

षामत्रा मत्न कतित्व अत्रथ छेमार्त्रण অনেক দিতে পারিতাম। দিনাজপুর ও খিতে পারিতাম। পশিমারা ভাষায় ইত্যাদি। কিরাত শব্দ প্রাকৃততে

বাঙ্গালি ও ধর্ম্মে হিন্দু স্থতরাং তাহারা वाकानि वनिम्ना भगा। किन्न छार्गाम्य আকার ও আচার অনার্য্যের ন্যায়। ভাহার৷ কৃষ্কায়, থ্রাক্ত শ্কর পালে এবং শুকর থায়। স্থতরাং তাহাদিগের অনার্যাতে কোন সংশন্ন নাই। মহু,মহা-ভারতাদির পুলিন্দজাতি বর্ত্তমান পলি-দিগের পূর্বপুরুষ, এমন অমুমান কত-দুর সঙ্গত, তাহা আমি এক্ষণে বলিতে পারিলাম না।

কোন আর্যাবংশীয় জাতি যে পৃকর-পালন করিয়া জীবিকা নির্বাহ করিবে हेश मछव नरह। दकन ना भ्कन्न आर्या-শাস্ত্রামুসারে অতি অপবিত্র জন্ত, বাঙ্গালা-अप्रकाशी आर्थात्रा के नकन वावनाम रय जनागामिरगत शटल त्राधिरवन, देशह मछव। विष्य मुक्त वा मुक्तमाःम चार्यामिरशत रकान काट्य मार्थ ना। অনার্য্য বলিরা স্থির করা যায়, তাহা **इटे**ल पिक्न वाकानात्र का छत्रात्राख का नार्या विनिया (वाध रुप्र। का अतामिरगत **बाठीय बाकावं बनार्गामध्य नाग्य,** কাওরারা কোন্ অনার্যান্তাত্সমূত তাহা নিরূপণ করা যায় না। কিন্তু কতকণ্ডলি অনার্যা জাতির সঙ্গে ইহা-**मिर्शित नारमत्र मामुणा जारक्। यथा** मानमध् भनि वा भनियामिश्तर कथा नि- काष्ण्या, भाष्ण्या, थाष्ट्रिया, कोत्र,

THE WARRENCE TO STATE OF THE PARTY OF THE PA THE FOREST STATES OF THE STATE THE REPORT OF THE PARTY OF THE THE WITCH THE MAN THE STREET WITTER WAS FOR THE STATE OF THE TIMINITA FEW WITE FROM SCHILL CATAL WILLS WITH SINGLE care former winds with the second with THE TENEDS WELL WITH THE CT PROPERTY TO THE PROPERTY OF THE THE STATE OF T CT TEN GREEN GIVING GIVING MINES MINES WITH CHANGE STATE OF THE STATE OF TH THE RESIDENCE ASSESSMENT AND ASSESSMENT ASSE THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

द्रमाया भार रण सना THE PART OF THE CT THE THE STATE OF THE STATE O About a transfer for the party of the party THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH भारतक करत्म, भारत आवृत्ति स्टास MAX WINTER WINTERS I WINTER CHIA Carry at the contract of the contract of COLO MEMBER ME MINISTER 1

THE STATE OF THE S TARLEY STATES TO A STATE OF THE STATES PRITTY, PRINT FRANKLING SAVIE THE RESERVE OF THE PROPERTY OF MONTH HIN TO BUILD WAS BEEN DIETE CHEMIC CO MAN WINDOW with the same of t

No other

ভিন্ন, टारांशा कालाएत विषया छांश- पिशक कालियांत शर्ड भूल हरेट छ-मिर्गित वर्गच नाहै। " এই क्रथ चामवर्ग गिरु विगिष्ठ विगिष्ठ चार्ष्ट । शतिषयामिएक काहाता कविष्ठ, छाइः ্দেখা যাউক।

खाकानार देवभाकनायः भगत्यः समा सामगण

नियान मृत्यागायाः गः भनाय छेछ छ । सञ् ১० व काशांत्र ५

कार्वीद देवभाक्ताप्त नागर्र आकार क्रेट्र क्षवार्हेत हया, का : भूमकनारंग भारत तर-क्षम इटेटल नियाम या भगटचंत्र । सा । IJA*U

मुसामारगांभव कलां: इंडिंगन्हांभरमा

रेवणा बाह्य- विद्यारमे होत्रए मर्व-

अञ्च की ६०

कारमाग्रद, क चित्रात्र गएंड मूंच करेएक लाय अवस्त काएक, हाराजा त्म केन्द्रयकुर्ण कार्य व्यान वा जानकनामि ना ई मुझ धरेट म् छार्या स्वा ।

ा मनम आक्नानि दिन चात्र रहेना প্রিত হয়, মথ তাহাদিপতে প্রতা বলি-प्राप्ति। धरः सम्भ लामा, कनिय प्राम् प्राम्याय, भारा स्टेटम छेपमित द्वाचा प्रवर रेवना लोका क्टेटक नीठ- क्रेटकट्ट द्य, वानानाय मुद्रमद्या कफक-बाहित उर्भावत कथा निनिद्याद्वन। यहां डां वट इस का आमान भारत जाका-

जिंडे मकल भक्षत्रवर्ग, खांक्रान, किंछिय, रेतमा भाषा दाम लाग्न माठे, हेहा এकक्र निम्हिक। धरः देशको ८म भूलभटनक मत्रा जान भाष्ट्राष्ट्रिंग, काश्रक भाष्ट्र **८मथा शिवाटक ।** काटबांचन ना डाका ८ भारत वाषासारा नाहे : कथन हिस कि मा मत्त्वर, दकन ना कलिय देवना चामा-नाम जनम आईएन गाई। किछ छ औ दगता वामानांश जिल्लिस वहल । अध्यानि শ্রের তাদার একটি প্রধান ভাগ। त्यात्त्रस्थः व्यक्ष्यः वाक्ष्यः कार्यावः भी व । वाकावाम भुग्नाणि भागत्वार महात्रण, महारदर्ग इत्राह्म द्व काकार्य व गरीति जागात्मानिए, इत गिउक्स सय मानुक्त कडेंटर आशत करेंदा वाकि ह कार्याद देवकारत राहर्ष: मृत्र क्टेट्ड क्टेट्र, फिल्यास मध्य नार्थ। नाका विश्वक सामा खाइति लागान हिलात रम क्या शिवार छ। (एस मा आजन क देनमा एक हार है विश्व आया।

> ्र प्रशेष, व्यायता (भव किन शरिराक्टरा फिल विश्वक आर्यायः भीत ध्वर केणक-खनि पार्था कनारमा मिलिङ, भिज्माक-

शिलगः भूने व दर्श गः छि। महीर्ग छोनाः उत्पन्न तद माछ। भिकृषाि विक शहरदाद न वर्गदः।

- कुटलंब मटथा जक कूटल जाया जाब जक विश्वक जाया मटलह गाई, टकमना दा-कुरल कानार्ग।

विषयः। अविकिन् ; ग्रा निक्। निवृत्तता. टेगमा। 'डाश्त सामान खाडीन मस्युक लाइ भगारा पविचारन भाउता समार दराभ दर एकरहे काका मिलान देरमाय जारीकार करिएतम मा। योभालाय मूळ जाति, भिष्य मुमिनात विल्लेश मार्थः हिन मत्भा दर टैवमा जारक, जानाव हैन। है दक् अवति। ध्रान्।

मध्य श्रीतराख्म । 京門 初州

मध्याति छ। एस हिन्यति पाद्यम्यान अन्तर अर्थ भ्रेश अभियो यात्रा लाहे. गांक जारा श्रमक किट्डिक्स ।

खाया निकालन माध्याम हेटा निही कर रहेगाड़ कर छानलीय खबर रहेगाया नीय वर्षान कर्षा न संकत् एक व्यक्तिन धामायः महरू हेरमः। यश्चितं स्वादा भारास्था, दनके साधाराभीसः वाका-ेत छारा। कार्याछाया, दलमा याकः। न यागावश्मीत छ।डि।

ार्या मदह । जानन जानियंक जयर भूति राम्यरमी न्या : अम्म वार्ष

कारनंत आकाम इकेटकरे स्ट्रमिस किस हिल्द्रिका । एकक्श्रीम मूल्यांकि था- मस्यक मस्य मस्य मा, मस्यक पाँठिया । । । । । हीनकाल स्ट्रेटण व्यार्थाकाणि मर्या शना. तक गाता निक्र कालिए हैनना स्ना क्षित काधुनिक वाकावाम काधाना नृष्यः क्षेत्रण इन्ट्रिन इन्ट्रिन भारत, विश्व कालाग्र देनणा नाषाणात्र माहे योजदन्ते प्रया खारि ग्रमाश्थाक देवनागन्द नान सिंहन रम्भः भाग एम नाक्षानि एक यस पूर्ण क्यांत्र ्विक्टा, अभव क मूल । आकार विश्व विश्वम भागार्थ विश्वधना सनिवर्ग के छ । ८वर्षे ।मस्ति । विस्ति । किवतः केवितः हैस्तर्थ दिहरेण आंगरा ५ मन्द निकारिक करि-शक्ति। (चमना वामानि कान्ति। मत्यः अर्थाति म्लिने श्रीना । में

> राष्ट्राकारन डेड ७ भा नमा निवारण—एम आर्थिया तमभाखाः इवेटल वाभानाम कामिश किला काम कामरा करे उच्च हेथालस कांद्रशिक्षाय, त्व कांधारा शामियात अध्य वाक्ष्माप वनिक हिल कि सा भ

िखार अध्वया जिया एक. ा आर्थश क्षां मारा क्षांतियात युद्ध वाकावांस क्षा नार्थालिया नाम जिला। जात भव (प्रसि-याचि ता तम् अगः शंत्रां व्यवनामीत गारा । जयकक्षित् दक्षित्रभाषिः, मार् क्षित्र सामाणि चामिणिक या विश्वक अन्यात्तः, भाविष्यक्षीतः हा हा हा हुन्।

क का मार्यत्र दशाकंत्ररणात्वाचात्र वित्र करेद्राट्य – त्य वित्राचाव द्य व्यास्त्र ना "विश्वाचाचा आहरित, काहारक प्रकारक प्रकार होता व्यक्ति करत-उत्तार्थ THE BUT ATT

कारी हिना। जात भन्न जानिए वःभीरमना अकाम अके नावानियांकि किलामारस च्याहेरम्। लहर कायाशन जाभिया बाला-ना अधिकात्र कदित्न (कःनीय ए छ।विष्ठी खनानित्र डाहामित्वन काठनाम भनावन कतिया नमा ७ शांतां डा शांतां भाषाम त्राह्ण करतः ।

किंद्र गक्षा संस्थिति, स्रोप्तांत स्रोप सांब साभागा वंजेरच धन हैवा क्या छ ार्यिकारमा नाथा र नग्रिस ध्यक करह , खाभतः तक गानिस्रोधि, तम कानामा जन न्यार्गात मध्य गरन अधिरन आयानवा अ जागानामाशस्य करेंद्रशा हिल्लियां ह यिनिया अवा रामेश किस्त्रमाक्षण्य हर्दर्भ हिस्दर्भाखं चयांगा यातां गमधन न ११। दम जिस्सि ।

(पशिवाधि, त्य नामानाभाषाय अवन ख्याच मृत्र निका ्कान अवः आद्ध रमिशानि, त्य स्थानि मुभुभाग मत्या कारत कारतक के जिल्हा कारत. त्य किनोधानपर एकित भूक भूका विभा CAIK BH I

श्रीतिद्यात्व केर्ण्य खात्राण्य केला विवाद (म, वाक्षाक्षिण्यत क्रियम्भ समाया-मछड रहेरल । जनसा म जानावरनी में। टकड लिंड जाया, त्याम जायहं काश्वत. दक्द जागा जनामा जिल्हामनकाल; रममन

केंद्राज्ञ क्रेस, जाका जामवा वृत्रियाछ । প্রথম কোলবংশীয় অনার্যা, ভার পর सानिजनाभीय जानार्यः ; जाक्ष पत्र कार्याः ; उरे जिस्स जिल्हा जाधुनिक नाजानिः माजित दिश्याचि हरेबाटि । भाषान, Cफ्ल 'e सर्वात मिलिश' दे: देस अधि-न्तर्ह । किन्दु हेश्तरहात श्रीतम अयामा-ित्र शहरन एउंकि निरमम थाटनम भारत । क्षित्रक रेडिक वा राह्म क्षेत्र वा मर्गाय करेक, गर्वा वाजिय मधीओं व है रहक स कार्नि खास्क अरेगार्ट, अन्यानिने क्तार्यास्थात्र । नामानि । दा कास्ट्रक कारत, र्हेशांकित क क्षेत्रात्ता अन् आक्रिएक स्थित क्रियाटक, काषाव एक धार रामासि मार्फिश्य शास, धरेकाल हार्स, ८०५ कार्गाम। घरीय भाष्य दहें, इन है न्यार परिवेदें वस के एकता कर न्यान प्यार्थ कि मा--डांश्य खानाम मुकिया। एडे फिन कार्कित वाल उपार्ध भिन याटका शामण्यासम् मधिक विस्तिवारि अपरास्त्र कृति। विलिक क्षत्रा १० के इत्राहर धानाहै जाल नार्ष रा अनाव अविष्य नार्षका स्थ कर्वारक । किया धन वार्षि काण्डितान, बालिया हिमाने भूपक कांत वान केलाश चाने । त्यारकेय केशब धान छेल्टलब्बांच इक्तम भारता स्था । किल ''लावाडीय कार्निक्रियान वर्गिर्डिकाक क वाभागाम विमी शुगक मास्टिया मि-चित्रा ककि कामसभावाद गाविन्छ ३व माहे : स्थागिष्ठ खाक्रन र नागामपुछ थना साहि बेरेट मन्तूर्व नुपक् दकि शास्त्र । यान ८काम श्राटन सार्था था-नार्या देवस्विवाह या ल्यादेवसमः मर्गद कारा मर्मिणान चित्रिमारक, रमचादम रमाद अश्रीसात देशम मधारमता आगा यः हातिहाश श्राम्य इहेर्ड शृशद् थारक। नार्थ। इहेटच जाब जिक्छि भूथक जाकि वाक्रानिमभारति नियस्त्र देवे वाक्षानि व कडेशा अध्यारछ। छथारमता देशंत्र नागा रा निश्चिक चार्गा ७ राजानि भूम्म जिलाइत्या है सदझ एक आफि, वाका-'क्षेत्रः भ्रम्मालि । नाम्यविक अक्तर्भ योका-विशास आंगरा वाकाणि भति, जादा- दाकालिका । अभिक्षिक आंगिका जि विशि क् भीत भाषानामा हिन्तू भाग स्टिमत यात्र निका निभिन्न इस । जक छड्ते काछि माणालि भूमलयात्।

गान: डेभरतम खरतन खात रकनगर आर्था। अहेबाना स्न क्हेर्ड (पिंः विश्वत निर्मा हार्निशकात वाक्रांनि भारे। यारे त्याम इत द्वर याक्रांनान रेडिशम लक आया, विजीय कागामा हिन्दू, अक आमानश्मीम काजित देविहास क-



वदभाग्यम ।

सर्थ अशित्यक । राजानाय त्याना ।

णारमिकात्र भी कत्रात्र मध्य मध्य . ग रकास मञ्जूरमान मुकु। इस ; किला ज्ञाहरू वास्तिरमय नई स्वाह आवर इव ना । आधिकाय जिनित छेलदान केल-ावाणीय ध्ववानीत्ववः मध्या खात्र लकः

बार्भ अस्तिद्यात खनांकांख इत्या स त्या दाश। अभिभ भियामीतम्य भत्भा जे त्या लाय जावम खाइडाव माहे। हेरा, व প্রিভেবর ভারেউইন শর্মান করেন যে, कुक्ककाशासन आणि नारियां कार्यार लाबल बार्ग , क्रम दक्षां भार

कार्यन्त्र क्रिकाल क (ब्रिकाल मन

* Yellow liver. जारे द्यांग अकशकाश विख्यतः। देशन जाकशान त्य ह-नर्ग नी उन्हर : जन्मा हराहरू गीर्जका यहन ।

t Various facts which I have given elsewhere prove that the colour of the skin and hair is sometimes correlated in a surprimanner with a complete immunity for the action of certain regot

ल्यांक महत्वाचिषाच भगान त्काल । दकान উপেका कहिएक भाविकास।

4

खारे दमरण वर्वास्थरम गाहिणाबिबात रका-८भव (७४ ५१ स्व भा वर्षे, किस (वंशीत वनाश्चमार्य (ध फेक्ट कारणव नुःमाधिका ह्यू, उदिम्दत दक्षा महस्त्र गारे। डेख्य पन्धियांकरम्ब चारावसा Rates (Sanitary Commissioner) काळच यासाम मारहरतव कहे गरा तम् ভারতবর্ষের ব্যাপক করে ও ছডিক্সমা স ल्दन दर्गान खारलम दर्भाषां । शास्त्रा यांच ना । किल्ट्बन क्षात्रन क्रमान दा अशृष्टि । जिल्ला वार्त्यका न्यान (६, कारजवर्षनामीरमञ्ज्या कार व व्याधावत । ।

अन्षित्। यहात्र न्यायानामणः जारा-शास्त्रम पृष्ठे एव ना। शास्त्रम भाकित्स, त्मत्र कीयसीमिक त्स्रांभव गश्चि यूक कतिएक काकमा। जाकन मधार्म, जाकत भ्याञ्च । श्राकृष्टि कि जिल्ला विकाय दार प के महा।

> ऐकि मह दर जारनकत्व धुकिनिक, क्षांत्र दक्षां मस्मंत्र गाउँ। ३२৮५ मटन नित्रा (कलाग एर गाविक्त इडेगाकिन, काशास्त्र अमग्र करिया (मया गियार्फ, त्यः, वानक नामिना ७ इक वृक्षाः पत्र म ्राम मार्था। है जासिक, धना गुनक गुव की आव ट्योह ट्योइएमव उज्ञानः यह वर कम । हेशाट डाक्स मार्रेसामात भटकत विशक्त (भाषकहा इहेटकर्ड। सानः कार्यवस्थः छाव ध्राप्त छ । कृत्वभा शिक्षितरम्, (य शाक्ष्यमा काष्ट्रिय मण्यान

poisons and from the attacks of certain parasites. " " Thence is occurred to me that Negroes & other dark races might have acquired their dark tints by the darker individuals escuping from the deadly influence of the miasma of their native coun tries during a long cories of generations. It has long been known that Negrous & even mulattoes are almost completely exempt from the yellow tever so destructive in Propical America. They likewise escape to a large extent the fatal informittent ferors that provailability at least two thousand and six hundred miles of the shores of Africa and which annually cause one fifth of the white settlers to die another fifth to return home invalided. Durwin's Descent of Man-(1877) P = 193.

लिंगिक मामन कविद कांचेत् काटकात छ जे गरा।

Sierra Leone is one of the most unhealthy stations for the white man, while for the Negro, it is on the contrary, one of the places where the rate of mortality is the lowest - Quatrefages on the Human species (1879) P 424.

^{*} Supplement to the N. W. Provinces Gazette, June 26, 1880.

णाटक, जांचाटमर कुशा मारे, अवर गांचा मित्र कुशा चाटक, जांधाटमत्र कांचाटत्र मरशाम नाई। जांगटकत करे क्रिमा किंग चरिन, जांचात्र गमाटमाहमा शंदत्र कता गरित।

जन्म किष्ठा थाएक त्र गत्माइस प्रकार थाउँ जन्म शक्ति जात्मन किर्केट वहीं दकार इक श्रान के द्वारंगर अध्य याविकान क्षा अध्यान अहे द्वारंग कामाओं कहेंगाएए।

उपनि श्रीशाम वार्थात ५०२० मरन ने तोश क्रिकाचार खान्य हैं तार्था करा अपन तार्था क्रिका पृति भारत करा अपन न्यार्थ कर्य इस्तर धार्मित कर्या कर्या कर्या इत्रेग्नाटक। देवलामारण विश्विका गामित त्य भक्त क्ष्मल वर्षिक खाटक, दम मक्त त्य भक्त क्ष्मल वर्षिक खाटक, दम मक्त त्य भक्त क्ष्मल वर्षिक खाटक, दम मक्त त्य भक्त क्षमा गार्थ। श्रुडताः स्त्राखिते। त्य विश्विका मटक, धक्कि गृजन वार्थि, धिकित्मक्ष्मक्ष्मीय याथा धरे विश्वान वक्ष-्व श्रेताएक। त्राधात्रम्य दमन नामक विश्वीदाय धक्कम विक्किकित्मक खाः

स्वायद्यं यिन्या हित्य (य. ५२०० मृद्य के द्याभ विश्वाक, भाष्यभाषा क्ष-कृष्ठि स्राप्त क्ष्यभ प्रथा पित्य, त्याक मक्ष भाष्यभ माहे क्ष्य ७ विश्वास ए कि-कृष्ट स्टेश हिला। के दक्ष कविश्वास है।

यानवङ। कित अहे कुमान भागन किकारण गरमाक्रव छेर्गाल क्रेस, खाकः द्वाप कति एकहरी विवादक प्रारत्म गा, धार लाजात अस्मकान कता दहे खाला-Cदत छेटकभा भरह । एटर वला नाहेए छ शास्त त्य, सिश्रास्य कर्व समस्य निर्माण जल जाधक পরিমাণে পাওয়া দায়, সে थोरम ५ रम मगःत । ७०। हिरा श्राम इतिर्ज পারে না। কলিকাভার স্থাত্রারধা-चक छान्दिरभन्न (व दिकालनी छानान कविशा बात्क म, जास्त करब्रक गामि शार्र कतिरल हे लाखीज इहेरद एग करनत कवा स्लग्ना कार्या व्यर्गाच अस्तान मन महिट्ट ल्मास्क्रीव व्याक्सान है का नगांच सारमक क्र क्रेब्राइ । वर्गाकारम मसंद्रा है छन्। प्राप्ताक्षक निर्माण कः , अन्तः के कारन उनाष्टेशायां पार्ड विवन । यथा कारम नमीत सम (बाजमुरकनिकास शतिलूर्ग श्हेश विवर्ग इत्र वट्छ, किछ मुक्तिकार तकाम मध्यकात वाषाच हक शक्र निर्मानकात सामाक रम ना :

[&]quot; ज्यांनि चीकात कंत्रिटक इहेटव (य. এই উৎস हे द्वार्श हामिलनाथि किंक्र-आय रमम स्वयम मुद्दे दम, ज्याम जामा द्वाराक्षणाय विकिৎসাহত सुरक्ष।

कारकाच त्य सामाज त्याम, कामान अर्गाक C女人的 化阿格 智能中 40 公司的 海绵中到了

रामाणाम कि हिं। करांत चाटक, जारा किया करिएक दगरम, निकास करभाव প্ৰভাব একটি প্ৰধান অভাব ব্যাস। থা-

न्तरण क्षेत्रमा । क्ष्मिरकोम नारम भागमः क्षांभव नाष्ट्र, भारतक शामकावा, अभित्य स्थारतक क स्थान्य THE RESIDENCE OF THE PARTY OF THE PARTY OF THE PARTY. करमर जनार्रेशायाचिकामध्या जनः जर्णा व निर्मा सार्थित सार्थित कर्णात व्यवाचा स्टान्ड निर्मातनात्त्रमा क्रिक्ट विकिन्द्रिक निर्मात विकिन् distance and a site with the view of the property of the prope . सामान कितियन। धामन नहासा दर्श-यात्र राष्ट्र अपने केलावटक देव या-८कम, नक्ष्यामीरेषत माश्राम याडीएडे ना डिमिकिक विद्यम !

, जाउन कथा शासा

रम ८कट वानांना जागांत्र निरंतर ड आनुष्ट भ्रेडियार्ट्स, विनिद्दे आरमस, त्य शिविट्ड अर त्या मोलांग, खबालि सामाना डागाम कारशक जान महरक याक कतिरंद भारा संग्रंभः जे मक्त छान राक्त किंदर तिल. कि स्थान व्यवस्था क्या केतिक, वास सर्वा भागा NECEN TIES MINITARY MONT, JEH क्षांच याकाम रिवास क्षेत्रा नुस्त्र मण राज्य करा कारमाच । बाटबंटक करणन, वानामा कामा भरेदार वाजन भागानी करा कार्यक्रक । क.टनटक बद्रावर हिवास क्या विका रवक्टल र हेक, क्वांबेकाल suring and spall principles cal भ्या कर्णा गारक रक्ष प्राप्तानाम

न्डन भक्त ग्रेस का डायाड्स स्टेटल भन कामान देशिक स्टूर्ग कामश्री क दिने क्ति (कार्न माजदर्ग मान्यान ट्यायकडा करिएक भाविताः क्रम्म क्रमम् मुख्य नाम गाँउ त्या जारता हता क्या CITIES RELE MAINISTERS WILLI WH EN! WALL MEND WHIM BISTS नाकः कमिटक स्वारण, रशकात केरणनी शास्त्र भागमा कामिक मान्यानारण ATTO WATER THE LAW TO THE TOTAL PARTY. CAL MARKET MARKET STATE

করিব। "উকিলীতে আজ কাল বড়ই compition." এখন compition শব্দে যে ভাব ব্যক্ত হয়, বাঙ্গালা ভাষার তাহা ব্যক্ত করিবার কোন কথা নাই। আমরা জি করিব? ঐ শন্ধটি কি বাঙ্গালা করিয়া লইব, না উহার পরিবর্তে সংস্কৃতধাতু-পাঠ খুঁজিয়া "সভ্যর্ব" শন্ধ গড়িয়া লইব। না বলিব উকিলীতে আজ কাল অনেক লোক হইয়াছে, সত্তব্ব উহাতে পসার করা বড়ই শক্ত।

वहे जिन. उपारिष्ठे मिष्ठ व व्यक्त विषय । मञ्चर्य भक्षि हम छ व्यक्त वार्ट न्छन, यिन मश्करण पारक वक्षण व्यर्थ कथन वाव्छण हम ना। स्वा मञ्चर्य विलय, विनि भक्षि गिष्ठित्त, जिनि जिम्न विन भक्षि गिष्ठित्त, जिनि जिम्न विन विन विन विम विश्व विश्व विभ विश्व व्या विश्व विश्

যাহারা ইংরেজ জানে না, Compition কথাটী ভাহারা বুঝিবে না; কিন্তু সভ্বর্ষ বলিলে যভ লোকে বুঝিবে ভাহা অপেকা অনেক অধিক লোকে বু-ঝিতে পারিবে।

"डेकिनीटि जरनक लाक इहेग्राट्स, 'जडाव भगात कता मक्त' विनटन मक-लहे वृक्षिट भातित, किन्न जहा कथात वना ना इंख्यांत्र (कंगन अंक ट्रे छात्रा छात्रा नात्र। दत्र छ (य ध्येनानीटिं त्रह्मा इहेट्डिट्स, अंछ कथांत्र विनास (त्र ध्येनानीत त्रहिंछ त्रह्मां दिहें।

আমরা যে এই কথা বলিলাম, তাহার তাৎপর্যা এই যে নৃতনভাব প্রকাশ ক-द्रिएक (शत्न क्षकामरकत्र विस्मय विरवहना कविया कार्य। कवा चावभाक। इठांद যাহা হয়, একটি করিয়া ফেলা উচিত নহে। কারণ এরূপ ত্রহ কার্যো হঠাৎ किছू कतिरम ভाम ना इरेग्रा वतः मन হইবার সম্ভাবনা। অতএব আমরা বলি নৃতন ভাব প্রকাশ করিতে হইলে বা न्डन जिनिटमत नाम पिट्ड इहेटन, বাঙ্গালা, হিন্দী, উড়িয়া, সংস্কৃত প্রভূ-जिट्ड (य मकन कथा চলিত আছে, **मिश्राम श्राम श्राम किं** किं, যদি তাহার মধ্যে কোন কথায় ভাব ध्यकाम इम्न, खांश इटेल मिटे छायात कथारे প্রচলিত করিয়া দেওয়া উচিত। অনেক সময় চলিত ভাষায় এবং ইতর ভাষায় এমন স্থলর কথা পাওয়া যায় (य, ভाहाट मन्भूर्वक्राप गरनव ভाव প্রকাশ করা যাইতে পারে।

প্রথম উদাহরণ।

কাচ সহজেই ভাঙ্গিয়া যায়। সহজে
ভাঙ্গা গুণ প্রকাশ করিবার অন্য ইতর
ভাষায় একটি শব্দ আছে 'ঠুন্ক'' কিছ
যাহারা স্থানর বই লেখেন, ভাঁহারা ঐ
কথাটি না জানিয়া জুথবা শুহা ব্যবহার

করিতে ইচ্ছা না করিয়া লিখিলেন কাচ ভঙ্গপ্রবণ। যাহা সহজে ভাঙ্গিয়া যায় ভাছার নাম সংস্কৃতে ভঙ্গুর, স্কৃতরাং ভঙ্গপ্রবণ শক্ষা না বাঙ্গালা, না ইংরেজি, না সংস্কৃত। অথচ বাঙ্গালায় প্রায় দশ-লক্ষ্ক ছাত্র গুরুমহাশয়ের বেত্রাঘাতে শিখিল কাচ ভঙ্গুর নহে, ঠুন্কও নহে, উহা ভঙ্গপ্রবণ।

দ্বিতীয় উদাহরণ।

"তুই পর্বতের মধ্যবর্তী স্থান" বাঙ্গালায় নাই। স্বতরাং উহার নামও বাঙ্গালায় নাই। কিন্তু আমার প্রয়োজন ঐ
স্থানটির নাম দেওয়া। হিন্দীতে ঐ
স্থানকে "দ্ন" বলে। কিন্তু বঙ্গীয় গ্রন্থকারগণ ঐ কথাটি না জানিয়া অথবা উহা
ব্যবহার করিতে ইচ্ছা না করিয়া লিখিলেন কি না উপত্যকা। উপত্যকা সংস্কতে চলিত শন্দ, কিন্তু তঃখের মধ্যে
এই যে, উহাতে পর্বতের আসরভূমি
ব্রায়, তুই পর্বতের মধ্যবর্তী স্থান ব্রায়
না। স্বতরাং গুরুমহাশ্রের বেতাঘাতে
দশলক্ষ বালক একটি "ভূল" শিখিল।

ভূতীয় উদাহরণ।

বেথানে বসিয়া জ্যোতির্বিদেরা গ্রহ
নক্ষত্র প্রভৃতি গণনা করেন, তাহার
হিন্দী নাম মানমন্দির বা তারাঘর কিন্ত
অনেকে উহার ইংরেজি নাম observatoryর তর্জমা করিয়া নাম রাখিলেন,
পর্যাবেক্ষণিকা। কেহ বুঝিল না, অথচ
কেতাবে কেতাবে চলিয়া গেল।

চতুর্থ উদাহরণ।

ভারতবর্ষের উত্তর অংশের পর্কতময় श्राप्तभारक लाहिक উखत्राथ छ वहन, कि ইংরেজিতে উহাকে Himalayan regions বলে বলিয়া বাঙ্গালা পুস্তকে উহার नाम हिमानग्रथाम रहेगाहा এরপ উদাহরণৈর অভাব নাই, যথেষ্ট আছে। তাই ৰলিতেছিলাম যে, নৃতন ভাব श्रकाम कदिएक शिर्म विस्मय विरवहना করিয়া কার্য্য করা উচিত। ক্রিছ ছ: ধের मर्था वानानित्वथकित्रात्र मर्था काहात्रहे ८म विद्युचना नाहै। छाहात्रा भएजन ইংরেজি, ভাবেন ইংরেজিতে স্থতরাং **लि**शिवात्र সময়ে ইংরেজিভে ভাব আসিয়া যোগায়। জাভীয় সভাব আলস্য বিশেষ অনুসন্ধান করিতে (मग्र ना। चार-किन हेम्हा थाकि-८न छ विष्णाय कूनाहेया छ छ न। যাহারা বেশী অলস, অথচ একটু বুদ্ধি আছে, তাঁহার। ইংরেজ ঠিক্ রাথিয়া (पन। यांशापत उदात्रे माथा जक्रे হিতাহিত জ্ঞান আছে, তাঁহারা यारा रुप्र এक है। उन्हें या कतिया भरतरे वसनीत मर्था देश्या कथारि त्राथिया (मन, व्यर्था९ (मम ७६ (माकरक विनश्र) (मन, व्यामि उर्व्या कतिरा (हरी कित-लाम किन्छ जामात विमाात्र कूलाहेगा **डि**ठिम ना । অনেকে আবার শুদ্ধ ভর্কেমা क्रियारे क्राथिया (मन, हेराम्य (नर्भ नभरत नभरत वज़रे भिष्टे। Bear the

Responsibility থাকিলে ইহার ভৰ্জমা करत्रन, कवाबिति वहन। Is appointed a Lectureor তৰ্জমা করেন বক্তা নিযুক্ত He seconded my হইয়াছেন। proposal, আমার প্রস্তাব বিতীয় করি-त्मन हेजामि हेजामि।

সরস্বতীর বরপুত্র বা ভিকাপুত্র* বলিয়া পরিচিত হইবার বাসনা বড়ই थ्रवल। মনে মনে সকলেই अहम् छान जामि बिनि-উত্তম পুরুষ। মৃদ। স্তরাং থাটিবার ইচ্ছা একে-वाद्यहे । नाहे। हे १ दिख পুন্তক (यमन (पिथित्नन, अमिन उर्कमा कतिया (कलिएन। आय श्रीकाएनत माছिमाता (कतानी निरात में यथा मृष्टेः তথা লিখিতং করিয়া (क्लिलिन। जातक मगरम छोशामित श्रुक्टक (मणी নামগুলি চিনিয়া লওয়া ভার হয়। তাঁহারা মলার রায়তে 'মল্হর'' রায় (लर्थन। त्राचित्र "त्रार्घाता" (लर्थन। তাঁহাদের গ্রন্থে রজপুত-কুল-ধুরদ্ধর সং-গ্রাম সিংহকে আমরা আর চিনিতে পারি না। ভাঁহার নাম হয় রাণা সঙ্গ। অয়জীরাও জিলিরাম হন। তাঁতীয়া রায় টাণ্টিয়া টোপী হন। পবিত্র ভীর্থ वात्रांगती " (वनात्रम" इहेत्रा यात्र। नृजन कथा रुष्टि कत्रा इत्र। अथह आ-

তাহার নাম গুজরানওয়াল। কি স্ত বাঙ্গালা ভূগোলে উহাকে চিনিয়া উঠা ভার, উহার নাম গুজম্বার্ল। হইয়াছে।

যাহারা দেশীয় নামের বানান পর্যান্ত ঠিক করিয়া লইতে অনিচ্ছুক তাহারা य न्जन भक् थार्यां कतिवात शृर्क श्वित्रकार्य विरवहना क्रिया (प्रथिद ইহা একান্ত অসম্ভব। ইচ্ছামত নৃতন শব্দ গঠনের বড় বড় ইংরেজি কথা व्यादिणानत व्यवस् व्यवादिष्टि वहन शिष्ट, তর্জমার ফল এই যে বাঙ্গালা পুস্তক প্রায়ই অত্যন্ত তুর্কোধ্য হইয়া উঠে বরং मःऋड वा हेः द्रिक वृद्या याग्न, **उ**थानि वाकाला वृका यात्र ना। देशतरे जना শিক্ষিত মহলে বাঙ্গালার তাদৃশ আদর रुत्र ना। ইহার আর এক ভয়ানক দোষ এই শে ভাষার কিছু স্থিরতা থাকে না। অধিকাংশ বাঙ্গালালেথক বা-काला পড़েन ना (करण (लार्थन। नुजन ভাব প্রকাশ করিতে হইলে তাঁহারা निष्कत्र मत्नामक न्कन भक्त गिष्यादिन। পূর্বে অন্য লোক সেই ভাব ব্যক্ত করি-वात छाना कि कथा वावहात कतियादहन, छांशात्रा मकान लायन ना। এইরপে একটি ভাব প্রকাশের জন্য রাশি রাশি लाहादात्र निक्ठे এक्ट नगत बाह्, मत्रा দেখিতে পाই, হয় চলিত ভাষায়

[&]quot; यांश्रा পुष्ठक श्रावयन कतिया जीविकानिकीष्ट कदत्रन, छाञ्चामिशदक লোকে সরস্বতীর ভিক্ষাপুত্র বলে।

না হয় পর্যন্থ দেশের চলিত ভাষায় অথবা চলিত সংস্কৃতে একটু খুঁজিলে উৎকৃষ্ট শব্দ পাওয়া যাইত।

তুই একলন লোক এমনি আহাম্মক আছে যে ঘরে টাকা থাকিতে ধার করে। আমাদের বাঙ্গালি লেখকও ঠিক সেইরূপ **इरे** जिल्ला व्या व्याख्यात्मत कला-বর বুদ্ধি হইতেছে, অথচ ভাষার কিছু-माञ উन्नि इहेट्डिए ना, এवः वाकाना-ভाষা कि তাহাও ঠিক হইতেছে না। বাঙ্গালা যে সংস্কৃত হইতে শ্বতম্ভ ভাষা সংস্কৃত হইতে ইহার সত্তা স্বতন্ত্র, জীবন স্বতন্ত্র, উৎপত্তি, স্থিতি, এবং লয় এই পরিবর্তে ভোগনিয়োগপত্র না এমনি তিনই স্বভন্ত, এ কথা বর্ত্তমান লিখিত कि একটা কথা ব্যবহার করেন তাহা वाकावां जावां वाकावां वाकावं वाकाai anticata antic গুমা হয় না। যে পারসাভাষায় প্রায় ৭০০ শত বৎসর ধরিয়া দেশের প্রধান যথন বিদ্যাসাগর মহাশম প্রভৃতি মহা-প্রধান কার্য্য সম্পন হইয়াছে, ভদ্র-সমাজে কথিত বাস লাভ:যায় শত-कत्रा ৫ • ही कथा (य ভाষা হইছে গৃহীত, বাঙ্গাণা বাাকরণের হাড়ে হাড়ে य ভाষা विकिशा चाह्य. य ভाষার कथा वावहात कतिता (मर्भत व्यावाम-বুদ্ধবনিতা বৃদ্ধিতে পারে, আমরা প্রাণপণে সে ভাষার কথাগুলি লিখিত ভাষা হইতে দূর করিবার চেষ্টা করি। नानिभ वनित्न मकत्न वृक्षित्छ भारतः; কিন্ত তাহা তাাগ করিয়া গ্রন্থকারেরা **ष**िर्याग (नर्थन। **ष**थ्ठ मःकुङ अखिशानं थुकित्न अखिर्यात भारक आंत्र এक अर्थ वृक्षाय, नामिन वृक्षाय ना। এই

क्रि बामान एक खहनिक ममस भारमी কথা লিখিত বাঙ্গালা হইতে উঠিয়া গিয়াছে। দেই সকলের পরিবর্ত্তে অতি হর্বোধা সংস্কৃত শব্দ সকল অসংস্কৃত অর্থে ব্যবহৃত হইতেছে।

উদাহবণ-- রফা বলিতে গেলে মোক-क्या मिठारेया एक नारक वरन, मीयाःना विलिटन रम अर्थ बुबाय ना किन्छ त्रकात काम्रगःम व्यत्नक्ट मौमाःमा वावहान्। कतिशा थारकन।

পাট্টাকৰুলভি চলিত ক্থা, সকলেই বুঝিতে পারে, কিন্ত অনেশ্চে উহার षामारमञ्जयन थारक ना। दक्ष छाहा বুবেও না।

মহোপাধাায় সংস্কৃতাধ্যাপকগণ প্রথম वानाना निथिए जात्रस करत्रन, जथन পারসা কথার প্রতি এরূপ বিষেষ থাকা কতক সম্ভব ছিল। কিন্তু এখন লেখক-গবের মধ্যে সংস্কৃত পণ্ডিত অতি বিরল। किश्व मःकृष्ठ भक्ष वावशात कतिए इहेर्द, এবিষয়ে উত্তাদের অপেকাও ইহারা व्यक्षिक नृष्ट्रिशिष्ट । कि इ है होता मः कृष्ट भक्ष वः वहात्र कति एक शिया ध्वायहे व्यर्थ-विषय छन्नानक जून कतिया ७ नानाक्रण (शामर्याश कतिशा वरमन।

(य मर्समा উक्त व्यात्रत भाषाज्य ভাবিয়া থাকে তাহার নাম ইংরেজিতে" thoughtful वात्राना दन्यदक्ता छहात

নাম রাধিয়াছেন, চিস্তাশীল। চিস্তা column বলে আমাদের সে 'সৌসাদৃশা वित्त वाकालाय प्रकावना व्याय, ठिखिल, ठिक नाता ना छथाभि जायात्त्र त्नर्थ-চিন্তাযুক্ত, চিন্তাশীল বলিলে, যে সর্বাদা কেরা অনায়াসে সৈন্যক্তস্ত বলিয়া উহার তুর্ভাবনাগ্রস্ত অর্থাৎ মনমরা তাহাকেই তর্জনা করিয়া থাকেন। বুঝায় স্থতরাং চিস্তাশীল শব্দে গ্রন্থ কার যাহা বুঝিলেন পাঠক তাহার ঠিক **উ**न्छे। वृश्विल ।

উপন্যাস বলিতে গল বুঝায়, কিন্তু ইংরেজিতে একপ্রকার উপন্যাস আছে তাহার নাম নবেল, তাহাতে এবং উপ-**এই छन। वात्रांनि (नश्रक्त्रा উপन्।।**न द्राथियाष्ट्रम। नवनाम विलाख (भारत সংস্কৃতে নৃতন গচ্ছিতধন বুঝায়, কারণ ন্যাস মানে গজিতখন, অতএব নবন্যাস कथाि मण्भूनंक्राप भविष्टार्य।

এক এক দল দৈন্যের নাম আছে हेरदिब के हिल्ल देवान क्रिय देवा मान्या है है देव ना । थाकात्र त्वाथ इत्र हेश्त्रद्य উशांक

তাই আমরা বলিতেছিলাম, লি-থিতে বসিয়া ভাবপ্রকাশ করিবার পূর্বে যে কথাগুলি ব্যবহার করিতে हरेदन, विश्लासक्रम जमन्य कविया जाशा-দের অর্থ ঠিক করা উচিত। এবং নৃতন भक् गठरनत्र शृर्ख विष्मयत्रभ मङ्क হওয়া উচিত।

এ সকল অপেকা আর একটি সহজ পরামর্শ আছে। যতদিন পর্যান্ত মনোমধ্যে ভাব ইংরেজিতে উদয় হয় ততদিন যেন কেহ বাঙ্গালা লিখিতে না বসেন। বাঙ্গালা লিখিতে আরম্ভ করিবার পূর্বের যেন वानानात्र ভाविट्ड मिशा रुत्र, डारा रुरेन অনেক সময় নৃতন ভাব আপনা আপcolumn কিন্তু column বলিতে থাম নিই বাঙ্গালায় প্রকাশ হইয়া পড়িবে। বুঝায় আর থামের সঙ্গে সৈনাদলের তাহারজন্য বেশী মাথা কুটাকুটি করিতে



यश्या तायर्गश्नताय।*

व्यक्षिक वक्राप्तरभन्न भी नवह महावा वागरमाहन वाग्र। এই মহাত্মাকে সন্মান कतिल वाकालिका ि मन्नानि इस। ইशांक সন্মান করা অপ্রে বাঙ্গালিজাতির কর্ত্তব্য। তिनि कोविजकारम जनामृ छ हिरमन वर्षे, কিন্তু এক্ষণে যখন আমরা তাঁহার জীব-নের মহত্ব ও গৌরব সমাক্ উপলব্ধ করিতে পারিয়াছি, এখন তাঁহার যথো-**हिल मन्त्रान ७ जानत ना कतिर**ल जामत्रा निजास निक्नीय दहेव। मर्कमाधात्रण यां हाटल दायरमाहन द्रारयद की वत्न द्र মৃহত্ব বৈতে পারেন ভজন্য সর্বাগ্রে তাঁহার জীবনী প্রকাশ করা উচিত। नशिक्त वाव् त्मरे कर्खवा मन्भन्न कतिया-ছেন। এতকাল যে তাঁহার অমূল্য জী-वनी প्रচातिक हिल ना, हेश वाक्रालि-छाछित्रहे कनक। नशिक्त वावू भिहे कनक व्यथनम्ब कत्रिमार्ह्म। (मरे জন্য গ্রন্থকার অনেক কারণে আমাদিগের কুতজ্ঞতার ভাজন। বাঙ্গালিজাতি যে রামমোহন রায়ের নিকট কতপ্রকার ঋণে আবদ্ধ নগেন্ত বাবু ভাছা প্রকাশ क्रियाष्ट्रन। ध्यकान क्रिया द्रामरमाइन

রায়ের প্রতি বাঙ্গালিজাতির কি কর্ম্বর তাহা স্পত্তীক্ষরে প্রদর্শন করিয়াছেন।

त्रामरमाइन त्रारम् त्र जीवनी जिं नत्रन বিশুদ্ধ ভাষায় রচিত হইয়াছে। গ্রন্থ-কার নানাস্থান হইতে বিবরণ সংগ্রহ कत्रियारह्न। व्यायामर्गतन श्रीनक्राहन **टि** हो भाषाय बाम स्माइत्न ब्र. ८४ मः किथ कीवनी (नारथन जाहारज अञ्कीरतत च-निक माहाया इहेग्राह् । शहकाद्रित একটি চমৎকার গুণ এই তিনি বক্তবা विषय (वर्ष माकारेया विलट्ड भारतन। म खन नगरना हा श्रष्ट विनक्त श्रम-र्শिङ रुरेशाष्ट्र। রামমোহন রায়ের बीवनी बाटनाहनाय (यञ्चल (यज्जल हिन्छ। मश्ब छेत्र श्र, (महेक्र १ हिन्छ। त्र श्र श्रीन পরিপূর্ণ; এবং গ্রন্থকার অনেক স্থলে যে সমস্ত মত ও অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়াছেন তাহা বিশুদ্ধ ও ন্যাযা।

জীবনীলেথকের যেরূপ শ্রদ্ধা ও ভক্তির আবশাক করে নগেন্ত বাব্র তাহা আছে। গ্রন্থানি পাঠ করিলে এমত প্রতীতি হয় যে তিনি রামমোহন রায়কে অতাস্ত ভক্তি করেন। সেই

^{*} মহাত্রা রাজা রামমোছন রায়ের জীবন চরিত। শ্রীমগের নাথ চট্টো-পাধ্যায় কর্তৃক প্রণীত। কলিকাভা রায় যন্ত্রে মুক্তিত সন ১২৮৮ সাল।

छक्तिजाकत्वत कीवनी निथि छ ६-সাহিত হইয়া তিনি বিলক্ষণ পরিশ্রমও তিনি এমত অনেক বিষয় সংগ্ৰহ করিয়া क्षकाण कत्रियाद्यस्य यादा शूर्य अञ्चरणा-(क्त्ररे विषिठ ছिन। जिनि मम्ख বিষয় অতি শ্রদ্ধার সহিত লিপিবন্ধ করি-রামমোহন রায়ের বিশুদ য়াছেন। नारम (य ज्ञानक क किन, (य ज्ञानक क তাহার সমগ্র জীবনের ঘটনাবলির সহিত কখন সম্ভবপর হইতে পারে না; যাহা কেবল তাঁহার শতাগণের বিদেষভাবের পরিচায়ক মাত্র বলিয়া উপলব্ধ হইতে थारक, रमहे छुरे अनकलरकत नरभाज वांतू অভি স্থলররূপে অপনয়ন করিয়াছেন। বাস্তবিক সমগ্র গ্রন্থখনি ভক্তির উপহার कतिया थाकिएक भातिरवन ना।

রামমোহন রায় যে একজন অসাধারণ প্রতিভাসপার লোক ছিলেন, তাহা তাঁ-হার জীবনীতে বিলক্ষণ প্রকাশিত হয়। অতি তরুণবয়সে যখন তিনি হিন্দু ' শাস্তালোচনা করিতে করিতে সহসা वक्षा व्यवस्त्रवारम डेशनीड इन, তখন তাঁহার প্রতিভার প্রথম আলোক পরিদৃশা হয়। বছকাল ধরিয়া হিন্দুরা भाजात्नाह्ना कत्रिया व्यामिटङ्कित्नन। किंद किंद कथन (महे भाजममूज मधन कतिया त्रामस्माह्मत्र मे कि कर्ण-वयरमरे अरक्षत्रवास छन्नी छर्रेड

পারেন নাই। যদিও রামুমোহনের मभरत्र थृष्टीत्र भाष्त्रिगंग এখানে আদিরা-করিয়াছেন। পরিশ্রমের ফলস্বরূপ ছিলেন সত্য কিন্ত তাঁহারা পৃষ্টের বিশেষ মতামত প্রচারে এত ব্যস্ত যে তাহাতে ঠিক প্রকৃত একেশ্বর্বাদ কখন প্রকা-भिंछ इम्र नारे। ७९काल शृष्टीन शाम्-রিগণের মতামতও বিশেষরূপে সক-लित अवग्यां गा हरें गा, वदः माधा-त्रन करनता व्यवगं हिल्लन ना। विल्न-यणः त्रामरमारम त्राप्त एय अञ्चवत्ररम একেশ্ববাদে উপনীত হন, তখন তিনি পৃষ্ঠীয় মত বোধ হয় অবগত ছিলেন না। যদি থাকেন তাহা হয়ত খুষীয় মত বলিয়াই জানিতেন। কিন্তু রামমোহদ রাম্বের বিশেষ গৌরব এই তিনি সেই **একেশ্বরাদ হিন্দুশান্ত্র মধ্যে নিহিত্ত** স্বরূপ এবং ঘিনি ইহা পাঠ করিবেন দেখিয়াছিলেন। তাঁহার তীক্ষবৃদ্ধি তিনি রামমোহন রায়কে ভক্তি না শাস্তের অশেষ মতামত ভেদ করিয়া এই মহৎ সতা উপলদ্ধ করিয়াছিল। রামমোহন রায় প্রথমে ইহা হিন্দুশান্তের मात्रमां विनया (मिथिटनन, এवः ভाश প্রচার করিতে উদাত হইলেন। তিনি এই মত প্রচার করিতে এত উদ্যোগী হইলেন, ইহার সত্য তাঁহার মনে এত वक्षमृत रहेशाहित, (यन जिनि र्ठार कि ष्यम्मा निधि श्रीश इहेशा ছिलन। रयन रकान मिवारणाक छारात्र मरन সহসা প্রভাসিত হইয়াছিল। তিনি সে जालाक भारिक रहेन्रा कारा जगৎमन्न প্রকাশিত না করিয়া থাকিতে পারিলেন ना।

রামমোইনের প্রতিভা সকল অবস্থার তাঁহাকে প্রচালন করিত। তিনি এই প্রতিভাবলে অতি জটিল তর্কদকল ভেদ করিয়া সভা প্রকাশিত করিতেন। এই প্রতিতাবলে সকল শাস্তালোচনার অতি স্ক্রভত্ত সকল নির্দারণ করিতেন। বাক্ বিভণ্ডায় ও তর্কযুদ্ধে এই প্রতিভাবলে তিনি সকলের উপর জয়লাভ করিতেন। ভাঁহার বিপক্ষে যে কেহ উদয় হউন না কেন, তিনি কাহারও সহিত বিচার করিতে শঙ্কা করিতেন না। যেরূপ তर्कडान इडेक ना (कन, (म ठर्क ना পড়িতে পড়িতে রাম্মোহন রায় তাহার অসারতা স্থন্দর দেখাইয়া দিতে পারি-তেন। যেন তাঁহার নিকট সকল কুত-র্কের অন্ত ছিল। কুতর্ক উপস্থিত হইবা-মাত্র ভিনি তাহা খণ্ডন করিতেন। একটু কালবিলম্ব হইত না। ইহাই উপস্থিত वृद्धि, ইहारे প্রতিভা। এই প্রতিভা যেন আন্তরিক আলোক রূপে তাঁহার মনোমন্দিরে বিরাজিত ছিল। কুতর্ক-জালের কুজ্ঝটিকা বিস্তৃত হইবামাত্র তাঁ-হার অভ্যন্তরিক আলোকদারা তাহা বিচ্ছিন হইয়া যাইত।

বাঁহারা প্রতিভাসম্পন্ন লোক হন,
তাঁহারা এক এক যুগের অগ্রণী স্বরূপ
হন। রামমোহন রাম এক্ষণকার কালের অগ্রগামী লোক ছিলেন। তাঁহার
কালের পূর্ব্বে তিনি উদয় হইয়াছিলেন।
অথবা তিনি এক নৃতন যুগের প্রারম্ভ করিয়া যান। এদেশীয় দুেশাচার স-

ষদ্ধে আজ কাল অনেক তর্কের পর যে
সমস্ত সত্য নির্ণীত হইতেছে, রামমোহন
রায় বহুকাল পুর্বে তাহা হির করিয়া
গিয়াছেন। বলিতে গেলে আমরা আজি
কালি তাঁহারই মতামতের অমুসারী
হইয়াছি মাত্র। রামমোহন রায় তাঁহার
পরিষার বৃদ্ধিতে সকল বিষয় বহুকাল
পুর্বে হিরসিদ্ধান্ত করিয়া গিয়াছেন।
তিনি এক্ষণকার কালের উজ্জ্বল স্থভারা
রূপে বঙ্গগগনে উদয় হইয়াছিলেন।

(य ममछ जमाधात्रग खरन त्रामरमाइन রায়কে উচ্চগৌরবে উত্তোলিও করিয়া-ছিল, প্রতিভা তাহার অন্যতম। প্রতিভা তশ্বধ্যে সামান্য গুণ। কারণ প্রতিভা অনেকেরই থাকিতে পারে। রামমোহন রায় যদি অন্যান্য গুণের আধার না इरेटिन, তारा रहेरन जिनि कथनरे একজন অসাধারণ লোক হইতে পারি-তেন না। তাঁহার অপরাপর গুণের মধ্যে তাঁহার সাহসকে আমরা একটি (अष्ठे जम छन विना। (य माइम थाकित्न मानव উচ্চে উঠিতে পারে, রামমোহন वारम्य (महे माहम हिन। मकन ममरमहे মহ্যাসমাজ এক এক স্থির অবস্থায় অ-थवा खदत द्याणिख थाटक। त्रामरमाहन त्रारम्ब (य मगम जञ्जामम रम, जधनकात काटन वनीत्र शिमूनगाम किक्रभ मधना অবস্থায় অবস্থাপিত ছিল, তাহা সমা-लाठा श्रम्भन वर्षिक चाहि। मञ्चाममाद्यम धर्मा करे (य, लादक करे खदा नर्सनाधात्रगरक त्रका कतिएछ रहे।

करता हेहाहे नामाक्षिक भागन ७ वं त्रामरमाहन ताप्र এकाकी वीरत्रत नाष्ट्र सन। मानविज्ञान्ति अवसा कथन এक- मधायमान आहिन। अक माँ एविया नय, ভাবে থাকিতে পারে না। সমাজ কখন সহাসমরে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। যে যেজপ একভাবে দাঁড়াইতে পারে না। হয় অম্ববিক্ষেণ করিতেছে, রামমোহনুরায় তীহা ভিতরে ভিতরে উন্নভিপথে উঠি তাহা সেইরূপ বলে কাটাইতেছেন। তেছে, না হয় তাহা অবনতির भिर्क व्यवने इहेर ७ छ । यानवस्या-জের নিশ্চেষ্টতায়ও তাহার অপকার भाधन रुप्र। वनीय रिन्तूममाज निर्म्ह তায় ক্রমশই অধঃপাতে যাইতেছিল। मिन मिन **जाँशात अवनि** छ इटे छिल। वशीय हिन्त्रमास अथन अहे तथ निए छ স্থিরভাবে **অবস্থিত ছিল। ভিতরে ভি**-তরে তাহার অবনতিসাধন হইতেছিল। তাহার গতি অধোদিকেই অভিমুখী ছিল। রানমোহন রায় এই সমাজের গতি ফিরা-हेस। पिट्यन। भाषाक्रिक इत्रक्त विभ-রীত বল বিকেপ করিলেন। সমাজে एल यून পড়িয়া গেল। যে বল রাম भारत तारमन सम्प्रः (मरे वन, रमरे मारम, रमरे अधावमाम, रमरे विमाविक, **(गरे शिक्रिज), (मरे महान जाज। खित्रक** বলে রামমোহন রায় এই সামাজিক े पूर्णात प्रधायमान इहेलन। विलिख शिल এकाकीरे मधात्रमान हरेलन। (य वरल, रय সाहरम जिनि चाचाचलन, ভাইবদ্ধ अनक अनगी क পরিত্যাগ করিয়া वकाकी (मर्ल (मर्ल कित्रिशाहित्नन, दमहे वल वागरमाहन बाबरक आवाव चरमणीव धनगमारकत श्रीकिक्नमूर्य मःत्रका क-तिन। अनुसाम ज्यान छोहान विभएक।

যাহা সহা করিবার ভাহা সহা করিতে-ছেন। यादा काठोहेवात কাটাইতেছেন। ইহাই বীরত্ব, ইহাই সাহস। এই সাহসে রামমোহন রায় সামাজিক গতি উন্নতির দিকে বিক্ষেপ করিয়াছেন। রামমোহন যখন প্রথম সমাভকে পরিত্যাগ করিয়া ধর্মের জন্য मर्ভात जना (मर्ग (मर्ग ज्या क्रिया (वड़ान; यथन नम नमी, वन, भर्कड, निःश्, **भार्फ्**ल এवः মाনবের ভরঙ্কর শক্রত। প্রভৃতি কিছুতেই তাঁহার গতি-বোধ করিতে পারে নাই, তখন তাঁহার ञ्नय्य व व किन दिशा विश्वाहित। छ-খন তাঁহার সহিষ্ণুতা ও অধ্যবসায় কত, একদিন দেখা গিয়াছিল। তথন তাঁ। हात ভविষाৎ कीवरनत প্रथम जालाक शछ। मिठ इहेम्राहिल। এই ऋपग्रवल क्यञ्चन दिनीयान् (पथा यायः। এই महान् इत्यवत्व कय्यन त्वाक नर्वाजाशी হইয়াছেন, সভ্যের জন্য, প্রকৃতধর্মের অञ्चल्यात्व बना गर्वजानी इरेग्नाइन।-षावात यथन षामता छावि, तामरमाहन রায়ের বয়স তথন কত তরুণ, সম্পধ্যি ও সহায় কেমন বিহীন, তখন তাঁহার क्षत्रवरलत य कडमूत्र भोत्रव छाहा একদিন উপঐक्ति इয়। তখন ভাঁহাকে

আমরা ভবিষাৎ রামনোহন রায় বলিয়া চিনিতে পারি। চিনিতে পারি, তিনি (मर्भत्र छेकारतत जना छमत्र इटेर्ड इन, তিনি দেশের উন্নতিকল্পে সজ্জিত হইতে-ছেন। চিনিতে পারি, এই হিমালয় অতিক্রমী ভিকাতল্মী রামমোহন রায় এক্দিন সাতসমুদ্র পার হইয়া আবার विलाउ गाইरवन, कुारम मचानिङ इहे (वन, विवार्क आवात्र कितिया आमिरवन, विनाट्य गर्वशास পृक्षिण इरेट्यन, এবং সেই সাত সমুদ্র পারে বিদেশীয় শোভাময়ী ব্রিষ্টলনগরীতে পূজার সহিত (प्रशांश कतिर्वन। हिनिष्ठ পाति, রামমোহন রায়ের এই হৃদয়বল এক श्राम वावक थाकिवात नरह, वन्नरमा ভাহা ধরিবে না, ভাহা বিস্তীর্ণ হইয়া সমুদায় পৃথিবী একদা গ্রহণ করিতে উদাত হইবে। এক স্থানে আবদ্ধ হইলে ইহার তেজ কত, তাহা বঙ্গদেশ জানি-কত, তাহা বিদেশীয়গণ বিলক্ষণ পরিচয় भारेग्राष्ट्रन ।

সত্যের জন্য, ধর্মের জন্য সন্ন্যাসিগণ সংসার পরিত্যাগ করিয়াছেন। সন্যাসী হইতে রামমোহন রায়ের অনেক প্র ভেদ। এই প্রভিন্নতা না থাকিলে রামমোহন রায় যে তব্রুণবৃদ্ধস সংসার ধাম পরিত্যাগ করিয়া গিয়াছিলেন তাহাতে তিনিও হয়ত একজন সন্যাদী हरेएजन। जाद (य সময়ে রামমোহন রাম সংসার ধারিত্যাগ করিলাছিলেন সে

नगरत मन्त्रांमधर्णात्र विरम्भ भीत्र ছिল। त्मरे शोबन लागरमारून तात्रश्र প্রত্যক্ষ দেখিরাছিলেন। তথ্য সন্মাসী হওয়ার দৃষ্টান্ডেরও বঙ্গধামে অভাব ছিল ना। जेश्वरताभामनात कना मःमात भन्नि-ত্যাগ করিয়া যাওয়া তথন গৌরবের विषय व्लिया लाटक उड़ान कविछ। (न কালের অনেক সন্যাসীও হয় ত আজিও জীবিত আছেন। তুই কারণে রামমোহন রায়কে সন্ন্যাসী করে নাই।

প্রথম কারণ এই; যে জন্য সন্যাসি-গণ সংসার পরিত্যাগ করিয়া যান, वागरगाइन वाग्र रम कावरण यान नारे। मन्नामिनन नेषद्वत উপामनात कना প্রলোভনপূর্ণ, মায়াময় সংসার পরিত্যাগ कतिया वरन यान। तामरमाइन ताग्र সংসার পরিত্যাগ করেন নাই, কিন্তু সং-সার তাঁহাকে দাড়াইতে স্থল দেয় নাই। সংসার তাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়াছিল। शाष्ट्र। विखीर्ग इरेल, हेरांत श्रात जिनि केचरत्र উপাসনার জন্য সংসারের वहिर्फिष्ण यान नाहै। किन्न जिन তত্ত্বাসুসন্ধায়ী ছিলেন। সকল ধর্মের সার কি, তিনি অমুসন্ধান করিয়া বেড়া-है एक हिल्ला। नकल धर्मात्र (माय छ १ विठारबारमण जिनि (मर्म (मर्म ८वड़ा-ইতেছিলেন। এইরূপে তাঁহার জ্ঞান পূর্ণ না হইলে ভাঁহাকে ধর্মসংস্কারক মহাআ রামমোহন করিতে পারিত না। সংসার ভাঁহাকে পরিত্যাগ করিয়া তাঁহার উপ-ু कात्रमाधन कंत्रिग्राष्ट्रिम । छाहाटक छिविः यार तामरमाञ्च नाम कतिया मित्राञ्चि।

बिजीय कांत्रण, तांगरमाञ्च तार्यत्र श-तामरमौरु ब्रारंशत रुपय नन्नामि-গণের হাদয়ের মত যদি শুক, নির্মাম হইত, রামমোহন রায় হয় ত ভছামু-जिक्कारनेत अंत जिम्मेरताभाजनात जना সন্যাসধর্ম অবলম্বন করিতেন। কিন্ত वागरगाद्य वाय क्षयम्या लाक हिल्लम যে নির্মায় জনসমাজমধ্যে রাম-মোহন রায় বাস করিতেন, সেই সমা-জের জন্য রামমোহনের তরলহাদয় অতি एक्न वयरमर्टे काँ मित्रा छेठिया हिल। उँ। हाइहे अतिवादमस्या यथन मजीमार इत पृष्ठी छ घटि, जधनरे छाँशत समग्न এक-বারে ওতপ্রোত হইয়া আলোড়িত হই-য়াছিল। ভিনি তথনই যে উচ্চরবে কাঁ-पिया **প্রতিজ্ঞা করিলেন, সেই প্রতিজ্ঞা**-তেই তাঁহার হৃদয়ব্যথার প্রাকৃষ্ট পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া গিয়াছে: তাঁহার মমতা লোকের জন্য ছিল না, ভাহা ব্যক্তিগত মমতা ছিল না, কিন্তু ভাঁহার মমতা মানবজাতির প্রতি ছিল। তিনি এক-कत्तत बना यं ना कैं निष्ठन, नेभाष्कत षना ७८७। धिक कैं। पिटलन ।

वामरमाइन बाग्न এकजन विरमधकारी मामाञ्चिक लाक हिल्लन। ममारकत রোদন ভাঁহার হৃদয়ে আঘাত করিত। नगांकत जमनन डाहात शहराक जाता-ড়িত করিত। তিনি বঙ্গনমাজের ত্র-वश (मिथाहित्नन भाख नत्ह, त्महे ध्ववश्रात कना करत्रः मत्न मत्न कानि-

ছরবস্থার ভাব প্রকৃষ্টরূপে প্রদর্শন করি-মাছিল; তাঁহার সহদয়তা সেই ত্রবস্থা व्यथनयन कतिवात जना वाछ इहेगाहिन। তিনি ভারতের দেশ বিদেশে ভ্রমণ করি-তেন বটে, किन्तु छाँ हात्र श्रमग्न श्रामा वाक्षेष्ठ हिल, चरमरभंत इः स्थत अना কাঁদিত। তাঁহার হৃদয় যে প্রকৃতপক্ষে काँ मिक, ज्यामरण िक तिया वानिया यथन তিনি তাহার ছ:খমোচনের জন্য ব্যস্ত नमख इरेग्नाहित्नन, काग्रमत्नावात्का তাহার হিতকামনায় নিরত হইয়াছিলেন, তথন তাঁহার সেই হাদয়ব্যথার একদা পরিচয় পাওয়া গিয়াছিল। তিনি আত্ম-সম্বাদের জন্য তত ভাবিতেন না, কিন্তু সমগ্ৰ বঙ্গসমাজ ও জাতির জন্য ভাবিতেন। এ প্রবৃত্তি কি সন্যাসিগণের रुपरम व्यविष्ठि करत। मन्नामिनन কেবল আত্মোন্নতির জন্য বাস্ত। আপ-नात्र मुक्तिमाधानत जना मिनतां जामि कष्टे महा कतिया शास्त्रन। छ। हाता मः-সারের মায়া মমতা একেবারে পরিত্যাগ क्रिया (फल्नि। इम्रायत मक्न श्रवृद्धि ও বাসনা বিসর্জন দেন। আত্মীয়ম্বজ-নের প্রতি ক্ষেহ মমতা ভুলিয়া যান। সংসারের কেহই তাহাদিগের ভাষনার विषय नष्ट। कांश्रंत श्राहित क्या नार्टेन अका नारे, ममला नारे, (अर नारे। কাহারও জন্য এবং কিছুরই জন্য তাহা-**मि**रागत क्मरम कथन वाथा डेशश्चि इस ना। यमि इम, তাহা তাহারা দমন তেন। তাঁহার প্রতিভা তাঁহাকে সেই করে। তাংখরা হৃদ্যুকে ক্রমশঃ শুদ্ধ এ

नोत्रम कतिया (कत्म। श्रथरमरे यथन ভাহারা সংসার পরিত্যাগ করিয়াছিল, जथनरे जारात्रा এकमा जरमात्र महन मः मारत्र त्र मकल **माग्रा विमर्क्जन मिग्रा** हिनां (महे मन, (महे समझ डाहाता वदावत त्रका कित्रमा जामिएक शास्क। কোন কোমল প্রবৃত্তির অমুরমাত্র তা হাতে জিয়তে পারে না। অমুরোৎপত্তি হইবামাত্র তাহা বিনষ্ট করে। কারণ ভদ্ৰেপ ভাৰুরকৈ স্থান দেওয়াই ভাষা-দিগের পক্ষে মহাপাতক। এ সদয় কি মানবোচিত? এ ব্যক্তিগণকে কি সং সারে স্থান দেওয়া উচিত? তাহারা मः**मादित जना नट्**, मःमादे छाहा मिश्टक हाटर ना। ভाराता यङ भीष नःमात्र इटेट्ड प्रीकृठ हत्र, यङ भीघ ভাছাদিগের পাপদৃষ্টান্ত সংসারকে স্পর্শ ना करत, उउदे मः मादित भएक मकल ও শ্রেষকর। রামমোহন রায় এ ধাতুর लाक हिलान ना। जिनि এक्र भ क्रमर्य मः मात्रधाम পরিত্যাগ করেন নাই। এরপ হৃদয়ে তিনি দেখে দেখে ভ্রমণ करतन नारे। এक्र भ श्रम मरेब्रा जिनि यामा প্রত্যাগমন করেন নাই। এরূপ श्वारत्र जिनि यदम्भित्र मञ्जनकार्या गाः পুত হন নাই। यथन তিনি সদেশে প্রভ্যাগমন করেন, ভখন ভাঁছার হৃদয়-কোষ স্থদেশের মমতায় ও স্বভাতির হিতকামনায় পরিপূর্ণ ছিল। তিনি গৃহে भित्रित्र श्राम्य कित्राहित्सन। त्यरे लाफ्ड र्रेग्नाहिल। जिनि चरम्या

रुपग्रवामना চরিভার্ম করিবার জনা সকল मण्णि विमर्जन नियाद्वितनी, मकल कहे महा कतिबाहित्सन धवः मकम निनात ভার, গ্রহণ করিয়াছিলেন। ইহারই कना जिनि विष्व विदम्भवादम आविश्व-ত্যাগ করিলেন।

আশ্র্যা এই, রামমোহন রাম্বের হৃদ্যে এই প্রকার সামাজিক প্রাবৃত্তি কোথা হইতে উৎপন্ন হইল। যে অপবিত্র, चात यार्थभत कनममाकटक कामरमा-रन ताय वान कतिएजन, रन नगरन এ প্রবৃত্তির স্থাপপর্শ বায়ু কথন বহিত না। य (लाकम खनी मर्धा किनि वाम कति (जन, (म লোকমগুলীর স্বপ্লেডেও কখুন এ প্রবৃত্তির বিষয় উদয় হয় নাই। তথন रेडेरब्राभीय ভाব मिन्यर्था श्राट्यनां छ करत्र नारे। তथन हे रत्न भी महिल्ला রামমোহন রায় শিক্ষিত হন নাই। সাহিত্য অধ্যয়ন করিলেই এরপ ভাব ভন্মধ্য হইতে গ্রহণ করা বড় সহজ লো-(क्र कार्या नरह। तामरमाहन ताम এই প্রবৃত্তি লইয়া জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। (मध्मत प्रत्या डांशात এই প্রবৃত্তিরই ফুর্তিসাধন করিয়াছিল। এই প্রবৃত্তি क्रमभ: श्रवन इहेब्रा डीहात क्रमग्रक বলীয়ান্ করিয়াছিল। এই প্রবৃত্তির উত্তেজনায় তাঁহার সমস্ত জীবন উত্তে बिक इरेमा कार्यामम इरेमाहिन। जिनि निष्क्ष्ठे, उ नित्रीर वात्रानि हिल्लन ना। व्यामिया मिहे পরিপূর্ণ হাদমের সমাক্ ভাঁহার হাদমকল ও চেষ্টায় দেশগুদ্ধ আ-

ভিন্ন দিকে ফিরাইয়া প্রব্রিস্থোতকে मित्राहित्मन । তাঁহার এই প্রবৃত্তি তাঁ· श्रांक अक्वन जमाधात्र लाक कत्रियां-हिन। একঅন महाज्ञत्न य । । **डे**खानिङ कत्रिग्नाहिन। তিনি ইहाরই जना ममश वाकानिकां छ इहेर पृथक् इहेम्राष्ट्रम ।

तामरमाइन त्राय चरमभहिटेज्यी नन्नानी ছिলেন। ঐশবিক ধ্যান ও জ্ঞানে তাঁ-हात्र मन्।। निरम्भिङ हिल ना ; किन्द ভাঁহার সন্যাম ঐশবিক সর্বাঙ্গীণ উপা-সনা। যৈ উপাসনা কেবল ঐশবিক নিঃশেষিত হয় না; যাহার धारन প্রধান কার্যা ঈশ্বরের প্রিয় কার্য্যসাধন कत्रो, त्रामरमाञ्च त्राग्र रम्हे कार्यामम् উপাসনায় বিশেষরূপে নিরত ছিলেন। এই উপাসনায় নিরত হইয়া রামমোহন প্রান্তভাবে নিয়োজিত হয় নাই। বিপ্রাম রায় যেরূপ কঠিন যোগদাধন করিয়া-ছিলেন তাহা ভাবিতে গেলে আশ্চর্য্য इरेट इया जिनि पिरावाळ वरे माधनाय অমুরক্ত থাকিয়া আহার নিদ্রাভূলিয়া গিয়াছিলেন। ইহার অন্য তিনি বিত্রত হইয়া বেড়াইতেন। তাঁহার কার্যাময় जीवत्न विखासि हिम ना। এक कार्या गगाधा कतिया धाना कार्या इस्टप्का क्रिटिन। च्राप्तरभन्न मक्रम यथन रयक्रर তाँহात्र निक्छ উদন্ন হইয়াছিল, তখন তিনি সেইরূপে তাহা সাধন করিতে (**हिंडा कतिराज्य।** जिमि व्यानक मन्नग षश्घेरिन रुख्या क्रिया शियाद्या, व्यत्नक मन्नकार्या नाधन कतित्रारह्न।

छै। होत्र जूना त्नांक जानि भशेष कत्म নাই বলিয়া ভাঁহার প্রারম্ভিভ অনুষ্ঠান-थ्येगानी व्यवनिष्ठ इहेन ना। उँ। हात्र कीवन অधिमन्न अञ्चार्ग পরিপূর্ণ ছিল। **এथन** रम अधिवाणि চाति पिकिश्व हरेग्राष्ट्र। (म त्राभित्र जाभ ७ (जबः কুদ্র অগিতে প্রাপ্ত হওয়া যায় না। এক্ষণকার স্বদেশহিতৈষী কতিপয় বাঙ্গা-लित की वत्न हेहाहे श्रमाणिक करत्र माख। আমর আজি পর্যান্ত কোন বাঙ্গালির জীবন রামমোহন রায়ের মুক্ত কার্যাময় ও উদ্যোগপূর্ব দেখি নাই। সমুদায় बीवन (कवन मननमन्न উদ্যোগ ও অমু-ष्ठांत्न উৎদর্গিত দেখি নাই। কার্য্যের পর কার্য্য, অমুষ্ঠানের পর অমুষ্ঠান, ত্রভের পর ত্রভে কাহারও জীবন অবি-कार्शाक वरम ब्रामरमारून ब्राटबंब कीवरन তাহা লক্ষিত হয় নাই। এই কঠিন কার্যাময় যোগসাধনায় রামমোহন রায় জীবনকে উৎসর্গিত করিয়াছিলেন। বাঙ্গালির মধ্যে এরূপ যোগী ত কখন জমে নাই, অপর জাতিমধ্যেও এরূপ याशी প্রাপ্ত হওয়া হুষর। হুঃখের বিষয় ইহার দৃষ্টান্ত আজি পর্যান্ত কোন বাঙ্গালি व्यवस्था करत्रन नाहे।

(य (म (भंत इत्रक्षा य छ, (म (म (भंत সম্ভানগণের কার্যান্ডার ভত গুরুতর। ভারতের গুরবস্থা যত, ভারতের সন্তান-গণের কর্ত্তব্য ভত কঠিনতর। এরূপ कर्जगळान ভারতসন্তানগণের মধ্যে

कारात्र काट्र ? (वाश रुप्त त्रामरमारुन त्रारम् त अहे कान जला प्रभावाम छे थ-निक हिन। जिनि कानिएन पागात স্বদেশ যতদূর ত্রবস্থাগ্রস্ত, তাহার মঙ্গ-লোদেশে ততদূর উদ্যোগী হওয়া আমার কর্ত্তব্য। কিন্তু শুদ্ধ কর্ত্তব্যক্তানে রাম-মোহন রায় তাঁহার সদমুষ্ঠান ব্রতে উত্তে-किं इन नारे। (मरे छान (य जरूत्रांग আনিয়া দিয়াছিল, তাহা একটি প্রবল রিপুরূপে পরিণত হইয়াছিল। তিনি ८मरे तिशूरभवें इरेम्ना इत्नि। यज्यन ना ट्लाटक टकान त्रिश्रुत वनवर्षी दश्, ততক্ষণ তাহার সমস্ত জীবনকে ব্যাপৃত করিতে পারে না। রামমোহন রায়ের জীবনে এই রিপু ক্রমশঃই প্রবল হইতে-ছিল। তিনি সেই প্রবল রিপুর বশবন্তী হওয়াতে তাঁহার সমুদায় জীবন দেশের মঙ্গলময় কাৰ্য্যাবলীতে বাাপৃত হইয়া-ছिল। এই त्रिश्र डॉाशांक चरमभहिटे बी রামমোহন রায় করিয়াছিল। আশ্চর্য্য রামমোহন রায়ের কার্যাশক্তি, আশ্চর্য্য তাঁহার যোগসাধনা !

রামমোহন রায় একজন অধায়নশীল লোক ছিলেন। তিনি হিন্দুশাস্ত্রের বি-স্তর গ্রন্থ তর তর করিয়া পাঠ করিয়া-ছিলেন; ইংরেজিভাষা স্থলর জানিতেন। তথ্যতীত তিনি চারিটি ভাষায় বাৎপর ছিলেন। তাঁহার যথন যে গ্রন্থ অধায়-নের প্রয়োজন হইত, একদিনে তাহা অধায়ন করিতেন। সপ্তকাপ্ত রামায়ণ তিনি এইরূপ একদিনে অধায়ন করিয়া-

हि(नन। चिंधात्रनकारम छोरात्र चारात्र निजा मत्न थाकिक ना । य्यंन त्य श्राह्त আবশাক হইত, ভিনি কলিকাতাময় **ज्ञा अध्यय कतिर्जन। किन्न जिन** य अक्र ज्ञाननार्जन जना अञ्चल जरू রক্ত ছিলেন, ভাহা নহে। ডিনি স্থী-গণের মত শুদ্ধ বিদ্যার প্রতি অমুরাগী हरेशा अधायनभीन रूरमन नारे। जिनि (य मह९ नरका ममुनाम जीवनरक वााभुक করিয়াছিলেন, অধ্যয়নশীলতা ও জ্ঞান-লাভ তাহার অনাতর উপায়মাত ছিল। ইহা তাঁহার একটি প্রধান উপীয় ছিল। তাঁহার শত্রুদিগের উপর জয়লাভ করিবার এই প্রধান উপায় ছিল। তিনি ইহামারা প্রতিবাদিগণকে পরাস্ত ও নীরব করিয়া সভাজ্ঞান ও ধর্ম্মের প্রচার করিতেন। পৃথিবীতে সত্যের পতাকা দৃঢ়রপে প্রোথিত করিতেন।

রামমোহন রায়ের জীবনে একটি স্থান্দর শিক্ষা ও উপদেশ নিহিত আছে।
স্থান্দর শিক্ষা ও উপদেশ নিহিত আছে।
স্থান্দরভাব ক্রমশঃ কেমন বর্দ্ধিত হয়, স্থাদেশ
হিতৈষণা ও স্থজাতিপ্রেম ক্রমশঃ কেমন
বিশ্বপ্রেমে পরিণত হয় ইহা রামমোহন
রায়ের জীবনে স্থান্ট প্রকাশিত আছে।
রামমোহন রায় প্রথমে স্থান্দেশর ধর্মান্দরন রায় প্রথমে স্থান্দেশর ধর্মান্দরণ প্রবৃত্ত হন। সেই ধর্ম্মাণ্টরণ
করিতে হইয়াছিল ভাহাতে তাঁহার
হালয়াম্রাগ ক্রেমশঃ প্রাগাঢ় হইয়াছিল।
সেই কার্য্যে তিনি আরও দুচুরূপে ব্রতী

হইয়াছিলেন। যাহাতে সামান্য জন- রাবের বিশ্বপ্রেমপ্রবৃত্তি কেবুলমাত্র স-गण्य निक्रिनाह अ निक्रामाणी करत, आठ इटेएडिन उपनेटे जिनि कान-উদ্যোগ ও উৎসাহে পূর্ণ করিয়াছিল। স্বদেশহিতৈষী বলি, বিদেশীয়গণ তা-अश्ब्जनगणित जीवत्नत्र अरे अकृषि समात्र हात्क विश्वत्थित्रिक वृत्तन। विष्निशित्रगन ভাব। উৎপীড়নে তাঁহাদিগের সদম্-রামশোহন রায়ের এই বর্দ্ধিত অমুরাগ শুদ্ধ স্বদেশীয় ধর্ম্মসংস্করণে নিঃশেষিত इय नारे। देश क्राप्य चार्मिश्टे उस्माय সামাজিক মঙ্গলমাত্তে প্রসারিত হইয়া-ছিল। ধর্মসংস্থারক ক্রমে স্বদেশহিতৈষী বিশ্বপ্রেমিক নামে অভিহিত না করিয়া পেট্রিয়টের মহৎকার্য্যে ব্যাপৃত হুইয়া- থাকিতে পারেন নাই। त्रागरमाह्न त्रारम् त व्यारलाहा हहेमाहिल। ধশীয় হিতকামনা সামাজিক হিতকাম-नाय উन्न छ इहेल। छाँ हात इन्छ चर्निए न সর্ববিধ মঙ্গলকার্য্যে প্রসারিত হইল। य श्वाकारण अक्याकारण दक्वण এकि गाज ऐड्डम छात्रका कृषिशाहिन, त्मरे হ্বাকাশে ক্রমশঃ সহস্র তারকা একে একে প্রস্কৃতিত হইল। অবশেষে তাহা विश्वर्थात्मत हन्द्रारमारक जारमाकि छ इहे सा (श्रम। (य त्रांभरमाञ्च त्रांग এक निम एक चरमरभंत्र ममरमाभात्र ভাবিতেন, **८मरे जामरमारुन जाम शर्ज रे: रज़क ७** यत्रामीमभाष्ट्रत छन्नि कन्ननात्र এकिन मखक बालाफ़िक कत्रिशाहित्वन। किंद् इर्जालात विषय अरे (य, यथन त्रामत्मादन

তাহাতে রামমোহন রায়কে দিগুণতর গ্রাদে পতিত হইলেন। আমরা তাঁহাকে অবশ্য তাঁহার বিশ্বশ্রেমের বিশিষ্টরূপ রাগ ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হইতে থাকে। পরিচয় পাইয়াছেন। যদিও স্বদেশ তাঁহার মনকে এত অধিকার করিয়াছিল যে, তজ্জন্য তাঁহার বিশ্বপ্রেম ফুর্ত্তি পা-ইতে পারে নাই, তথাপি আশ্চর্য্য এই, উত্থিত হইয়াছিল। যাহা প্রথমে ধর্মে বিদেশীয়গণের নিকট তাঁহার সার্ব্ব-আরক হইয়াছিল, তাহা ক্রমে ক্রমে ভৌমিক প্রীতির এতদূর পরিচয় হইয়া-ছিল যে, ভাহারা ভাঁহাকে একজন

ছিলেন। স্বদেশের সর্ববিধ মঙ্গল আমরা রামমোহন রায়ের অনেকগুলি গুণের বিষয় আলোচনা করিয়াছি। এই সমস্ত গুণ তাঁহার জীবনীতে স্থলর প্রদ-र्भिं इरेबार्छ। हिस्रामीन वाकि गार्वरे ভাহা দেখিতে পান। এক্ষণে রাম-त्यांश्रानत नाम व्यथानवः त्य कना वापन মধ্যে স্প্রচারিত আছে তাহারই বিষয় षालाहना कतिया প্रস্তাব সমাপ্ত করিব। তুই কারণে রামমোহনের নাম ভারত-मर्या ऋविथां ७ हहेब्राष्ट्र । जिनि এদেশে প্রকৃত ও বৈদিক হিন্দুশাল্লের আলো-চনা প্রবর্ত্তিত করেন এবং তৎপরে একেশবের সার্বভৌমিক সামাজিক পূজার পরিস্থাপনা করিয়া যান। এই তুই কাৰ্য্যে তিনি যে শুদ্ধ এতদেশীয় धर्मीय सगु९८क जालाफु कवियाहिन

এমত নহে, সেই জগতের প্রবৃত্তি স্রোতকে বিভিন্ন দিকে প্রভাার্ত করিয়া দিয়া-(इन। बिनार्ड (शत्न, जिनि अप्राप्ता ধৰ্মীয় জগতে এক মহাৰিপ্লবসাধন করিয়াছেন।

देविषक माहि (जात जात्ना ज्ञाना ज्ञाना ज्ञाना वहकान इटेट विनुष इटेशाहिन। কিরূপে ও কোন সময় হইতে এরূপ ঘটিয়াছিল, ভাহা আজি নিরূপণ করা একপ্রকার অসাধ্য কার্যা। পুর্বের যাহা किছू हिन, किछ भूगनमानत्राज्ञकारन जशीवनात्र जात्नाहना अक्वाद्य आग উঠिया गियाहिल विलिश्व वला याहे एक পারে। ধর্মানুষ্ঠানে যে সমস্ত ক্রিয়া-কাণ্ডের আবশ্যক ব্রাহ্মণপণ্ডিতগণ শুদ্ধ সেই শাস্ত্রের আলোচনা করিত। এমত কি, মহুর শ্বতিশাস্ত্র যে ক্রিয়াকাণ্ডের পাওয়া যায়, পবিত্রতা লাভ করা যায়, निमानपुर, त्रहे च्रुटिরও মতামত পুণা অর্জন করা যায়, ইহা সকলের সর্বাসময় পরিগৃহীত হইত না। স্থতরাং মনে একেবারে স্থিরবিখাস ছিল, ইহার ভাহারও আলোচনা ক্রমশঃ বিলোপ বিপক্ষে কেহ একটি কথাও বলিভে व्हेमोहिल। ध ममख मास्त्रत म्हात्न, भातिराजन ना। प्रात्रत विठात्रहे धर्मात পৌরাণিক ও তান্ত্রিক সাহিত্য এবং কাষ্ঠান্তাব ছিল, অন্নগুদ্ধির উপায়েই कथिक देवकव अश्वामित्र व्यात्माहमा थाव- वित्म यक्तरभ हिख्छ कि निर्छत्र कत्रिछ। র্ত্তিত হইর।ছিল। রামমোহন রার যে স্থপাক হবিষ্যভোজন অপেকা আর সময়ে উদিত হন, তথনকার কালে বল- অধিক পবিত্রকর কর্ম কিছুই ছিল না। দেশে শান্তালোচনা একপ্রকার উঠিয়া কলিকাতায় বিষয়ী ব্রাহ্মণেরা ইংরেজ-शिवाहिन विनित्न अञ्चाकि इव ना। मिश्तिव अधीरन विषयकर्य कविवाछ यहन এই সময়কার অবস্থা সমালোচ্য গ্রন্থের শীম্দিগের নিকটে ব্রাহ্মণজাতির গৌরব একস্থানে স্থন্দর বর্ণিত আছে। আমরা ও আধিপত্য রক্ষা করিবার জন্য বিশেষ लातिमाम ना। लाठकशन ज्यनकात हेट जलताट्र कितिया जातिया जात-

অবস্থার সহিত এখনকার সামাজিক व्यवशा कृतना कतिया सम्बून।

''রামমোহন রায় যে সময়ে কলিকাভায় णागिया छेशिष्टि इहेरतन, ७ थन मभूमय वश्रञ्भ ञङ्गानासकारत जाङ्ग हिल; পৌত্তলিকতার বাহ্যাড়ম্বর তাহার সীমা रहेट भी या छ न भा छ भ ति वा छिन। (वरमत्र (य मकल धर्माकाण, উপनिर्वेषात्र ব্ৰশক্তান তাহার আদর এখানে কিছুই हिल ना; किन्छ इर्लाएमरवत्र विल्लान नत्मार्मत्वत्र कीर्त्तन, भागाणात्र जा-वीत, त्रथगाळात शाम, এই সকল मह-ग्रारे (लाटकता महा चाटमाटम, मटनत ञानत्म कागह्रव क्रिड। शक्राञ्चान, वाक्रश देवस्थर मान, छीर्थन्यन, व्यन-শনাদিশারা তীত্র পাপ হইতে পরিতাণ

গাহন স্থান করিয়া স্লেচ্ছসংস্পর্ণজনিত लाव इहेट मुक्त इहेट का वर नका।- हेरा द्र निमर्गन जमाणि वारम नगरत পূজালি শেষ করিয়া দিবসের অন্তমভাগে बाहात्र कत्रिंट्यन। हेहाट्य छाहात्रा नर्सव श्रुका रहेएजन धवः वाक्रान्थिः ভেরা ভাঁছাদের যশঃ সর্বত্ত ঘোষণা যাহারা এত কট্ট স্বীকার করিতেন। क्रिटिं ना পात्रिटंन, डाँश्रां कार्यानर्य याहेवांत्र शृद्धि मह्या श्रृं (दाम नक-नहे मन्भन किर्दालन; ज्वर देनर्वमा छ টাকা ত্রাহ্মণদিগের উদ্দেশে উৎসর্গ করিতেন; ভাহাতেই ভাঁহাদিগের সকল দোষের প্রায়শ্চিত্ত হইত। ব্রাহ্মণপণ্ডি-তেরা তথন সংবাদপত্রের অভাব অনেক মোচন করিতেন। তাঁহারা প্রাতঃকালে গঙ্গাসান করিয়া পূজার চিহ্ন কোশাকুশি रुष्ट लहेशा नकल्वतरे चादत चादत ज्ञान क्रिक्न এवः प्रभ विष्माभित्र ভाग यम् मकनथकात्रहे मःवान थाठात कतिएक। বিশেষতঃ কে কেমন দাতা, প্রাদ্ধ তুর্গোৎ-गर्व क् क पूना कतिरलन, हेरात्रहे স্খ্যাতি ও অখ্যাতি সর্বতি কীর্ত্তন এবং धनमाञ्बिरात्रत यथः ७ महिमा मःकुछ ' শ্লোকদারা বর্ণন করিতেন। ইহাতে (कर वा जभाजित ज एत्र, कर वा श्रमः मा-লাভের আখাদে বিদ্যাপুন্য ভট্টাচার্য্য-निगरक ७ यर थहे मान क तिर्द्धन। भूज-ধনীদিগের উপর উাহাদিগের আধিপত্যের ু শীমা ছিল না। ভাঁছারা শিষ্য-বিত্তাপহারক भवागां अक्र नाम कारां के शांक मक मिन्ना काहारक अमधूनि मिन्ना

यरथडे वर्ष উপাৰ্জন বিদামান রছিয়াছে। তথনকার ব্রাহ্মণ পণ্ডিতেরা ন্যায়শাল্তে ও শ্বতিশাল্তে अधिक गरनारयांग मिर्डन এবং ভाহাতে যাঁহার যত জ্ঞানামুশীলন থাকিত, তিনি তত माना ७ প্রতিষ্ঠাভালন হইতেন। কিন্ত তাঁহাদের আদিশান্ত বেদে এত অবহেলা ও অনভিজ্ঞতা ছিল যে, প্রতি-দিন তিনবার করিয়া যে সকল সন্ধ্যার মন্ত্র পাঠ করিতেন তাহার অর্থ অনেকে ভানিতেন কি না সন্দেহ। বিষয়ী ধনী-দিগের মধ্যে ত কোন প্রকার বিদ্যাচর্চা ছিল না। চলিত বাঙ্গালাভাষায় ব্যা-कत्रण कांना पृत्त थाकूक काशतं वर्गा-শুদ্ধি জ্ঞান ছিল না। বিষয়কর্ম্মের উপযোগী পত্ৰলেখা ও অক্ষজানা থাকি-**ल्हे डांशामित भक्ति** यथिष्ट इटेड। তাঁহাদের মধ্যে যাঁহারা পারদী পড়িতে ও ইংরেজি অক্ষর ভাল করিয়া লিখিতে পারিতেন; তাঁহারা বিদ্যার গরিমা আর মনে ধারণ করিতে পারিতেন না। তখন-कात्र वाकाला भूखरकत मरधा रकवल टेह-তন্য চরিতামৃত, কবিকঙ্কণের চণ্ডী, আর ভারতচক্রের অনুদামঙ্গল ও বিদ্যাস্থলর श्रामिक; এ मकल हे भागात ; गामात श्राप्त ज्थन এकथानि छ हिल न।। तूनत्ति अ घूँ फ़ीत (थला, क्रक्षयाजा ७ कवित लफ़ाई, বিন্সেতার ও তবলাতেই তথনকার किनका जात यूवािम राजत व्यात्माम हिन, এবং छ। हात्र । (मारमत न्यावित रथमात

ন্যায় নন্দোৎসবের গোলা হরিদ্রা লইয়া ধর্মাও ঈশ্বরসম্বনীয় প্রাক্ততত্ত্ব সমুদায় भर्थ घाटि দলে দলে মাভামাভি করিয়া ফিরিভেন ও 'দেবকীপ্রস্তির প্রসাদ बाल्तत नाष् ु छिङ्गिश्र्वक थाहे छन। তথাপি অনেক রক্ষা এই ছিল যে, তথন शानामाय **जाहां** ज्ञाना अत्या अत्या नाई এवः ইউরোপদেশের বিজাতীয় সভাতার কলম্ব ভাহাতে লিপ্ত হয় नाहे।"

বঙ্গদেশের যখন এইরূপ অবস্থা, त्रागरगाइन तात्र ज्थन जनाशहन करतन। দেশ যখন অজ্ঞানতায় পরিপূর্ণ, রাম-সোহন রায় তখন শাস্ত্রালোচনা আরম্ভ করেন। অতি তরুণ বয়সেই পৌত্ত-লিকভার প্রতি তাঁহার বিদ্বেষ জন্মে এবং 'সেই পৌত্তলিকতার প্রতিবাদ করিতে উদাত হয়েন। ইহার ফলাফল যাহা घिषाहित তारा मकलातरे विमिन्न चाहि। যাহাতে তাঁহার মত সমর্থন করিতে भारतन एक्षण श्रम्म जिनि नानारमः গিয়া পড়িতে আরম্ভ করেন। ভাহাতে व्रार्थन इहेगा शृष्ट् फित्रिया चारमन এবং ফিরিয়া আসিয়া ভাহারই সমাক্ व्यालाहनाम श्रव् इ हाम । जिनि चान-শীয়গণের মন সেই সকল এক ব্রহ্ম- যে যদিও; আমরা দেখিতে পাই যে প্রতিপাদক গ্রন্থাদির প্রতি প্রথম আ-क्षष्ठे करत्न। डिनि प्रियाहित्नन পরাণাদির অলীক মভামতসমূহ দেশ-गर्भा এ छ मूत स्था जात्र विवाद वि

একেবারে বিলুপ্তপ্রাদ্ধ ইইমাছে। (य मूल देविकिमाट्य, खेनिवरम पर्नगिष्ठ (महे श्राञ्च मभूमाय প্রাপ্ত হওয়া যায় তাহার আলোচনা (मनगर्धा किছूरे नारे। अथा हिन्तू-জাতির তাহাই প্রধান ও মূল শাস্ত। এজনা ভিনি সেই শাস্ত্রের প্রতি যাহাতে সাধারণ ভানগণের মন আরুষ্ট হয় এমত (छिं। कत्रिया ছिल्नि। (म छिं। (य विकल इहेम्।एइ • এ कथा (कह विलिख भारतम ना। यदर्जू छाहात्रहे সময় इहेट उप । पर्ननामित जामत वृष्कि इत्रेषाट्य।

্মান্তার ফেয়ারবেয়ারণ (fairbairn) বলেন * যে আর্যাভাতির শাস্ত্র মধ্যে যে একেশববাদ প্রাপ্ত হওয়া যায় ভাহার সহিত সেমেটিক জাতীয় ধর্মশাস্ত্র-নিহিত একেশ্ববাদের একটু বিভিন্নতা আছে। তিনি কহেন আর্গাজাতীয় ধর্মশাস্ত্রেব ্ত্রতি পূজাই প্রচলিত ছিল। প্রকৃতি পূজা হইতে আর্যাজাতি একেশ্বরবাদে উথিত হয়েন। এজনা তিনি বলেন আর্যাজাতীয় একেশ্বরবাদে ঈশ্বরের একত্ব বাক্ত হইরাছে বটে, কিন্তু সে মিটিক জাতীয় ধর্মপাক্তে যেমন বলে যে সেই এক ঈশ্বর বাতীত আর শিতীয়ু

^{*} In his Studies on the Philosophy of Religion.

लाडीत्र धर्म्य खाश र इख्या यात्र ना। আর্ঘাণাল্রে যেমন একদিকে বলিয়াছে ব্রহ্ম একমাত্র, অনাদিকে বলিয়াছে তাঁ-হার সহত্র অবভার। কিন্তু সেমেটিক জাতীয় ধর্মে এক ব্রহ্ম বাতীত দ্বিতীয় দেবতার অন্তত্ত ও অবতারণ অসম্ভব। ঞিসস এই একেশ্বর বাদ শিক্ষা দেন। भरुयम रेशांत अधान छेशां मार्क। (कशंत्रक्षांत्रांवस अनमख क्था कउन्त मठा टारा वश्ल जालाहिक करेक পারে না। তাহা একটি স্বতন্ত্র প্রস্তাবের বিষয়। কিন্তু রামমোহন প্রাণপণে প্র-মাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন যে আগ্ন্য-**बाठीम भर्मां ७** (क्यां त्रांत्र या या वा का (मरगिष्क जाञीय अरकश्वताम वरनन, তাহা স্থপন্ত বিদামান আছে। তিনি এক নিরাকার ব্রহ্ম বাতীত দিতীয় ব্রহ্ম नारे এই বৈদিক মতদারা পৌত্তলিকতার সম্পূর্ণ প্রতিবাদ করিয়াছেন। যাঁহার।

क्षेत्र नारे, दमर दमर्जा मकलरे मिथा।, दमर्जात कहानात অख्य প্রসাপ করিতে একেশ্বরাদের এই স্কা তত্ত আর্থা- গিয়াছেন, রামমোহন রায় তাঁহাদিগের বিপকে আপন মন্ত সমর্থন করিয়াছেন। তবে রাসমোহনের যুক্তি সমুদায় কত-দূর শাস্ত্রসঙ্গত ভাহা এখনও সমালোচা হইতে পাবে। এমত হটতে পারে যে, वागरमाञ्च व'रवव अरकश्वव'म मध्यीय गठ महत्रानी य जागना गृष्टी य धर्मा इहेए ज अथरम गृशैं इहेगा शाकित ; उ ९ भरत তিনি সেই মত হিন্দুধর্মো আরোপ করিয়া ভাহার সমর্থন করিয়া গিয়াছেন। रेनिक भारत এक गांव अविजी स्त्रत श्वत्र निक्र भन (य ज्ञ भरे रुडेक ना (कन, উপনিষদ ও দর্শন শাস্তে ঐশ্বরিক কল্পনা ষে অতি পরিক্ষুটরূপে পরিবাক্ত আছে ভাহা **मक**रण हे श्रीकांत कतिरवन। किञ्ज দার্শনিক ঈশ্বর যত কেন পরিক্ষুট্রপে পরিবাক্ত হটক না, তাহা কেবল কলনা ও নীরস চিম্বার বিষয় যাত্র ছিল, তাহা (करु कथन शृंकात विषय करदन नारे। পাতঞ্জলের ঈশ্বরভক্তি কণন পূজাতে (मरे (तमामि **१२७७ विजीय जन्म जन**ता अतिनक इस नारे। जारा कितन खन्न

* Mr. Fairbairn traces upwards IndoEuropean religion from its more complete to its simpler forms, until he finds it in that condition which is generally understood by the word Monotheism, but which, it must be admitted, is more accurately designated as Henotheism, the affirmative belief in one God without the sharply defined exclusive line, which makes it a belief in Him as the only God. This latter form of Monotheism proper may be rather the semetic than the Aryan Conception. - W. E Gladstone.

স্থারকল্পনা করিয়াই সম্ভন্ত ছিল। কিন্তু
দার্শনিক ঈশারকল্পনা ও প্রজার ঈশার এ

ত্ই বিভিন্ন ভাব। দার্শনিকতত্ত্ব ঈশাবের অনেক স্থরপ নিরপণ হইয়াছে
বটে, কিন্তু কোন মুনি, ঋষি আজি পর্যান্ত
ভূারতবর্ষে ঐশারক প্রাণ্ডতিষ্ঠা করিয়া
যান নাই। ঈশারকে কেহ ব্যক্তিশ্বরূপ দার্শন করে নাই। দর্শনশাস্ত্রে ঈশারের একত্ব
অন্ধিতীয়ত্ব প্রতিপাদন করিয়াছে সত্য
কিন্তু তাহা কেবল মতথগুনমাত্র। কোন
উপনিষদ বা দর্শনশাস্ত্রপ্রণতা ঐশারিক
ধর্মান্তাপন করিয়া যান নাই। ধর্মোর
ঈশার পূজার বিষয়, কিন্তু দর্শন ও তত্ত্ববিদ্যার ঈশার কেবল চিন্তার ফলমাত্র।

ক্রিনার স্থার কেবল চিন্তার ফলমাত্র।

রামমোহন রায় এই বৈদিক ও দার্শনিক ঈশ্বরকে পূজার বিষয় করিয়া
গিয়াছেন। তিনি উপনিষদ ও দর্শনের
ঐশবিক তত্ত্ব কেবল নিরূপণ ও উৎযোষণ করিয়া ক্ষান্ত হয়েন নাই, সেই
তক্ষ ও নীরস চিস্তার বিষয়কে পূজার
সামগ্রী করিতে চেষ্টা পাইয়াছেন।
তিনি দর্শনশাস্ত্র হতে ঈশ্বরকে বিমুক্ত
করিয়া দেবালয় ও মন্দিরে বেদির উপর

তাঁহাকে স্থাপন করিয়া গিয়াছেল। গ্রন্থকার লিথিয়াছেন 'রিশিন্ধেছন রার न्डन कि क्रिया शियाष्ट्रन ? नित्राकात পরমেশ্বরের উপাদনা কি নৃতন ? সহস্র সহঅ বৎসর পূর্বে ভক্তিভাজন মহর্ষিগণ নিরাকার ব্রহ্মকে করতলনাস্ত আমলক-বৎ অনুভব করিয়াছিলেন।" অনুভব করিয়াছিলেন সত্য, কিন্তু প্রকাশ্যরূপে তাঁহার অর্চনাপ্রণালী কেহ স্থাপন कतिया यान नारे। এদেশে দেবাদির অর্চনাপ্রণালী যেমন প্রবর্ত্তিত আছে একেখরের উপাসনাপ্রণালী সৈরূপ প্রব র্ত্তিত করিতে কোন মুনি ঋষি কখন যত্ন करतन नारे। (वोक्रधर्म नित्री धत हिल। অথবা তাহা বৌদ্ধদেবের উপাদনা-খরের উপাসনাপ্রণাদী প্রবর্ত্তিত করিতে यञ्ज कतियाहित्नन। ভারতে এই ভাঁহার নৃতন কাৰ্যা। আশ্চৰ্যা এই, যে ভারতে ঐশরিকতক্তের চরম সীমার মানবচিস্তা উথিত হইয়াছে সে ভারতে কথন ঐখ-রিক পূজা বিদামান ছিল না। থাকে, তাহা সাধারণ্যে প্রচলিত হয়

^{*} Mr, Fairbairn recognises the tendency of the semetic races to Monotheism, and considers that IndoEuropean man not only has been tolerant of the different gods of different nations, but has conceived the Divine Unity as abstract, while the semite holds it as personal. The IndoEuropean tendency was to religious multiplicities, but to philosophic unities. The God of a religion is an object of worship; the deity of a philosophy is product of speculation—W. E. Gladstone.

নাই। আশ্চর্যা এই, যে ভারতে ঈশ্বর-চিন্তা এতদুর উনুত হই য়াছে যে, আজিও ইউরোপীয় দর্শন তদুর্দ্ধে উঠিতে পারে নাই, সেই ভারত চিরকাল পৌত্তলি-কভার পরিপূর্ণ ছিল! আশ্চর্যা এই, যে মুনি ঋষিগণ ঐশবিক ভাবে ততদ্র উনতি कत्रिग्राहित्नन, छांदात्रा कथन निष নবভাবে মোহিত হইয়া দেবপূজাস্ল একেশ্বরের অর্চনা প্রতিষ্ঠা করিয়া যান नाहै। (म कार्यात्र जना (य এकजन রামমোহনের প্রাবশ্যক হইবে এই আ-শ্চর্যা। ছইসহস্র বৎসর মধ্যে ভারতে কি **अथा अथा कर्यान नार्य एक कर्या** मण्णन कत्रिया উঠেন।

গ্রীষ্ঠীয় ধর্মো প্রাক্ত ঐশবিক পূজা नारे। निष्म जिनम ७ जमीत्र भिवाशन যে ঐশবিক পূজা প্রতিষ্ঠা করিতে মানস कत्रित्राहित्नन, औष्टात्नत्रा त्म अधित्रक পূজাকে বিক্বত করিয়া কেলিয়াছেন। यर्चिमीय धर्म (कर्म क्षेत्रिक भूमा আছে। কিন্তু সে ঐপরিক পূজার নিতান্ত षश्मात प्रगणमान छिन्न षना (कर् অধিকৃত নহে। মহম্মদীয় ঐশ-রিক কল্পনাও তত বিশুদ্ধ নহে। তদপেক্ষা জিসদের ও হিন্দুশাস্ত্রীয় ঐশবিক কল্পনা অধিকতর বিশুদ্ধ ও পবিতা। রামমোহন যে ঐশবিক কল্পনা গ্রহণ করেন তাহা সম্পূর্ণ হিন্দুশাস্ত্রসঙ্গত। जिनि (मिथ्राहित्नन, जागामिरगत जेপ-নিষদ ও দর্শনেও যথন সে কলনা অতি

অন্য ধর্মের কল্পনা প্রহণ করা জন্যায়। তিনি এই উপনিষদের ঈশবের উপাসনা खना मगांखशिष्ठिष्ठी कतिर्यान। এক्रन-কার ব্রাহ্ম বাজার ব্যাহ্ম রাজ্যের স্থা-হৎ কীর্ত্তিস্তস্ত।

ভারতে ঐশবিক উপাদনাপ্রণালী প্রতিষ্ঠা করা নূতন কার্য্য হইলেও জগভে তাহা নৃতন কার্য্য নহে। জগতের মধ্যে রামমোহন রায় কি নূতন কার্য্য করিয়া গিয়াছেন । রামমোহনরায়প্রবর্ত্তি একে-খরের উপাসনাপ্রণালী মধ্যেও এ-কটি নৃতন ভাব বিদ্যমান আছে। আমা-দিগের গ্রন্থকার রামমোহন রায়ের সেই প্রধান ভাবটি এইরূপে ব্যক্ত করিয়া-ছেন:—

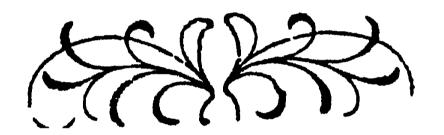
''মহাজনগণের জীবনবৃত্ত পাঠ तिरन (मधा यात्र (य, नाना महर ভाবের मर्या এकि छात व्यथान रहेशा छारा-**मिरिशत की वनशर्थत (न जायत्रश इत्र ।** छारात्रा यारा किছू वरनन, यारा किছू करतन, रमरे ভावि जन्नसा यशिक् হইয়া অবস্থিতি করে। 'আত্মাতে পার-**याचात पर्नन' উপনিষদ**কারদিগের ইহাই व्यथान छात। 'विश्वतााणी देंगजी' त्क-**(मर्वे हेराहे अधान छाव। 'आश-**नारक ञाপनि जान,' मद्याविष्यत देशह প্রধান ভাব। 'একমাত্র ঈশবের পূজা, অপর সকল দেব-পূজার প্রতিবাদ' मश्यापत देशरे धारान छात। 'धर्या-চিন্তায় ব্যক্তিগত স্বাধীনতা' লুথরের বিশুদ্ধ ও পবিত্ররূপে পাওয়া যায়, তখন ইহাই প্রধান ভাব। 'ভক্তিতেই মৃক্তি'

চৈতন্যের ইন্থাই প্রধান ভাব। 'মানব- তৎপ্রতিষ্ঠিত ব্রাহ্মসমাজের টুইডিডে (बन ना।"

वागरमाइन द्रारम् व अहे छेमाव्छाव

প্রকৃতির সর্বাঙ্গীণ উন্নতি? থিওডোর প্রকাশিত আছে। তিনি এইরূপ উদার-পার্কারের ইহাই প্রধান ভাব। সেই- ভাবে এক ব্রহ্মের প্রকাশ্য উপাসনালয় क्रिश वाका वार्याश्न वारम्व ध्रियान श्रापन कविया ভावण्ड व्यक्त्रकीर्दिख्ख ভাব 'দার্বভৌমিক উপাদনা।' কেবল রাগিয়া গিয়াছেন। আজি দেই ব্রাহ্ম-" তাহাই নহে, সেই সার্বভৌমিক উপা- সমাজ নানা শাখাবিশাখায় বিস্তৃত হ-সনার জন্য সমাজপ্রতিষ্ঠা, এটাও জগ্- ইয়া ঈশ্বরের যশোঘোষণার সঙ্গে সঙ্গে (७ त भक्त नृजन। विजीय जावित श्रथम जामस्माइन जारमज स्माइर कीवरनज ভাবেরই অন্তর্ভুক্ত। এই ভাবের পরিচয় দিতেছে। এই ব্রাহ্মসমাজের মোলিকত্ব কেহ অস্বীকার করিতে পা- সহিত রামমোহন রাম্নের নাম পৃথিবীতে **डिव्रमिन अवशान क्रिट्य।**

शृन्हक वर्ष



अलरয়त জলে ভাবন।

गान (मिथ्राष्ट्रिन, (कांधाय कान मयुज, কোথায় কোন দেশ ভাহা ম্যাপে দেখিয়া छल ७ ऋलित विछात वृविद्याह्म। বুঝিয়া ভাঁহারা নিয়লিখিত কয়টি কথা ष्यञ्थावन कतिया थाकिरवन, यमि क्ट ना किया शारकन, जाश शहेरन अकरन তাহা স্মরণ করিয়া দিই।

(ক) জলের ভাগ পৃথিবীর দক্ষিণ मिरक अधिक; श्रुटात छात्र शृथिवीत উত্তর্দিকে অধিক। ইহা সত্য মিথ্যা বলিয়া কেহ স্বীকার করেন, ভাহা হইলে कामि ना, किन्छ गाप्ति এইরপ দেখিতে তিনি যেন একটি অমুভবসম্বন্ধে বিচার পাওয়া যায়।

এক্ষণে বাঙ্গালার বহুতর লোক ইংরেজি (গ) যদি জিওগাফিওয়ালারা এই ভূগোলবুত্তান্ত শিখিয়াছেন; পৃথিবীর কথা স্বীকার করেন, তাহা হইলে ভাঁহারা আর একটি বিষয় দেখুন, দক্ষিণ ভাগের মহাসমুদ্রে ক্ষুদ্র উপদ্বীপগুলি যেরূপ ভঙ্গীতে স্থানে স্থানে একতা সন্নিবেশিত আছে, তৎপ্রতি দৃষ্টিপাত করিলে বোধ হয় যেন এক একটি মহাদ্বীপ ভাঙ্গিয়া গিয়াছে তাহার কুদ্র কুর অংশমাত্র আছে।

> **এই যে छूटे** है विषय **अ**कि मः क्लिश নির্দেশ করিলাম ভাহা যদি প্রকৃত करतन। अञ्चरिष वह:--

এক সময় দক্ষিণ কেব্ৰ হইতে মহাজল রাশি উদ্ভাবিত বৃইয়া উত্তরাভিমুথে ছুটি-রাছিল, তাহার মহাবেগ স্থল জন্ম পাহাড় পর্বত সকলই ভাঙ্গিয়া, ডুবাইয়া, शिलाहेया मियाछिल। यटमूत भर्याख तिहे महात्वार्जन त्वश ममीजूड ना হইয়াছিল ভতদ্র পর্যান্ত আর কিছুই রকা भाग नाहे। त्मरे त्वा मिक् हरेट व्यामियाहिल, ञ्चताः मिक्न पिरक चल-ভাগ প্রায় একেবারে লোপ পাইয়াছিল। (मरे जनशावरभन्न नाम प्रानम । म कन (मर्भ गकल धर्मभात्य এই প্রগদের প্রবাদ जिल्ला विश्व म्हे या एक, किन्न मकन (मर्भ मकन भारत वरन (य किवन वृष्टिवर्षा) পৃথিবী जनगिमध इहेग्राहिन। (कान भारत्वरे वत्न ना य मिक्न अश्म हरेए এই জলরাশি সমুখিত হইয়াছিল। একণে পৃথিবীর বল স্থল বিভাগ দেখিয়া অমু-ভব করা যাইভে পারে যে, জলরাশি मिक्न मिक् इहेट आिम्राइसि ।

ध अञ्चर द्याथ रुप्त अपनरकत्र निक्रे অমূলক ও অসকত। একণে তাঁহা-रमत निक्षे चात्र এक्षे ध्यमार्वत्र কথা উত্থাণিত করি। আসিয়া ও

मार्किंग(मध्मेत मंधावछी या महाममूख আছে (Pacific) তাহাই দেখাই; ইহার দক্ষিণভাগ প্রশস্ত উত্তর্দিক্ क्राय महीन इरेशा शियाटक, व्यर्श (मरे জলরাশির বেগ যত উত্তরে যাইতে হ্রাস পাইরাছে তত মহাসমুদ্র ক্রমে সঙ্গীর্ণ হইয়াছে। আবার সেইরূপ অপর মহা-ममुख (Atlantic) (पथ; ইহাতে नদীর ন্যায় বক্রতা ও ট্যাক আছে,আফ্রিকার যে ভাগ পশ্চিমাংশে বাড়িয়া গিয়াছে, অপর भारत मार्किनरमर अहे जः भ मतिया शिशाष्ट्र, ञावात्र मार्किनप्रधात य छात्र বাড়িয়া আসিয়াছে অপরপারে দেই ভাগ সরিয়া ভিতরে আসিয়াছে। कि (वाध इश् १ ५३ महाममूज यथन প্রথম নদীর ন্যায় ছুটিয়াছিল, नरे वरे उँगाक रहेशाहिल। गाान (मथिया यिनि टेहा श्रीकात ना करत्रन, छांशारक किছू आत विनवात नाहे। याहाता স্বীকার করেন, তাঁহ।দিগকে অমুরোধ করি আর একটি বিষয় স্থির করিতে (5ष्ट्री कक्रन। मिक्निन क्रिक्स इहेट्ड किं-क्राल এই জলোচ্ছাদ আদিয়াছিল।

- with the source कन्नना।

(মাসিক পত্রিকা)

_ धीर्तिमां न वत्माां भाषां म कर्क् मण्णां - मूजिंछ। वार्षिक षाविम म्ला এक मिङ ও यारभक्षनाथ চটোপাধ্যায় টাকা, পশ্চাদেয় মুলা দেড়টাকা। মাসে कर्ष्क श्रकाभिष्ठ। किनकां का तर २२ शृष्टी।

हैश मगालाइनी मामिक পত्रिका। क्लब द्वीरे, भरेगडाका कानिः त्थाम

आमता 'अरे शिक्त तात करण ३३ %

३२ सःशा शाहेबाहि। किन्न जार्राक

गण्न वरगद्भत एिशक मरमध वाकान

गठ वाज्रमारम कि कि विषय मिथिक हरेबाहिण जाहा जानिएक शाहिजानयद्भ । विषयअमि अविकाश्यरे माहिजानयद्भ । माहिजा
कित स्मना विषय निश्चित ममत्र समाणि
वाजानात्र हत्र नारे, स्मना विषयत्र शाहिक
वाजानात्र हत्र नारे, स्मना विषयत्र शाहिक
वाजानात्र नारे।

বঙ্গদৰ্শনে লিখিত হইরাছিল। "কর্না যে कुछकार्या इटेर्न छाहात यात मर्ल्स्ट (पश्-তেছि ना।" किन्न এकार । प्रिथि ए । हा जून, आहरकता छोका (मन ना ; त्वांध हम कन्नना कुलकार्या इटेरव ना। कन्नना श्रका-भक निर्देशन ८ इ फिश निया निथिया एक न ''ঈশ্বরামুগ্রহে কল্লনার প্রথমবৎসর मण्पूर्व इटेल। * * जूः त्थत्र विषय তথাপি বৎসরাস্তে একটি করিয়া টাকা **অ**नেকের নিকট আদায় হইল না। * * नकरनई याहार् ज्याश्रारम हेम्हा कति-**(महे विना कर्ष्ट मिर्ड भारत्रन এই** ज्ञभ করিয়া যৎকিঞ্চিৎ থরচ নির্বাছার্থ যৎ-কিঞ্চিৎ মূল্য নির্দারিত হইয়াছিল; তবুও ইহারই মধ্যে এই তুঃখের কারা কাঁদিতে रहेर्डिइ।"

তাহাই বলিতেছিলাম কলনা টিকিবে না; কলনার দোষ দিতেছি না, দোষ গ্রাহকের। বালালি গ্রাহকের কলফ অতিশয়। তাঁহাদের মধ্যে অনেকেই মনে করেন, ''আমি টাকা না দিলে

कि क्षित्र, जात मभन्नदम छ पिर्दर, **रहेटनरे भिक्का किल्ला** ।'' वाकानिया आय नकरनरे अरेक्सन जाविया थारकम । मक्रामा धरेक्य खाविता मर्ख-मान। शब चाट्ड द्य अक्यांत्र अक त्रांच-मलात्र (भात्रानात्मत्र कथा देथाभन रुव, मला-मम् मकरणरे अकवारका वरकन, "र्शायाना-गाट्यारे वक्षक।" बाबा व क्या भन्नीका করিবার নিমিত্ত খেতপ্রস্তর্গারা একটি -কুদ্র পুষ্ণরিণী প্রস্তুত করিলেন। রাজ্যের সকল গোয়ালার প্রতি অদৈশ করিলেন যে আগামী অমাবসাার রাত্তে প্রত্যেকে এক এক কলস খাটি হগ্ধ পৃষ্ণরিণীতে ঢালিয়া যাইবে,কেহ কাহার সহিত এক**তে** चानिएक भादिर ना, कि भए रकर কাহার সহিত আলাপ করিতে পারিবে না। গোয়ালারা পরস্পর ভাবিল, সক-লেই ত খাট ছগ্ন দিবে, তবে আমি এका यमि किছूरे नां मिरे, शुक्रतिनी থালি থাকিবে না পূরণ হইবে। এই ভাবিয়া সকলেই . বাটী বসিয়া त्रिल, (कष्टे छ्य छ। लिल ना। वा-ঙ্গালি গ্রাহক প্রায়ই সেইরূপ। সক-लिंहे ভाবেन चामि काकि मिल्ल कि ক্ষতি? মূল কথা বাঙ্গালির এখনও নিজের নিকট নিজের সম্ভম হয় নাই,এখনও ফাকি দিতে পারিলে নিজে বাহবা লওয়া আছে; স্কুতরাং নিজের নিকট লজ্জা হয় না।

তাহাই বলি, যাঁহারা নিজে টাকা ব্যয় করিতে অসমত তাঁহারা যেন পত্রিকা প্রকাশ না করেন। বাঙ্গালায় তাহা, 'দিল্লিকা লাড্ডু, যো খায়া ও পস্তায়া, যো না খায়া ও বি পস্তায়া।"

तक्पनंग।

৮१ मर्था।

অভিজ্ঞান শকুন্তল।

৭। ইহার গল্প। অভিজ্ঞানশকুত্বল যে রকমে সমা-লোচনা করিয়াছি, তাহা হইতে নাটক काशांक वरण महरखरे व्या गारेरज भारत। ध्रथमश्रद्धारिक एव नावेक एवत कथा वित्राह् छाटा नाउँ कत्र भाकात-গত নাটকম। নাটকের ভিন্ন ভিন্ন ভাং-भित्र मध्या रच त्रकम मन्त्रक थाका উচিত • ভাছাকে নাটকের আকার-গভ নাটকছ বলে। এই সম্পর্কের নাম একত্ব বা সাম্য-ভাব। যে মানসিক শক্তি অথবা প্রবৃদ্ধি সকল অবস্থাতে নিজ প্রকৃতি রক্ষা করে ভাছাই নাটকে চিত্রিভ रत। ऋखताः नाउँ कत्र नात्रक (य नकल कार्या करत्रन (म ममख कार्यात्रहे **धक्छि निर्मिष्ठेषां व अथवा व्यक्ति थाटक।**

এবং সেই কারণ বশতঃ নাটকের ভিন্ন ভিন্ন অংশের মধ্যে একটি একভাসম্বন্ধ অথবা সামাভাব লক্ষিত হয় ৷ তাহাই नाष्टिकत व्याकात्र-शंक नाष्ट्रकष् । এই একতা রক্ষা অথবা সাম্যভাব প্র-मर्मनरे नांठेककारतत कार्या। এरे कार्या সম্পান্ন করিতে প্রভূত ক্ষমতার প্রয়ো-जन। गत्न कत्र कान এकि विश्व **চ**রিত্র নাটকে চিত্রিত করিতে হইবে। वर्षाए कान जकि निर्मिष्ठ-इत्रिक-विभिष्ठे वाक्ति श्रेष्ठ जीवरन व्यर्था जगः তের বৈচিত্রপূর্ণ কর্মক্ষেত্রে কথন কি প্রণালীতে কার্য্য করিবে ভাছাই দেখা-हेटक इहेटव। न्यामादित शक्ष व्यवः কঠিনতা ব্ঝিয়া দেখ। সংসার একটি (चात इर्जिंग ,तरमा। जथात्र किरूतरे

श्वित्रका नारे, मकनरे व्यनिन्छि। व्याक যিনি অতুল ঐশ্বর্যার অধিকারী কাল তিনি পথের ভিগারী। এই মুহুর্তে যিনি সম্পূর্ণ নিঃশঙ্ক চিত্ত পরমূহুর্ত্তে তিনি विषम विश्रम् श्रास्त्र । श्राह्म एक श्राह्म মুহুর্তে মহুষোর ভাবস্থার পরিবর্তন হই-তেছে। সেই সকল বিভিন্ন অবস্থাতে কোন একটি নির্দিষ্টচরিত্রবিশিষ্ট ব্যক্তি তাঁহার সেই চরিত্রের গুণে যেমন যেমন কার্যা করিলে ভাঁহার চরিত্রের সার্থকতা इय नाउककात छै। इ। एक (मेर्ड तकम कार्या করান। অর্থাং তাঁহার যে রক্ম চরিত্র ভাহাতে যে অবস্থায় তাঁখার যে রকম कार्यः कदा, कथा कल्या, वा ভाव श्रकाभ করা সম্ভব এবং সঙ্গত, নাটককার তাঁ-'হাকে ভাহাই করান। নাটকের পাত্রের প্রত্যেক কার্যো এবং প্রত্যেক কথাতে তাঁহার চরিত্র প্রদর্শিত হওয়া অবশাক। তিনি নানাবিধ অবস্থায় নানাপ্রকার कार्या कतिरवन धदः नानाक्षकात कथा কহিখেন। কিন্তু তিনি যদি প্রাকৃত নাটকের পাত্র হন, তবে তাঁহার প্রতি কার্য্য তাহারই কার্য্য এবং তাঁহার প্রতি কথা তাঁহারই কথা বলিয়া পাঠকের বুঝিতে পারা চাই। বুঝিতে পারা চাই যে তিনি যে অবস্থায় পতিত ে অবস্থায় ভিনি যে কার্য্য করিতেছেন, मां कथा कहिएलएलन (म कार्या जनः (म कथा जिनि य চরিত্র বিশিষ্ট সেই চরিত্র বিশিত শাসির ভিন অপার কাহারো হইতে পা-ে ন' । তথাং কোন একটি জ্যামিতি-

স্ত্র হইতে যেমন অপরাপর জ্যামিতি-স্ত্র অবশা নি:স্ত হয়, তেমনি নাট-(कद्र भारतित ममस कार्या এवः ममस কথা তাহার চরিত্র হইতে অবশ্য-নিঃস্ত विनिया উপলব্ধি হওয়া চাই। এবং প্রক্রত নাটকে তাহাই হইয়া ণাকে। शागतारवेत कथा शागतारेत जिल्ला आत काशाद्यां कथा विनया (वाध शय ना; ইয়াগোর কথা ইয়াগোর ভিন্ন আর কা-शादां कथा विषया ताध श्य गा; ত্থান্তের কথা ত্থান্তের ভিন্ন আর काशाद्रा कथा विषया (वार्ष श्य ना। শাঙ্গ রবের কথা শাঙ্গ রবের ভিন্ন আর काशाद्यां क्या विद्या त्वास श्रा ना। এই কারণেই নাটকের আকারগত বা প্রভাক্ষ নাটকত্ব। অধিকস্ক ইহাও বিবে-চনা করিতে হইবে যে, প্রাক্ত নাটক-কার সামানা চরিত্র চিত্রিত করেন না। যে চারতা চিত্রিত করিলে মহুষাজাতির শিক্ষালাভ হইতে পারে ডিনি সেই চ-রিত্রই চিত্রিত করিয়া থাকেন। কিন্তু চরিত্র শুধু গুরুত্ব গুণবিশিষ্ট হইলেই বসিয়া থাকিতে অথবা ভোজন করিতে অথবা পুস্তক পাঠ করিতে দেখিলে (कान भिकान। ७ इम्र ना। किन्दु (महे वाक्तिक विभम् जनक व्यवशाय कार्या করিতে দেখিলে শিক্ষালাভ হইয়াথাকে। टिन्हे निश्चिक नाउँ ककात्र कान श्वन्य-গুণবিশিষ্ট চ্রিত্রকে কোন অসামান্য অবস্থায় নিকেপ করিয়া তাঁহার ছবি

তুলিয়া দেন। সে ছবি তজ্রণ চরিত্র-निभिष्ठे वार्क्षित , शिक्ति गार्या धनः शिक কণায় আঁকা ণাকে। কত ক্ষমতা থা-किल उदं रम तक म ছবি তুলিতে পারা शैशिश आंशामित गर्धा এकशा नकरन বুরোন না বলিয়া, প্রতিবৎসর বাঙ্গালা ভাষায় রাশি রাশি পুস্তক নাটক বলিয়া প্রচারিত হয়। প্রথম প্রস্তাবে প্রতাক অথবা আকাবগত নাটকত্বের বিষয় যাহা বলিয়াছি ভাহা কেবল অভিজ্ঞানশর্-छ त्वर मञ्चरक विविद्या छि — তाहा किन्न नाउँ कि द लिंगी विषय मस्ति । এখন ঐ नाটक इ निষয়ে যাহা न निनाम ভাগ नाটकमात्विहे প্রযোজা। এই ना छेक च वृता छेवाव निभिन्न । अथग • अ স্তাবে অভিজ্ঞানশকুম্বল হইতে কতক-গুলি প্রমাণ বাছিয়া বছিয়া বাছির করিয়া দিয়াছি। কিন্তু অভিজ্ঞানশক্-खालत शिक्तिभारम कि नारिक प्राप्तिक পাওয়া যায়। পাঠক ইচ্ছা করিলেই তाहां (मथिए भारतन। (मिथि निक् युरे हमएकुछ इन्टेर्न ।

তাগন বুঝা যাই কৈছে যে, প্রভাক্ষ বা

শাবালেই ভাল নাটক হয় না। অপ্রতাক্ষ বা চরিত্রগত নাটকত্ব ভাল হইলেই তবে ভাল নাটক হয়। অভিজ্ঞান
শক্তলের অপ্রভাক্ষ বা চবিত্রগত নাটকত্ব দিলীয় প্রস্থাবে বুঝাইয়াছি। যে
চরিত্রনিঃ স্তুত কার্যাপ্রণালী নাটকে চিভিত্র হয়, সে চুরিত্র হত গভীর, দৃত্যুল

এবং ব্যাপক হয় তত্ই তাহার নাটকের
চরিত্র বলিয়া উৎকর্ষ এবং সার্থকিতা
হয়। ত্মতের চরিত্র লইয়া অভিজ্ঞান
শক্ষল নাটক। দে চরিত্রের কত
দৃঢ়তা, গজীরতা এবং ব্যাপকতা তাহা
ব্যাইয়াছি। বৃশাইয়াছি যে দে চরিত্বেব অর্থপ্ত যা সমস্ত মন্ত্রাসমাজের
অর্থপ্ত তা। অত্রব ইহা অবশাই স্বী
কার করিতে হইবে যে অপ্রভাক্ষ বা
চরিত্রগত নাটকত্ব সম্বন্ধে অভিজ্ঞান শকুজ্ঞল একথানি অত্যুৎকৃষ্ট নাটক।

কিন্তু আকারগত এবং চরিত্রগত নাট-কত্ব ছাড়া অভিজ্ঞানশকুস্তলে আর এক-রকম নাটকত্ব আছে। ভাচা পঞ্চম श्राद्य व्याहेशां हि। इश्रास्त्र त श्राप्त है जिहारमत वर्ष अहे य कन एग क्हें हैं উপাদানের সমষ্টি, অর্থাৎ अড়ত্ব এবং স্কাত। অথবা প্রাকৃতি এবং পুরুষ, সে इटें छिलामान गवन्लव नाशीन धनः তাহাদের সংযোগ বা মিলন নিয়মাধীন ना इटेल विषम अनिष्ठित कात्र इग्र। এই মহাতত্ত্ব দর্শনশাস্ত্রে প্রাপ্ত হওয়া याय। जङ्भव (प्रशा माहेट्ड (म অভিজ্ঞানশক্ষণে প্রথমত একটি প্র-ত,ক্ষ বা ভাকারগত নাটকত্ব আছে; तम न है। व वाकिनियमभन्न। विशेषक शक्षि अश्रायः ना छ न्वाअ गाउँक व न्तरहात (तः नाहरूष मस्यानिष्मर **११८७** ্থাব্য করিয়া সমস্ত মহুষাসমাজ ব্যা-भिशा अपन्य **क्रीयर धकि मार्ग**निक বা জাগতিক (sosmic) নাট্ৰ আছে 📜

সে নাটকত্ব মহুষ্যবিশেষ হইতে আরম্ভ করিয়া সমস্ভ বিশ্ববদ্ধাও ব্যাপিয়া রহি সাছে। এত গভীর এবং ব্যাপক নাট-কত্ব অভি । যে কর্মথানা নাটকে আছে বোধ হয় তাহা-দের সংখ্যা ছই কি তিন থানার বেশী হইবে না। অভিজ্ঞানশকুন্তল সেই ছই তিন থানার মধ্যে একথানা। গেটের 'ফাউষ্ট' আর একথানা। সেক্রপীয়রের 'রোমিও এবং জুলিয়েট' আর এক-খানা বটে, কিন্তু অভিজ্ঞানশকুন্তল এবং 'ফাউষ্ট' অপেক্ষা কিছু নিক্ষ্ট।

অভিজ্ঞানশকুস্তলের যথার্থ প্রকৃতি বুঝা গেল, ইহার প্রকৃত গুণ কি তাহা বুঝা গেল। অতএব এখন বলা খাইতে পারে যে গলরচনা নাটককারের कार्या नय। जारनरक छाटाहे मरन करतन बर्छ, किन्छ भिष्ठि ख्या यांश्रां नार्षेक-कांत्रक श्रद्धालाथक विषया वृत्यान छ। ।-**(**मत गत्न कता छैहिन एय, चिन्छान শকুস্তলের গল্প মহাভারত হইতে গৃহীত এবং সেক্সপীয়রের প্রায় সকল নাটক-গুলি প্রচলিত গল্প লইয়া রচিত। কিন্তু शब्रव्या नाउँककारत्रत्र कार्या ना इहरल्ख নাটকের গল্প একটি স্বতন্ত্র জিনিস। नांगेरकत्र छेष्मभा विरवहनांत्र नांगेककांत्र-গৃহীত গল্প কিয়ৎপরিমাণে রূপান্তর खाल इस। (य नकन खहनिङ शह महेसा (मञ्जाभीयत नाठक तहना कतियादहन, তাহা তিনি কোন কোন অংশে পরি-वर्षन कत्रिया महियाहिन 🕨 शिखान

শকুস্তলে কালিদাসও ভাষাই করিয়া-ছেন। মহাভারতে যে শকুন্তলোপাখ্যান আছে তাহার সংকেপ বিবরণ এই। ত্মন্ত একদা মৃগয়ায় গিয়া মহর্ষি কণ্ডের चार्याय প্रবেশ कतिया (मशिक्न रक মহর্ষি তথায় নাই, কেবল শকুন্তলা षाच्या भक्षनाक (मिश्रा नानमाम অধীর হইয়া শকুন্তলার জাতিকুল নির্ণয় করণানস্তর এক রকম বলপূর্বক ভৃপ্তি-সাধন করিয়া তিনি রাজধানীতে প্রত্যা-বর্ত্তন করেন। কণু আসিয়া এই গান্ধর্ক विवार অমুনোদন করিয়া পকুস্তলার একটি পুল্রসন্তান হইলে পর ভাঁহাকে ত্রতম্বর নিকট পাঠাইয়া দেন। তখন व्यक्ष ভाव कतिएं नाशित्नन (य, जिनि भकुष्ठमारक कथन (मर्थन नाहे এवः विवारं करत्रन नारे। भक्षना जाश-মানিতা সাধ্বীর ন্যায় ছত্মস্তকে তিরস্কার क्रिलिन। ८ अहे नगर्य रिष्ववानी इहेल যে শকুন্তলা ত্মন্তের পরিণীতা ভার্যা। তখন গুম্মস্ত তাঁহাকে এই বলিয়া গ্রহণ করিলেন যে 'ভামি জানি যে শকুস্তলা আমার পত্নী এবং এই পুত্রটি আমারই পুত্র, কিন্তু সহসা গ্রহণ করিলে পাছে ' लारक जागारक रमायी विरवहना करत वितः वहे भूखि कनकी इस वहे छात्र শকুন্তলার সহিত বিভগু। করিতে-ছিলাম।" এ গলে ত্মন্তের চরিত্রে कान माराष्ट्रा निक्छ रम ना, जिनि (करल এकजन कामूक श्रूक्ष दिनशा প্রতীয়মান। এ রক্ম গল নাটকের গল

र्हेट भारत ना। (महेचना कामिमाम **এই গন্নটিকে প**রিবর্ত্তন করিয়া লইয়া कालिमारमञ्ज अधान উদ্দেশ্য আধাাত্মিক জগতের এবং জড়জগতের স্বাধীনতা চিত্রিত করা এবং কি উপায়ে ঐ তুই অগতের মধ্যে শান্তি এবং সাম-প্রস্যা সংস্থাপিত হইতে পারে তাহা প্রদর্শন করা। অতএব মহাভারতের भन्नां भित्रवर्श्वन ना कतिया नहेरल ভাঁহার অভিপ্রায় সিদ্ধ হয় না, কেন না সে গলে কেবল ঐক্তিয়িক বা অভ্জগ তের কার্য্য বর্ণিত আছে। কালিদাসের তুইটি শক্তির প্রয়োজন—মানসিকশক্তি এবং ঐক্রিয়িক শক্তি। অতএব যাহাতে क्रहेरि मक्तित्र कार्गारे উज्ज्ञनवर्ण हिकिन হইতে পারে তিনি এমনি করিয়া মহা-ভারতের গল্পটিকে গড়িয়া লইলেন। ভিনি হ্মন্তকে হুইটি ভিন্ন আকারে श्रमर्भन कत्रित्नन। এक चाकादत इत्रस् है किरत्रत्र भागत्न भनाजृ छ, विनामवामनात्र विश्वनम्बि, मम्भूर्वक्राप व्याषाचावमूध। আর এক আকারে ত্রান্ত ধর্মবীর, কর্ম-बीब, अभगीन, विनामविष्वयी, আण्राजाव-**णूना, পরত: থকাতর, পরস্থা**ষেষী, আত্মেতরভাবের পূর্ণায়ত প্রতিমৃতি। **परे घ्रे** । मूर्खि (य व्यनानी एक गठिक হইয়াছে, ভাহা কি চমৎকার! মহা-ভারতের উপাখ্যানে ঐক্রিয়িক শক্তির कार्या वर्गिक इदेशारह। कानिमाम (मर्दे উপাখান অবলম্বন করিয়া ত্মন্তের কামমুধাক্ততি চিত্রিত করিলেন। কিন্ত

মহাভারতের উপাখ্যানে মান্সিক শক্তির कार्या वर्षिक इस नाहै। त्नहेसना महा-কবি শকুম্বলার প্রত্যাখ্যান, রাক্ষসগণ-কর্তৃক আশ্রমাক্রমণ, রাজমাতাপ্রেরিত मचाम, त्रांककार्या भर्यारमाहना, जबर रेख लां क देन जा बिराज की जा का ना कतिरलन। এই সকল ঘটনায় ছ্মান্তের সৎপ্রবৃত্তি এবং মানসিক শক্তি কি আশ্চর্যারূপে বিকাশপ্রাপ্ত হইয়াছে তাহা व्यथम এवः विजीय व्यक्तार्य वृक्षाहेयाहि। এখন আর একটি কথা বলা আবশাক। শকুন্তলার প্রভ্যাখ্যান দুশ্যে এবং রাজ-कार्या পर्यात्नाहनाय इञ्चरक्षत्र भारतिक्षत्री মানসিকশক্তির চমৎকার চিত্র প্রদর্শিত হইয়াছে সন্দেহ নাই। কিন্তু রাক্ষসগণ कर्ज्ज वाध्यमाक्रमन এवः हेस्लाहक देवजानिकात दिनात्राक्रमना मह!~ কবির প্রতিভার চরমকীর্তি। হুম্মস্ত ঐক্তিয়িক লালসায় জর্জ্জরিতদেহ, পার্থিব-त्यारह मधुकलगमश्र मधुकतारशकां अ मूद्ध, পার্থিভাবে জড়জগতাপেকাও অড়তা-मग्र। किञ्च निरमयमर्था घ्षाञ्च वीत्र छार्व উनाउ, উन्नज क्षत्रारवर्ग रयन शृथिवीत উর্দেশে ছুটিয়া বেড়াইতেছেন, মোহ-बान हिं फ़िया (क निया (यन निया (नारक সম্ভরণ করিতেছেন,যেম্বানে মাটীর সহিত गां हरेया विषयाहित्सन, तम सान कुछ कतिया (काथाय চলिया शियाहिन ভाषात ठिकान। नारे, मछारे (यन এक छ। छ भ९ অনস্তদ্রে ফেলিয়া রাথিয়া আর একটা नर्सतकरम , जिल्ल ज्ञार्ड , श्रांत्र क तिया-

(इन। (य-इरे घटनाम (वरे ब्याम्हर्गा मृणा मृष्ठे रुष्ठ, (म छ्रे घंठेन! ত্ত্বাস্ত-শক্স छ সে উপাখ্যান হইতে সেই তুই ঘটনার উৎপত্তি হয় নাই এবং হইতেও পারে না। কিন্তু সেই জনাই আমরা সেই তুই ঘটনার এত চমৎকারিত্ব দেখি-তেছি। অভিজ্ঞানশকুন্তল আধ্যাত্মিক श्रीगाली त ना हेक। एम ना हे एक वर्षिङ मभख घरेनावलीत मधा छे भाशानमृतक অথবা বাহাগ্রন্থি কথনই থাকিতে পারে না। তুইটা ভিন্ন অগতের কথায় সমস্ত ঘটনা একস্ত্রে গ্রেখিত হওয়া অসম্ভব। এই নিমিত্ত যে ছুই ঘটনার কথা বলি পর্যালোচনা প্রভৃতি অপরাপর মানদিক এবং নাটকের মধ্যে স্থান। কালিদাস, ভোমার কাবোর আধাাত্মিক গভীরভার পরিমাণ কে করিবে! দেব! তুমি শুধু ভারতের কালিদাস নও; তুমি জগতের कालिमाम। त्लारक ना व्वाशा तम्ब-'ভারতের কালিদাস, জগতের তুমি।'

জড়জগতের শক্তি এবং মান্সিকজগ-তের শক্তি এই তুই শক্তি পরস্পর श्राधीन। (यथान এकि भिक्ति श्रावन. **দেখানে অন্য শক্তিটিও প্রবল হইতে**

জগতের শক্তি মানসিকপক্তি অপেকা প্রবল। সেই নিমিত্ত মহাভারতে বর্ণিত লার প্রেমের উপাখানের অংশ নয়। তুম্বন্ত এবং শকুন্তলার পরিণয়প্রণালী পরিবর্ত্তন না করিয়া মহাকবি অসীম-মানসিকশক্তিসম্পন্ন ত্মস্তকে রিপ্র* শাসনে জ্ঞানভ্ত করিয়া চিত্রিত করি-लन। किन्न जड़कार এवर मानिक জগৎ পরস্পার স্বাধীন হইলেও তাহাদের गरधा এक छ मश्रम ञ्राभन कता अर्थाए ल ए ज भ र र क भ र ज व ज भी न করা মনুষালীবনের প্রধান অভিপ্রায়, উদ্দেশ্য, এবং অবশ্যকরণীয় কার্য্য। কেন না,মনুষাজীবনে জড়জগতের শক্তি মান-मिक्रभक्ति অপেকा প্রবল হইলে জীবন তেছি, সেই ছই ঘটনার এবং রাজকার্যা যন্ত্রণাম্ম হয় এবং মহুষাসমাজ নিয়মশূন্য হইয়া বিশৃতালতাপ্রাপ্ত হয়। ত্রুতের শক্তিপ্রকাশক ঘটনার প্রকৃত গ্রন্থি তুমা ঐ ক্রিয়িকশক্তি তাঁহার সানসিকশক্তি **তে**র মনে। সেই মনের সহিত তাহা- অপেক্ষা প্রবল হইল। এবং সেই দের সামঞ্জদোই ভাহাদের সার্থকতা নিমিত্ত যে শাপ এবং শাপোডুত ঘটনা वनी महाভाরতের আখাায়িকায় नाई সহাকবি তাহা কল্পনা করিলেন। এই ক্লনার গুণে মহাভারতের অসম্পূর্ণ আখ্যায়িকা সংসারক্ষেত্রের সম্পূর্ণ চিত্র रुष्टेया छेठिल ।

পীয়রকে সম্বোধন করিয়া বলিয়া থাকে, মহাভারতের উপাণ্যানে একটি দৈব-বাণীর কথা আছে। ত্মস্তকে তিরস্কার করিয়া শকুস্তলা যগন ক্রোধভরে পৌরব-में इहेर हिन्दी याहेर हिन उथन रिषववाणी इहेन (ग, छिनि ज्यारस्त পরিণীতা ভার্যা। সেই দৈববাণী শুনিয়া পারে। শুধু ভাও নয়। জুগতে জড়ে সকলে বুঝিল যে, শকুন্তলা যথার্থ ই

ত্রতের পত্নী এবং ত্রস্তও তথন लाकाथवाज्यत खग्न इटेटच मूक इटेगा भक्षनारक श्रंश कतिरलम। কালি-मारमत छे भाशास्त रम रेम वर्गानी नाहे। কেন না যেখানে ছকাসার শাপ সেখানে সে দৈববাণী থাকিতে পারে ना **धरः थाकिल इग्रस्ट धरः भक्सला**त বিহিত যন্ত্রণাভোগ হয় না। অতএব कालिमाम रम रेमववागीत कथा পরিত্যাগ করিয়া অন্য রকমে তাঁহার নায়ক এবং नाशिकात मिलन मञ्चिन कतित्तन। अञ्च-तीय प्नः शाशिकाता एश्रष्ठ এवः मक्षणात পরিণয় প্রমাণীকৃত হইল এবং চ্পান্তও সেই অঙ্গুরীয় দেখিয়া বিষম যন্ত্রণাভোগ-করতঃ তাঁহার পাপের প্রায়শ্চিত্ত করি-লেন। পরে সেই যন্ত্রণাবিহ্বল অবস্থায় ত্মন্ত তাঁহার গভীর আত্মেতরভাবের এবং অসাধারণ মোহবিজয়ীশক্তির একটি আশ্চর্যা পরিচয় প্রদানকরতঃ তাঁহার আধ্যাত্মিক প্রকৃতির উৎকৃষ্টতা সাবাস্ত করিলে পর পুরস্কারম্বরূপ রম্বীরত্ব শকুস্ত नाक भूननाज कतिसन्।

কালিদাস মহাভারতের উপাথান কি প্রণালীতে পরিবর্ত্তন করিয়া লইয়াছেন ভাহা ব্ঝাইলাম। পরিবর্ত্তনানন্তর উপাথানটি কি রকম ভাবপ্রাপ্ত হই-য়াছে ভাহা একবার ব্ঝিয়া দেখা আব-শ্যক। কালিদাসের উপাথানের প্রধান প্রধান ঘটনা এই:—প্রথম, ত্মন্ত এবং শক্তলার অবভারণা; দ্বিভীয়, ত্মন্ত এবং শক্তলার প্রবিয়ার এবং ঐক্তি

য়িক মিলন; তৃতীয়, হ্র্রাসার শাপ, এবং ত্মস্তকর্ত্ব শকুন্তলার প্রত্যাখ্যান ; **চতুর্থ, অঙ্গুরীয় পুনর্দর্শনানন্তর চ্থান্তের** यञ्जनारकांत्र ; शक्षम, व्याख्यत (प्रवाणारक (प्रवास्कारमा ; यष्ट्रे, ज्यास এवः माकूस-भक्छना छाथम जामादित पृष्टिभरथ আবিভূত, তথন উভয়কেই আমরা বিকাসোন্থ মুকুলের মতন দেখিতে পাই। উভয়েই যেন একটি বিশেষ व्यवश्रात मिटक याहेट उछन, (यन এकि विश्व व्यवशाय वामिया পড़ित्वन পড़ि-लन, (यन व्यवशास्त्राण पूक्ष इहेलन इटेलन, (यन छेमा छात्रिया निवालाक প্রকাশ হয় হয়। দেখিতে দেখিতে মুক্ল यिमन कृषिया পড़ে, इश्वष्ठ এবং भंकूश्व-লার সেই অফুটরাগও তেমনি পূর্ণ-গৌরবে প্রদীপ্ত হইল—যেন উষার অফুট রাগ মধ্যাক্ত রবির বিশ্বদগ্ধকারী কিরণ-क्राप्त वाशिया डिठिया मिश्मिश खाधियय করিয়া তুলিয়াছে—গুম্বস্ত এবং শকুস্তলা म्ह विषय अधिकुछ পড়িয়া তৃণনির্মিত পুত্ত नित्र नाग्र पृथु कतिया ज्लामा याहेट-ছেন, যেন তাঁহাদের চেতনা নাই, জ্ঞান नारे, मारम नारे, माकि नारे-एयन তাঁহারা অভ্জগতের অভ্তামাত। সহুসা এক ভয়ত্বর পরিবর্ত্তন। কোণায় হইতে যেন এক অসীম তেজঃসম্পন্ন জ্ঞানময় অনন্তপুরুষ আসিয়া দেই অগ্নিরাশি निवारेया मिन, विश्वकाछ यन धनय-তিমিরে ডুরিয়া গেল, সেই মহাপ্রথায়ে

শকুন্তলা কোথায় ভাহার ঠিকানা নাই, ত্মন্ত প্রলয়যন্ত্রণার প্রতিমৃতির ন্যায় প্রলয়াধীন। অকমাৎ এক মহাবাক্য শ্রুত হইল। ত্রান্ত প্রলয়ভেদ করিয়া উঠি লেন। তাঁহাকে দেখিবামাত্র বিশ্বক্ষাগু হাসিয়া উঠিল, স্বৰ্গীয় আলোকে আলো-কিত হইল, অপূর্ব প্রভায় প্রভাসিত हरेन। (मरे ष्रभूक बक्ताए७, (मरे স্বর্গীয় আলোকে, সেই হেমকুটশিথর-স্থিত বৈকুঠসদৃশ পুণ্যাপ্রমে ত্মন্ত এবং শকুন্তলা পতিপত্নীভাবে দণ্ডায়মান-**উভয়েই পাণ্ডুবর্ণ, উভয়েই শীর্ণদেহ,** উভয়েই বিমর্ষ, যেন অতি নির্মাল . জ্যোতিশাঁয়-পরমাত্মান্থিত তুইখানি পবিত্র চেতনাখণ্ড! কি দেখিয়াছিলাম, আবার কি দেখিতেছি! বসস্তের রাগগর্ভ মুকুল শরতের ভ্রিয়মাণ কুস্থমে পরিণত হইয়াছে। রাগময় অভ্তা চিন্ময় ভাবে পরিণত হই-मारह। পृথিবী স্বর্গে পরিণত হইয়াছে। পৃথিবী হইতে স্বৰ্গ—এই অন্তত নাটকের त्रष्ट्रिया शृथियो इटेट अर्ग- এटे মহাকবির মহাস্বপ্নের আকার। পৃথিবী হইতে স্বর্গ—এই মহাদর্শকের মহাদৃষ্টির পরিমাণ। গেটে সতাই বলিয়াছেন— "Wouldst thou the young year's blossoms and the fruits of its decline,

And all by which the soul is charmed, enraptured feasted, fed?

Would thou the earth and heaven

itself in one sole name combine?

I name thee, O Sakoontala! and
all at once is said."

এই জড়ভামর পৃথিবী এবং এই मिवारलाक পूर्व अर्थ !— यिनि এই अफ्डा-मम পृथिवी চরণে দলিত করিতে পারেন, এই দিব্যালোকপূর্ণ স্বর্গ তাঁহারই,তিনিই वरे मिवारिलाक शूर्व चर्जित निर्माणक छ।। যিনি এই জড়তাময় পৃথিবীর প্রতি আত্মাময় পুরুষের ন্যায় ব্যবহার করিতে পারেন, ভিনিই এই পৃথিবীতে স্বর্গ-স্থাপন করেন। প্রকৃতি এবং পুরুষ পরস্পর স্বাধীন। কিন্তু যিনি প্রকৃতিকে পুরুষের শাসনাধীন করিতে পারেন, তিনিই প্রকৃত পুরুষ। ত্মন্ত প্রকৃত श्रुक्ष विविद्यारे शृथिवी एक चर्ल श्रिन्ड করিলেন। মহাকবি তাঁহার বিশাল চিত্রপটে এই আশ্চর্য্য পরিণতি আঁকিয়া (मथारेवाएक। (म हिष्कत्र विचात्र— পৃথিবী হইতে স্বৰ্গ পৰ্যান্ত। দে চিত্ৰে গ্রীক নাটকের আকারগত সৌন্দর্য্য, अर्प्रावनावेदकत्र প্রवामी গত আধ্যাত্মিকতা, ध्वरः हेरद्रकी ना है क्व कार्या गंज की वस-ভাব পূর্ণমাত্রায় পরিলক্ষিত হয়। সেই मानग्रिश्व ভावभञ्जीत शृहत्रह्मावाञ्चक মহাপটের বাম অভিজ্ঞানশকুত্তল।

অভিজ্ঞান শকুস্তলের গল মহাভারতের গল অপেক্ষা কভ উৎকৃষ্ট ভাহা দেখা হইল। ছই গলের মূল এক, কিন্তু পরি-ণভি বিভিন্ন। এই বিভিন্নভার গুণেই নাটকের পল্লটির উৎকর্ষ। এই বিভি- প্রতিভা সহকারে সম্পাদিত হইয়াছে, তাহা সেই মহৎ কার্য্য সম্পন্ন করিতে সক্ষম হন।

ন্নতা সম্পাদনই নাটককারের কার্য্য। ভাবিয়া দেখিলে চমৎকৃত হইতে হয়! अভिজ্ঞान गकु छ एन एन को यह का यह का की वन की

ञानम गठ।

छैनविश्म পরিছেদ।

खीवानम हिन्सो शिल পর শাস্তি নিমাইয়ের দাওয়ার উপর গিয়া বদিল। নিমাই মেহয় কোলে করিয়া ভাহার निक ए जानिया विनि । माजित छाएथ আর জল নাই; শাস্তি চোথ মুছিয়াছে, भूथ व्यक्त कतियाहि, अकरू अकरू दाँनि-তেছে। কিছু গন্তীর, কিছু চিন্তাযুক্ত, ष्यगामना । निमारे तृषिया विनन

"ভবুতো দেখা হলো।"

শান্তি কিছু উত্তর করিল না, চুপ করিয়া রহিল। নিমাই দেখিল শান্তি মনের कथा किছू विनिद्य ना। भाष्टि मद्भाव कथा विनाय जान वारा ना जाना निमाने জানিত। স্মৃত্রাং নিমাই চেষ্টা করিয়া ष्मग कथा शाष्ट्रिल—विन

"দেখ দেখি বউ কেমন মেয়েটা।'' শান্তি विनन

"মেয়ে কোথা পেলি—ভোর মেরে श्ला करव ला।"

वाड़ी याख—खैर्य मामात (यरत्र।''

कथां । वल नाहे। "मामात सिरा " निमाहेरात मुक्त नानाविध करणालकथन

অর্থাৎ দাদার কাছে যে মেয়েটা পাইয়াছি। শাস্তি তাহা বুकिल ना ; মনে করিল, শাস্তি বুনি স্বচ ফুটাইবার চেষ্টা করিতেছে। অতএব শান্তি উত্তর করিল,

''আমি মেয়ের বাপের কথা জিজ্ঞানা कति नारे—मात्र कथारे जिल्लामा कति-য়াছি।"

নিমাই উচিত শান্তি পাইয়া অপ্রতিভ श्रेश जिज्ञामा कतिल।

''कांत्र भारत कि जानि ভाই, माम কোথা থেকে কুড়িয়ে মুড়িয়ে এনেছে, ভা জিজ্ঞাদা করবার তো অবদর হলো না ! ভা এখন মম্বস্তারের দিন, কত লোক ছেলে পিলে পথে घाँ ए कि सा पिया राहेट इं आभारित के एक्ट के ज भारत ছেলে বেচিতে আনিয়াছিল—তা পরের মেয়ে ছেলে কে আবার নেয় ?'' (আবার मिहे हिक्क सिहें अल जानिन-निमि **हिक्स जन मुहिशा जावांत विलिए नांत्रिन**) "(या एवं) निवा स्मत, नाष्म स्प्न নিমা। "মরণ আর কি—তুমি যমের চাঁদপানা দেখে দাদার কাছে চেরে নিয়েছি।''

নিমাই শান্তিকে জালাইবার জন্য এ তার পর শান্তি অনেককণ ধরিয়া

করিল। পরে নিমাইরের স্থামী বাড়ী কিরিয়া আসিল দেথিয়া শান্তি উঠিয়া আপনার কুটারে গেল। কুটারে গিয়া বার কর্ম করিয়া উননের ভিতর হইতে কতক-শুলি ছাই বাহির করিয়া তুলিয়া রাখিল। অবশিপ্ত ছাইয়ের উপর, নিজের জন্য যে ভাত রান্না ছিল, তাহা ফেলিয়া দিল। তার পরে দাঁড়াইরা দাঁড়াইরা অনেকক্ষণ চিন্তা করিয়া আপনা আপনি বলিল, "এত-দিন যাহা মনে করেছিলাম, আজ তাহা করিব। যে আশায় এত দিন করি নাই ভাহা সকল হইয়াছে। সকল কি নিক্ষল—নিক্ষল! এ জীবনই নিক্ষল! যাহা সক্ষয় করিয়াছি তাহা করিব। এক বারেও যে প্রায়শ্চিন্ত, শত বারেও ডাই।"

' এই ভাবিয়া শান্তি ভাত গুলি উননে किनिया मिन। यन इटें गाइत यन পাড়িয়া আনিল। অন্নের পরিবর্ত্তে তাহাই ভোজন করিল। ভার পর ভাহার যে ঢাকাই শাড়ীর উপর নিমাইমণির চোট ভাহা বাহির করিয়া তাহার পাড় ছিঁড়িয়া रकिना। यद्धत ययुक् व्यविष्टे त्रिन গেরিমাটীতে তাহা বেশ করিয়া রঙ করিল। বন্ধ রঙ করিতে, শুকাইতে সন্ধ্যা इहेल। मक्ता इहेटल बात क्रक कतिया, -অতি চমৎকার ব্যাপারে শান্তি ব্যাপৃত रहेन। माथात क्रक आधन्कनिष्ठ (कथनार्यत कियमः कां कि निया कां िया পৃথক করিয়া রাখিল। অবশিষ্ট যাহা माथाय तरिन छारा विनारेया विनारेया करे। रेंग्याति कतिम। क्रक्युकण अश्रव

विञ्चान् विनिष्टे खेठा छ। दत्र भतिष्ठ इहेन। ভারপর সেই গৈরিক বসন থানি অর্জেক ছিঁড়িয়া ধড়া করিয়া চাক্ন অকে শান্তি পরিধান করিল। অবশিষ্ট অর্দ্ধেকে হৃদয় আচ্ছাদিত করিল। কিন্তু কিছুইতো ঢাকিল • না। সে হাদয়ের অপূর্ব গঠন-শোভা বস্ত্রের উপর হইতে সম্পূর্ণ অন্থমেয় রহিল। ঘরে এক থানি ক্ষুদ্র দর্পণ ছিল, বছকালের পর শাস্তি দেখানি বাহির করিল; বাহির করিয়া দর্পণে আপনার বেশ আপনি দেখিল। দেখিয়া বলিল "হার! কি করিয়া কি করি।" তথন দর্শণ ফে-लिया पिया, य চুलश्राल काँछ। পড़िया-ছিল তাহা লইয়া শাশ্রু গুন্দ রচিত कतिल। ठालमूथ थानि नवीन माष्ट्रि शांप শোভা পাইতে লাগিল। তার পর ঘরের ভিতর হুইতে এক বুহৎ হরিণচর্ম বাহির করিয়া কণ্ঠের উপর গ্রন্থি দিয়া কণ্ঠ হইতে জান্থ পর্যান্ত শরীর আরুত করিল। যদি কোন কবি সে রূপ দেখিত, তাহা श्रेल এই नवीन "कुखबहः अश्रिमणीः দধানাকে" দেখিয়া এবার মন্মথের বিনাশ দূরে থাকুক, পুনরুজ্জীবনের শঙ্কা করিত। এইরপে সক্ষিত হইয়া সেই নৃতন সন্ন্যাসী গৃহমধো ধীরে ধীরে চারিদিক নিরীকণ করিল। নিরীক্ষণ করিয়া কেহ কোথায় নাই ্নিশ্তিত বুঝিয়া, অতি গোপনে সংরক্ষিত একটা পেটিকা খুলিল। খুলিয়া তাহা হইতে একটা মোট বাহির করিল। মোট খুলিয়া ভাহার ভিতর যাহা ছিল ভাহা মাটীর উপরে সাজাইল। কভকগুলি ভুল

টের পুঁথি। ভাবিল "এগুলি কি করি, मक्त नहेश शिया कि इहेर्व १ ७७ वा বহিব কি প্রকারে ? রাথিয়া গিয়াই বা কি হইবে ? রাথাই বা আর প্রয়োজন কি— • দেখিয়াছি জ্ঞানেতে আর স্থথ নাই, ও ভন্মরাশিমাত্র—ও ভন্ম ভন্মই হোক।"— এই বলিয়া শান্তি সেই গ্রন্থলি একে একে জলস্ত অগিতে নিকেপ করিলেন। কাব্য, সাহিত্য, অলঙ্কার,ব্যাকরণ,আর কি কি ভাহা এখন বলিতে পারি না, পুড়িয়া ভত্মাবশিষ্ট হুইল। রাত্রি দিতীয় প্রহর इटेल भाष्टि मिट्टे मन्नामी विष्ण घाता-দ্ঘাটন পূর্বক অন্ধকারে একাকিনী গভীর वनगर्धा व्यादम कतिलन । वामवानीभन । मिहे निनीथ कानन मस्या अपूर्व गीज्यनि ख्रवं कतिन।

গীত।*

"দড় বজি ঘোড় চড়ি কোথা তুমি যাও রে।" †
সমরে চলিমু আমি হামে না ফিরাও রে।
হরি হরি হরি হরি বলি রণ রক্তে,
বাঁপ দিব প্রাণ আজি সমর তরক্তে,
তুমি কার, কে তোমার, কেন এসো সঙ্গে,
রমণীতে নাহি সাধ, রণজয় গাও রে।।"

"পায়ে ধরি প্রাণনাথ আমাছেড়ে যেও না।" "ওই শুন বাজে ঘন রণজয় বাজনা। নাচিছে তুরঙ্গ মোর রণ করে কামনা, উড়িল আমার মন, ঘরে আর রবনা, রমণীতে নাহি সাধ রণজর গাওরে।"

विश्म পরিছেদ।

পরদিন আনন্দ মঠের ভিতর নিত্ত কক্ষে বিদিয়া ভগ্নোৎসাহ সস্তান নায়ক তিন জন কথোপকথন করিভেছিলেন। জীবানন্দ সত্যানন্দকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "মহারাজ! দেবতা আমাদিগের প্রতি এমন অপ্রসন্ন কেন? কি দোষে আমরা মুসলমানের নিকট পরাভূত হইলাম।"

সত্যানন্দ বলিলেন, ''দেবতা অপ্রসন্ন যুদ্ধে জয় পরাজয় উভয়েই আছে। সে দিন আমরা জয়ী হইয়া-ছিলাম, আজ পরাভূত হইয়াছি। শেষ জয়ই জয়। আমার নিশ্চিত ভরসা আছে. যিনি এতদিন আমাদিগকে দয়া করিয়াছেন, সেই শঙ্খ-চক্র-গদা-পদ্মধারী वनभानी व्यावात शूनकात एया कतिरवन। তাঁহার পাদ স্পর্শ করিয়া যে মহাব্রতে আমরা ব্রতী হইয়াছি, অবশ্য সে ব্রত আমাদিগকে সাধন করিতে হইবে। বিমুখ इहेटल आमता अनु नत्रक (जांश कतित । यामाप्तत जावी मक्टलत विवस्य यामात्र সন্দেহ নাই। কিন্তু ষেমন দৈবান্ত্ৰহ ভিন্ন कान कार्या निक्त इट्रेंड भारत ना, ज्यानि পুরুষকারও চাই। আমরা যে পরা-ভূত হইলাম, ভাহার কারণ এই, ষে আমরা নিরন্ত। গোলাগুলি বন্দুক কামা-त्नत काष्ट्र लांगि लांगि वन्नाम कि इइति।

শ্রাগিণী বাগীশ্রী বাহার — তাল আড়া। †এই গীতের ''' চিহ্নিত উন্তির উত্তর '' '' চিহ্নিত পরবন্তী কির চরণ।

অতএব আমাদিগের পুরুষকারের লাঘব ছিল বলিয়াই এই পরাভব হইয়াছে। একণে আমাদের কর্তব্য, যাহাতে আমা-দিগেরও প্ররূপ অন্তের অপ্রতুল না হয়।''

জীবন সে অতি কঠিন ব্যাপার।
সত্য। কঠিন ব্যাপার জীবানন্দ? সম্ভান
হইয়া তুমি এমন কথা মুখে আনিলে?
সম্ভানের পক্ষে কঠিন কাজ আছে কি?

জীব। কিপ্রকারে তাহার সংগ্রহ করিব আজ্ঞা করুন।

সত্য। সংগ্রহের জন্য আমি অদ্য রাত্রে তীর্থযাত্রা করিব। যতদিন না ফিরিয়া আদি, তত দিন তোমরা কোন শুরুতর ব্যাপারে হস্তক্ষেপণ করিও না। কিন্তু সম্ভানদিগের একতা রক্ষা করিও। তাহা-দিগের গ্রাসাচ্ছাদন যোগাইও, এবং মার রণ জয়ের জন্য অর্থ ভাতার পূর্ণ করিও। এই ভার তোমাদিগের ছই জনের উপর রহিল।

ভবানন্দ বলিল, "তীর্থাতা করিয়া এ সকল সংগ্রহ করিবেন কিপ্রকারে ? গোলা-শুলী বন্দুক কামান কিনিয়া পাঠাইতে বড় গোলমাল হইবে। আর এত পাই-বেন বা কোথা, বেচিবে বা কে, আনিবে বা কে ?"

সত্য। কিনিয়া আনিয়া আমরা কর্ম নির্বাহ করিতে পারিব না। আমি কারিগর পাঠাইয়া দিব, এইখানে প্রস্তুত করিতে হইবে।

জীব। সে কি এই আনন্দ মঠে? শত্য। তাও কি হয়। ইহার উপর

আমি বছদিন হইতে চিন্তা করিতেছি। ঈশ্বর অদ্য তাহার স্থবোগ কবিয়া দিয়া-ছেন। তোমরা বলিতেছিলে, ভগবান প্রতিকূল, আমি দেখিতেছি তিনি অন্তকূল।

> ভব। কোথার কারথানা হইবে। সভা। পদচিছে।

জীব। দেকি? দেখানে কি প্রকারে হইবে?

সত্য। নহিলে কি জন্য আমি মহেন্দ্র সিংহকে এ মহাত্রত গ্রহণ করাইবার জন্য এত আকিঞ্চন করিয়াছি ?

ভব। মহেক্স কি ব্রত গ্রহণ করির।ছেন ? সত্য। ব্রত গ্রহণ করে নাই, করিবে। আজ রাত্রে ভাহাকে দীক্ষিত করিব।

জীব। কই, মহেন্দ্র সিংহকে ব্রভ গ্রহণ করাইবার জন্য কি আকিঞ্চন হইয়াছে, ভাহা আমরা দেখি না। ভাহার স্ত্রী কন্যার কি অবস্থা হইয়াছে? কোথায় ভাহাদিগকে রাথিল? আমি আজ্ব একটি কন্যা নদী ভীরে পাইয়া, আমার ভগিনীর নিকট রা থিয়া আদিয়াছি। দেই কন্যার নিকট একটী স্থন্দরী স্ত্রীলোক মরিয়া পড়িয়াছিল। দে ভো মহেন্দ্রের স্ত্রী কন্যা নয় ? আমার ভাই বোধ হইয়াছিল।

সত্য। সেই মহেন্দ্রের দ্রী কন্যা।

जीवानम विनन, "मरहरम्ब ही मतिन किएन ?"

সত্য। বিষ পান করিয়া।

জीव.। किन मि विष थारेल ?

করিতে স্বপ্নাদেশ করিয়াছিলেন।

ভব। সে স্বপ্নাদেশ কি, স্ভানের क्र (र्या) क्ष रतत जनारे रहेश हिल १

সত্য। মহেন্দ্রের কাছে সেইরূপই ভয়ে পরস্পরের মুখ চাওয়াচায়ি করিল। শুনিলাম। এক্ষণে সায়াহ্নকাল উপদ্বিত, আমি লায়ংকুভ্যাদি লমাপনে চলিলাম। তৎপরে নৃতন সস্তানদিগকে দীক্ষিত করিতে প্রবৃত্ত হইব।

ব্যভীত আর কেহ আপনার নিজ শিষা নিষিদ্ধ নহে। ব্রাহ্মণীর সঙ্গে সাক্ষাৎ श्हेवात स्थाकी तार्थ मा कि ?

সভ্য। হাঁ, আর একটী নূতন লোক। পূৰ্বে আমি তাহাকে কথন দেখি নাই। আজ নৃতন আমার কাছে আগিয়াছে। সে অতি ভরুণ বয়স্ক যুবা পুরুষ। আমি ভাহার আকারেঙ্গিতে ও কথা বার্ত্তায় অভি-শয় প্রীত হইয়াছি। খাঁটী সোনা বলিয়া তাহাকে বোধ হইয়াছে। তঃহাকে সম্ভানের কার্য্যশিক্ষা করাইবার ভার, জীবানন্দের প্রতি রহিল। কেননা জীবানন্দ, লোকের চিত্তাকর্ষণে বড় স্থদক্ষ। আমি চলিলাম, ভোমাদের প্রতি আমার একটা উপদেশ বাকি আছে। অতিশয় মনঃসংযোগ পূর্বক ভাহা শ্রবণ কর।

তখন উভয়ে যুক্ত-কর হইয়া নিবেদন कतिल, जाड्या कक्रम।

সভ্যানন্দ বলিলেন 'ভোমরা হুই জনে যদি কোন অপরাধ করিয়া থাক, অথবা আমি ফিরিয়া আসিবার পূর্ব্বে কর, তবে তাহার প্রায়শ্চিত আমি না আসিলে ক-সত্য। ভগবান্ ভাছাকে প্রাণভ্যাগ রিও না। আমি আসিলে, প্রায়শিত অবশ্য কর্ত্তব্য হইবে।"

> এই বলিয়া সভ্যানন্দ সন্থানে প্রস্থান করিলেন। ভবানন্দ এবং জীবানন্দ উ-

> ভবানন্দ বলিল "ভোমার উপর मार्कि?"

জীব। বোধ হয়। ভগিনীর বাড়ীতে ' মহেক্রের কন্যা রাখিতে গিয়াছিলাম।

ভব। সম্ভানদিগকে ৷ কেন মহেন্দ্র ভব। ভাতে দোষ কি, সেটা ভো করিয়া আসিয়াছ কি ?

> জীব। বোধ হয় গুরুদেব তাই মনে करत्न।

একবিংশ পরিচ্ছেদ।

সায়াহ্নকৃত্য স্মাপনান্তে মহেন্দ্রকে ডাকিয়া সত্যানন্দ আদেশ করিলেন,

"তোমার কন্যা জীবিত আছে ৷"

মহে। কোথায় মহারাজ ?

সত্য। তুমি আমাকে মহারাজ বলি-তেছ কেন ?

मरह। नकल्वे वल, जारे। मर्छत অধিকারীদিগকে রাজ সম্বোধন করিতে হয়। আমার কন্যা কোথায় মহারাজ! সভ্য। তা শুনিবার আগে, একটা ধর্ম গ্রহণ করিবে ?

মনে ছির করিয়াছি।

সত্য। তবে কন্যা কোথায় শুনিতে চাহিও না।

यरः। (कन यशत्राष्ट्र!

সতা। যে এ বৃত গ্রহণ করে, তা-হার স্ত্রী, পুত্র, কন্যা, সম্ভন বর্গ কাহারও সঙ্গে সম্বন্ধ রাখিতে হয় না। জ্রী, পুত্র, কন্যার মুথ দেখিলেও প্রায়শ্তিত আছে। ষত দিন না সম্ভানের মানসসিদ্ধ হয়, তত দিন, ভূমি কন্যার মুখ দেখিতে পাইবে না। অভএব যদি সম্ভানধর্ম গ্রহণ তো-মার স্থির হইয়া থাকে, তবে কন্যার স-দান জানিয়া কি করিবে? দেখিতে ভ याहेर्य ना।

মহে। এ কঠিন নিয়ম কেন প্রভূ? সত্য। সন্তানের কাজ অতি কঠিন কাজ। যে সর্বভ্যাগী, সে ভিন্ন অপর (कर ७ काट्यत छे १ यूक नरह। योश-রচ্ছতে যাহার চিত্ত বন্ধ থাকে, লকে বাঁধা ঘুঁ ড়ির মত সে কথন মাটি ছাড়িয়া স্বর্গে উঠিতে পারে না।

मरह। महाताज, कथा जान द्विए शांत्रिलाम ना। य छी भूट छत मूथमर्गन করে, সে কি কোন গুরুতর কার্য্যের अधिकाती नरह ?

मछा। পুত कलाजित मूथ (पिशिलारे আমরা দেবভার কাজ ভুলিয়া যাই। मञ्चानधर्णात निषम এই स्व, रा निन धन-

কথার স্বরূপ উত্তর দাও। তুমি সম্ভান- য়োজন হইবে, সেই দিন সম্ভানকে প্রাণ-ত্যাগ করিছে হইবে। তোমার কন্যার মহে। তাহা নিশ্চিত করিয়া মনে মুখ মনে পড়িলে তুমি কি তাহাকে রাখিয়। মরিতে পারিবে ?

> यरह। छाहारक ना पिशियह कि. কন্যাকে ভুলিব ?

সত্য। না ভুলিতে পার, এ বত এহণ করিও না।

মহে। সম্ভান মাত্রেই কি এইরূপ পুত্র কলত্রকে বিশ্বত হইয়া ব্রত গ্রহণ করি-য়াছে ? তাহা হইলে সম্ভানেরা সংখ্যায় অতি অয়।

সম্ভান দ্বিবিধ, দীক্ষিত আর অনীক্ষিত। যাহারা অদীক্ষিত, ভাহারা সংসারী বা ভিথারী। তাহারা কেবল যুদ্ধের সময় আসিয়া উপস্থিত হয়, লুটের ভাগ বা অন্য পুরস্কার পাইয়া চলিয়া যায়। যাহার। দীক্ষিত, তাহার। দর্কত্যাগী। ভাহারাই সম্প্রদায়ের কর্তা। ভোমাকে অদীক্ষিত সস্তান হইতে অনুরোধ করি না युष्कत खना लाठी मफ़की खत्राला चारनक আছে। দীকিত না হইলে তুমি সম্প্র-দায়ের কোন গুরুতর কার্যোর অধিকারী श्हेरव ना।

मरह। भीका कि १ भीकि इहेर्ड इहेर (कन ? जामि ७ हे जि शृर्ति र मज এহণ করিয়াছি।

সত্য। সে মন্ত্র ত্যাগ করিতে হইবে। আমার নিকট পুনর্কার মন্ত্রলইতে হইবে। মহে। মন্ত্র ভ্যাগ করিব কি প্রকারে? সত্য। আমি সে পদ্ধতি বলিয়াদিতেছি।

महि। नूजन मझ नहेर्ड इन्दि किन? (अम क्त्र—এ य महे त्रकम् क्था। সত্য। • সম্ভানের। বৈষ্ণব। নেরা বৈশ্লব কেন ? বৈশ্লবের অহিংসাই রকম কথার আমি তোম'র বুঝাইতেছি। • পরম ধর্ম।

স্ত্য। সে চৈতন্য দেবের বৈশ্বব। নান্তিক বৌদ্ধ ধর্মের অন্তকরণে যে অপ্র-ক্লত বৈষ্ণবতা উৎপন্ন হইয়াছিল,এ তাহা-রই লক্ষণ। প্রাকৃত বৈষ্ণবধর্মের লক্ষণ পৃথক পৃথক উপাসনা। সত্ত গুণ হইতে হুষ্টের দমন, ধরিত্রীর উদ্ধার। কেননা, ভাঁহার দয়া দান্দিণ্যাদির উৎপত্তি; ভাহার বিষ্ণুই সংসারের পালন কর্তা। দশবার উপাসনা ভক্তির ছারা করিবে। চৈত-শরীর ধারণ করিয়া পৃথিবী উদ্ধার তের সম্প্রদায় তাহা করে। আর রজ্যে করিয়াছেন। কেশী, হিরণ্যকশিপু, গুণ হইতে তাঁহার শক্তির উৎপত্তি; মধুকৈটভ, মুর, নরক প্রভৃতি দৈত্যগণকে, ' ইহার উপাসনা যুদ্ধের দ্বারা—দেবদ্বেধী-রাবণাদি রাক্ষসগণকে, কংস, শিশুপাল দিগের নিধন দ্বারা—আমরা ভাহা করি।* প্রভৃতি রাজগণকে তিনিই যুদ্ধে ধ্বংস করিয়াছিলেন। তিনিই জেতা, জয়দাতা, পৃথিবীর উদ্ধার-কর্ত্তা, আর সন্তানের ইষ্ট-দেবতা। চৈত্ত্যদেবের বৈষ্ণব ধর্ম প্রকৃত বৈশ্বধর্ম নহে—উহা অর্দ্ধেক ধর্ম মাত্র। চৈতন্ত্রের বিষ্ণু প্রেমময়—কিন্তু ভগবান্ কেবল প্রেম্ময় নহেন-- ভিনি অনন্ত শক্তিময়। চৈত্রগু দেবের বিষ্ণু শুধু <u>त्थ्रममय्य</u> नेष्ठात्मत्र विकृ ७५ मिकिमय। আমরা উভয়েই বৈষ্ণব-- কিন্তু উভয়েই व्यक्ति दिक्षव। कथां वे वृत्रितः ?

মহে। না। এ যে কেমন নুতন নুতন কথা শুনিতেছি। কাশিম বাজারে একটা পাদরির দক্ষে আমার দেখা হইয়া-हिल-एन के तकम कथा नकल विलिन-অর্থাৎ ঈশ্বর প্রেমমর—ভোমরা যীওকে

যে রকম কথায় আমাদিগের মহে। ইহা বুঝিতে পারি না। সন্তা চতুর্দশ পুরুষ বুঝিয়া আসিতেছে, সেই সশ্বর ত্রিগুণাত্মক, তাহা শুনিয়াছ'?

> মহে। হাঁ। সহ, রজঃ, ভমঃ—এই তিন গুণ।

সত্য। ভাল। এই তিনটি গুণের আর তমো গুণ হইতে ভগবান শরীরী— **ठ** जुर्ज जानि त्रथ हेक्हा कत्य थात्र कतिया ছেন। শ্রক্ চন্দনাদি উপহারের দ্বারা সে গুণের পূজা করিতে হয়—সর্কসাধারণে তাহা করে। এখন বুঝিলে?

মহে। বুঝিলাম। সম্ভানেরা ভবে উপাসক সম্প্রদায় মাত্র ?

সভ্য। তাই। আমরা রাজ্য চাহি-ना- क्वल भूमलभारनता जगवारनत्र विषयी विनया ভाशास्त्र मवः । निभाज করিতে চাই।

[🗝] এ মত কেবল একা সত্যানদের নছে। ইউরোপের Knights Templar প্রভৃতি যুদ্ধ-वावमात्रो धर्म-मच्चमारमञ्जू कथा এখान चाद्रन कत्रा कर्खवा। मजानत्मत्र (य मज मङ्ग्रापत्र অসুচরবর্গেরন্ত সেই মত।

षाविश्यं अतिराष्ट्रम ।

কথাবাৰ্ডা সভ্যানশ **সমাপনাত্তে** মহেক্রের সহিত সেই মঠস্থ দেবালয়াভ্য-ন্তবে, সেথানে সেই অপূর্ব্ব শোভাময় প্রকা-ত্তাকার চতুর্ভুজমূর্ত্তি বিরাজিত, তথায় প্রবেশ করিলেন। সেখানে তথন অপূর্ব শোভা। রক্ষত, স্বর্ণ ও রত্নে রঞ্জিত वहविध अभीत्र, मिनत आलाकि इह-য়াছে। রাশি রাশি পুষ্প স্তূপাকারে শোভা করিয়া, মন্দির আ্মোদিত করিতেছিল। মন্দিরে আর এক জন উপবেশন করিয়া মৃত্ব মৃত্ব ''হরে মুরারে'' শব্দ করিতেছিল। मত্যानम मिनत मर्था প্রবেশ করিব। মাত্র সে গাত্রোখান করিয়া প্রণাম করিল। ব্রহ্মচারী জিজ্ঞাসা করিলেন,

"তুমি দীক্ষিত হইবে?"

সেবলিল, "আমাকে অনুগ্রহ করুন।"

তথন তাহাকে ও মহেন্দ্রকে সম্বোধন করিয়া সত্যানন্দ বলিলেন, "তোমরা যথাবিধ স্নাত, সংযত, এবং অনশন আছ ত?"

উত্তর। আছি।

সত্য। তোমরা এই ভগবৎ সাক্ষাৎ প্রতিজ্ঞা কর। সম্ভানধর্মের নিয়ম সকল পালন করিবে ?

উভয়ে। করিব।

শত্য। যত দিন না মাতার উদ্ধার হয়, তত দিন গৃহধর্ম পরিত্যাগ করিবে ?

७७। कतिय।

সভা। মাভা পিভা ভ্যাগ করিবে ?

উভ। করিব।

সতা। ভ্রাতা ভগিনী %

উভ। ত্যাগ করিব।

সভা। দারা স্ত ?

উভ। ত্যাগ করিব।

সতা। আগ্নীর সজন ? দাস দাসী ?

সতা। ধন-সম্পদ-ভোগ १

উভ। मकल हे श्रिका कि इहेल।

সভা। ইন্দ্রিয় জয় করিবে ? স্ত্রীলো-কের সঙ্গে কখন একাসনে নসিবে না ?

উভ। বসিব না। ইন্দ্রিয় জায়করিব।

সত্য। ভগবৎ সাক্ষাৎকার প্রতিজ্ঞা-কর, আপনার জন্য বা স্বজনের জন্ম জ-র্থোপার্জ্জন করিবে না? যাহা উপার্জ্জন করিবে তাহা বৈশ্বব ধনাগারে দিবে?

छेछ। मिव।

সভ্য। সনাতন ধর্মের জন্য স্বয়ং অন্তর ধরিয়া যুদ্ধ করিবে ?

উভ। করিব?

সত্য। রণে কখন ভঙ্গ দিবে না।

উভ। না।

সত্য। যদি প্রতিজ্ঞা ভাঙ্গা হয় ?

উভ। জ্বলস্ত চিতায় প্রবেশ করিয়া অথবা বিষ পান করিয়া প্রাণত্যাগ করিব।

অপর ব্যক্তি বলিল ''আমি ব্রাহ্মণ-কুমার।''

শত্য। উত্তম। ভোমরা জাতিত্যাগ

করিতে পারিবে? সকল সন্থান এক জাতীয়। এ মহা বুতে ব্রাহ্মণ শুদ্র বিচার নাই। তোমরা কি বল?

উভ। আমরা সে বিচার করিব না।

• আমরা সকলেই এক মায়ের সম্ভান।

সত্য। তবে তোমাদিগকৈ দীক্ষিত করিব। তোমরা যে সকল প্রতিজ্ঞা করিলে তাহা ভঙ্গ করিও না। মুরারি স্বয়ং ইহার সাক্ষী। যিনি রাবণ, কংস, হিরণ্যকশিপু, জরাসন্ধ, শিশুপাল প্রভৃতি বিনাশহেতু, যিনি সর্বাস্থিনী, সর্বাজ্ঞানী, সর্বাজ্ঞান্যী, সর্বাজ্ঞান্য ও সর্বানিয়ন্তা, যিনি ইক্সের বজ্ঞে ও মার্জারের নথে তুল্যরূপে বাস করেন, তিনি প্রতিজ্ঞাভঙ্গকারীকে বিনষ্ট করিয়া অনম্ভ মরকে প্রেরণ করিবেন।

উভ। তথাস্ত।

নত্য। তোমরা গাও "বন্দে মাতরং।'' উভয়ে নৈই নিভৃত মন্দির মধ্যে শাভ্তোত্র গীত করিল। ব্রন্দারী তথন তাহাদিগকে যথাবিধি দীক্ষিত করিলেন।

ज्याविश्य প्रतिष्ठ्म।

मीका नमाभनाएड मजानक, मए खरक कि निष्ठ श्वादन नहेश (शत्नन। উভয়ে উপবেশন করিলে সভ্যানক বলিভে नाशिलन,

"দেখ বৎস! তুমি যে এই মহাত্রত গ্রহণ করিলে, ইহাতে ভগবান আমাদের প্রতি অমুকূল বিবেচনা করি। তোমার দারা মার সুমূহৎ কার্যা অমুচিত হইবে। তুমি যত্নে ভাষার আদেশ শ্রবণ কর। তোমাকে জীবানন্দ, ভবানন্দের সজে বনে বনে ফিরিয়া যুদ্ধ করিতে বলি না। তুমি পদচিছে ফিরিয়া যাও। স্বধামে থাকিয়াই তোমাকে সন্ন্যাস-ধর্ম পালন করিতে হইবে।"

मरक्ष छनिय्र। विश्विष्ठ छ विभव इहे-लन। किছू विलियम। अकारोती विलिए লাগিলেন, ''এক্ষণে আমাদিগের আশ্রয় নাই, এমন স্থান নাই যে প্রেবল সেনা जानिया जागानिशक जरताथ कतिल আমরা খাদ্য সংগ্রহ করিয়া, দার ক্ল कतिया मण मिन निर्मिष्त्र थाकि। जामा-দিগের গড় নাই। ভোমার অট্টালিক। ভাছে, ভোমার গ্রাম ভোমার ভাষিকার। আমার ইচ্ছা সেই থানে একটা গড় প্রস্তুত করি। পরিথা প্রাচীরের দারা পদচিষ্ট বেষ্টিত করিয়া মাঝে মাঝে তাহাতে ঘাঁটি বসাইয়া দিলে, আর বাঁধের উপর কামান বসাইয়া দিলে, উত্তম গড় প্রস্তুত হইতে পারিবে। তুমি গৃহে গিয়া বাস কর, ক্রমে ক্রমে হুই হাজার সম্ভান সেখানে গিয়া উপস্থিত হইবে। তাহাদিগের দারা গড়, খাঁটি বাঁধ এই সকল তৈয়ার করিতে থা-কিবে। তুমি সেখানে উত্তম লোহ নিৰ্শিত এক ঘর প্রস্তুত করাইবে। সেখানে সন্তানদিপের অর্থের ভাণ্ডার হইবে। স্বর্ণে পূর্ণ সিন্দুক সকল তোমার কাছে একে একে প্রেরণ করিব। তুমি সেই मकल कार्थत बाता अहे मकल कार्या नि-ব্বাহ করিবে। আর আমি নানা স্থান

रहेए कु उक्षा भिन्नी मकन आनाहे-তেছি। শিল্পী সকল আসিলে ভূমি পদ-চিহ্নে কারথানা স্থাপন করিবে। সেখানে কামান, গোলা, বারুদ, বন্দুক প্রস্তুত করাইবে । এই জন্য তোমাকে গৃহে যাইতে বলিতেছি।

मरश्च यौक्र शहन।

ठंड्रकिंश्य शतिराष्ट्रम।

মহেন্দ্র সভ্যানন্দের পাদবন্দনা করিয়া বিদায় হইলে, তাহার সঙ্গে যে দিতীয় **শिया, मिर्न मीकिल इहें या हिल्ला,** তিনি আসিয়া সত্যানন্দকে প্রণাম করি-আশীর্কাদ করিয়া मणानम ক্বফাজিনের উপর বসিতে অন্নমতি করি-लान। পরে অন্থান্ত মিষ্ট কথার পর জাল দাড়ি খদিয়া পড়িল। বলিলেন, কেমন ক্ষে তোমার গাঢ় ভক্তি আছে কি না ?

शिषा विलल, कि श्रकात विलव। আমি যাহাকে ভক্তি মুনে করি, হয় ত সে ভণ্ডামি, নয় ত আত্ম-প্রভারণা।

मजानम मख्टे श्रेश विल्लन, "जान বিবেচনা করিয়াছ। যাহাতে ভক্তি দিন দিন প্রগাঢ় হয়, সেই অনুষ্ঠান করিও। আমি আশীর্কাদ করিতেছি, ভোমার যত্ন সফল হইবে। কেন না তুমি অতি নবীন-বয়া:। বৎস, ভোমায় কি বলিয়া ডাকিব, তাহা এ পর্যান্ত জিজ্ঞাসা করি নাই।"

নুতন সম্ভান বলিল, আপনার যাহা अञ्क्रिक, आभि देक्शदेव नामाञ्चनाम ।

সভ্য। ভোমার নবীন বয়স দেখির। তোমায় নবীনানন্দ বলিতে ইচ্ছা করে— অতএব এই নাম তুমি এহণ কর। কিন্ত একটা কথা জিজ্ঞাসা করি, তোমার পূর্বে कि नाम हिल? यिन विलिए कान वाश থাকে, তথাপি বলিও। আমার কাছে विनि कर्नाष्ट्रत थादिश कतिद भा। সন্তান-ধর্মের মর্মা এই—যে যাহা অবাচ্য, তাহাও গুরুর নিকট বলিতে হয়। বলিলে কোন ক্ষতি হয় না।

শিষ্য। আমার নাম শান্তিরাম দেব-मन्त्रा।

সত্য। তোমার নাম শান্তিমণি পা-'পিষ্ঠা। এই বলিয়া সভ্যানন্দ, শিষ্যের কাল কুচ্ কুচে দেড় হাত লম্বা দাড়ি বাম হাতে জড়াইয়া ধরিয়া এক টান দিলেন।

मण्डानम विलिन,

'ছি মা! আমার সঙ্গে প্রতারণা— আর যদি আমাকেই ঠকাবে, ভ এ বয়সে দেড় হাত দাড়ি কেন ? আর দাড়ি গাঁট করিলেও কঠের সর—ও চথের চাহনি, এ বুড়োর কাছে কি লুকাতে পার ? যদি এমন নিৰ্কোধই হইভাম, ভবে কি এভ বড় কাজে হাত দিভাম ?''

শাস্তি পোড়ার মুখী,তথন হুই হাতে হুই চোক ঢাকা দিয়া, কিছু ক্ষণ অধোবদনে বসিল। পরক্ষণেই হাত নামাইয়া বুড়োর মুখের উপর বিলোল কটাক্ষ নিক্ষেপ করিয়া, বলিল 'প্রভু, দোষই বা কি করিয়াছি। खी-वाष्ट्रां कि कथन वन थाक ना ?"

শান্তি। সন্তানদিগের বাহবল কি মানবী। কিন্তু আমি ব্রন্দারিণী। সভা। থাকি।

এই বলিয়া সভ্যানন্দ, এক ইস্পাতের ধহুক, আর লোহার কভকটা তার আনিয়া **४श्रक এই লোহা**র ভারের গুণ দিতে সতা। তোমার স্বামী নিরুদ্ধিট। হয়। গুণের পরিমাণ হই হাত। গুণ শাস্তি। উদ্বিষ্ট। তাঁহার উদ্দেশেই দিতে দিতে ধহুক উঠিয়া পড়ে, যে গুণ দেয়, তাকে ছুড়িয়া ফেলিয়া দেয়। যে সহসা মেঘভাঙ্গা রৌদ্রের ন্যায় স্মৃতি শুণ দিত্বে পারে, সেই প্রকৃত বলবান্।

রীকা করিয়া বলিল ''সকল সস্তান কি । নন্দের দ্রীর নাম শান্তি। তুমি কি জীবা-**এই পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছে ?"** নন্দের ব্রাহ্মণী ?''

বল বুঝিয়াছি মাতা।

হয় নাই।

সত্য। তৃই জন মাত্র।

শান্তি। জিজ্ঞাসা করিব কি, কে কে?

সত্য। নিষেধ কিছু নাই। এক জন আমি।

শান্তি। দ্বিতীয় ?

मछा। भौवानम।

শান্তি ধন্ত্রক লইল, তার লইল, অব-হেলে তাহাতে গুণ দিয়া, সত্যানন্দের **ठत्र भाष्ट्र किला** ।

সভ্যানন্দ বিশ্বিত, ভীত এবং স্বস্তিত । হইয়া রহিলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে বলিলেন, শান্তির তেজস্বিনী বাণী শুনিয়া, উন্নত

সভ্য। গোষ্পদে যেমন জল। শাস্তি করযোড়ে বলিল, আমি সামান্যা

আপনি কথন শরীক্ষা করিয়া থাকেন ? সত্য। তাই বা কিসে ? তুমি ভৈ-রবী নও, বৈষ্ণবী নও, তবে কি বাল-বিধবা ? না বালবিধবারও এত • বল হয় না, কেননা ভাহারা একাহারী।

শান্তি। আমি সধবা।

আসিয়াছি।

সভ্যানন্দের চিত্তকে প্রভাসিত করিল। শাস্তি ধন্নক ও তার উত্তমরূপে প- তিনি বলিলেন, "মনে পড়িয়াছে, জীবা-

পত্য। না, ইহাদারা তাহাদিগের এবার জটাভারে নবীনানন মুখ ঢাকিল। যেন কতকগুলা হাতীর ও ড, শাস্তি। কেহ কি এ পরীক্ষায় উত্তীর্ণ রাজীবরাঙ্গির উপর পড়িল। সত্যানন্দ বলিতে লাগিলেন "কেন এ পাপাচার করিতে আসিলে ?''

> শান্তি সহসা জটাভার পৃষ্ঠে বিক্ষিপ্ত করিয়া উন্নত মুখে বলিল,

> "পাপাচরণ কি প্রভু ? পত্নী স্বামীর অনুসরণ করে, সে কি পাপাচরণ ? সস্তান-ধর্মশাস্ত্র, যদি একে পাপাচরণ বলে, ভবে সন্তান ধর্ম অধর্ম। আমি ভাঁহার সহ-ধর্মিণী, তিনি ধর্মাচরণে প্রবৃত্ত, আমি ভাঁহার সঙ্গে ধর্মাচরণ করিতে আসি-য়াছি।

"একি ? তুমি দেবী না মানবী ?" এীবা, ফীত বক্ষ, কম্পিত অধ্র এবং

क्विन गृश-धर्यारे मध्धर्मिनी--वीत-धर्य निम्छ थाकून। त्रमनी कि १

শান্তি। কোন্ মহাবীর অপত্নীক অনাবৃষ্টির ভর ? জীবানন্দের ধর্মচ্যুতি ? হইয়া, বীর হইয়াছেন ? রাম সীতা নহিলে কি বীর হইতেন ? অর্জুনের ঘটিতে পারে। কভণ্ডলি বিবাহ গণনা কর দেখি ? ভীমের ষত বল ততগুলি পত্নী। কত বলিব ? ধর্মচ্যুতি ঘটিয়াছে ? হিমালয় গহ্বরে व्यापनांक दिन एउँ वा दकन शहरव ?

সত্য। কথা সত্য, কিন্তু রণ-ক্ষেত্রে कान् वीत जाता नहेता जाहेरम ?

भाकि। कार्क्न यथन यामवीरमनात्र সহিত অন্তরীক হইতে যুদ্ধ করিয়াছিলেন, क छाँशत तथ जानारेत्राहिन ? खोननी সঙ্গে না পাকিলে পাওর কি কুরুক্তের ষুদ্ধে ষুবিত ?

পত্য। তা হউক, শামান্ত মন্থ্য। দিগের মন দ্বীলোকে ভাগক্ত এবং কার্য্যবিরত করে। এই জন্ত সন্তানের বুতই এই, যে রমণীজাতির সঙ্গে, একা मत्न छेर्रायम् कतित्व मा। जीवानम আমার দক্ষিণ হস্ত। তুমি আমার ডান হাত ভাঙ্গিয়া দিতে আসিয়াছ ?

শান্তি। আমি আপনার দক্ষিণ হত্তে বল বাড়াইতে আসিয়াছি। আমি বুন্ধ-চারিণী, প্রভুর কাছে ব্লচারিণীই থা-কিব। আমি কেবল ধর্মাচরণের জন্ম व्यानियादि; यांगी नक्नेंदिनत ज्ञ नत्र। व्यानियादि। বিরহ-যজণায় আমি কাতরা নই। স্বামীর

অথচ অশ্রপ্ন চক্ষু দেখিয়া ধর্মচ্যুতির ভয়ে আমি কাতরা। বৃষ্টির नजानम बीज रहेलान। विलालन अजाद महान् महीक्रथ एक हुन, आमि "তুমি সাংবী। কিন্তু দেখ মা—পত্নী মহান্ মহীক্ত তলে বৃষ্টি ক্রিব। জাপনি

পত্য। সে কি ? মছান্ মহীক্ছের

শান্তি। যাহা ঘটিয়াছে তাহা আবার

मछा। कि चित्राट्ट ? खीवानत्मत জুবিয়াছে ?

শান্তি। কেবল সহধর্মিণী-সাহায্যের ষ্পভাবে।

मछा। कि वनिएड, जामि किছूरे বুঝিতে পারিতেছি না।

শাভি। কাল মধ্যাহে তিনি আমার সঙ্গে সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন। ব্রভ ভঙ্গ इरेशाइ।

এবার সেই পলিত কেশ ব্রন্মচারী চক্ষু ঢাকিয়াকাঁদিতে বসিল। সত্যানককে ष्रात कह कथन कांनिए एएथ नाहै।

गांचि विनन "প্রভু, আপনার চক্ষে जन (कन ?

সত্য। প্রায়শ্ভিত কি জান ? শান্তি। জানি, আত্মহত্যা।

সত্য। তাই কাঁদিতেছি। জীবা-নন্দের শোকে কাঁদিভেছি।

শান্তি। আমিও তাই আসিয়াছি; याशांट जीवानम ना मरत, ति जना

পত্য। বৎসে, ভোমার অভীষ্ট সিদ

হউক ৷ ভোমার সকল অপরাধ মার্জনা করিলাম। তুমি সম্ভান মধ্যে পরি-গণিত হইলে। স্থামি এতক্ষণ তোমার মর্শ বুঝি নাই, তাই তিরন্ধার করিতেছিলাম ? वाभि कि वृतिव ? वनहाती बकहाती देव छ नहे। जीलाकित जूना शहेर कि धकारत। জীবানন্দ মরিবে, আমিও রাখিতে পারি-বনা, ভূমিও রাখিতে পারিবে না। আমার এ মহাত্রতের পণ প্রিয়ন্ত্রনের প্রাণ। জীবা-नम जामात लागाधिक लिय, किंड (मथ मिक्न रुख शिल (मिव्जा कार्य) क्रिए পারিব না। यक দিন পার, জীবানক্ক পৃথিবীতে রাখিও। সঙ্গে সঙ্গে আপ-নার ব্রহ্মচর্য্যা রাখিও। তুমি আমার প্রিয় निया हरेता। **সন্তান মাত্রই জামার** আনন্দ। এই জন্য সম্ভানেয়া সকলে আনন্দ নাম ধারণ করে। এ আনন্দমঠ। তুমিও আনন্দ নাম ধারণ কর। তোমার শ্বর রহিল, এতো দেখা হইল না ?'' नाम नवीनानमच् तिक्ल।

শান্তি বলিলেন, "আনন্দমঠে আমি থাকিতে পাইব কি ৪''

পত্য। আজ আর কোথা যাইবে? শান্তি। তার পর ?

শত্য। মা ভবানীর মত ভোমার গোব। ভবানন্দ,শীবানন্দ, ७ ननारि जाञ्चन जार्ह, मञ्चान मञ्चानाम कानानम । जानममर्थ जानममर् । किन मार कतिरव ? এই विनिया भरत আশীর্কাদ করিয়া সভ্যানন্দ শান্তিকে विषात्र कतिर्णम ।

শান্তি মনে মনে বলিল "র বেটা

কপালি!" বস্তুতঃ সত্যানন্দের সে অভি-প্রায় নহে—চক্ষের বিষ্যুতের কথাই তিনি বলিয়াছিলেন, কিন্তু তা কি বলা যায় ?

পঞ্বিংশতি পরিছেদ।

সে রাত্রি শান্তি মঠে থাকিবার অন্ত-মতি পাইয়াছিলেন। অতএব ঘর খুঁ জিতে লাগিলেন। অনেক ঘর থালি পড়িয়া পাছে। গোবৰ্জন নামে এক জন পরি-চারক, সেও ক্ষুদ্র দরের সস্তান, প্রদীপ হাতে করিয়া ঘর দেখাইয়া বেড়াইতে লাগিল। কোনটাই শান্তির পছন্দ হইল না। হতাশ হইয়া গোবৰ্জন ফিরিয়া সত্যা-नत्मत्र कार्छ गांखिएक नहेत्रा छिनन। শান্তি বলিল

"ভাই সম্ভান, এই দিকে ষে কয়টা

গোবৰ্জন বলিল, "ও সব খুব ভাল ঘর वरि, किन्न ७ नकल लाक आहि।"

শান্তি। কারা আছে?

গোব। বড় বড় দেনাপতি আছে।

শান্তি। বড় বড় সেনাপতি কে १

শান্তি। হর গুলো দেখি চল না।

গোবৰ্জন শান্তিকে প্রথমে ধীরানন্দের चद्र नहेत्रा शिन। शैत्रानक मश-ভারতের দ্রোণপর্ব পড়িভেছিলেন। অভি-वृष्ण! जायात नना है जालन! जायि यदा कि व्यक्ति नश्तरथीत नक युक পোড়া কপালি না, ভে'র মা পোড়া করিয়াছিল, ভাহাতেই মন নিবিষ্ট—ভিনি

কথা কহিলেন না। শান্তি দেখান হইতে বিনা বাক্যব্যয়ে চলিয়া গেল।

পরে ভবানন্দের ঘরে প্রবেশ করিল। ভবানন্দ তথন উর্দৃষ্টি হইয়া, এক-থানা মুখ ভাবিতেছিলেন। কাহার মুখ, তাহা জানি না, কিন্তু মুখ খানা वष ज्ञुमात्र, क्रुश्च क्रूशिंख ज्युगिक ज्ञानका-রাশি আকর্ণপ্রসারি ভ্রাযুগের উপর পড়িয়া আছে৷ মধ্যে অনিন্য ত্রিকোণ ললাট দেশে মৃত্যুর করাল কাল ছায়া গাহমান হইয়াছে। যেন সেথানে মৃত্যু ও মৃত্যুঞ্জর দ্বন্ধ করিতছে। নয়ন মুদিত, क्तर्ग चित्र, ७ई नील, गए পाछूत, नामा শীতল, বক্ষ উন্নত, বায়ু বসন বিক্ষিপ্ত করিতেছে। তার পর যেমন করিয়া, শর-(माघ-विनुश्च छं अस्म। कार्य कार्य स्मापन উडांनिज कतिया, आंत्रनात मोन्क्या विका-শিত করে, যেমন করিয়া প্রভাতস্থ্য তরঙ্গাক্বত মেঘমালাকে ক্রমে ক্রমে স্থবণী কুত করিয়া আপনি প্রদীপ্ত হয়, দিল্পওল व्यालां किं करत, इन जन की वे अञ्च প্রফুল্ল করে, তেমনি সেই শব-দেহে জীব-নের মোহ দঞ্চার হইতেছিল। আহা কি শোভা! ভবানন্দ তাই ভাবিতেছিল, সেও कथा किंग ना। कन्यानीतक्राप जारात হুদয় কাতর হইয়াছিল; শান্তির রূপের উপর সে দৃষ্টিপাত করিল না।

শান্তি তথন গৃহান্তরে গেল। জি-জাসা করিল, এটা কার ঘর ?

গোবৰ্জন বলিল 'জীবানন্দ ঠাকু-রের।'' শান্তি। সে আবার কে, কৈ কেউ-তো এখানে নেই।

গোব। কোথায় সিগ়াছেন, এখনি আস্বেন।

শান্তি। এই ঘরটা সকলের ভাল। গোব। তা এই ঘরটা ত হবে না।

गांडि। किन?

গোব। জীবানন্দ ঠাকুর এখানে থাকেন।

শান্তি। তিনি না হয় আর একটা ঘর খুঁজে নিন্।

গোব। তাকি হয় ? যিনি, এ ঘরে আছেন, তিনি কর্ত্তা বল্লেই হয়, যা করেন, তাই হয়।

শান্তি। আচ্ছা তুমি যাও, আমি স্থান না পাই, গাছ তলায় থাকিব।

এই বলিয়া গোবর্দ্ধনকে বিদায় দিয়া শাস্তি সেই ঘরের ভিতর প্রবেশ করিল। প্রবেশ করিয়া জীবানন্দের অধিকৃত কৃষ্ণা-জিন বিস্তারণ পূর্বক, তত্মপরি শয়ন করিল।

কিছুক্ষণ পরে জীবানন্দঠাকুর প্রত্যাগত হইলেন। হরিণ চর্মের উপর একটা
মার্য শুইরা আছে, ক্ষীণ প্রদীপালোকে
অতটা ঠাওর হইল না। জীবানন্দ ভাহারই
উপর উপবেশন করিতে গেলেন। উপবেশন করিতে গিরা শান্তির হাঁটুর উপর
বিদিনে। হাঁটু অকমাৎ উচ্ হইরা
জীবানন্দকে ফেলিয়া দিল।

জীবানন্দের একটু লাগিল। জীবানন্দ উঠিয়া একটু জুদ্দ হইয়া বলিলেন,"কে হে ভূমি বেলিক ?'' বেল্লিক। आञ्चरित शाँ दूत छे भत कि वन्-বার জারগা ?

জীব ৷ তা কে জানে যে তুমি আমার •ঘরে চুরি করিয়া এসে শুইয়া আছ ?

শাস্তি। তোমার ঘর কিসের ?

জীব। কার ঘর ?

শান্তি। আমার ঘর।

জীব। মন্দ নয়, কে হে তুমি ?

শান্তি। তোমার বনাই।

জীব। তুমি আমার হও না হও, আমি ভোমার বোধ হইতেছে। ভোমার গলার সঙ্গে আমার ব্রাহ্মণীর গলার একটু সাদৃশ্য षाहि।

শাস্তি। বহু দিন তোমার ব্রাক্ষণীর সঙ্গে আমার একাত্মতা ভাব ছিল, 'সেই জন্য বোধ হয় গলার আওয়াজ এক রকম रस (शष्ड ।

জীব। তোর যে বড় জোর জোর কথা দেখ্তে পাই ? মঠের ভিতর না হতো ভো এক খুষোয় দাঁতগুলো ভেঙ্গে দিতুম।

শান্তি। দাঁত ভেঙ্গেছে অনেক সম্বন্ধী। কাল রাজনগরে কটা দাঁত ভেঙ্গেছিলে, ্র হিসাব দাও দেখি। বড়াইয়ে কাজ নেই, আমি এথানে খুমুই। তোমরা সম্ভানের नन, लब्ब छिटिय, वास्न्ठोक्कनपनत चाँछ-লের ভিতর মুকোওগে ।

এथन जीवानम ठेक्त किছू कॅंभित পড़िल्न । भर्छत ভिতর বৈষ্ণবে বৈষ্ণবে • মারামারি করা সভ্যানন্দের নিষেধ। কিছ এরও বড় মুথের দৌড়, হুখানা দিলেও তাই এমন ?

শান্তি। আমি বেলিক না, তুমি নয়। রাগে সর্বাঞ্চ শরীর জালিতে লা-গিল। অথচ গলার আওয়াজটা মধ্যে मधावफ़ मिर्छ नागिए एक, यन कि मान হয়, যেন কে সর্গের দ্বার খুলিয়া ডাকি-তেছে, আর বলিতেছে এলেই ঠ্যাঙে লাটী भात्रवा। जीवानस्मत उठिए७७ हेक्टा করিভেছিল না, বসিভেও ইচ্ছা করিভে-ছिল না। ফাঁপরে পড়িয়া বলিলেন,

> "মহাশয় এ ঘর আমার, চিরকাল ভোগ দখল করিতেছি, আপনি বাহিরে यान।"

শান্তি। এ ঘর আমার, অর্দ্ধ দণ্ড ভোগ দখল করিতেছি। আপনি বাহিরে ं यान।

জীব। মঠের ভিতর মারামারি ক-রিতে নাই বলিয়াই লাথি মারিয়া তোমায় নরককুণ্ডে ফেলিয়া দিই নাই, কিন্তু এ-খনি মহারাজের অন্নমতি আনিয়া তোমায় ভাড়াইয়া দিতে পারি।

শান্তি। আমি মহারাজের অনুমতি আনিয়াই তোমায় তাড়াইয়া দিতেছি। তুমি দূর হও।

জীব। তাহা হইলে এ ঘর তোমার। মহারাজকে কেবল জিজ্ঞাসা আসিতেছি; আগে বল ভোমার নাম কি?

শান্তি। আমার নাম নবীনানন্দ গোস্বামী, ভোমার নাম কি ?

জীব। **আমার নাম জীবানন্দ** গো-यामी।

শান্তি। তুমিই জীবানন্দ গোস্বামী!

जीव। , जाई (क्यम ?

गान्ति। त्नांक वत्न, जामि कि कब्र्दा।

कीय। लाक कि वरन १

শান্তি। তা সামার বলতে ভয়ই कि ? लाक वल वफ जीवानक ठेक्त ग ७ मूर्थ।

जीव। গণ্ডমূর্থ, আর কি বলে १ শান্তি। মোটা বুদ্ধি।

জীব। জার কি বলে ?

শান্তি। যুক্তে কাপুরুষ।

जीवांनत्मत्र मर्क मतीत त्रारंग गत गत कतिएक नाशिन, वनित्नन, "आत किছ षाद् ?"

শান্তি। আছে অনেক কথা—নি-মাই ব'লে আপনার একটি ভগিনী আছে। শাস্তি। ভূমি ভলুক হে।

জीव। তুমি উল্লুক, অর্কাচীন,নাস্তিক, ঘাট হয়েছে, ছাড়!" বিধন্মী, ভণ্ড, পামর!

कृमि स क जिः क भार-कृमि है जिः है- महस्र नम्र। सीवानक वाफ्रांक कतिया यानाक्टि। :।

ভোর দাড়ি ছিঁড়িব।

শাস্তি তথন গণিল প্রমাদ! দাড়ি ধরিলেই মুন্দিল। পরচুলো থসিয়া পড়িৰে। প্রতি অত্যাচার হইতেছে শুনিরা, অনেকে শান্তি সহসা রণে ভঙ্গ দিয়া পলায়নে তৎ- ধুম্ছচির ভিততর প্রদীপ জালিয়া লাঠি পর হইল।

मत्न हेक्का, भागा मर्छत वाहित्त शिल कृष्टे भाष्टि विनन, ""अं कां शिष्क्र किन?"

घा निय। भाष्टि शाहे रुपेक औरनाक— দৌড়ধাণে অনভান্ত। জীবানন্দ এ সকল কাজে স্থানিকত। শীর্ষ গিয়া শান্তিকে ধরিল। এবং ভাহাকে ভূতলে ফেলিয়া প্রহার করিবে বলিয়া ভাহাকে কারদ कतिया जानिहासा धितिए तान। किंछ স্পর্শ মাত্রেই জীবানন্দ চমকিয়া শান্তিকে ছাড়িয়া দিল। কিন্তু শান্তি বাহু ছারা कीवानत्मत्र भना अफ़ारेया धतिन।

की वामक चिनन, "এ कि! कृमि य श्रीलाक! हाएं! हाएं! हाएं!' किन्न শান্তি সে কথায় কর্ণপাত না করিয়া চীৎ-कात कतित्रा छाकिएंड नाशिन "खरशा, তোমরা দেখ গো! একজন গোঁসাই জোর করিয়া দ্রীলোকের সভীত্ব নষ্ট করিতেছে।"

জীবানন্দ তাহার মুখে হাত দিয়া बीव। जूमि वफ़ विक्रिक एक- विनिन, "नर्सनाम! नर्सनाम! जमन कथा মুখে এনোনা। ছাড়। ছাড়। আমার

শান্তি ছাড়ে না; আরও চেঁচায়; শান্তি। তুমি—যলায়বায়াবোচীচঃ— শান্তির কাছে জোর করিয়া ছাড়ানও रिनएंड मात्रिन "ভোমার পায়ে পড়ি, জীব। বের শালা এথান থেকে— ছাড় !'' শেষ দ্রীলোকের আর্দ্রনাদে 🐃 স্মরণ্য পরিপ্রিড হইয়া গেল।

এ দিগে মঠের গোঁসাইরা দ্রীলোকের (माँ। नहेमा वाहित इहेत्नन। (मिथ्मा जीवानम शिष्टू शिष्टू ছूটिल। यत्न जीवानम धन्न धन कांशिएड नाशिल।" ভুমি ত বড় ভীত পুক্ষ! আবার লোকে ভোমাকে বুলে মহ'বীর ?

(गाँनाइत आत्ना नहेंग्रा निक्रेवर्खी इड्डेन (मृथिय़) जीबानम नकाउदा वनि লেন, ''আমি অতিশয় কাপুরুষ, তুমি আ মায় ছাড়, আমি পলাই।"

শান্তি। "জোর করিয়া ছাড়াও না।" জীবানন্দ লজ্জায় স্বীকার করিতে পারিলেন না যে তিনি দ্রীলোকের জোরে পারিতেছেন মা। বলিলেন,

" তুমি বুড় পাপিষ্ঠা।"

শান্তি তথম মুচকি হাসিয়া, বিলোল क छोक्न (क्न ११) क तिया विनन,

"প্রাণাধিক! আমি ভোমার প্রতি অভিশয় আসক্ত। তোমার দাসী হইব বলিয়াই এখানে আসিয়াছি, আমায় গ্ৰহণ

भाभिष्ठा ! मृत भाभिष्ठा ! अमन कथा চूभि छाँशांक विनन, আমাকে কাণে শুনিভে নাই।

শান্তি। আমি পাপিষ্ঠা, তাতে সন্দেহ ধরিয়াছিলে ?'' নাই; নহিলে জ্রীজাতি হইয়া পুরুষের এই বলিয়া ঈষৎ হাসিয়া শান্তি, ধীরা-काष्ट्र (श्रम जिका চाইতে याইव क्न- नत्मत कथात উত্তর দিল-বলিল, আমার কথাটি রাখিবে? ছাড়িয়া "গোলমাল—একটা मिटिছि।

हाङ्गी—भागारक भगन कथा विलाख नाइ-- जूमि आमात--

थरे विनिया भाष्टि कीवानमरक हाजिया (मिथे—अमिरक मक अनियाहिनाम ।"

তাহার পায়ের ধূলা মাথায় লইল। যোড়হাত করিয়া বলিল, "প্রভু! অপ-রাধ নিও না। কিন্তু ছি! পুরুষমান্তবের ভালবাদার ভাণ্ করাকে ধিক্! আমাকে চিনিতেই পারিলে না।''

তথন জীবানদের মনে সকল কথা প্রফুট হইল। শান্তি নহিলে এ কার্য্য আর কার ৭ শাস্তি নহিলে এ রঙ্গ আর কে জানে ? শান্তি নহিলে কার ঘাছতে এত বল ? তথন আনন্দিত হইয়া, অপ্র-তিভ হইয়া জীবানন্দ কি বলিতে যাইতে-हिल्न-किन्छ अवकाम পाইल्न ना, গোঁসাইয়েরা আসিয়া পড়িয়াছিল। धीतानम आण आणा। धीतानम এই मगरा जीवानमरक जिज्ञामा कतिरानन, " গোলমাল কিসের ?"

করিবে, স্বীকার কর, ছাড়িয়া দিভেছি।" জীবানন্দ ফাঁপরে পড়িলেন, কি জীব। 'দূর হ পাপিষ্ঠা! দূর হ উত্তর দিবেন ? শান্তি সেই সময়ে চুপি

"কেমন বলিয়া দিই—তুমি আমায়

<u>खौलां (क</u> চেঁচাইতেছিল, ''আমার সতীয় নষ্ট कीव। ছि! ছि! व्यामि उक्त- कतिल! व्यामात मजीव नष्टे कतिल'. वित्या (उँठ। इंटिइन। किंक करें। জীবানন্দঠাকুর এত গুঁজিলেন, আমি এত শান্তি मভরে বলিল "চুপ কর! यুं জিলাম, দেখিতে পাইলাম না। এই চুপ কর! চুপ কর! আমি শান্তি।" বনটার ভিতর আপনারা একবার দেখুন

সাপেই থাক্, কি বাঘেই থাক্।"

শান্তি। যথন বৈশ্ব দ্বীলোকের নাম শুনেছে, তথন কি একটু কষ্ট না পেলে এখানে রনে বসিব কেন? চল ভোমার कितिरव ना। जा ना इस किताहे एक हि। कू अ याहे।

এই বলিয়া শান্তি গোঁসাইজিদের ডা- জীব। আমার কুঞ্জ কোথায় ? किय़ा विलितन, "जाननात्रा এक है ने निर्क नान्छ। मर्छ। থাকিবেন। কি জানি ভৌতিক মায়ায়ও हरेए भारत।"

अनिया धक जन श्रीमारे विनन, " छारें । नाजि। जामि कि ही लाक ? সম্ভব। নছিলে দ্রীলোক কোথা হইডে ষ্পাসিবে।"

গোঁসাইয়েরা সকলেই এই মতে মত দিল। ভৌভিক মায়া স্থির করিয়া সক-लारे मर्छ फित्रिल। कीवानम विलल ''এসো, আমরা এইথানে বসি—এ ব্যাপার টা আমাকে বুঝাইয়া বল-তুমি এখানে । প্র পোড়ার মুখ চিনিতে পারিবে না। क्नि—कि श्रकात जानिल— व दगह

গোঁসাইদিগকে শান্তি অরণ্যের বা কেন? এত রঙ্গই বা কোথায় শিথিলে? निविष अः म (मथाইয়। मिन। जीवानम भाष्ठि वनिन ''আমি কেন আসিলাম ? শান্তিকে চুপি চুপি জিজ্ঞাসা করিলেন, —ভোমার জন্য আসিয়ার্ছি । কি প্রকারে " বৈষ্ণবদিগকে এত ত্বংখ দিয়া তোমার আসিলাম ?—হাঁটিয়া। এ বেশ কেন ? কি ফল ? ও বনে গেলে কি ওরা ফিরিবে? আমার শক। আর এত রঙ্গ শিথিলাম " काथाय ? এकि । भूक्ष्यमाञ्चर का ছ। সব ভোমায় ভাঙ্গিয়া বলিব। কিন্তু

জীব। সেখানে দ্রীলোক, যাইতে আসিতে নিষেধ।

জীব। আমি মহারাজের নিয়ম লজ্খন कत्रियं ना।

শান্তি। আমার প্রতি মহারাজের অন্থ-মতি আছে। কুঞ্জেই চল, সব বলিভেছি। বিশেষ ঘরের ভিতর না গেলে আমার माफ़ि थूलिव ना। माफ़िना थूलिल कुमि ছি! পুরুষ এমন!"

ভূমিষ্ঠ শিশুর প্রতি।

এস রে মানৰ শিশু, এস ধরাতলে; নয় মাস অন্ধকারে করেছ নিবাস, जालां क्रिन न्यार्थ क्रिन क्रिन क्रिन १ দেখেছ কি সন্মুখেতে মায়ারূপ জাল ? পাইয়াছ শিভ্মাভ্ উভয়-গুরভি।

ভাবিছ, সে হেতু পাবে ভাদের ছুর্গভি? युजिए नयरन किया कतिह कझना! জেনেছ কি এ জগতে হুথের সাগরে, जतक बाकून श्रु माँ जातिए श्रुव ? — गांजात मात्रात्रं जूनि সংসারের ভ্রম,

ডুবিবে মাভার সনে আশার সাগরে ? বালির ভিত্তিতে মাতা নির্মাণিবে গৃহ, ঘটনার স্রোভে ভাহা পড়িবে ভূতলে। তুমিও ভাবিবে স্থত, "জগতের মাঝে, শ্रिष्ठ जीवज्ञा जामि न ए इसम्म, জগতের শুভ-তরে ধরেছি জীবন, উঠাইব জগতেরে নিজ বীর্ঘাবলে--ত্থ হরি, স্থময় করিব সংসার ?" হায়, মানবের স্থত, কেন এত ভ্রম, নৈরাশে লভিতে কর বক্ষেতে ধারণ। মান্ত্ৰ জন্মেছে হুয়ে ঘটনার দাস, ঘটনায় শুভাশুভ নির্ভরিবে তার। कार्यात्कटक উखतिया वृक्तित नकिन, দেখিবে ভোমার বীর্ঘ্য হবে ভেজোহীন। (पिथित) मिष्टेरक पिनिष्ट छूटे निर्या छन कति निकृष्टे टेस्सिय-ऋथ, पञ्ज, अट्हात, চরিতার্থ করিবারে। স্বকার্য্য সাধিতে, নাজিয়া নিঃমার্থপর মার্থপরগণ, বন্ধুতার ছলে, শিশে।, প্রতারিছে সবে। (ভেবেছ)— ''অজ্ঞান-ভিমির হরি,শুক্রজ্ঞান-জ্যোভি:

ত্তি নিন্দান ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত বিভরিবে ধথা তথা; নাশি নীচ সুথ, স্থিতে তাহার স্থলে সুথ নিরমল; রাখিবে না ভেদ কভু নির্ধন ধনীতে, অর্থের সমান ভাগ, শিখাবে জগতে; —শিখাবে ধ্যার্থ ধাহা অর্থ ব্যবহার। দৃষ্টান্ত দেখাবে তুমি জ্রাত্ মান্তবেরে, দেখিতে কিরূপে হর সর্কো সমভাবে; অনাথের অঞ্জল করিবে মোচন; নিশীভিত-ত্থভার করিবে বহন; মন্তব্য-জানন কভু হইতে মলিন

मित्व ना ; চুन्त्रिश छात्र वनात्व समस्य প্রফুল করিবে ভারে আশার কুহকে।" এত যদি আশা তব মানবের স্মৃত, হতভাগ্য, হায়, কেন লভিলে জনম, জান না কি পৃথিবীর অথগু নিয়ম,? বালুকা-কণার মত তুমিও ভাছাতে, ক্রীড়িত হইছ, তব আশা-স্থথ লয়ে। निर्वत श्रेत श्रेत क्ष्र पिथित ना हिर्स, कि आभाग्र श्रमि छव नर्सम। कूलिছে। ছথের পীড়ন শুধু দেখে চারিদিকে, স্তম্ভিত হইবে তুমি, কভু না পারিবে, জীবন অর্পিলে তাহা করিতে মোচন, উদ্যমে কেবল, স্থত, নিস্তেজিবে বল। ভেবে দেখ কবে তুমি পেরেছ ফিরাতে, কিন্দা অবরোধিবারে ঘটনার স্রোভ। मानव विख्वान ठिक (पर्थ मव वर्षे, কিন্তু বল কার তাহে ঘটিয়াছে স্থত. অদয়ের শান্তি, কিম্বা পুরিয়াছে আশা ? মান্থবের সৃষ্টি হতে, ঘূর্ণমান সদা, স্থ-তথরূপ চক্র পরিবর্ত্তশীল। সংসারের অংশ হয়ে বল দেখি তবে, কেমনে এড়াবে তুমি সে ছখের ভোগ ? मानिनाम, ट्या कूमि मः माद्रित माद्य, বল দেখি সে শ্রেষ্ঠতা দিয়াছে কি ফল ? কেবল জেনেছ ভাহে ছথময় ধরা; —করিয়াছে তাহে, উচ্চ **অদয়** তোমার অনুভব, হায় শিশো, ভীব্রতার দহ, -সে ছথের ভার। যদি বল অকাতরে, সহিবে সে সব ক্লেশ তব জ্ঞান-বলে, আসিতে দিবে না চক্ষে কণা মাত্ৰ জল, निः गर्म महित्व वाथा-नहस्त्र त्ययन

রোগের যন্ত্রণা রোগী, যবে চিকিৎসক আরোগ্য ভরসা ছাড়ে। বল কি করিলে, সাধিলে কি কাষ ভবে জগতে আসিয়া ? ধর্ম-শাস্ত্র বটে উচ্চে বলিবে ভোমারে, রহ রহ রহ ছভ, পাইবে সাজুনা ?''— हरव चूथी পরকালে এ দেহ তাজিলে ?'' কিন্তু হায়, যদি ভাহে করহ বিশ্বাস, দূরিকে ভোমার ত্থ ক্লেকের ভরে। ৰথা অহিফেণ দূরে রোগের যাতনা

क्क न- निष्ठा कानि। वन, श्रमान-विशेन কল্পিড যে আশা, দে কি ভিছিবারে পারে---যবে সাংসারিক হুখে শোড়িভ শুকায়, करत श्वारत भूना, मरनरत निरम्ख ? —তখন ফুটিবে তব স্মুজ্ঞানের আঁথি, শিহরি দেখিবে যবে প্রকৃতির রীতি, তথন বলিবে তুমি—"প্রকাণ্ড জগতে কণামাত্র বটে আমি।"—তবে কেন আশা १ জীবনেরে ছেড়ে দাও সংসারের স্থোতে।

भारतक "मनूषाज" ও ছালের "माईन कরा।"

ইংরাজের কত কি হারাইয়াছে, তাহার ঠিক নাই। না। কিছুতেই যেন লোকের হৃপ্তি হয় না। বাঙ্গালীর কথকত। উঠিয়া গিয়াছে। कित, भौं जानी, यांजा, এक वाद नाहे বলিলেই হয়। যে ব্রাহ্মণ পণ্ডিতেরা সভা-বের নিভীকতা, সত্যনিষ্ঠতা, ধর্মপরতা প্রভৃতি বলে সমাজে এক প্রকার অগ্রণী इरेग़ि हिलन, छाँशि मिश्रत नाम नुख्याय इहेश উঠिতেছে। य मकल मामाजिक কার্য্যে ও বাৎসরিক পর্কাহে সমস্ত দেশীয় লোক আনন্দে উন্মন্ত হইত, ভাহ। কমিয়া আদিতেছে। যে সম্ভোষ বাঙ্গা-লীর ঘরে ঘরে বিরাজ করিত, তাহা আর দেখিতে পাওয়া যায় না। আত্মীয়ের, কুটুম্বের ও প্রতিবেশীর বিপদে সম্পদে লোকে ষেমন বুক দিয়া পড়িত, একণে ভাহা দেখিতে পাওয়া যার না।

এখন সবাই আপন লইয়া ব্যস্ত, কেহ বলিলে যত ভাৰ ব্যক্ত হয়, এত কি আর

महवारम वाक्रांनी यः काङात्र आश्रम विश्राम प्राताराश (मय (पर्नीय मग'**अ**-वस्रत कार्य निशिन इहेया ञानिशाष्ट्र। श्राम या नगत्वामीनिरगत সকলেই পরস্পারের কার্য্যে যেমন পরস্প-রের মুখাপেক্ষা করিত, এক্ষণে আর সেটী (नश यात्र ना। देश्ताष्ठ गदर्गायन्ते, हे:-রাজ রাজপুরুষ, হর্ডাকর্তা বিধাতা হই-য়াছেন। দকলেই ভাহাদের মুখাপেকা करतन। भूतान भातिवातिक, वामिक, নাগরিক, সামাজিক বন্ধন খুলিয়া মানুষ স্ব त्र व्यथान रुरेशा उठिए हा । ভाराप्तत জাতীয় চরিত্র,এমন কি তাঁহাদের জীবনের উদ্দেশ্য ও যেন পৃথক হইয়া দাঁড়াইয়াছে। शृद्ध वाकालात मक्ता कीवर्नत छ-(एगा मञ्चाच हिन। मञ्चाच कथाणि

একটা কথায় ব্যক্ত হইতে পারে? মহ-যাত্ব বলিলে লোক-লৌকিকতা, পাত্মীর-কুট্মিতা বাস্কাণসজ্জনের প্রতি শ্রহা, গরিব তুঃথীর প্রতি দয়া নিরাশ্রকে আশ্রম দান, বিপন্নের বিপদ উদ্ধার, অনা-থের সহায়তা, ব্যথিতের ব্যথানিবারণ, म्बिर्मित पू:थंडअन, नित्रम्क व्यव्यान, বিবস্তকে বজ্ঞকান, অপরাধির অপরাধ-মার্জনা, শোকার্ডের সাস্ত না, সর্বদা ক্রিয়া-कनाथ करा कियाकनाथ लाकित अजा র্থনা, লোকের বাড়ী য'ওয়া আসা, প্রভৃতি মত কিছু মন্ন্যা হৃদয়ের কোমল, मत्रल, উদার কার্যা আছে, এক মনুসার भाष्म मकलहे वृष्यां । मञ्चाल विलितः मञ्चा मम्ट्रत नर्वाकीन हिल्नाधन तृत्राय। ষ্থার্থ মন্থ্য হইবে, তাহার ষ্থার্থ মন্ধাত্ত थाकित्व, त्म जाम्म नीठ मञ्चात्रव ব্যথা, যত কেন অল্প হউক না, সে ব্যথাও वाथी इटेरव।

किन जाजि कानि मञ्ता जीवरनत উদ্দেশ্য আর মহুষ্যত্ত নাই। আজি কালি ষে লোক পরের ছঃথে ছঃখী হয়, পরের ব্যথার যাহার হাদর গলিয়া বার, ভাহাকে लाक षाशचक वल। य श्रि जित्नी-मिश्नित कार्या नहेशा वास्त्र थारक, लांकित विशान (मिथान वृक् निया शाए, लाक তাহাকে "হম্বগ্" (Humbug ও Weakminded) বলে। আজ কালি মহুষ্য জীবনের উদ্বেশ্য স্বতক্ত হইয়া পড়িয়াছে। শাজি কালি লোকে কেবল "গাইন' করিতে

फिट्टी करत। "मारुन'' **मक**ी वाकालाय ভৰ্জমা হইতে পারে না অভিধানে এক্লপ উৎকট স্বার্থ-পরতা-শার-সংগ্রহ-দ্যোতক কথা থাকিতে পারে না। পৃথিবীতে যত প্রকার স্বার্থ-পরতা আছে, ৰোধ হয়, ভাহাদিগের শেষ সীমা " সাইন' করা। আত্মীর সম্ভ্রন দেখিব না, জ্ঞাতি বন্ধুর মুখপানে চাহিব না, প্রতি-বেশী দীন ছঃখী দরিদ্র প্রভৃতির প্রতি দৃক্পাত করিব না। কেবল দেখিব আমি কিনে বড় হইতে পারি, কিনে আমার গ'ড়ী, জুড়ী, বড় বাড়ী প্রভৃতি হয়। কিসে লোকের কাছে অধিক পরিমাণে বাহবা লওয়া ধায় (লোকের কাছে বলিতে গেলে কালা বাঙ্গালীর কাছে নয়। মনুষা ষত কেন ছোটই হউক •না, যে শুক্ত লাল মুখের কাছে বুঝায়) কিসে সাহেবদিগের কাছে সম্মান বাড়ে, কিসে নামের পাশে १।৮টা ইংরাজি অক্ষর যুড়িতে পারা শায়, আমাদের জীবনে শুদ্ধ এই মাত্র উদ্বেশ্য হইয়া দাঁড়াইয়াছে।

> যাহারা আপন জীবনের উদ্দেশ্য সফল করিয়া যাইতে পারে, লোকে তাহাকেই বড়লোক বলে। আমি দেখিতেছি এখন-কার বড়লোক ও প্রাচীন বাঙ্গালার বড়-লোকে কভ তফাৎ।

এখনকার বড়লোক কাহার সহিত মিশেন না, প্রায়ই একাকী থাকেন। সঙ্গে থাকিবার মধ্যে দ্রী ও পুত্র; যাহারা খুব্ "দাইন" করিয়া উঠিয়াছেন তাহারা ম্বী পুত্রেরও সঙ্গ ভাল বাদেন না। পার্ষের বাড়ীতে কে থাকে, কখনই খবর

ना ना । जारे, जिनीपिड, भूषा ब्लारी কে কোথায় থাকেন, তাহা জানেনও না। তাঁহার কেবল চিন্তা, যাহারা তাঁহা অপেকা বড়, কিসে সেই সকল লোকের সঙ্গে মিণিতে পারেন। নর লোকের প্রায়ই মুধ দেখেন না। যাহারা তাঁহা অপেকা কোন অংশে ছোট, তাহারা একেবারে অগ্রাহ্যের মধ্যে গণ্য। এই সকল বড়লোকের দিবানিশি অন্তরের আশা এই ষে, সাহেবলোকে কিসে বড় वल। এই ऋभ व ज्लाक यनि जामाञ्च-, क्रभ वाह्या ना भारेलन, ভाश हरेल তিনি ইংরাজরাজের এবং তৎকর্তৃক षञ्गृशै अपनिश्चित्रवर्णत श्रवि छे एक छे विषियं छावक खपरत्र मानन भानन कतिए नागित्नन। नाज এই इटेन (य, जाँशांत्र क्ट कार्यगिनक (अना छेननक ভাঁহার নিকট কাহার যাইবার হকুম নাই) ভাঁহার সহিত কথাবার্তা কহে, छ शत्रहे मत्न थे व्यकात विषय ভावत्रभ সংক্রামক রোগ চালনা করিয়া দের। নিজে তো অস্থী আছেন অন্যকেও অসুখী করিয়া দেন।

আর সেকালের বড়লোকই বা কি
রূপ ছিল? যেথানে এক জন বড়
লোক থাকিতেন, সে পরগণা তাঁহার
চরিত্রগুণে আলোকিত থাকিত। বাক্যে
হউক, কার্য্যে হউক, অর্থের ঘারা হউক,
আত্মীর বন্ধ-বাশ্বব প্রতিবেশীদিগের
উপকার সাধনেই তাঁহারা সকল সময়ে

वाख थाकिएनं। यादाता छेभकात ध-जाभी नरहम, **डाँ**हारित त्र विभए मन्भरित যাওয়া আসা কাষ কর্ম কেথাবার্ডায় माहाया क्रतिएव । हेशए मम्भएतत ममग्र जानम विश्व विश्व हरेख। विপদের ममग्न कहे आर्फिक मृत श्रेख। সেরপ বড়লোক প্রাতঃকালে উঠিয়াই বাহিরে আসিয়া উপস্থিত হইলেন, গ্রামস্থ ভদ্রলোকগণ একে একে ভথায় উপস্থিত कां टिप्क लाशिल। हेश तरे मर्था भौतूत জামাইয়ের চাকরী, ভর্করত্ন মহাশয়ের পুত্রের বিদ্যা শিক্ষা প্রভৃত্তি নানাবিধ প্রয়োজনীয় কথা হইয়া পেল। চাঁড়ালের ব্যাম হইয়াছে ভাহার শিও পুত্রতী কাঁদিয়া আসিয়া বাবুকে সমাচার मिन। उथन नकलाई जारा! इरत हैं।-फ़ाल, फिरा लाक छिन वित्रा नाना ध-कात्र ভाशांत अनकीर्खन कत्रिष्ठ मानिन। কিয়ৎক্ষণ পরে বাবু বলিলেন একবার দেখে व्यानित रम्र ना ?

তথন সমস্ত প্রামশ্ব লোক হরে চাঁড়ালের বাড়ীতে আসিরা উপস্থিত হইল। এবং বাহার মনে বাহা ভাল বিবেচনা হইল, সেই মত ঔষধ ব্যবস্থা করিতে লাগিল। কবিরাক্ত মহাশর সঙ্গেই ছিলেন, অমনি পুঁটলী খুলিরা ঔষধ দিলেন। ছঃখীলোক অনুপান ও পথ্য কোথার পাইবে, কর্ডার বাড়ী হইতেই ভাহার ব্যবস্থা হইল। হরে চাঁড়াল সারিরা উঠিল। বল দেখি, হরে

হরে চাঁড়ালের বাড়ী হইতে जानिएं जानिएं भद्रान मलन धदिन, বাবু! আমার ধাগানে একবার পদাপ ণ করিয়া যান। পরাণও নানা কারণে , বাবুর নিকটে বাধ্য আছে। বাবু এক-বার ভাছার বাগানে পদাপ ণ করিলে সে ক্লভ-ক্লভার্থ হইরা যাইবে। বাবু পরা-ণের বাগানে উপস্থিত হইয়া দেখিলেন, পরাণের বাগান, পুকুর, গাছ-পালা কেমন স্থার হইরাছে। বাবুর একবার মনে इहेल এই পরাণ এক সময়ে থাইতে পাইত না! মনে একটু খুসী হইয়া কহিলেন, "বাঃ পরাণ! তোর যে দিব্য वागान इरेब्राइ"। পরাণ তথন আহলাদে षांच्याना रहेत्रा भनाव काथफ निया कुडा-अमि इरेग्रा वावूरक कहिन, "बावू, म আপনারই প্রসাদ"। বাবু, "দূর বেটা" ব-লিয়া সেথান হইতে সত্তর-পদে বাটী ফিরিয়া আসিলেন। রাস্তার একটা গলির মোড়ে রামনাথ বন্ধর বিধবা দ্রী মাথা হেট করিয়া দাঁড়াইয়া আছে। সেও বাবুর অমুগ্রহাকাজিণী, ভাহার আর কেহ নাই; কষ্টে দিনপাভ করিয়া থাকে; কিন্তু থাকি-বার ষরটা সারায় ভাহার এমন সঙ্গতি नाहे। घत्री जिल्ला त्रिशाष्ट्र, जात्र यित्रायक ना रहेल भीखरे जाखबरीन श्रुष्टि श्रुष्टि । यातू खिनिलिन, मूख त्राम-नार्थत क्रमार्थित कः थ आस्क्रिश क्रिकाम कतिलान, ভाशत विश्वा श्रीक विन-• লেন, মা তুমি এক সময়ে আমার কাছে याहेश. जामि इंशत वस्नावस कतिया पिव।

वावू वाफी जानितन, डीश्रव जञ्चहत्रवर्ग क्रा क्रा अक अक विषाय इहेब्रा (शन। তথন বাবু স্নানাহারের জন্য বাড়ীর ভিতর গেলেন। সেখানে ভাই,ভাইপো,ভাগিনেয়, ভাইনি-জামাই, নাতি প্রভৃতির আহারা দির দেখা শুনা করিলেন। ভাহার পর অতিথি কেই আছে কি না জিজ্ঞাসা ক-রিয়া পাঠাইলেন। সকলের আহারাদির পর আপনি আহার করিলেন। বিশ্রামের পর অভ্যাগত অভিথিদিগের সহিত কিয়ৎকণ নানা দেশীয় কথাবার্তায় অতীত হইলে, আবার গ্রামের অনেকগুলি ভদলোক আসিয়া জুটিল। তথন গ্রামের কে কেমন আছে, কাহার কেমন অবস্থা, धरे नकन विषय अत्नक कथावाछ। श्रेन, তখন বাবু ষথাসাধ্য লোকের কট নিরা-রণের বন্দোবন্ত করিয়া দিলেন। সেকালের বাবুরা ছেলে দেখিলেই কোলে করিয়া লই-তেন, কড়ানিয়া শতকিয়া জিজ্ঞাসা করি-তেন এবং কাছাকেও 'ভুমি কি দিয়া ভাত থাইয়াছ," কাছাকেও বা "কে ভো-यात्र अधिक ভान दारम," ইভ্যাদি मिट्टी-লাপে খুসী করিয়া দিতেন। কাহাকেও বা मानाहे किनिया निव विनया थुनी कत्रि-তেন। সে দৌড়িয়া গিয়া তাহার মার কাছে গিয়া বলিত, মা! বাৰু আমায় দোলাই কি-निम्न हिर्देश विद्यार्थित । क्रिलेश महेश्र কেহ কোন নৃতন বিদ্যা, নৃতন শিক্ক, শি-थिल, कर धनी रहेल जाशांक छे०मार (मध्यां, ভाহাকে नहेश आत्मान व्यत्मान করা বাবুর নিভ্যকর্ষের মধ্যে।

रियम औक जांशशीय धकी कृत ফুটিলে তঁইার সৌরভে চারিদিক আমো-দিত হয়, সেইক্লপ কোন জায়গায় এক জন লোক উপকৃত ইইউ। আমাদের নৃতন সমাজে এখন আর সে রকম ফুল ফুটে না। সেরপ বড়লোক আর দেখিতে পাওয়া ষায় না। ইংরাজের সঙ্গে থাকিয়া, ইংরাজি-ভাষা শিথিয়া আমরা বড়ই আত্মন্তরী ও অসামাজিক হইয়া পড়িয়াছি। (Live for others), এইটা আমাদের প্রাচীন বাঙ্গালীরা যভ বুঝিত, এত বুঝি অন্ত কোন দেশের লোক বুবে না। এখনকার ইয়ং বেঙ্গলেরা (Live for others), করি- ' বার জন্য সভা সমাজ এদোসিয়েসন, জলসা, ক্লম, সোসাইটী, মিটিং ইত্যাদি করিয়া থাকেন। একটু ভাবিয়া দেখিতে গেলে এই শুলির তলায়ও (সাইন) করিবার ইচ্ছা ছাড়া আর কিছুই নাই। অনেকে এই উপায়ে পরছিত করিতে গিয়া গুরুতর আত্মহিত করিয়া বদেন। প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায়, যে সকল লোকে সভাদি স্থাপন করিতে যায়, তাহারা আপনাপন रेष्टे मिषि रहेल्हे मजात था रिकार रुरेया পড़েন। ममस्य ममस्य स्विष्ठ भारे, **लाक्क २०।२**६ वर्मत्र भव्रहिष्ठ কাটাইয়া অতি সামান্ত লাভের আকাক্ষার সে পথ পরিত্যাগ করেন। সভা বা

এসোদিরেদনের পরহিত ফাঁপা জিনিদ,
ভিতরে ভাহার দার নাই। থালি হাঁজীর
মত বাজাইলে খ্ব শব্দ হর্ম বটে; কিন্তু
ফার্ম্য তাহার্তে কিছু হয় না। কারণ
এখনকার যে দকল লোকে দভাল
করেন, তাঁহাদের জীবনের উদ্দেশ্যই
সাইন্ করা। স্থতরাং ভাহারা দভাগুলিকে
এমনি করিয়া ভৈয়ার করেন যে উহাতে
শব্দ অধিক হয়। পৃথিবীর লোক জানিতে
পারে যে অমুক অমুক খ্ব দাইন করিভেছে।

বাঙ্গালীরা ইংরাজ সহবাসে যত কিছু श्राहिया हिन, मञ्चाप्रहे छ। शामित मधा মহুশাতের অভাবে প্রধান, मात्रम्ना इहेशा छेठिए एह । गिन्छी अधिक চলিভেছে, যত সার কম, ততই অধিক **ठक्ठका इटेट्डि**। य नमां अथार्थ मञ्चाप विभिन्ने लाकित जानत नारे अवः গিল্টী লোকের আদর অধিক, সে সমা-জের অবস্থা বান্তবিকই অতি শোচনীয়। আমাদের এথানে সমাজের অবস্থা স্ত্রাং वज़्हे मन्म । किंह म मञ्चाष कि आत দেখিতে পাইব ? আবার কি বাঙ্গালীর मत्न मञ्चाच कत्रिवात्र वाश्रा खवल 🐷 **इरेट्न? ७ ছाর সাইন করার বাঞ্চ** जित्राहिज इहेर्द ? जत्रा ज मिथि ना, नभारकत्र अस्य वर्ष भक्त रहेरव कार्शत अ ख्रमा नारे।

त्रज्तरमा।

মাণিক্য i

जामता "तंत्र तहना" नामक नीर्च श्र-ভাব লিখিতে প্রবৃত্ত হইয়া প্রথমে মুক্তা রতের উপর লেখনী সঞ্চালন করি। তা-হার কারণ এই যে 'রত্ন' শব্দের বছ অর্থ থাকিলেও প্রস্তৈর-জাতীয় বিশেষ বিশেষ वञ्च एउटे 'त्रष्न' गम श्राकृष्टे मः याग विभिष्टे হওয়ায় এবং মুক্তাও প্রস্তর্কল শ্রেষ্ঠ পদার্থ বলিয়া শাদ্রকারের৷ মুক্তাকেও রত্ন মধ্যে গণনা করিয়া গিয়াছেন, স্মুক্তরাং আমরাও রত্ন-রহস্য প্রবন্ধে অগ্রে তাহারই खन मार्यानि वर्गना कतिशाहि। त्रष्न नाम-ধের প্রস্তির সকলের মধ্যে প্রধানতম রত্ন नश्री (२)। ভाश श्रेष्ठावात्रास्त्रत श्रेष्ठा वना इहेब्राष्ट्र। भूनतात्र भाठेकगएनत भारत बना উলেধ करा बाहे एक ए। यथा--

> "মুক্তা মাণিকা বৈদ্ধ্য গোমেদা বন্ধ বিক্রমো। পদ্মরাগং মরকতং নীলঞ্চেভি যথাক্রমাৎ।"

রত্বের মধ্যে এই নয়টা প্রধান; এত-ভিন্ন বছতর উপরত্ন আছে। আমাদের প্রতিজ্ঞা এই, যে, অঞ্চে প্রধানতম নয়টা রত্বের বিষয় বর্ণনা করিব। পশ্চাৎ অন্যান্য রত্বের কথা লিবিব। সেই প্রতিজ্ঞা ৪ উপরোক্ত কবিতার ক্রম অন্থ-সারে অগ্রে মুক্তারত্ব সম্বন্ধে যে কিছু বক্তব্য তৎসমুদায় বলা হইরাছে। এক্ষণে মাণিক্য নামক রত্নের বর্ণনায় প্রবৃত্ত হই-লাম।

"এক মাণিক সাত রাজার ধন" এই
নারী-প্রবাদ একবারে সত্য মনে করিবেন
না। পূর্বকালের অনেক রাজা (এক্ষণেও
বটে) কেবল শন্য ও পশু-সম্পত্তি লইয়াই
রাজাভিমান চরিভার্থ করিভেন। মণি
মাণিক্য যে তাঁহাদের নিকট হর্লভ ছিল,
ভাহা বলা বাহল্য; অধিকন্ত স্ম্বর্ণও
ভাঁহাদের নিকট হর্লভ বজ ছিল বলিয়া
অহমান হয়, স্মৃতরাং এক মাণিক্য সেরপ
সাত রাজার ধন হইবে, ভাহা আর
বিচিত্র কি?

১৮০২ পৃষ্টাব্দে কোন্ট বুরনন কবি, সেফায়ার, প্রভৃতি নাম দ্বারা মাণিক্যর শ্রেণী বন্ধ করেন। এক্ষণে মাণিক্য শ্যাম দেশ, ভারতবর্ষ, সিংহল, ব্রেজিল, বোরনিও, স্থমাত্রা, ফ্রান্স, প্রভৃতি স্থানে পাওয়া যায়; কিন্তু বন্ধ দেশের মাণিক্য সর্ব্বোৎ-কৃষ্ট। কথিত আছে বন্ধদেশের রাজার নিকট পারাবতের অত্তের ন্যায় এক থানি বৃহৎ মাণিক্য আছে। টাবরনিয়ার লিথি-য়াছেন, যে ভিনিদীলীশ্রর মোগল স্যাটের

निःशंगत्ना १५ ४७ दृश्य मानिका স্থশোভিত দেখিয়াছেন। তাহার প্রত্যেক খণ্ডের ১০০ হইতে ২০০ শত রম্ভিকা পর্যান্ত পরিমাণ হইবেক। মার্কপলো কহেন, ্ সিংহলেশ্বরের একথানি বৃহৎ মাণিক্য ছिन। कर्लारे थे। এই বছমূল্য প্রস্তর কুদ্র রাজ্য প্রদান করিতে চাহিয়াছিলেন; কিন্তু তাহাতেও তিনি এই প্রস্তর বিক্রয় করেন নাই। টাবরনিয়ার ভাঁহার ভ্রমণ বুভান্তে লিখিয়াছন যে, বিশাপুরের রাজার এकथानि উৎকृष्टे ৫० রত্তিক। পরিমাণের মাণিক্য ভূমগুলম্থ রাজ-ভাণ্ডারে হুর্লভ इरेश পि शाहि। नुरे ति शिनिशातित बाजमूक्टे करवक्थानि উত্তम मानिका দিগের মহারাজ্ঞী এম্প্রেশ মহোদয়ার जुरे थानि मानिका याका श्रामिं दहेशा-ছিল, তাহা প্রশংসার যোগ্য। রুশিয়ার यानिका चाहि। উश श्रहेएएति नृशि ভূতীয় গষ্টেভদ্ উপঢৌকন প্রদান করিয়া-ছিলেন। ইহাভিন্ন অধীয়ার রাজমুকুটে कर्यकथानि वह मृना मानिका चाहि।

প্রাচীন ইতিবৃত্ত লেখকেরা বছমূল্য यानिकात विषय मिथिवक कत्रियाष्ट्रम । থিওফেুসট্স্ এবং প্লিনি প্রজ্ঞানিত দীপ-শিখার ন্যায় দীধিভি-বিকাশক মাণিক্যের উল্লেখ করিরা গিয়াছেন। ৫০০ খৃষ্টাব্দের পূर्क्क बीकगुन दुरू मानिकात छेभन र সকল স্থাদৃশ্য প্রতিকৃতি খোদিভ করিতেন, তাহা কএকখান এপৰ্য্যন্ত বৰ্তমান আছে। মাণিক্য এক প্রকার প্রস্তর। রছ-শাল্পে ভাহার এভগুলি নাম আছে। যথা— ''মাণিক্য" ১, "শোণরত্ন" ২, "রত্নরাজ্ঞ ৩, "রবিরত্র' ৪, "শৃজারী" ৫, "রজ্ মাণিক্য" ৬, "তক্রণ" ৭, "রাগ্যুক্" ৮, "পদারাগ" ৯, "রত্ন' ১০, "শোণোপল" ১১, "সৌগদ্ধিক" ১২, "লোহিতক" ১৩,

"क्किविक" ১৪।

त्रप्रभारताक अहे मकल नार्यत मर्था विलाय >> व्यर्थाय लालायन नामगिष्ड উহার বর্ণ ও সরূপ স্পষ্টতঃ উল্লেখ আছে। শোণোপল অর্থাৎ রক্তবর্ণ প্রস্তর। "রক্ত वर्ग প্রস্তরই মাণিক" এই কথা বলিলাম ছिল। ১৮৬२ थृष्टी स्मित व्यक्ति व्यक्ति वामा- विनिया त्य ता ता का भाषत्र मानिक नत्र। त्रप्रभाखि हेशत विष्य विषय विकार পরীক্ষাদি বর্ণিত আছে। সেই লক্ষণাদি-युक्त व्यख्त विर्णयहे मानिका। त्रष्ट्रणाख মাণিক্য নামক রত্নের যেরূপ লক্ষণাদি वर्गन मृष्टे रुय़, जमस्मादि वाध रुय़, जाधू-निक "পাन्ना" नामक প্রস্তর বিশেষকেই পূर्ककालित नःकृ छ (वछात्रा "मानिका" -> नाम् अভिश्वि कतिएव। छाहा इहेल भाना ७ मानिक धकरे भागर्थ; जद মাণিক্য নামটা সংস্কৃত নাম, এবং পারা नायणी भावितक नाय, देशहे ऋतिकाछ।

পুরাণাদি শাজে রজোৎপত্তির বিষয় বেরূপ নিধিত আছে তাহার অভত্তর व्यागालक (वांश्यम) इस ना। वन नात्य

এক অন্থর, তাহার বিশুদ্ধ স্থাক্রাম্ভ অব- হয়। যাহা হউক, দ্বিতীয় ও তৃতীয় মতটী য়ব সকল রত্নোৎপত্তির কারণ, ইত্যাদি ইত্যাদি অনেক প্রকার প্রলাপকল গল আছে। এই প্রলাপকল গলের ঘারা আমরা রত্নোৎপত্তির মূলভাব গ্রহণ করিতে অসমর্থ,ভবে রত্নশাস্ত্রে যে হুই একটা কথার উল্লেখ দृष्टे रुय़, जमञ्जादा व्यक्ति गामान्। কারে রত্নোৎপত্তির বীজ ও ভাব গ্রহণ করিতে পারা যায়। রত্নশান্তে তিন প্রকারমতের আভাস পাওয়া যায়। যথা—

"মহোদধৌ সরিতি বা পর্মতে কাননেহপিব।। তম্বদাকারতাং যাতং স্থানভূমাধেয় গৌরবাৎ।"

[যুক্তিকল্পডকঃ।

"কেচিম্বদম্ভিভুবঃ স্বভাবাৎ বৈকৃতাচ্চানাানোষাঞ্ভূতানাম্। প্রাত্বতি রত্নানি---"

[জ্যোতিষম্।

ममुख्रिहे हछेक, नमीए इहे इछेक, পर्का एइ रुषेक, किश्वा अत्रात्य (अत्राप्त मर्शामि জন্ততে) হউক, স্থান অর্থাৎ ভত্তৎ স্থানীয় বস্তু বিশেষ আধেয় অর্থাৎ আগন্থক কিংবা , आकाभिक (जनामि) वस्त भक्तिए तिहे সেই রত্নের আকার প্রাপ্ত হয়।

क्टर वलन, शृथिवीत श्राचाव वलाहे রত্ন সকল প্রাত্ত্ত হয়; অপরে বলেন, ভূত সকল অর্থাৎ ক্ষিতি, জল, বায়ু ও তেজ, এই সকল পরস্পার পরস্পার কর্তৃক • अश्विक रहेन्रा १ थक १ थक विकान जाव व्याथ रत्र, ভाराएक्ट तक नकन उर्भन ष्याः भिक जान वर्षे ।

যে কোন রত্ন হউক, অগ্রে আকার, তৎপরে বর্ণ, তৎপরে গুণ ও দোষ, পরে ফলাফল, পশ্চাৎ জাতি বিজাতি পরীকা, মূল্যাবধারণ করিতে হয়, যথা—

"आकातवर्दा व्यथमः खनमारवो তৎফলং পরীক্ষাচ। मृनाक तक क्राटनिविष्डियः नर्क गाजानाम्।"

[গরুড় পুরাণ।

অতএব, আমরা মাণিক্য সম্বন্ধেও উক্ত নিয়মের বশবর্তী হইয়া অগ্রে আকার, পরে বর্ণ ও গুণ দোষাদির কথা বলিব।

আকার।

এম্বলে আকার ও লক্ষণ একই কথা। অতএব রাজনির্ধন্ট গ্রন্থে লক্ষণ শব্দের উল্লেখে যে সকল আকারগত চিচ্ছের কথা বৰ্ণিত হইয়াছে, তাহাই এন্থলে नर्कार्थ উদ্ব इहेन। स्था-

> "সিশ্বং শুকু গাত্রযুতং দীপ্তং श्रक्तः ममाक्रथः सूत्रक्रमशः। हेि बाज गाविकाः কল্যাণং ধারণাৎ কুরুতে।"

নিশ্ব—অর্থাৎ স্নেহ-গুণযুক্ত (টলটলে) छक्र-गाज्यूष—वर्षा पृत्गा ७ ७ करन ভারি (অন্যান্য সাধারণ কাঁচা পাথর অপেका देश ममिथक ভाরি)। मीश---मीश्चिमान। त्रक्क-त्र्यमत्र निर्माण। नमान -- गठेन नमान। ज्याकप-ज्यात तांश

অর্থাৎ রঞ্জনকারী (এই শক্তির বিরয় পরে वाक श्रेत्।

"विक्रभः त्रांश विभवः विकुछ वा मिलन, ज्याकात ७ ७ जान लघू, বুদ্দিমান ব্যক্তি এরপ মাণিক্য ধারণ করি-বেন না। व्यर्थाৎ এরূপ মাণিক্য উৎকৃষ্ট नरह।

> "यानिकाः क्य चर्रावश्यानिकनः রাগেন জাত্যং জ্ঞঃ "

> > तिष्किमिषं गैः।

কব, অর্থাৎ কষ্টিপাথর। কষ্টিপাথরে ষর্বণ করিলে যে মাণিক্য ক্ষয় প্রাপ্ত হয় ना धवः घृष्टे शानित त्रांश वर्गा त्रिक्या নষ্ট হয় না, ভাহাই জাত্য মাণিক, ইহা রত্বত পতিতেরা বলিয়াছেন।

জাত্য মাণিক্য কি ? তাহা পরে বর্ণন कता याहेरवक। अक्सर्ग छूटे ठातिनी खन मारवत कथा वना यां के।

বস্তু মাতেরই হুই শ্রেণীর গুণ আছে। এক রাসায়নিক শুণ, দ্বিতীয় শোভাগত खन। त्रामाय्यनिक खन मकल देवगुणारम পরিগৃহীত হইয়াছে, সে সকল সংগ্রহ করা ध श्रष्टार्य ष्रश्राधन। त्रप्रशास रा শোভাগত গুণের উল্লেখ আছে ভাছাই সংগ্রহ করা যাউক।

> खन । "গুরুত্বং স্লিশ্বতাটেব বৈমল্য মতি রক্ততা।"

গুরুষ অর্থাৎ ওক্সনে ভারি : সিমতা অর্থাৎ স্নেহাক্তের ভাব। বৈমূল্য অর্থাৎ নির্ম্মলের ভাব। অতিরক্ততা অর্থাৎ नचू मार्गिकाः नधात्र स्वीमान्।" जनाधात्र त्रकः वर्तत्र ভातः। এই त्रकः যাহার রূপ বিকৃত, রাগ অর্থাৎ রক্ততা বর্ণের ভাবটী ছায়া-নির্ণয় ব্যতীত বোধ-गमा श्रेष्ठ भारत ना। भगतांग वा मानिका मनित्र ছात्रा कि ? ভाष्टा পশ्চাৎ निर्किष्टे श्रेट्र । कन, উপরোক্ত গুণ थाकिलाई ভाश উৎকृष्टे मानिका इहेरव।

> এই শুণ কয়েকটী মতান্তরে অভি न्लाष्टे क्राप्त उक्त हरेब्रास्त्र । यथा—

> > "বর্ণাধিকং শুরুত্বঞ্চ নিশ্বতাচ তথাচ্চতা। অর্চিমন্তা মহন্তাচ मनीनाः ७० मः वरः।"

> > > কল্পজ্মধৃত বচন।

বর্ণের আধিক্য অর্থাৎ সর্বাপেক্ষা উৎ কুষ্ট বর্ণযুক্ততা। গুরুত-ভারগত আ-ধিক্য। স্লিগ্ধতা—স্লেহ অক্তিরে ন্যার मुणा अर्थाए लावगायुक । अक्टा-নৈৰ্ম্মল্য। অৰ্চিমন্তা—তেজ বা দীপ্তি-<u> यद्या । यद्या वृह्द् ज्व ज्वा । (ज्वी ९</u> य यनि यज वफ़ म जजहे छे ९ कृष्टे। अहे बना गरेखा अकी व्यथान खन)। हेराहे यनि नकलित छान्त मःबर। अर्थाए এই नकन ७१ मनिमार्जित्रहे थाका चार्यमुक। এতভিন্ন বিশেষ গুণ সকল প্রসঙ্গ क्राय वाक श्रेतिक।

मच्छि श्र्यांक बाठा मानिका भरवत व्यर्थ निर्काठन कत्रा शहरण्ड ।

[যুক্তি করতক। মণিমাতেরই জাতি আছে। তাহা

গুণ অনুসারেই অবধারিত হয়। কি কি গুণে জাতি ও কি কি গুণ অভাবে বিজাতি, ভাহার কিঞ্জিঞ্জংশ এন্থলে উদ্ভ করা যাইতেছে।

> "মাণিক্যং কষ ঘর্ষণেহপার বিফলং রাগেণ জাত্যংজগুঃ।" রাজ নির্মণীঃ।

ইহার অর্থ পূর্বের বলা হইয়াছে। যুক্তি-কল্পতক বলেন,—

> "অপ্রনশ্যতি সন্দেহে শिनाशाः পরিঘর্ষয়েৎ। মুধ্য যোহত্যপ্ত শোভাবান্ পরিমাণং নমুঞ্চতি। স জেয়: ওন্ধ জাতিস্ত জেরাশ্চান্যে বিজাতয়:। সঞ্জাতকং সন্মুখেন বিলিখেৎ বা পরস্পরম্ वक्षः वा क्कविनाःवा विष्ठारिमानारकन ८६९। न भकाः लिथनः कर्खुः भन्नतारभक्त **नीमरहाः**।" "सः भगायिकाः পুষাতি পদ্মাগে। यावा क्यानानिव हुर्ग मधाः। त्त्रर धिनिरक्षा न ह त्या विखाछि (यांवा ध्रम्बाः धांचांचां नी सिम्। षाकास मुका ह उथान्तिजाः यः कानिकाः भाष्णजाः विजर्कि।"

हेलानि हेलानि। बाला मनि कि विकाल मनि मन्द्रक • नाम ना हरेला कर-मिलान पर्दन कति-(वक। पर्दन कतिला रुपि मालान जा-

ধিকা জন্মে এবং পরিমাণ নই মা হয়, তাহা হইলে ভাহা বিশুদ্ধ জাড়ি; তম্ভিন্ন এই এক প্রকার পরীকা। বিজাতি। দিতীয় প্রকার পরীক্ষা এই যে, হীরক হউক, বা মাণিক্য হউক, সম্বাতীয় হুইটা यि मूर्थायूथि कत्रिशा चर्षभ कतिरवक, স্থাবা একের দারা অন্যকে বিলেখিত অর্থাৎ আঞ্চোড়ন করিবেক। জাত্য হইলে কেহ কাহারও গাতে বিলেখন করিভে সমর্থ হইবেক না। তৃতীয় প্রকার পরীকা **এই यে, यে পদ্মরাগ মণি শ্যামিকার পুষ্টি** স্নেহাক্ত দেখার না, মার্জন করিলে ধাহার · भौश्रि न्रान हत्र, **जजू**लिषय षात्रा याहात মন্তক অর্থাৎ উদ্বভাগ ধারণ করিলে याशांत भार्ष कानिका अर्थाए कान इवि প্রকাশ পায়, তাহা জাত্য মণি নহে, তাহা নিশ্চিত বিজ্ঞাৰ্ভ। জাভ্য মণিতে ঐ मकल घटना इय ना। मनकन्नक्रमधुङ যুক্তিকলভক গ্রন্থের জন্য এক প্রমাণে চতুর্থ প্রকার পরীকার কথাও আছে। ·যথা---

> "তুল্য প্রমানস্যতু তুল্যজাতে র্যোবা গুরুদ্বেন ভাবরতুল্যঃ।"

এক জাতীয় হুইটী মণি ধদি জাকার প্রমাণে জর্মাৎ দেখিতে তুল্য হয়, জার বদি তাহা শুরুত্বে তুল্য না হয়, তাহা হুইলে বেটা লয়; সেটা বিজ্ঞাত। এতহারা এই সিদ্ধান্ত ইত্তেছে বে, তুল্যাকার জন্য মণির সলে গুলুন করিয়া দেখাত এক

পূर्क वला श्रेशां ए ए, गानिका तप्र त्रक्किवि-विभिष्ठे। यानिका याद्य त्रक वर्ग वर्छ, किन्छ जन्माक्षा किकिए श्राप्त আছে। রক্তবর্ণতারও প্রভেদ আছে। त्मरे व्यरंजन अञ्चनारत नाम-रजन ख मृत्गात जातजगा हरेया था का जिलात যে জাতি গুণের উল্লেখ করা হইয়াছে, ঐ मकल कां जि ७० यमि विजिन्न वर्णत मानि-कां नमक्षमा नां करत, डांश हरेलरे **डा**हारक मानिक रना शहरक, नरह ভাহা অন্য এক প্রকার প্রস্তর মাতা।

কোন কোন মতে এই রত্ন রক্তবর্ণ ব্যতীত অন্য বৰ্ণপ্ত হুইয়া থাকে। সেই বর্ণ অনুসারে মাণিক্য চারি প্রকার জাতি चित्रा भग इरा। यथा--

''তদ্রক্তং যদি পদারাগ মথতৎ পীতাভি রক্তং দিধা। खानीयां क्क विनकः यनक्राः-म्राप्तिषु मिशकिय्। **उन्नीतः** यपि नीत शक्तिक-मिजि ভেরং চতুধা বুধৈ:।"

দেওয়া যায়। আর যদি তাহা পীতাভ কি অতি রক্ত হয়, ভবে তাহা হুই প্রকার স্থির করিবে। যাহা অতি রক্ত, ভাহা "কুক্ষবিন্দক" এবং যাহা পীতাভ, ভাহা "সৌগন্ধিক"। যদি তাহা নীলাভ হয়, তবে তাহা "নীলগদিক" বলিয়া জানিতে श्रुटिक ।

(मांस।

রত্ববিৎ পণ্ডিভেরা মাণিক্য, রত্নের বে नकल (मार्यनिष्ठ वर्गन कर्त्रिश गिशा एन, ক্রমে তাহাও উদ্ধৃত করা যাইতেছে।

" মাণিক্যস্য সমাখ্যাতা ष्यक्षे (माया मनीश्रदतः। **দিচ্ছায়ঞ্চ দিক্রপঞ্চ সভেদঃ** कर्वतांख्या। গুণাশ্চবার আখ্যাতাশ্চারা: ষোড়শ কীৰ্দ্ভিভাঃ।"

तक भरीकक मूनिशन न्यानिकातरकत আটটা দোষ (মহৎ দোষ) স্থির করিয়া গিয়াছেন। তুইটা ছায়াগত দোষ, তুইটা রূপগত দোষ, সম্ভেদ দোষ এবং কর্কর দোষ। এইরূপ চারিটী গুণ ও ১৬ বোল প্রকার ছায়ার কথাও বলিয়াছেন। ছায়া কি ? এবং ভাহা ১৬ বোল প্রকারই বা কেন ? ইহা পশ্চাৎ ব্যক্ত হইবেক। " विष्ठात्र" " विक्रण" " मरख्य " अ " কর্কর ''—এই দোবচতুইর 'বিবৃত্ত করা যাউক।

[রাজ নির্ঘণীঃ। "ছায়া দ্বিভয় সম্কাৎদিচ্ছায়ং বন্ধুনাশনম্।" व्यर्थ এই, य, मिट्टे यानिका यनि तकः "विक्रभः विभनः एक्यानिकान भवाज्यः।" বর্ণ হয় তবে তাহার "পদ্মরাগ" নাম "সম্ভেদে। ভিন্ন মিত্যুক্তংশস্ত্রদাভ বিধায়কম্।" "कर्वत्राः कर्वत्रा यूकः পশুवन विवासकृ ।" [যুক্তি কল্পডক।

> যে মাণিক্যে হুই প্রকার ছারার সং-যোগ থাকে, ভাহা দিচ্ছায় দোবগ্রন্থ। विक्हांत्र मानिक धात्रन कत्रित्न यक्तु विनाम रत्र। याहात्र উভत्रपिक्क भर्ग जाहा चित्रभ मायबुक्त। (भग कि ? डाहा यडब हात्न

ধারণে পরাভব হয়। ভিন্ন অর্থাৎ ভাঙ্গা মাণিক্য ধারণ করিলে নানা প্রকার তঃখ रहेल मार्कि वल। मार्कि मार्कि ধারণে অস্ত্রাঘাতে মৃত্যু হয়। কর্করা • অর্থাৎ কাঁকর সংযোগ থাকিলে ডাহা

वाक इहेरवक) अहे चित्रभ मानिका कर्कत मार्वि छुटै वना यात्र। अहे कर्कत्र घটना इस ।

> ক্রমশঃ **बी**तांगमां रान ॥

भानाद्यो।

छ्डीय़ जरम ।

পুর্বে একবার ''লাভেহার'' নামক পাহাড়ের উল্লেখ করিয়াছিলাম। সেই পাহাড়ের কথা আবার লিখিতে বঁসিয়াছি वित्रा आभात आक्लाम श्रेटिहा। भूता-তন কথা বলিতে বড় সুখ, আবার বিশেষ স্থ এই ষে আমি শ্রোভা পাই-রাছি। তিন চারিটি নিরীহ ভদ্রলোক, বোধ হয় ভাঁছাদের বয়স হইয়া আসি-তেছে, পুরাতন কথা বলিতে শীল্প আরম্ভ कतिरवन अमन উरमन त्रार्थन, वक्रमर्गन আমার লিখিত পালামৌ-পর্যাটন পড়ি-য়াছেন, আবার ভাল বলিয়াছেন। প্রশংসা অভিরিক্ত, তুমি প্রশংসা কর আর না কর, বৃদ্ধ বসিয়া ভোমায় পুরাতন কথা ভনাবে, ভূমি ভন বা না ভন সে ভোমায় ভনাবে, পুরাতন কথা এই রূপে খেকে यात्र, नमारकत्र ने कि वार्ष । जामात्र शरह कशित्र भूषि वाष्ट्रिय ना, रकन ना

षामात निष्मत भूषि नाह। एथानि গল্প করি, ভোমরা শুনিয়া আমায় চির-বাধিত কর।

নিত্য অপরাহে আমি লাভে্হার পাহাড়ের ক্রোড়ে গিয়া বদিতাম, তাবুতে শত কাৰ্য্য থাকিলেও আমি তাহা ফেলিয়া যাইতাম। চারিটা বাজিলে আমি অস্থির হইতাম; কেন তাহা কথন ভাবিতাম না; পাহাড়ে কিছুই নূতন নাই; কাহার সহিত সাক্ষাৎ হইবে না, কোন গল হইবে না, তথাপি কেন আমায় रिर्शास यारे एक रहेक कानि ना। ज्यन দেখি এ বেগ ভামার একার নছে। যে সময় উঠানে ছায়া পড়ে, নিত্য সে সময় क्लवधूत मनं, माजिया छेट्ठ, जल जानिए यारेद्य ; जन जाह्य वनित्न छाराता बन किनिया बन बानिए गरेद ; बन যে যাইতে পাইল না সে অভাগিনী, সে গৃহে বিসিয়া দেখে। উঠানে ছায়া পড়ি-

তেছে, আকাশে ছায়া পড়িতেছে, পৃথিবীর রং ফিরিভেছে, বাহির হইয়া সে ভাহা দেখিতে পাইল না, ভাহার কত ছঃধ। বোধ হয় আমিও পৃথিবীর রং ফেরা **(मिश्रिक शिरेणाम। किन्छ आ**त्र, এकरू चार्ट, त्मरे मिर्कन शांत मनरक একা পাইভাম, বালকের ন্যায় মনের সহিত ক্রীড়া করিতাম।

এই পাহাড়ের ক্রোড় অভি নির্জন, কোথায়ও ছোট জঙ্গল নাই, সর্বতি ফাস। অতি পরিষার, তাহাও বাতাস আসিয়া নিতা ঝাড়িয়া দেয়। মৌয়া গাছ তথায় বিস্তর। কডকগুলি একত্তে গলাগালি করে वान करत, जात्र कडक छनि विश्वात नाप्ति এখানে সেখানে একাকী থাকে। ভাহা-রই মধ্যে একটীকে আমি বড় ভাল বাসি-ভাষ, ভাহার নাম "কুমারী" রাথিয়া-ছিলাম। कथन ভাহার ফল कि ফুল হয় দেখিয়া আমি হাসিভেছিলাম এমভ नारे; किन्छ তাহার ছায়া বড় শীতল সময়ে আমার পশ্চাতে উচ্চারিত ছইল. हिन। आभि त्रहे हात्रात्र वित्रा "इनित्रा" मिश्लाम। এই উচ্চ স্থানে বিদিলে পাঁচ সাত ক্রোশ পর্যান্ত দেখা যাইত। দূরে আমি পশ্চাৎ ফিরিলাম, দেখিলাম চারিদিকে পাহাড়ের পরিধা, ষেন দেই কেহই নাই, চারিদিক চাহিলাম কোথারও থানে পৃথিবীর শেষ হইয়া গিয়াছে। কেহ নাই। আমি আন্তর্যা হইয়া ভাবি-সেই পরিধার নিয়ে গাঢ় ছায়া, অল অভকার ভেছি এমত সমর আবার আর এক विनित्व वना यात्र। তাহার পর जनन। जनन नामिया काम न्नाडे इहेताएड। जन लित्र मध्य पूरे अकी बाम रहे जि शीरत बीदा वृम छेडिएएए, कांन बांग रहेए लेरे मिटक कछक मछदा, कछक कोजूरम स्त्रज विरक्ष जांदव योगन वाजिएज्ड, शत्रवर्ण श्रनाम्। त्र मिदक भिन्नो जांत्र णारांत्र भरत जामात्र छात्, रमन अकि एक किह्न अभिएक भारेगाय ना किन्न

क (भाषी जन त्वार मर्था क्रकाकी वनित्र कि ভाविष्टए । जामि जनामनएक এই সকল দেখিতাম, আর ভাবিতাম এই আমার "হ্নিয়া।"

একদিন এই স্থানে স্থাপ বসিয়া চারি-" मिक मिथिएडि, श्रीप अकि मेडात श्रिड मृष्टि পড़िन ; ভাহার একটি ডালে অনেক मित्नत लेन ठाति लाँ छी कूल कृषित्राहिल। লতা আহ্লাদে তাহা আর গোপন করিতে · भारत नारे, रान काराद प्रथारेवात जना **छानि।** वां छाडेश मिशाहिन । धक्षी काता কোলো বড় গোচের ভ্রমর তাহার চারি-দিকে বুরিয়া বেড়াইভেছিল; আর এক একবার সেই লভায় বসিভেছিল। লভা তাহাকে নারাজ, ভ্রমর বসিলেই অভির रहेश माथा नाष्ट्रिश উঠে।

"त्राध्य मञ्चाः পরিহর হরিः

পাদ মূলে ভরারং।"

मिटक भिष्ठ रहेग.

"ब्रांट्य यकार हेजानि।"

আমার শরীর রোমাঞ্ হইল, আমি

পরেই "কুমারীর" ডাল হইতে সেই স্লোক আবার উচ্চারিত হইল, কিন্ত তথ্ন লোকের ক্ষিত্তি আর পূর্বে মত বোধ হইন্দ ना, (कर्म पुत्र भार क्ल पना भिन, "'क्याबीब" सूटन जानिया (मथि, द्रियान খুখুর ন্যায় একটা পক্ষী আর একটার निकरे याथा नाषित्रा अहे क्ट्रिंस आकानन করিতে করিতে অঞ্জনর হইডেছে, পক্ষিণী ভাহাকে ভানা মারিয়া দরিয়া যাইতেছে, কথন কথন অন্য ডালে গিয়া বসিতেছে। এবার আমার ভান্তি দূর হইল, আমি यमाकाडीक्ट्मत्र এकियाव साक जानि-তाय; क्रमणी खेळात्रप मात्वरे आकि ष्यायात्र यत्न ष्यानियाहिन, नत्त्र नत्त्र ভাহাই শুনিয়াছিলাম "রাধে মহাং।" কিন্ত शकी वर्ष छक्तांत्रण करत नाहे कियम छन्म উচ্চারণ করিয়াছিল। তাহা যাহাই হউক व्यामि व्याक इहेम्रा शकीत मूर्थ मःक्रुड क्ल छिन्छ नाशिनाय। क्षथ्य यदन रहेल विनि "छक्रव पृष्ठ" लिथिया ছেন, ভিনি হয়ত এই আভি পন্দীর নিকট চ্ছন্দ পাইয়াছিলেন ? মোকটির সঙ্গে এই "কুঞ্জ-कीताञ्चारमत्र' यस भूमक्ति क्रेबारक्। লোকটা এই—

तार्थ मञ्दार পतिकत रुद्धिः भाषम् छ्वातः। खाङः देवता प्रभाष् भिषः वात्र स्थानः भाषाः। ध्वात्र विश्वति स्वत्र स्थानीतास्यापः। स्वित्र क्षेत्रस्त्र स्वतिक्षः विश्वतिः विश्वतिका

উদ্বৰ মধুরা হইতে বুন্ধাৰনে আলিয়া বাধার হুলে উপস্থিত হুইলে গোলীয়াণ

व्याणनारमत्र ष्ट्रारथत्र कथा छारात्र निकरे বলিতেছেন, এমত সময়ে কুজের একটা পক্ষী বুক্ষশাখা হইতে বলিয়া উঠিল, "রাধে আর রাগ করিও না। চেয়ে দেখ, স্বয়ং হরি তোমার পদতলে। দৈবাৎ যাহা হইয়া গিয়াছে একবার ভাহা ক্যা কর।" গোপীরা এতবার এই কথা রাধিকাকে বলিয়াছে যে কুঞ্চ পক্ষীরা ভাহা শিখিয়া-ছिল। याद्या निथियाছिल अर्थ ना तुर्विया **শৰ্কদাই** পক্ষীরা বলিত। ভাহা গোপীরা উদ্ধবকে বলিলেন, "ভন্লে— कू एक्षत के शाबि कि विनन-एन्टन? একে विशाज जामापित वश्मा करति हम, আবার দেখ পোড়া পকীও কত দগাচেছ।"

পক্ষী আবার বলিল "রাধে মুন্যং পরিহর হরিপাদমূলে তবারং" তাহাই বলিতেছিলাম বিহসচ্চন্দে বিহঙ্গের উক্তি বড় স্থন্দর হইরাছিল।

ছাল কি গীত শিখাইলে অনেক পক্ষী ভাহা শিথিতে পারে; কিন্ত চ্ছল বে কোন পক্ষীর সরে অভাবিক আছে ভাহা আমি জানিতাম না, স্মতরাং বন্য পক্ষীর মুখে চ্ছল শুনিরা বড় চমৎকৃত হইয়াছিলাম। পক্ষীটীর সঙ্গে কভই বেড়াইলাম, কভবার এই চ্ছল শুনিলাম, শেব সন্ধ্যা হইলে ভারুতে ফিরিয়া আসিলাম। পথে আসিতে আসিতে মনে হইল বলি এখানে কেহ ডারউইন সাহেবের ছাজ থাকিতেন ভিনি ভাবিতেন নিক্ষরই এ পক্ষীটী রাধাক্তির শিক্ষিত পক্ষীর বংশ, বৈজিক কারণে পূর্ব্ব পিক্ষের জভ্যন্ত প্লোক ইহার কণ্ঠে

जाशिन जाशितारः। 'दिक्य दारत छेडिंड ध दश्मक जाशिन जाशिन कृष्ट्र हान एन। ताथाकृष्ट्र त्र नक्त शिवारः, त्र क्त कृताहे-वारः, क्वन धहे दश्म जारः। जामात्र हेक्छ। जारः धकरी हितवान शानन कित, किना वर्ता।

আর একদিনের কথা বলি; তাহা হইলেই লাভেহার পাহাড়ের কথা আমার
শেষ হয়। ষে রূপ নিত্য অপরাহে এইপাহাড়ে যাইতাম সেই রূপ আর একদিন
যাইতেছিলাম, পথে দেখি একটি যুবা
বীরদর্পে পাহাড়ের দিকে যাইতেছে,
পশ্চাতে কতকগুলি দ্বীলোক তাহাকে
সাধিতে সাধিতে সঙ্গে যাইতেছে। আমি
ভাবিলাম যখন দ্বীলোক সাধিতেছে তখন
যুবার রাগ নিশ্চর ভাতের উপর হইরাছে;
আমি বাঙ্গালী, স্মৃতরাং এ ভিন্ন আর কি
অমুভব করিব ৷ এককালে এরপ রাগ
নিজেও কতবার করিয়াছি, তাহাই জন্যের
বীরদ্বপ্ বুবিতে পারি।

वधन स्थामि निक्छवर्छी इहेनाम एसन स्थीत्नात्कता नित्रस्त इहेता अक शार्त ग्रेष्ण-हेन । व्रखास सिस्टाना कतात्र व्या मार्ग्ण विनन "स्थामि वास मातिष्ठ वाहे-एक , अहे माज स्थामत अकृत्क वास मातिन्नाहः; स्थामि जासन मसान ; त्म वास ना मातिना कान मूर्थ स्थान स्थान कतिव ?" स्थामि किस्थि स्थिति हहेना विनाम "हन, स्थामि क्यामत मत्स बाहे-एक है।" स्थामत स्पृष्टत्यात्व वशत्न वस्त्क,

পায়ে বুট, পরিধানে কোট প্যাণ্ট্রলন, বাস তাঁবুতে, স্তরাং একথা না বলিলে ভाग (मथात्रना, वित्नयङ जात्रात्र गारहर रिनेशा जारन जाङ्ब गारहिर्व धर्ति । विषय निः निः निः कि । विषय । विषय । আমি স্বভাবতঃ বড় ভীত, ভাহা বলিয়া ব্যাদ্র ভল্লক সম্বন্ধে আমার কখন ভয় रुत्र नारे। दुष निकातीता कछ पिन পাহাড়ে একাকী ষাইতে আমার নিশেধ করিয়াছে, কিন্তু আমি তাহা কথনও গ্রাহ্য করি নাই, নিভ্য একাকী মাইভাম; বাঘ षानित्व, षामात्र धतित्व, षामात्र' धाहेत्व, এ সকল কথা কখনও আমার মনে আসিত না। কেন আসিত না তাহা আমি এখনও वृतिए७ भाति ना। मिनिक भूक्षपत्र মধ্যে অনেকে আপনার ছারা দেখিয়া ভর পার, অথচ অমান বদনে রণ-ক্ষেত্রে গিয়া त्र करतं। श्विन कि छत्रवात छाहात जरम अविष्टे श्रेट्य अकथा छाशामत यत्न चाहरम ना। यज मिन छाहारमञ মনে একথা না আইসে, ভতদিন লোকের निक्छे ভारात्रा नार्नी; य विभन ना वृत्व, (नहे नाश्निक। जानिम जवशात्र नकल পুরুষই সাহসী ছিল, ভাছাদের তথন ফলা-क्न ब्यान रम्न नाहे। बन्नीरमम मर्था जागाणि (तथा यात्र नकलाई नाश्नी, ইউরোপীর সভ্যদের অপেকাও অনেক ष्यः (न गार्गी ; त्र्षु कनाकन ताथ नारे। षामि छाहारे षामान नार्रात वित्व भोत्रव कति ना । गजाजात गरम गरम गार्मित्र जांत्र क्रिक्श जारेम ; भागत

কোড যত ভাল হয় সাহস তত অন্তর্হিত হয়। এখন এ সকল কচকচি যাক।

व्यात गरक के छक मृत शाल ता जा-यात्र विनिन, "वाचि जामि जशस्य मात्रिव।" আনি হাসিয়া সমত হইলাম। যুবা আর कांग कथा ना विनित्रा ठिनिन । उथन रहेए निष्डत श्रेडि षामात्र किकिए जानवानात मकात हरेन। "यह एस मात्रिव" अरे कथाय বুঝাইয়াছিল, যে পরহন্তে বাঘ মরা সভব; वामि नाष्ट्यदन्धाती, व्यवना वाच मा-রিলে মারিতে পারি, যুবা এ কথা নিশ্চর ভাবিয়াছিল, ভাহাতেই আমি কুতার্থ হইয়াছিলাম। ভাছার পর কভকদূর গিরা উভরে পাহাড়ে উঠিতে লাগিলাম। যুবা অগ্রে, আমি পশ্চাতে। যুবার স্কন্ধে টাঙ্গী, त्म अक्वांत्र जाश ऋष श्रेष्ठ नामाहेत्रा তীক্ষতা পরীকা করিয়া দেখিল, তাহার পর কভক দূর গিয়া মৃত্তবে আমাকে বলিণ আপনি জুতা খুলুন, শব্দ হইতেছে। আমি कुछ। भूमित्रा थामि भात्र छमिएछ मात्रिमाम, আবার কতকদুর গিয়া বলিল, "আপনি এইথানে দাঁড়ান আমি একবার অমু-সন্ধান করিয়া আসি।" আমি দাঁড়াইয়া थिकिनाम, यूरा छनिया शिन। व्यात मरएक পরে যুবা আসিয়া অতি প্রাকৃষ্ণ বদনে বলিল, "रहेशांट, नकान भारेशाहि, भीज जाजून वांच निजा बाहरल्ट्हा" जामि नरक शिक्षा पिथि, পाराएव अक शांत टाकां भी वि-कात नाम अकी भर्छ या खरा जाएँ

ভাহার মধ্যস্থানে প্রস্তর নির্শ্বিত একটি কৃটির, চতুঃপার্শহ স্থান তাহার প্রাজণ-श्रवा । यूवा मिटे गर्छत्र निकर्षे এक স্থানে দাঁড়াইয়া অতি সাবধানে ব্যাদ্র দে-খাইল । প্রাঙ্গণের এক পার্ষে ব্যান্ত্র নিরীহ ভাল মাহুষের ন্যায় চোথ বুজিয়া আছে, মুখের নিকট স্থন্দর নথর সংযুক্ত একটী থাবা দর্পণের ন্যায় ধরিয়া নিদ্রা যাইভেছে। বোধ হয় নিজ্ঞার পূর্বে থাবাটি একবার চাটিয়াছিল। যে দিকে ব্যাত্র নিদ্রিত ছিল, यूवा त्रहे पिटक छिनिन। आंगांत्र विनिन, "মাথা নত করিয়া আস্থন, নতুবা প্রাঙ্গণে ছায়া পড়িবে" তদস্বসারে আমি নত শিরে টলিলাম; শেষ একখানি বুহৎ প্রস্তরে হাত দিয়া বলিল, ''আস্থন, এই থানি ठिलिया जूलि," উভয়ে প্রস্তরখানিকে স্থানচ্যুত করিলাম। তাহার পর যুবা একা তাহা ঠেলিয়া গর্ভের প্রান্তে নিঃ-শব্দে লইয়া গেল, একবার ব্যাদ্রের প্রতি চাহিল, তাহার পর প্রস্তর ঘোর রবে প্রাঙ্গণে পড়িল; শব্দে কি আঘাতে ভাহা ठिक बानिना याज छेठिया मां एविया हिन: ভাহার পর পড়িয়া গেল। এ নিদ্রা আর ভাঙ্গিল না। পর দিবস বাহক স্বন্ধে ব্যাম্রটি আমার তাঁবু পর্যন্ত আসিয়াছি-লেন; কিন্তু তথন তিনি মহানিদ্রাচ্ছন্ন বলিয়া বিশেষ কোন প্রকার জালাপ इहेल ना।

क्षं, नी, र,

वाञालाग्न कलात्र कार्राष्ट्र।

जानीं इरेन, जानस्म रेजत लाकिता श्राहेशाहिन;—

''कि कल वानाल मार्टिव काम्भानि ; कल्ला धृमा छे छ जाशिन।"

কলে ভাহাদের কোন অপকার ২ইবে; এখনও জনেক ভদ্র বাঙ্গালী জানেন না কথা সর্প করিয়া দিই। যে কলের আবিভাবে বাঙ্গালার কোন অপকার হইয়াছে বা হইভেছে। মোটা- পৃথিবীতে অদ্বিভীয় হইয়াছিল। ঢাকায় मुहि দেখিতে পাই কলের বলে হুই দিনের পথ ছই घनोत्र याहे, अभात ननी भात হই, সন্তা দরে কাণড় পরি; স্থতরাং আমরা কলের অপেকা বাঙ্গালার মঙ্গল-দায়ী আর দেখি না।

স্বীকার করি, কল ওভ প্রদ। কিন্ত নিজের শুভ এবং সমাজের শুভ পরস্পর বিরোধী নহে সভ্য, কিন্তু কোন কোন স্থলে ভাহা হয়। চোরের দৃষ্টান্ত স্মরণ कत्र; य वाङि नक छ।क। চুति कतिन, ভাহার কত আহলাদ। কিন্তু সেই চুরির নিমিত্ত সমাজের কত রাগ, কত ক্ষতি-বোধ। তাহাকে ধরিয়া কারাবন্ধ না করিলে দে রাগের শান্তি হয় না। এই স্থলে वाकि वित्यवं धवः नमाष्ट्रव ७७।७७

यथ्य जार्शक राज वाजानाव व्यथम अतम्भव विद्योधी। विद्योधी विनशहे। নীতিশাস্ত্র ও পেনাল-কোডের প্রয়োজন दश्याद्य ।

কলের কাপড় আমাদের আপন আপন পক্ষে বিশেষ ভাল। কিন্তু বঙ্গ সমা-ত্বন তাহারা জানিত না যে সেই জের পক্ষে সেই রূপ কি না, ভাহাই প্রথমে আলোচনা করিবার নিম্মিত্ত হুই একটি

বজ্ঞের বিষয়ে বাঙ্গালা এক সময় (बज़े मृद्य ७ जुन्द्र दक्ष द्राम इहेड, ভজ্রপ আর কোন দেশে হইত না। পূর্ম-काल यथन রোমানের। অতি স্থবেশী হইয়া উঠেন, ভখন ঢাকা হইতে ভাঁহারা কার্ণাস কাপড় লইয়া যাইতেন। আমা-দের দেশে দে সময় 'পাট কাপড়,'' আর সে ভভ অনেক সময় আমাদের "কাপাস কাপড়," এই ছই জাতি বস্ত্র নিজের; বঙ্গদমাজের নহে। আমাদের ব্যবহাত হইত। রোমানেরা কাপাদ কাপড় नहेंगा याहेरजन जवः छांशामत त्नरम কার্পাদ কথাটি চলিত হইয়া গিয়াছিল। ভাৎকালিক ইছ্দিরাও বাঙ্গালার বস্ত্র ব্যবহার করিভেন, ভাঁহাদের অভি প্রা-চীন গ্রন্থে কার্পাসের উল্লেখ আছে।

> ঢাকায় যে সকল স্ক্রাবন্ধ প্রস্তুত हरे**७, ভাহার মধ্যে "**मवनाम" आর "আব-রোঙা" অভি আশ্রহ্য। 'স্বনাম' সন্ধ্যার नमज़ चारन विखान कतिना त्राथित थाउ

আর তাহা বড় চেনা যার না; বেন
মাকড়সার,জালে শিশির পড়িয়াছে বলিয়া
বোধ হয়। শেইরূপ 'আবরোডা' জলে
ফেলিলে আর বড় দেখা যায় না। জাহাদির বাদসার সময় এই সকল বছা এভ
স্ক্র্যা প্রস্তুত হইত যে ৩০ হাত দীর্ঘ আর
২ হাত বহরেরথান ওজনে ওভরির অবিক
হইত না, তাহার মূল্য ৪০০ টাকা ছিল।
এরপ স্ক্র্যা বছা অদ্যাপি আর কোন
দেশে হয় নাই।

वात्रालास ভূমি-कर्षण आत वख-वस्रन, এই छुड़े व्यथान कार्या हिन। अधिकाः भ लाक्टे वहे इहे कार्या निश्व थाकिए। यमन किमन्काल अनारिक इहेरि বাঙ্গালায় চাল আমনানির প্রয়োজন হইত না, সেই রূপ কিমিন্কালে অন্য দেশ হইতে পরিধানের বন্ত্র আসিত না, এই থানেই প্রস্তুত হইত। স্তরাং সমুদয় বাঙ্গালীর বন্ধ প্রস্তুত করিতে বছ লোক লিপ্ত থাকিতে হইত। কেবল ভাঁতিদের দারা এ কার্য্য সমাধা হইয়া উঠিত না, তাহারা মাত্র ভাঁত वूनिछ। छाशापत निमिख एडा मकन জাতিতেই কাটিয়া দিত,নতুবা অন্যদেশের ''হাত ভোলায়''থাকিতে হয়। দ্রীলোকেরা खौलां क्या वक्षमभाष्यत अर्युकि मयरक বিশেষ সহার ছিল; বাঙ্গালার যত ধান্য **ांश मभूमम जांशा जांशिया मिछ ; जवः** व्यावान वृक्षा कृषिया श्वा काषिया निछ। বোধ হয় প্রায় এক কোটি খ্রীলোক কেবল

এই স্তা কাটা কার্য্যে লিপ্ত থাকিত।
স্তা কাটা উঠিয়া গিয়াছে, স্বতরাং এই
এক কোটি জীলোক এখন 'বেকার।"
তাহাদের উপার্জন এখন কলে কাড়িয়া
লইয়াছে।

তাহাদের সেই উপার্জন যদি অন্য কোন প্রকারে পূরাণ হইত, তাহা ইইলে ক্ষতি ছিল না। কিন্তু তাহা হয় নাই। তাহাই বলিতেছিলাম কলের স্থতায় আমাদের নিজের ইপ্ত হইয়াছে, কেননা আমরা কাপড় সস্তা পাইতেছি। কিন্তু বঙ্গ সমাজের অনিপ্ত হইয়াছে, কেননা এক কোটি বঙ্গবাদী বৎসর বৎসর যে অর্থ উপার্ণ জন করিত, সে অর্থ এখন ইংলণ্ড দেশের মাঞ্চোর নগর লইতেছে।

যাঁহার। বিবেচনা করেন পূর্বে ।যভ লোক এ কার্যো লিপ্ত ছিল, এখনও ভত लाकरे निश्व षाष्ट्र, छारापतं मण्पूर्व लग। চ जिन वर्गत शृर्क आभि यह एक দেখিয়াছি, কি ব্ৰাহ্মণ কি কায়স্থ, প্ৰায় ঘরে ঘরেই চর্ক। ঘুরিত। প্রাচীন কালে একটি চলিত কথা ছিল যে "রাজার मा मानात भौडेक कारि।" এই প্রবাদ ছারা এই বুঝা যায় ষে সৃতা-কাটা বাঙ্গালার সকল অবস্থার লোকের সম্ভব ছিল। আরও দেখা যায় স্থতা ও চর্কার জাতকথা এখনও সকল ঘরেই চলিত আছে। অদ্যাপি বলে "আপনার চকায় ভেল দেও" অর্থ আপনার ভাবনা ভাব। "আর টানা পড়েন করিতে পারি না," অর্থাৎ অনবর্ত আর যাতা-

রাভ করিতে, পারি না। কেই মৃছ্স্বরে অকারণ কাঁদিতেছে শুনিলে আমরা
এখনও রাগ করিয়া জিজ্ঞাসা করি "কে
সক্র স্থা কাটিতেছে।" সূতা কাটার
বড়ই প্রাহুর্ভাব ছিল বলিয়া এসকল কথা
অদ্যাপি ঘরে ঘরে থাকিয়া গিয়াছে।
অধিক কি! স্থা কাটা দেখিয়া ভৎকালে
বিবাহের পাত্রী মনোনীত ইইত। "সবনাম" "আবরোঙা" প্রভৃতি তাহাদের
সূতার প্রস্তুত ইইত। তাহারা "আসনা"
স্থা কাটিত।

পূৰ্বকালে বান্ধালায় মোট যভ ধন প্রতিবৎসর বৃদ্ধি পাইত, তাহার মধ্যে স্ত্রীলোক উপার্জিত ধনাংশ পুরুষ উপা-ৰ্জিত ধনাংশ অপেকা নিতাম্ভ ছিল না। দ্রীলোক কর্তৃক এরপ অংশে অর্থবৃদ্ধি আর কখন কোন দেশে হই-श्राष्ट्र कि ना मत्मर। किन्छ এथनकात्र কথা সভম। অর্দ্ধেক ম্রীলোকে অর্থবৃদ্ধি সম্বন্ধে রুথা হইয়া পড়িয়াছে। অন্য বিষয়ে याशहे इछेक, ध विषयः वाष्ट्रानाव वफ्हे অবনভি হইয়াছে। ম্যানচেষ্টার আমা-(मत ठेकाइयाह, कल जामामित जर्फक দ্রীলোকের হাত কাটিয়া দিয়াছে, কত লক্ষ ভাঁতির প্রাণনাশ করিয়াছে। স্থামা-(एत मर्था ज्यानक है जानन ना रच वाजा-লায় ভাঁতিরা বছসংখ্যক ছিল। এখন ভাহা-(मत मःथा) किमेशा शिशा है। वाक्रामात्र (यथात्मरे खत शीए। मत्रक আরম্ভ হউক, সর্বাত্তে সেখানকার তাঁতি পীড়িত হয়, সর্বাত্তে তাঁতি মরে। ছর্ভিক

হইলে, দর্বাত্রে তাঁতিকে উপবাদ করিতে
হয়। এই জন্য তাহাদের দংখ্যা জন্য
জাতি অপেকা কমিয়াছে। এ দকল
ম্যানচেষ্টারের কীর্ত্তি। ম্যানচেষ্টারের
উপর রাগ করিয়া বলিতেছি না। আপনার ধনর্ত্তির নিমিত্ত ম্যানচেষ্টার কল
পাতিয়াছিল, অদৃষ্টক্রমে আমরা সেই কলে
পড়িয়াছি, ম্যানচেষ্টারের কোন দোব
নাই।

বত্র বয়নে যে দেশ সকল দেশের
মস্তকোপরি ছিল, সেই দেশ এখন বিলাতের পদতলে। বত্রের নিমিত্ত যাহাদের
দারে গ্রীক রোমানেরা আসিয়া দাঁড়াইত,
তাহারা এখন ম্যানচেপ্টারের দ্বারে। অপরম্বা কিং ভবিষ্যতি।

উপায় আর বড় দেখা যায় না। যদি কখন মাানচেষ্টারের প্রেরিভ বন্ত্রাদির উপর মান্তল বৃদ্ধি করা হয়, এ পরিমাণে বৃদ্ধি করা হয় যে কলের কাপড় মহার্ঘ হইয়া উঠে, তাহা হইলে আবার বন্ধলন্দ্রী ম্যান-চেষ্টারের মন্দির হইতে বান্ধালায় প্রত্যা-গমন করিতে পারেন। কিন্তু সে ভরশা বৃধা। মান্তল বাড়িবে না, ম্যানচেষ্টারের কারিগরেরা বড়ই ধনবান। ভাহাদের একাধিপত্য এখন অতুল।

আর এক উপায় আছে। বার্ডউড সাহেব সে উপায় বলিয়া দিয়াছেন। তিনি আপনার গ্রন্থে লিথিয়াছেন যে—

যে সকল বদ্ধ অলকার এদেশজাত নহে, তাহা যেন এদেশ বাদীরা একবারে ব্যবহার না করেন।

গ্রন্থানি ভারতের শিল্প সম্বন্ধে; বার্ড-উড সাহেব তাহাতে আমাদের শিল্পের কতই প্রশংসা করিয়াছেন; আবার কতই আক্ষেপ করিয়াছেন যে এতকালের এরূপ চমৎকার শিল্প লোপ পাইতে বসিয়াছে। †

কাশীরে আর পূর্বমত শাল প্রস্তুত হয় না, বাঙ্গালায় ন্দার সেরপ বন্ত হয় না; ভারতের সকল দেশেই শিল্পের এইরূপ অবনতি হইয়াছে। এখন ইং-রাজগণ আমাদের শিল্পী দাঁড়াইয়াছেন। এ वनवरु मन नरः; তবে किना कृषि আর শিল্পী এক স্থানে থাকিলেই ভাল হয়, সেই বন্দবস্ত পূর্কে ছিল এখনও তাহাই আবশ্যক; রেলের দারা তারের षाता यथन পृथिवीत मकल দেশ এक হইয়া ষাইবে তথনকার কণা সভন্ত; সে বন্দবস্ত এত পূর্বাহেল উপস্থিত করা ভাল নহে। আজ সাহেবেরা ভারত ছাড়া श्हेल, काल आयापित मना कि श्हेर्व ? হুতার নিমিত্ত কাপড়ের নিমিত্ত আমরা *শ্রু*কাথায় যাইব ? অন্নাভাবে ভাঁতিরা প্রায় নির্বাংশ হইতে আরম্ভ হইয়াছে সকলে সূতা কাটা ভুলিয়া গিয়াছে।

আমাদের উপায় কি হইবে তাহা একবার ভাবনা করা ভাল।

দেশী কাপড় মহার্ঘ, এই জন্য সামান্ত লোকেরা ভাহা আর ব্যবহার না করিয়া मानिटिष्टोदित छेनत शृत्व करतः किन्छ ষাহারা লালবাগানের ধুতি ব্যবহার করিয়া থাকেন তাঁহারা জানেন দেশী কাপড় সস্তা, দেশী কাপড় টেকসহি. অনেক দিন যায়। আমরা জানি পাবনা জেলার দোগাছিয়া আম হইতে একজন যোল টাকা মূল্যে একখানি ধুতি ক্রয় করিয়া আট বৎসর পর্যান্ত ভাহা নিভ্য ব্যবহার করিয়াছিলেন। এ অবস্থায় বিলাতি ধৃতি অপেকা দেশী ধৃতি সন্তা। धरेक्ग हिमाव कित्रश (पिशल वार्ष छेष সাহেবের পরামর্শ পালন করা কঠিন হইবে না। সে পরামর্শ নুতন নহে, আমা-দের যুবারা এ কথার আন্দোলন অনেক দিন হইতে করিতেছেন। যদি ভাঁহারা আর একটু মনযোগী হইয়া সাধারণ लारकत ज्ञम मूत कतिवात रुष्टे। करतम তাহা হইলে কতক কুতকাৰ্য্য হইতে পারেন। তাহা হইলে ইংরেজি পারি-লিয়ামেণ্টের পুরাতন একটি আইনের উত্তর দেওয়া হয়। ১৭০০ সালে যখন ইংরেজরা অর্থ শাল্প (political economy) একেবারে কিছুই বুঝিতেন না তখন তাঁ-হারা এক আইন করিয়াছিলেন ষে जिल्ला कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य করিতে পাইবে না, প্রবেশ করিলে তাহা क्ट वावशंत्र कतिए भातित्व ना यनि

[&]quot;Indian native gentlemen and ladies should make it a point of culture never to wear any clothing or ornaments but of native manufacture and strictly native design." The Industrial Arts of India, by George C.M. Birdwood C. S. I., M. D. page 244.

1

कान महाजन विरम्भी कागड़ हेल्ल ए नहें सा यान छारा रहेला म यान छनाययां कता যাইবে অথবা ফেরভ পাঠান যাইবে *। ভৎকালে-ইংরেজরা ভাবিতেন যে বিদেশ-জাত দ্রব্যাদি বিক্রয়ের ক্ষতি হইবে স্কৃতরাং ভৎসঙ্গে প্রজানের অর্থাগম পক্ষে ব্যাঘাত একণে এ আপতা ভঁ,হাদের घिटित्। আর নাই ভাঁহারা এখন সকল দেশের দ্রব্যাদি অবাধে আদিতে দেন কেবল মাস্থল (custom duty) আপনাদের হাতে

of September 1701, all wrought silks, Bengals, and stuffs mixed with silk or herba, of the manufacture of China, Persia, or the East Indies and all calicoes painted, dyed printed or stained there, which are or shall be imported into this kingdom, shall not be worn or otherwise used in Great Britain; and all goods imported after that day, shall be warehoused or exported again."

রাথিয়াছেন ; কথন কখন ভাছা চড়াইয়া वाँ दियन कथन वा नावाहिया (तम। (**उरे जानको। यज्ञनव शामिल रम्न ।** किन्न আমাদের সেরপে মতলব হাসিল হইবার न्दर ; गार्क्षहोद्यत छे भन्न मान्यन वाफित না, স্মুক্তরাং বার্ডিড সাহেবের পরামর্শ তনা ভাল, ভনা আবশ্যক। मगादक होदित स्वा किनिय ने। यावहात कतिय ना, अहे खिख्छा यमि कति अवः **जाश तका क**ति, जांश **इटेल** जागालित আর প্রণমেণ্টের নিকট এই বিষয়ের निर्मिख पत्रशास्त्र कतिए इहेरव ना, कं। मिएड • "That from and after the 29th day ! ইইবে না, মৰ্মব্যথা পাইতে হটবে না; আপনার ইচ্ছার অধীন থাকিয়া, আপনার প্রভিক্তার অধীন থাকিয়া, স্বাধীনতার স্থ লাভ করিতে পারি। স্বাধীনতা আর কিছুই নহে; কে রাজা ভাহা লইয়া সাধী-नडा नटा आमि यनि मादिक हो दिव षधीन ना इहे जत्वहें षामि अकितिक त्राधीन।

रक्षण्या

- misself 1883 Brown -

' ४४ मः था।

-- Eet : 33: Eet 103: --

जानम गर्र।

वाव् विषयह हः द्वाभाष्य भाग ।)

विजीय थए।

প্রথম পরিচেছদ।

কাল্ ৭৬ সাল ঈশর রূপায় শেষ হইল।
বাঙ্গালার ছয় আনা রকম মস্যাকে, কত
কোটা তা কে আনে, য়মপ্রে প্রেরণ করাইয়া
সেই ত্র্বিৎসর নিজে কালগ্রাসে পতিত
ত্ইল। ৭৭ শালে ঈশর স্প্রসর হইলেন।
স্বৃষ্টি হইল, পৃথিবী শস্তশালিনী হইল,
যাহারা বাঁচিয়াছিল ভাহারা পেট ভরিয়া
থাইল। অনেকে অনাহারে বা অলাহারে
কয় হইয়া ছিল, পূর্ণ আহার একেবারে
সহা করিছে পারিল না। আনেকে তাহার
তেই মরিল। পৃথিবী শস্তশালিনী কিস্ক

জনশ্তা। প্রামে প্রামে থালি বাড়ী পড়িয়া,
গবাদির বিশ্রামভূমি এবং প্রেতভরের
কারণ হইয়া উঠিয়াছিল। প্রামে প্রামে শত
ল। শত উর্জরা ভূমিখণ্ড সকল অকর্ষিত, অমুৎগত পাদক হইয়া পড়িয়া রহিল, অথবা জঙ্গলে
ইয়া প্রিয়া গেল। দেশ জঙ্গলময় হইল।
তেও বেগানে হাস্যমন্ত্র শামল শ্লারাশি বিরাজ
করিত, যেখানে অসংখ্য গো মহিষাদি
লৈ, বিচরণ করিত, যে সকল উদ্যান গ্রাম্য
যুবক যুবতীর প্রমোদ ভূমি ছিল, দে সকল
ক্রারে বংসর, ছই বংসর, তিন বংসর গেল, জঙ্গল
বাড়িতে লাগিল। যেস্থান মন্থ্রোর স্থান্তর
ক্রানিছিল, শ্লেখানে নর্মাংসলোল্প ব্যাদ্র

আসিয়া হ্রিণাদির প্রতি ধাবমান হইতে लाशिन। टाबारम स्मनीत मन जनस-কান্ধিত চরণে চরণভূষণ ধ্বনিত করিতে করিতে, বয়সাার সঙ্গে বাঙ্গ করিতে করিতে, **डिक हों मि हामिएंड हामिएंड याहेड, रमहे** খালে ভলুকে বিবর প্রস্তুত করিয়া শাব-कामि नानन भानन कविर् नाशिन। (य थारन भिक् भक्त नवीन वस्रा मका। कारणत महिकाक्ष्म जूना छे एक्स हरेषा श्वमञ्चिकत हामा हामिङ, टमरे थान चाकि मृत्भ यूर्थ रक्ष्र रही मकल मनमञ रहेशा वृष्कत काश्व मकन विषीर्व कतिए লাগিল। যে খানে তুর্গোৎসব ছইত সে थारन भृগारलक विवत्र, रमानगरक পেচকের व्याद्धिय, नाष्ट्रेमिन्द्रत विषयत गर्भ मकन দিবদে ভেকের অভ্যেবণ করে। বাঙ্গালায় भागा जत्त्र, शाहेवात त्नाक नाहे; विद्क्रिय कत्य किनिवाद (नाक नाहे; हामात्र हाम करत छाका भाग ना, जभीपारतत थाजना मिट्ड भारत नाः। अभीमाद्रता ताकात थाकना पिटिं शारत ना, ताका क्योगाती काष्ट्रिया ण अप्राप्त समीपात मध्यमात्र श्रु-मर्क्य ररेमा पतिज रहेटल माभिन। वस्पाली ऋथमितिनो इटेरनम छत् चात्र धन कर्या ना। काशत्रिष्ठ चरत्र थन नाहै। (व যাহার পায় কাড়িয়া খায়। চোর **जाकार** जता याथा ज्लिल, माथू जीक इहेत्रा चरत्रत्र भरशा मुकारेन।

अ बिक् महाम महामात्र निष्ठा महत्मन ज्नमी मत्न विक्भाम-भग्न भूजा करत्र, यात परत वज्ज भिष्ठम ज्वाह काजिया ज्ञाति। ज्यानम बिन्ना निमाहितन ''जारे! यनि अक नित्क ध्वनानीन त्वस जान मिन्ना होत्रक ध्वनानीन त्वस जान अकित अकित अवानीन त्वस जान अकित अकित अवानीन क्षा क्षित्र। जानी मानिका होत्रक ध्वनानीन हाङ्गा जानी वस्तुक ति वस्तुक विन्ना जानी वस्तुक ति वहें मानित वानानि हाङ्गा जानी वस्तुक विन्ना जानित वस्तुक विन्ना जानित वानानि हाङ्गा जानी

ভার পর, ভাহারা গ্রামে গ্রামে চর পাঠা-हेटल नाजिन, हत आदम जिमां द्यथारन हिन्तू **(मर्थ, वर्टन छारे विक् श्रृका कन्नवि ? এरे** विनिया २०।२६ खन खड़ कतिया यूमनमारनत গ্রামে আদিয়া পড়িয়া মুগলমানদের ঘরে जाश्चन (मय। मूननगरनद्रा श्रीप द्रकार वािंचाच रूत्र, मसात्नित्रा छारात्त्र नर्संच नूठे कतिया न्छन विक्छक्तिगरक বিভরণ করে। লুঠের ভাগ পাইয়া वागा लाटक खोठ रहेल विकृमनिदव আনিয়া বিপ্রহের পাদ স্পর্শ করাইয়া ভাহাদিগকে সন্তান করে। লোকে मिथिन मञ्जानएव विनक्त नाख चाहि। বিশেষ মুসলমান রাজ্যের অরাজকভার ও অশাসনে সকলে মুসলমানের উপর वित्रक रहेमा উठिमाहिल। हिन्द्रधर्यत विलाप जानक हिन्दू हिन्दू भागतित्र जना जाशहित हिन। जा जव नित्न मितन मखानमः था। वृद्धि इहेट्ड मात्रिम । मितृन शित्म में ज में ज, सार्य मार्य महत्र महत्र मखान चामिया खवामना जीवानटमय भाग পদ্ম প্রশাষ করিয়া দলবদ্ধ হইয়া দিগদি शस्द्र यूगनयानटक भागन कतिएक वाहित ु रहेटफ गामिका। दिवादन बाक्यूकर भाष, धित्रा भाव शिष्ठे करत्र, कथन क्थन श्राग्वध

करत्र, स्थारन मत्रकात्री होका भात्र मृत्या णरेत्रा व्याप्त कारन, स्थारन मूनम गारनत्र श्राम भाव व्या कवित्रा क्यांवरभव

ण्यम नंत्रदत्र महात्रांचा विवादकत्र रिष्ठना हरेग। मञ्जानिए अत्र भामनाएर्थ जिनि **ज़ित्र ज़ित देगना (धार्य कित्र कि मिलिट न** किंद्ध এখন সন্তানেরা দলবন্ধ সন্ত-मर्श मन्त्रास मूननमान टेमना अञ्चनत इहेट्ड शास्त्र ना। यनि च्यानत इत्, অমিত বলে সস্তানেরা ভাহাদিগের উপর পড়িয়া ভাহাদিগকে ছিন্ন ভিন্ন করিয়া हत्रिश्वनि कत्रिष्ठ थाक । यम कथन छ कान मखादनत मनदक यवन देमनिद्कदा পরাস্ত করে, তথনই আর এক দল সন্তান काथा इष्ट्रेंड चामित्रा विष्य उपिरगत माथा कारिया एक निया किया क्रि क्रि বলিতে বলিতে চলিয়া যায়। রাজা আসদ-**उनक्यान वर्फ विजा**रि পर्फ़िलन। অনেক श्रामा, कामान, श्रामी, (पाएं), পাঠाইলেন, কিছুতেই সম্ভানদিগের ''অয় जगनीम इट्ड" मत्क्त निवादण नारे। षामगडेमस्याम (मिश्रिमन द्य ब्रामापूर्ण इहे।

ज्यन जिनि काज्य देश्यव्य किंठी लिथिएनन। लिथिएनन या, कान मट्ड जानि जान नाज्य मश्जाद कतिर्ड भाति ना या भाजिदिक भानि ना; जाभ-नाना नजा करन करवह बाजना जानान किंदि, नरह९ जाभनाना जानिना जानान

করন। ইংরেকেরা পূর্ব হইতে নিজেকতকং পাজনা আদার করিতে ছিলেন কতকং পাজনা আদার করিতে ছিলেন কিন্তু এখন ভাঁহাদিগেরও যত্ন বি নল হইতে লাগিল। এই সমরে প্রাথত-নামা ভারতীয় ইংরেজকুলের প্রাণ্টা শুরারেন হেষ্টিংস সাহেব ভা এতবর্ষের গবর্ণর জেনেরল। কলিকাভান্ন বসিরা লোহার সিকল গড়িয়া তিনি মনেং বিচার করিলেন, যে এই সিকলে আমি সন্বীপা সসাগরা ভারতভূমিকে বাঁধিব। একদিন জগদীশ্বর সিংহাসনে বসিরা নিঃসজেহ বলিরাছিলেন ভপাস্ত। কিন্তু সে দিন এখনও দ্রে। আলিকার দিনে সন্তান-দিগের ভীষণ হরিধ্বনিতে ওয়ারণ হেষ্টিং-সও বিকম্পিত হইলেন।

अवातन दिशिश श्राया राष्ट्रिक राष्ट्री रिम्पान द्वाना निष्ट्रा निवान निव रिक्र कि निवान स्व कि निव

कारशन ऐयाम वीत्रज्ञ (में हिन्न) वि-फार निवान पान का छ छ छ न वस्त्रावछ कतिए ना भिरनम । नाकात रेमना ७ क्यी नात्रियम रेमना हा हिन्ना नहेन्ना रकान्या नीत स्विक्षिण महज्ज्य मार्ग विदे

(मणी विष्मणी देमदमात्र मदम भिलावेदनम। পরে সেই মিলিত দৈনা দলে২ বিভক্ত করিরা সে সকলের আধিপত্যে উপযুক্ত याष्ट्र वर्गरक नियुक्त कतिरलन। शदर (मरे नकन (याकृ वर्गिक (मण ভाগ कित्रा **मिरलन**; विलिया मिरलन ज्ञि जम्क क्राप्तम (क्रिवादा में में में क्रिवादा में छाँकिटल यारेटन। त्यथारन विद्यारी (पियट्व भिभौतिकात मङ ভारात आग भःशात्र कतिरव। **काम्भानित्र देमनिक्**त्रा क्ट गाँछा, क्ट तम मातिया वन्त्र मधीन हफ़ारेया मखान वर्धि धाविल रहेन। किंद्ध मञ्चारनद्रा अथन अमःथा अध्वर् कारश्चन हेमारमज टेमनामल চাসার কান্তের নিকট শদ্যের মত কর্তিত হইতে হরি হুরি ধ্বনিতে কাপ্তেন •लाशिव। हेमारमत कर्वविधित इहेग्रा (शल। এই রূপে ১১৮০ সাল বীরভূমে সন্তান নাম কীর্ত্তিত করিতে লাগিল।

দ্বিতীয় পরিচেছদ।

তপন কোম্পানির অনেক রেশমের কুঠা ছিল। শিবগ্রামে ঐরপ এক কুঠা ছিল। ডনিওয়ার্থ সাছেব সেই কুঠার ফ্যাক্টর অর্থাৎ অধাক্ষ ছিলেন। তথন-কার কুঠা সকলের রক্ষার জন্ম শ্রব্যবস্থা ছিল। ডনিওয়ার্থ সাহেব সেই জন্ম কোন প্রকারে প্রাণরক্ষা করিতে পরিয়া-ছিলেন, কিন্তু তাঁহার স্ত্রী, কন্তাদিগকে কলিকাভায় পাঠাইয়া দিভে বাধ্য হইয়া-ছিলেন এবং তিনি স্বয়ংও° সম্ভানদিগের बात्रा উৎপोড़िङ इहेग्रांहित्नन। व्यक्ति कर नगरम कारश्चन हेमान नारहत ष्टे ठाति वाटिनियन क्लिस गरेता जन-त्रिक वानिशाहित्सन। এখন बन कठक চোয়াড়, হাড়ি, ভোম, বাগদী, বুনো मञ्जानिहरात्र উৎসাহ দেथिया পর্জব্যাপ-হরণে উৎসাহী হইয়াছিল। তাহারা কাপ্তেন টমাদের রসদ আক্রমণ করিল। कारश्चन देगारमत देमर्श्यत मृत्य गाड़ी গাড়ী বোঝাই হইয়া উত্তম বি, ময়দা, मूत्रगी, ठाल यारेट छिल- (मिथ्रा (जाम वाशमीत मन (नाष्ठ मसद्रग कतिएक পারে নাই। তাহারা গিয়া গাড়ী আক্র-यव कतिल, किन्छ कारश्रेम हेमारमत সিপাহীদের হস্তস্থিত বন্দুকের চুই চারিটা গুভা খাইয়া ফিরিয়া আদিল। कात्थन हेमान उ९कात्र किनिकालाग्र রিপোর্ট পাঠাইলেন যে আজ ১৫৭ छन मिপारी लहेबा >8,4०० विद्यारी পরাজয় করা গিয়াছে। বিদ্রোহীদিগের मरक्षा २১৫७ कन मतियाटक जात ১२७७ खन আহত इंडेग्नाइं। १ खन वनी হইয়াছে। কেবল শেষ কথাটাই সতা। कारक्षम हैमाम, (त्नहिम वा तम-वारकत यञ विञीययुष व्यय कतियाछि यत्न कवित्रा (गांभ माड़ी हुमदाहेत्रा निर्दय देख्य दिज्य विष्य नामितन। जवर एकिश्वार्थ माट्यटक नतामर्न मिट्ड माशिक्षम (य, आंत्र कि जक्रा

বিদ্রোহ নিবারণ হইয়াছে, তুমি স্ত্রী
প্রদিগকে কলিকাতা হইতে লইয়া
আইস। তনিওয়ার্থ সাহেব বলিলেন,
তাহইবে,আপনিদশদিন এখানে থাকুন,
দেশ আর একটু ছির হউক, স্ত্রী প্রে
লইয়া আসিব।" তনিওয়ার্থ সাহেবের
ঘরে পালা মটন মুরগী ছিল। পনীরও
তাহার ঘরে অতি উত্তম ছিল। নানাবিধ বনাপক্ষী তাহার টেবিলের শোভা
সম্পাদন করিত। শাশ্রমান বাব্চীটি
দিতীয় দ্রোপদী। স্করাং বিনা বাকা
বায়ে কাপ্রেন টমাস সেইখানে অবস্থিতি
করিতে লাগিলেন।

अमिर्ग खर्वानम यरन यरन गंत गंत कतिएए एक विराज्य करत अहे कारश्रन টমাস সাহেব বাছাদ্রের মাথাটা কাটিয়া, দিতীয় সম্বরারি বলিয়া উপাধি ধারণ করিবে। ইংরেজ যে ভারতবর্ষের উদ্ধারসাধন জন্ত আসিয়াছিল, সম্ভানেরা णश ज्यन वृत्य नाहै। कि श्रकादत व्विद्व ? कारश्रन हेमारमद मममामश्रिक ইংরেজরাও তাহা জানিতেন না। তখন কেবল বিধাতার মনে মনেই একথা ছিল। ख्वानम खाविष्किष्ण এ खन्नदत्र वः भ धकिंग्रिन निभाज कित्रव, नकरण क्या रडेक, এक ट्रे अमर्डिक रडेक, आमता এখন একটু ভফাত পাকি। স্থতরাং তাহারা একটু ভফাত রহিল। কাপ্রেন ऐगाम मार्ड्स निष्कि हेड्या मां छजान क्रगाती पिरशत अवश्राहरन मरनारयाश पित्तन। जथनकात जात्रजीय देश्टन प्रमा

বিদ্রোহ নিবারণ হইয়াছে, তুমি স্ক্রী এখনকার ইংরেজদিগের তাানু পবিজ্ঞ প্রাদিগকে কলিকাতা হইতে লইয়া চরিত্র ছিলেন না।

> সাহেব বাহাদ্র শীকার বড় ভাল বাসেন, মধোং শিবগ্রামের নিকটবন্তী অরণো মৃগ याय वाहित इहेटलन। এक मिन छनि खयार्थ সাহেবের সঙ্গে অখারোহণে কতকঞ্জনি **मिकात्री लहेग्रा कारश्चन हेगाम मिकारत्र** वाहित श्रेया ছिल्न । दलिए कि, प्रेयान माद्भित অসমসাহদিক, तलवीर्या हेश्द्रक জাতিব মধাও অতুলা। সেই নিবিড় অরণ্য বাাঘ, মহিষ, ভল্কাদিতে অভিশয় ভয়া-নক। বহুদুর আসিয়া শিকারীরা আর বাইতে অস্বীকৃত হইল, বলিল ভিতরে আর পথ নাই, আমরা আর যাইতে পারিব না। ডনিওয়ার্থ সাহেবও সেই অরণ্য মধ্যে এমন ভযক্ষর ব্যাঘ্রের গর্জন অনেক দিন শুনিয়াছিলেন যে, তিনিও আর যাইতে অনিচ্ছুক হইলেন। ভাঁহার। সকলে ফিরিতে চাহিলেন। কাপ্তেন টমাস বলিলেন '' তোমরা ফেরো ফেরো, আমি ফিরিব না।" এই বলিয়া কাপ্তেন দাহেব নিবিড় অরণ্য मर्भा श्रात्म कतिरनम।

বস্ততঃ অরবা মধ্যে পণ ছিল না।
ভাষা প্রবেশ করিতে পারিল না কিছ
সাহেব ঘোড়া ছাড়িয়া দিয়া কাঁধে বন্দুক্
লইয়া একা অরণা মধ্যে প্রবেশ করিলেন। প্রবেশ করিতে করিতে ইতস্ততঃ
বাাছের অন্বেষণ করিতে করিতে ব্যাছ
দেখিলেন না। কি দেখিলেন? এক
বৃহৎ বৃক্ষতলে প্রাফুটিত ফুল্রকুস্মযুক্ত

नजा समामिट्ड (वष्टिक हरेया विमया अ (क १ वाच कि ?—वाच (छ। नक्क, अक नवीनः मन्नामी, ऋरभ कन जारना कतिशाष्ट्र। প্রফুটিত ফুল যেন সেই স্বর্গীয় বপুর শান্তি। দেখিতেছ সন্নাসিনী। যাহাদের मः मर्द्य अधिक छत्र अश्वस्य क्टे द्वार **ए**। कारश्चन देमान मार्ट्य विश्विष्ठ इटेलन, বিশ্বয়ের পরেই তাঁহার ত্রোধ উপস্থিত इटेल। छिनि छनियाছिरलन দেখিয়াও ছিলেন, যে, বিদ্রোহীরা অনেক नगरम नज्ञानीत ८०न धतिया अञ्चल ভाবে (वज़ाया कारक्षन मारहव (मनी छाया विन-क्कन कानिएजन, र्नाटनन, " जूमि (क" ? मन्नामी विनन "वाभि मन्नामी।" कारश्चन दिनान '' जूनि विद्याशी।'' मद्यामी, "ना इय जारे रुलम।" কাপ্তেন। ''ডবে তোমায় গুলি করিয়া মারিব ''

मज्ञामी। "याद"

कारश्चन এक हे मदन मदन क ब्रिट छ-हित्तन (ए, श्रीन मात्रित्तन कि ना, अमन मभन्न विद्यार्टवर्ण (महे नवीन मन्नामी ভাঁহার উপর পড়িয়া তাঁহার হাত হইতে वस्क काष्ट्रिया अञ्चल। मञ्जामी वकावत्रग **हर्ष थ्**लिया (क्लिया किन। अक्हारन माफ़ि, त्राभ, खें।, थूनिया (क्निन; कारश्चन हेमान नाट्य मिलन जन्द ञ्चात्री जीमृर्खि। ञ्चात्री श्रामिट्ड शमिट्ड वनिन ''मार्टिन, जामि मौलाक, काहा-কেও আঘাত করি না। তোমাকে একটা কথা बिकामा कतिरह्या हिन् भाष्ट्रामानी विष्ट्रिक्ट कामाना क्रमा भारक छ ?

गायभारन रकन १ व्यापनात घरत्र कितिया যাও।

मारहर। कृषि हक। मक्त नज़ारे कतिएक वामित्राक कार्ग (मब्रहे काहात्र ७ जी।

সাহেব। তুমি আমার ঘরে থাকিবে? শান্তি। কি ? ভোমার উপপদ্ধী স্বরূপ ? সাহেব। जीत मण्डे थाकिए भात. তবে विवाह इहेरव ना।

শান্তি। আমারও একটা জিজাসা व्याद्यः व्याव्यादम्य घटतः এकछ। ज्ञशी कामत हिन, (मछ। मच्छाि मदत (ग्रंह ; **(कांग्रेस चामि शर्फ चार्छ।** কোমরে एं इकन (मर्वा, क्रुमि (नहे क्लाउर्द थाकटव ? जामारमत्र वागारन (वन मर्खमान कना रुय।

সাহেব। তুমি ভাল মেরে মানুষ, टिशाद माइटम आमि थुनी इहेग्राहि। তুমি আমার ঘরে চল। তোমাব স্বামী बुद्ध मिन्निया याहेरव। छथन छामाव कि इहेरव ?

শাস্তি। ভবে ভোমায় আমায় একটা कथा भाक। युक्त छ छ्मिन ठाविमित्न इटवरे। यपि जूमि ८क्क छटव आमि তোমার উপপদ্ধী হইয়া পাকিব শীকার कत्रिएकि, यमि वैक्तिया काकि। आव षायदा कि छि छि, छद छूभि वातिया, चार्यारमञ् ८मरे ८काछरतः वामत ८मटन

সাহেব। কলা খাইতে উদ্ভম জিনিষ।
এখন আছে?
শান্তি। নে তোল্ন বন্দুক নে। এমন
বুনো জেতের সঙ্গেও কেউ কথা করা!
শান্তি বন্দুক ফেলিয়া দিয়া হাসিতে
হাসিতে চলিয়া গেল।

তৃতীয় পরিচেছদ।

শান্তি সাহেষকে ত্যাগ করিয়া হরিণীর
তার ক্মিপ্রচরণে বন মধ্যে কোথার
প্রবিষ্ট হইলণ সাহেব কিছু পরে শুনিছে
পাইলেন জীকঠে গীত হইতেছে;—

थ (योवन जनजत्र द्वाधित (क ? इत्त मूत्रादत! इत्त मूत्रादत!

আবার কোথার শার্তের মধুর নিক্সনে বাজিল তাই,

> এ যৌবন জল তরঙ্গ রোধিবে কে ? হরে মুরারে ! হরে মুরারে !

তাহার সজে পুরুষ কণ্ঠ মিলিয়া গীত

ध र्यायन जनजत्क द्याशित (क ! स्टब्र भूतादत ! स्टब्र भूतादत !

णिन यदम धक रहेमा शास्त यसम में मकन कांभारेमा क्रिना। भाषि शाहेट शाहेट हिना।

'' এই যৌবন জল তরঙ্গ রোথিবে কে ? হরে মুরারে! হরে মুরারে!

खागाउ ज्ञान रायाह, यागाउ न्वन वजी, जामन स्राप, गाविष्ठ राम धरत्रह, राज मुजादा! राज मुजादा!

टिल्क वालित वांध, প्राहे मत्नत माध, टिलामात गाटक कल हू टिट्ह, ताथिटव टिक ! इत मूत्रादत ! इत मूत्रादत !"

সারক্ষেও ঐ বাজিতেছিল,
জোরার গাঙ্গে জল ছুটেছে রাথিবেকে ?
• হরে মুরারে! হরে মুরারে!

যেথানে অতি নিবিড় বন, ভিতরে কি
আছে বাহির হইতে একেবারে অদৃশ্যা,
শাস্তি তাহারই মধ্যে প্রবেশ করিলেন।
সেইখানে সেই শাখাপল্লব রাশির মধ্যে
লুকাইত একটা কুদ্র কৃটার আছে।
ডালের বাধন, পাতার ছাওয়া, কাঠের
মেজে, তার উপরে মাটা ঢালা। তাহারই
ভিতরে লতাদ্বার মোচন করিয়া শাস্তি
প্রবেশ করিল। সেখানে জীবানন্দ
বিষয়া সারক্ষ বাভাইতেছিলেন।

कीवानम भाखिरक मिथिय। जिल्हाम। कित्रानन।

"এত দিনের পর জোয়ার গাঙ্গে জল ছুটেছে কি ?"

भाषिक हामिया छेखत कतिल। " नामा (जावाय कि क्यायात भाष्य कल कूछि? की वानम विषश्च हहेया विलिलन, प्रिथ

শান্তি ৷ একদিন আমার ব্রভ ভঙ্গ হওয়ায় ष्यायात्र व्यानज उरमर्गरे रहेग्राट्य। যে পাপ ভাহার প্রায়শ্ভিত করিতেই **रहेरव।** এङ मिन এ প্রায়শ্চিত করি-তাম, কেবল তোমার অনুরোধেই করি नाहै। किन्नु धक्छ। (चात्रज्य यू.क्रम चात्र विषय नारे। ८गरे यू एक व त्या एक, चामात (म शाम्राम्छ कतिए इटेर्व। এ প্রাণ পরিত্যাগ করিতেই হইবে। আমার মরিবার দিন পর্যান্তই কৈ-"

শান্তি বলিল "আমি তোমার ধর্মপত্নী, সহধর্মিনী, ধর্মে সহায়। তুমি অতিশয় গুরুতর ধর্মা গ্রহণ করিয়াছ। সেই ধর্মের সহারভার জন্তই আমি গৃহত্যাগ করিয়া आंत्रिशाहि। इरे अत्न একতে मिरे ধর্মাচরণ করিব বলিয়া গৃহত্যাপ করিয়া व्यानिया वरन वाम कदिए छ। ट्यामात्र थर्मा वृक्ति कतिव। धर्माणकी इरेबा, তোমার ধর্মের বিল্ল করিব কেন ? বিবাহ षञ्च। देश्कारलय खन्च रग विवाह मरन-(एत विवाह (कवन भवकारनत जग्र। পরকালে দিগুণ ফল ফলিবে। হায় প্রভু! তুমিই আমার গুরু, আমি কি আমি কি ভোমায় বীর ব্রন্ত শিখাইব ? লোকটা অর্দ্রবয়স্থা, মোটা সোটা কালো बिन, ''मिथाইলে छ। আমিও শিখি- সীমস্ত প্রদেশে কেশদাম চুড়াকারে लाम। ज्यिरे क्षीक्रल धना।" (भाष्य कविष्ठ है। ठेन् ठेन् कविशी

षात्र (पर्य (गाँगारे, रेरकारकरे कि आभारमत विवाद निक्त ?, जुमि आभात ভাল ৰাস, আমি ভোমায় ভাল ৰাসি, ইহা অপেকা ইহকালে আর কি প্রক্রতর্ম ফল **আছে? उन '' व**न्न माजदः o' उथन इहेक्टन जना मिनाहेशा " यटन माजबर " शाहेल। शाहेटज शाहेटज क्रे करनरे कामियाहिल।

ख्यांनम (भाषांभी এकमा त्रांखनभरत গিয়া উপস্থিত হইলেন। প্রশস্ত রাজ-পথ পরিত্যাগ করিয়া একটা অন্ধকাব গলির ভিতর প্রবেশ করিলেন। গলির হুই পার্শে উচ্চ অট্টালিকা শ্রেণী; र्शामिय मधार्ष्ट्र अक अकरांत्र शनित हेरकालंत बन्न, এवः विवाह भन्न कालंत छिन्न छिक् भारतन भाष। एरभर्त অন্ধকারেরি অধিকার। গলির পাশের कत्र छाद्या आभारतित द्य नाहे। आभा- এकी मार्जना वाफ़ीटल, छनानन ठाकूत्र व्यादम कतिरलन। निम्नजल वकी चरत, रघथान व्यक्तवयका अक्री खीलाक পাক করিতে ছিল, সেই খানে গিয়া তোমায় ধর্ম শিখাইব ? তুমি বীর, ভবানন্দ মহাপ্রভু দর্শন দিলেন। স্ত্রী । की वानम कास्नारम शमभम रहेगा कारमा, छिंछि भन्ना, कथारम छिकि, नीखि । প্রফুলচিতে বলিতে লাগিল, ইাড়ির কানায় ভাতের কাটি বাজিতেছে,

কর কর করিয়া অলক দামের কেশ ভাল উড়িভেছে, গল গল করিয়া মাগী আপনা আপনিশ্বকিতেছে, আর ভার খুধ ভালীতে ভাহার মাথার চুড়ার নানা-প্রকার টলুনি টালুনির বিকাশ হইতেছে। এমন সময় ভবানক মহাপ্রভু গৃহ মধ্যে প্রবেশ করিয়া বলিলেন;—

"ঠাকুকণ দিদি প্রাতঃপ্রণাম ! " टे। क्रूज़ पि पि जियान स्क (प्रथिया, भेभे-वाट्य वञ्चापि मामनाहेएक नाशितना। मछ (कत (माइन कुड़ा थूनिया) (कनिर्वन ठेका हिन, किन्द स्विधा इहेल गा, (कनना मक्षि हां । निष्यक्रम् ८ मह চিকুর জাল-হায় ভাহাতে পূজার সময় একটা বকফুল পড়িয়াছিল !— বস্তাঞ্চল ঢাকিতে যত্ন করিলেন; বস্তাঞ্চল ঢাকিতে नक्रम इहेल ना, (कनना ठाकुक्रणी একখানি পাঁচ হাত কাপড় পরিয়াছিলেন। সেই পাঁচ হাত কাপড় প্রথমে গুরু-**ভার প্রণভ উদরপ্রাদেশ বেষ্ট্রন করিয়া** আসিতে প্রায় নি:শেষ হইয়া পড়িয়া-िंग, जात भरत जुःमर खात्र शक्त समेत्र मछत्मत्र किছू चावक भन्न तका कैतिएक इदेशास्त्र । ८ लास्य माथाय (लोकिया विष्ठाक्षण कवाव निल। काटनत खेनत ' উঠিয়া বলিল আর যাইতে পারি না। वश्वा भन्न बीषावकी (भोन्नी ठाकुनानी कथिक वजाकगरक कार्वत्र कार्छ धतित्रा वाशिक्तन। धारः ভবিষাতে আট হাত कांशफ किनियांत क्या मत्न महन मृह शिष्ठिकावष बहेना विलिश्निन" (क शामाहे

ঠাকুর দ এস এস! আমার আবার প্রাতঃ প্রাণান কেন ভাই ?"

छव। जूभि ठान्मि (य!

গোরী। আদর করে বল বলিয়া। তোমরা হলে গোসাই মাহ্ম, দেবতা! তা করেছ করেছ, বেঁচে থাক। তা করলেও করতে পার, হাজার হোক আমি বয়সে বড়।

এখন ভবানদের অপেক্ষায় পৌরী দেবী মহাশরা বছর পঁচিশের বড়, কিন্তু স্থচত্র ভবানদ উত্তর করিলেন, '' সেকি ঠানদিদি! রসের মানুষ দেখে ঠানদিদি বলি। নইলে যখন হিসাব হয়েছিল, তৃমি আমার চেমে ছয় বছরের ছোট হইয়াছিলে মনে নাই ? আমাদের বৈষ্ণবের সব রকম আছে জান, আমার প্রান্ধ মনে মনে ইচ্ছা মঠধারী ব্রহ্মচারীকে বলিয়া তোমায় নিকে করে ফেলি। সেই কথাটাই বল্ভে এসেছি। ''

গোরি। সেকি কথাছি। অমন কথা কি বল্ভে আছে। আমরা হলাম বিধবা।

ভব। তবে নিকে হবে না কি ?
গোরী। তা ভাই, যা জান তা কর।
ভোমরা হলে পণ্ডিভ, আমরা মেয়ে
মানুষ কি বৃঝি, তা, কবে হবে ?

ভবানন অভি কষ্টে হাস্য সম্বরণ করিয়া বলিলেন "সেই ব্রহ্মচারীটার সঙ্গে এক বার দেখা হইলেই হয়। আর—সে কেমন আছে ?"

(भोती विषक्ष कृष्टिम। यदन यदन मर्दमक

করিল নিকার কথাটা ভবে বুঝি ভামাসা। विनन, ''आहर जात दक्यन, दियन थाटक।"

ভব। ভূমি গিয়া একবার দেখিয়া चारेम (कमन चार्ह, विद्या चारेम আমি আগিয়াছি একবার সাক্ষাৎ করিব। পৌরী দেবী তথন ভাতের কাটি रफिलिया, हाठ धूरेया व व व धार्भिय সি জি ভালিয়া, দোতালার উপর উঠিতে लाशिन। এक छी चदत्र मिनन भयाति উপর বলিয়া, এক অপূর্ব স্থলরী। কিন্ত · সৌন্দর্যোর উপর, একটা ঘোরতর ছায়া चाट्य। यथाट्स क्लभित्री अनन मिना विभूनंबनक स्मानिनी (आउप छोत्र बरकत छे भन्न अ जि निविष् भिर्मात हात्रात्र े नाम किरमन हात्रा व्याहि। नगैक्परम ভরদ বিক্সিপ্ত হইতেছে, তীরে কুসুমিত खक्क वाग्रुजरत (श्विष्ठष्ठ, घन भूभ ভরে নমিভেছে, অট্টালিকা শ্রেণীও শোভিতেছে। তরণীশ্রেণী তাড়নে জল व्यात्मानिक इंदेरक इं कान मशाह, ज्यू (महे कामिश्रनी निविष् काला हाआप्र मकण শোভাই কালিমামর। এও তাই। সেই কলাাণী। এ প্রশ্ন কি আপনি ত্যাগ পুর্বের মত চাক চিক্কণ চঞ্চল নিবিড় चनकामाम, शृश्यंत मड त्मरे धानख ' পরিপূর্ণ ললাটভূমে পূর্বা মত অতুল তুলিকালিথিত ভ্রাধন্, পূর্বের মত বিক্ষা-तिक मजन उज्जन कुक्छान पुरुक्तक, ভত কটাক্ষমর নয়, ভত লোলভা নাই, किছू नञ् । अथटत एउम्म तार्श तेल, श्रम टियनि चाराञ्गामी भूनजात्र एन एन,

बार (अमनि वनामंडाइट्याना (कामनंडा युष्ट । किन्न जान (म मेरेशि नारे, (म উজ্জণতা নাই, সে প্রেরণরতা নাই, সে **एक गड़। नाहे, भ्रम नाहे। विलिए कि,** युवि (म योवन नार्हे। चाष्ट्र करते (म भोमार्था जात (म माधुर्या। न्छन इहेब्राइ देश्यां गाष्टीया। इहारक शृद्ध दिश्वा मान इरेड, मस्या लाक व्यक्तनीया चुम्हती, ज्यन (प्रथित्य (वाध इम. देनि एमवटलाटक भाभशासा (मरी। देशत हाति भार्य इहे जिन बाना जुनार्टेन्न भूषि भिष्मा जाहि। (मञ्जादनज्ञ शाद्य इतिमारमज्ञ माना हाजान जारक, जात्र मरश मरश जनताथ, वलताम. ञ्ख्यात पठ, काणीत गमन, नवनाती কুঞ্জর, বস্ত্রহরণ, গোবর্ত্বন ধারণ প্রভৃতি जयनीनात हिज प्रक्रिक चाहि। हिज खनीत नीत्र लिया चाइ, " हिळ ना विकित ? '' दमके शृह मदश ख्वानम व्यटनम कत्रिरनन।

खनानम जिल्लामा कतित्वन, ''क्यम कलानी भावितीक मकल छ ?"

क्तिर्वन ना ? जामात भातितीक मण्डल व्याभनाष्ठ्र कि रहे, बाब व्यामात्र वा कि रेडे ?

खव। *(य वुक्क (त्रांभव करत्र, (म खारां*टि निजा सन (मन्। शाष्ट्र वाफ्रिलिट जारात ञ्च, তোমার মৃত দেছে আমি जीवन (बाभग किवाब, वाष्ट्रिक कि ना, जिल्लामा कवित मा (कम ?

क। विस्वृत्यन्त्र कि यन्त्र चाह्य ? छव। कीवन कि विव !

कारा भारतकात्रिक ठारित्राहिनाम (कन १ कत? किनि का कामात्र भाषा मृख। कतित मान किन, माहम कतिया किस्टामा विषयत्र कतित्राष्ट्रिण ?

कनानी फित्र ভाবে উछत्र कतिरमन, वात्र रम कथा रकन कनानी ? ''आभात की वन किह विषयत्र करत नारे। क। मतिरण कि नचक यात्र ? किनि की वनहे विश्वमय । क्यामात्र की वन विश्वमय, चालनात 'कोवन विसमय, जकरणबरे कीवन विश्वमा ।"

छव। मणा कनाानी कामात्र कीवन कव। (महे थान्हे काष्ट्रम। বিষময়। বে দিন ভাবধি—ভোমার বাাক ক। কি কাজ করিতেছেন ? রণ শেষ হইয়াছে ?

ন্ত্ৰীত্ব শেষ হয় নাই।

ভব। অভিধান ?

व्याहेट भाति ना। माहिला भूका मक (छन। তিनि आगा किश्व किन वाह। निषा श्रेटिक १

পরিত্যাগ করিয়া হিজোপদেশ পড়িতেছি। ख्दा (कन कलाानी ?

क्लाभि। क्याद्य (एव हिन्स, विद्या-भटमम् भक्षप्रतिख।

कर। त्यस्तित साहिता, भक्तित्व व मर्त्राश्चित्र १

क। हिन्छ यम मट्ट यनिया। जानाव স্বামীর সম্বাদ কি প্রভু ?

क। ना इत्क व्यमुख निक्रान व्याम खर। रात्र वात्र मिनवान (कन विख्डान। अख्य। (म कथा ष्यत्मक मिन खिखामा क। षामि छै।त পকে মৃত, छिनि ष्यायात्र भटक नन।

করিতে পারি নাই। কে ভোমার জীবন ভব। তিনি ভোমার পক্ষে মৃত্বৎ श्रेटियन विनिन्नारे ७ जूमि मित्रिटन । वान

(क्यन चार्छन ?

छव। ভाग चाट्टम।

्व। (काथाव चाट्चन ? भक्तिटक ?

ভব। যাহা করিতেছিলেন। ক। সকলি শেষ হইয়াছে। কেৰল নির্মাণ, অস্তানির্মাণ। তাঁহারই নির্মিত অন্তে সহস্ৰ সন্থান সজ্জিত হট্য়াছে। ভাছার কল্যাণে কামান, বন্দুক, গোলা, क। चर्न वर्ग वृत्रिष्ड পाहिणाम मा। श्वेली, वाक्राफ्त चामाप्तत्र चात्र चडाव আপনি বুঝাইরা দিতে পারেন ? নাই। সন্তান মধ্যে ভিনিই শ্রেষ্ঠ। ভব। याद। जाপनि বুঝি না, ভাছা ভিনি আমাদিগের মহৎ উপকার করিতে-ক। আমি প্রাণ ভ্যাপ না করিলে কি

🕶। পূर्याभन वृत्या ना। क्यानमक्त अब इबेब १ यान वृत्क काम। (भाना कनमी वैषा (म कि ভवमपुष्ट माजात क्टिल भारत ? यात्र भारत दलाकात्र (भिकेन (म कि पो ज़ाब है दिकन मजामी कृति अ ছात्र कोवन त्राधित्राहिटन ?

> चय। जो मर्थन्त्री, थर्चत्र मराय। क। द्वां द्वां वर्षा वक्र वक्ष वर्ष

कणेक। ''कणेंटकरेनव कणेकः'' वामि विष कण्टेक्त बाता ভाशत अधर्य कण्टेक छक्त छ করিয়া ছিলাম। ছি। তুরাচার পামর ব্রহ্ম-চারী! এপ্রাণ তুমি ফিরাইয়া দিলে (कर्न?

खव। खान, या नित्राहि जा ना रुन আমারই আছে। কলাাণী! যে প্রাণ ভোমায় দিয়াছি, ভাহা কি ভূমি আমায় দিতে পার ?

क। আপনি কিছু সম্বাদ বাবেন কি, আমার স্কুমারী কেমন আছে? कारनक मिन रम मन्नाम भारे नारे। जीवानम व्यत्नक मिन (म मिटक यान नारे।

ক। সে সম্বাদ কি আমায় আনাইয়া मिटि পार्विन ना ? जामीरे जामात जाना, বাঁচিলাম ভ কন্যা কেন ভাগে করিব? ক। পরকাল ? এখনও সুকুমারীকে পাইলে এ জীবনে ভব। অভল জলে। কিছু সুখ সন্তাবিত হর। কিন্তু আমার জন্ত ক। মহাত্রত ? এই ভবানন্দ নাম ? আপনি কেন এত করিবেন।

ভব। করিব কল্যাণী। তোমার কন্যা आमिया पिय। किन्दु हात भन्न १ क। ভার পর কি ঠাকুর ? ভব। স্বামী?

क। ठेका शूर्लक जााग कतिवाहि। ভব। যদি তার ব্রত সম্পূর্ণ হয় ? क। ७८४ डाँद भारत नुष्ठाङ्ग । व्याम (य वैं। हिया चाहि जिनि कि कादमन ?

क्व। नः।

क । व्याणनात्र मदन कि डाहात्र माकार . र्बे ना ।

छ्य। इत्र।

क। कामात कथा कि कि इ राजन ना ? ভব। না, যে জ্রী সরিমা গিরাছে ভাহার 🤈 मद्य यागीत जात मयस कि ? क। कि विनिष्ट इन ?

ভব। তুমি আবার বিবাহ করিতে পার, ভোমার পুনর্জন্ম হইয়াছে।

क। जाभात कना। जानिया माछ। छव। मिव, जूमि आवात विवाह कतिएउ পার ?

ক। ভোষার সংক্ষেশাকি ?

ভব। বিৰাহ করিবে ?

ক। তোমার দকে নাকি?

ভব। यमि छारे रग्न ?

क। मसान धर्मा काथात्र था कित् ?

ख्र। च्युन ब्राह्म।

ख्य। व्यव्य ब्रह्म।

क। किरमत बना धमद घडन बरन **जुनाहेटन** ?

ভব। তোমার জনা। দেশ, মহুধা इडेन, अधि इडेन, मिक इडेन, (मव⁸ी इडेन, हिख करण ; धर्म कथर्मात कार्ड পরাজিত। যুধিষ্ঠিন বলিয়া ছিলেন, ''সখ-' খামা হল ইতি গ্ৰ''; ইস্ত সহস্ৰলোচন, ध्य कलकी, लका कछानाभी। अखानधर्म আমার প্রাণ, কিছু আজে প্রথম বলি, क्रिके कामान खानाबिक खान। य निन **ट्यामाम व्यानमाम कतिमाहिलाम,** ट्रिडे

मिन इटेटि छामात्र भाषमूर्ण विक्रीछ। क। তবে তুমি विकात इछ। আমার वामि जानिकाम ना, (य मः नादत এ क्रार्थ-वाणि चाष्ट्र। • এমন রূপরাশি আমি ভবানন সাশ্রেলাচনে বলিল, ''দিব। कथन हरण मिथिव खानिएन, कथन मखान পর্দ্ম গ্রহণ করিভাম না। এ ধর্মা এ আগুণে পুড়িয়া ছাই হয়। ধর্মা পুড়িয়া গিয়াছে, প্রাণ আছে। আৰু চারি বৎসর প্রাণও পুড়িতেছে, আর থাকে না। দাহ!কলাাণী ভবানন বিদায় হইল কল্যাণী পুথ मार्। जाना ! किंद्र जनित्य (य रेकन छारा আর নাই। প্রাণ যার। চারি বৎসর সহ করিরাছি আর পারিলাম না। তুমি আমার হইবে ?

ক। তোমারি মুখে গুনিয়াছি যে সন্তান धर्णात अहे अक नित्रम (य, (य हेलिय পরবশ হর ভার প্রায়শিত মৃত্যু। একথা কি সত্য ?

ভব। এ কথা সতা।

ক। তবে তোমার প্রায়শ্চিত মৃত্যু ? ভব। আমার এক মাত্র প্রারশ্ভিত युक्रा।

ক। আমি ভোমার মনস্বামনা সিদ্ধ कतिरल, जूमि मतिरव ?

ভব। নিশ্চিভ মরিব।

ै क। जात यनि मनकामना निक ना করি 📍

ভব। তথাপি মৃত্যু আমার প্রায়শ্চিত্ত; रकन ना िख जामात रेखिएत्रत रण रहेबाट्य।

ক। আমি ভোমার মনস্বামনা সিদ্ধ कतिवना। कृषि करव मतिदव ? छव। जानामी मूटका

कना। পाঠाইया मिट्य कि ?

व्यामि मित्रिया (शिंटन व्यामाय मित्र वाथिटन कि ?"

कलानी विलल '' दाथिव। ব্ৰভচ্যত व्यथनी विनया मटन व्राथिव।" পড়িতে বসিল।

পঞ্চম পরিচেছদ।

• खवानम खाविट छ।विट मर्छ हिन-লেন। যাইতে যাইতে রাত্রি হইল। পথে একাকী যাইতেছিলেন। বনমধ্যে धकाकी श्रारम क्रिल्म। एमश्रिमन বনমধো আর এক ব্যক্তি তাঁহার আগে चारा याहेट ७ इ। ज्यानम विकामा कतित्वन, " (क (इ या ७ १"

অগ্রগামী বাক্তি বলিল, "জিজাসা क्रिटं कानित्म উত্তর দিই—णामि পথিক।"

खव। वस्स्।

অগ্রগামী ব্যক্তি বলিল. "মাতরং।"

ভব। আমি ভবানন্দ গোস্বামী।

वाशगामी। वामि धीत्रानमः। -

छव। धीत्रानम, काशाय शियाहित्न ?

धीत। ज्याननात्रहे मसादन।

खव। (कन ?

धोत। धक्छ। कथा वलिएछ। .

ख्य। कि कथा ?

धीत। निर्द्धान वक्तरा।

ভৰ। এইখানেই বল না, এ অভি निर्कानशान।

ধীরণ। আপনি নগরে গিরাছিলেন ?

छव। दै।

धीत। शीती (मवीत गृट्ट ?

धीत। (**मशारन এक** हि भन्न सम्मनी যুবভী বাস করে ?

ভবানন্দ কিছু বিশ্বিত, কিছু ভীত হই- ভবানন্দ তরবারি দ্বিকাষিত করিরা **टान।** विनिट्न-"এ সকল कि कथा?" ধীর। আপনি তাহার সহিত সাক্ষাৎ ধীরানক না পলার। कतियां ছिल्न ?

ভব। তার পর ?

ধীর। আপনি সেই কামিনীর প্রতি অভিশয় অমুরক্ত।

ভব। (কিছু ভাবিয়া) ধীরানন্দ, , ভব। তাহার যে স্বামী আছে। · Cकन এত সন্ধান শইলে ? দেখ ধীরানন্দ ধীর। বৈফাবের সেরূপ বিবাহ হয়। তুমি যাহা বলিভেছ, ভাহা সকলই ভব। সেনেড়া বৈরাগীর—সম্ভানের সতা। তুমি ভিন্ন আর কয় অন একথা নহে। সম্ভানের বিবাহই নাই। बारन ?

थीता आत (कर ना।

धीत। भात।

তুই জনে যুদ্ধ করি। হয় ভোমাকে বধ অধর্মো মতি দিতে আসিয়াত ? অরশ্য कतिया जामि निक्किक वरे, नव जूमि তোমার কোন স্থার্থ আছে। व्यामारक वस कतिया व्यामात मकन व्याना थीत । खाद्या विवास है कि। व्यादहर् निर्वाध करा अञ्च चाट्ट ?

थोत्र। चाट्ड-७४ हाटड कात्र माश्र (जामात मरक व मक्न क्या क्रा युक्तरे यमि दिलामात मक इत्र, करव व्यवभा कतिय। मखारम मखारम विरत्नाथ निशि किन्द्र जाणुत्रणात काना काहातव भरक विद्राथ निविक नट्ट। किन्द्र याहा विनवात कना जामि ट्यामाटक श्वारक ভব। ভূমিও নগরে গিয়াছিলে না কি ? ছিলাম তাহা সবটা শুনিয়া যুদ্ধ করিলে छाल इस ना ?

ভব। ক্ষতি কি—বল না।

सीवानत्मव ऋत्म ऋाणिङ क्वितिन।

ं धीत। जामि এই বলিতেছিলাম,—ভূমি कलाागीरक विवाह कर---

ভব। কল্যাণী তাও ভান?

थोत। विवाह कब्र ना (कन?

ধীর। সন্তান ধর্ম কি অপরিহার্যা— তোমার যে প্রাণ ধার। ছি! ডি! ভব। তবে তোমাকে বধ করিলেই আমার কাঁথ যে কাটরা গেল 💡 (বাস্তুঞ আমি কলক হইতে মুক্ত হইতে পারি ? বিক এবার ধীরাননের ক্ষম হইতে রক্ত পড়িতেছিল।)

ভব। আইস তবে এই বিজন স্থানে ভব। তুমি কি ক্ষভিপ্রায়ে আমাকে

कत्रवात्र वनाहेश ना, वनिद्रकृषि। धरे

সন্তান ধর্মে আমার হাড় অর অর

হর্রাছে—আমি ইহা পরিত্যাগ করিরা
প্রীপ্রের মৃথ দেখিরা দিনপাত করিবার
ক্রমা বড় উতলা হইরাছি। আমি এ
সন্তান ধর্ম পরিত্যাগ করিব। কিছ
আমার কি বাড়ী গিরা বসিবার হো
আছে? বিলোহী বলিয়া আমাকে
অনেকে চিনে। ঘরে গিরা বসিলেই
হয় রাজপ্রুষে মাথা কাটিয়া লইরা
যাইবে, নয় সন্তানেরাই বিশ্বাস্থাতী
বলিয়া মারিয়া ফেলিয়া, চলিয়া যাইবে।
এই জনা তোমাকে আমার পথে লইয়া
যাইতে চাই।

ভব। কেন আমায় কেন ?

धीत। ८मरेषि जामन সন্তান সেনা ভোমার আজাধীন—সভাা नम এখন এখানে নাই, তৃমি ইহার नाग्रक। जूभि এই দেনা लहेन्ना गुक्त कत, टिशमात क्या इटेटन, हेटा आमात पृष् विश्वाम। युक्तकन्न इहेटन कृषि टकन खनारम রাজাস্থাপন কর না, সেনা ভ ভোমার আজাকারী। তুমি রাজা হও-কল্যানী তোমার মন্দোদরী হউক, আমি তোমার অমুচর হইরা জীপুজের মুণাবলোকন ক-রিয়া দিনপাত করি, আর আশীর্কাদ করি। मसान धर्मा व्यक्त करन पूराहेशा माछ। खवानक, धीवानरकत्र ऋक इटेर्ड खत-वाति शीरत शीरत नामाहेरणन। शीत्रानमञ् मित्रिया (शर्मा छवानम किहूमण जना मना ছिल्मा, यथन युक्तिलान उथन जात **७ शास्त्र क्षिर्छ भाईरमन ना ।**

यर्छ পরিচ্ছেদ।

মঠে না গিয়া, ভবানন্দ গভীর বনমধ্যে প্রবেশ করিলেন।

সেই জঙ্গল মধ্যে একস্তানে একপ্রাচীন অট্টালিকার ভগ্নাবশেষ আছে। ভগাব-শিষ্ট ইষ্টাকাদির উপর, লতাগুল্মকণ্ট-কাদি অতিশয় নিবিড় ভাবে জন্মিয়াছে। (मथात्म व्यमःशा मर्भित वाम। প্রকোষ্টের মধ্যে একটি অপেকাকুত অভগ্ন ও পরিস্কৃত ছিল, ভবানন্দ গিয়া তাহার क्रिया ज्वनाम िष्ठा क्रिट्र लागित्न। রজনী অভি ঘোর তমদাময়ী। তাহাতে **म्हिल्ल जिल्ला अल्ल किल्ल, क्रिक्रा अल्ल किल्ल** बनमृना, অভিশয় নিবিড়, বৃক্ষণভায় क्टर्डमा, वना পশুরও গমনাগমনের वित्राधी। विभाग, अनम्ना, अक्रकात श्ट्रां, नीतव ! त्रदत्र मस्या पृत्त व्याध्यत হস্কার অথবা অন্য শ্বাপদের কুধা ভীতি वा जान्हानरनत विकठे नका कमाहिए (कान वृहद भकीत भक्क कम्भन, कनाहिद ভাড়িত এবং ভাড়নকারী, বধ্য এবং वधकाती পশুদিগের জ্রুতগমন শক। (महे विज्ञास व्यक्षकाद्र खग्न बाह्रोनिकात উপর বিদয়া একা ভবাননা। তাঁহার পক্ষে তথন (यन পृथिवी नाहे, जार्थवा (कवन छ एवत উপामानमधी इहेग्रा आ एहन। (महे मगर्य ज्वानम क्लाल हाज मिया ভাবিতেছিল; न्यन नाहे, नियान

नारे, छन्न नारे, चिं প्रशांक िखान नियध। यत्न यत्नं विणि ছिल्ननं, 'धारा ভবিতব্য ভাহা অবশ্য হইবে। আমি ভাগী तथी जन जतक मगीर्भ क्षु गकराह স্থাপন করিয়া কি করিব ? ইহা আমাকে कतिएक इहेम्राष्ट्र, अपृष्टि याश थाएक इहेर्द। जाननाद अवन जानि ना वृक्षिया यागमध्य जामि जूनिक हरेटक উঠিয়াছিলাম। यে লোভী, यে পাপিষ্ট, यে ইন্ত্রির পরবশ, যে অধন্মী তাহার আবার ধর্ম কি' ণ ভাহার আবার সভা কি ? পাপে আমার ভয় কি ? অনস্ত নরক আমার क्रभारम निश्चित । इंड्डीयन थ्वःरम्ब जञ्चावना, এই ইহজীবন श्वःरम आगांत्र ভয় কি ? অভএব যাহাই কপালে ঘটুক, আমি এছমর্ম করিব। এদিকেও ल्यान यात्र, (म मिटक्छ ल्यान याहेदन। य विभम मूत्रवर्खी छाशाक উপেক्ষা कतिया रिय विश्रम निकंपेवडी डाहा इहेटड আপনাকে উদ্ধার করিতে হয়। আমি थोत्रानत्मत्र भन्नामर्भ छनिय।—ना ! धर्मारे जर्कारिका शक्त, व की वन इस रहा वह यूर्विहे मर्न प्रश्नात (निष हरेटि भारत, কিছ জন্মান্তরের তো শেষ নাই। a बीवान चामि यमि स्थी हहे, म क्रे मित्नत बना, शत्रामात्क यमि व्याभि ছः थी रहे, म् जनखकारणत जना।" এমন সময়ে পেচক মাথার উপর মুদ্ গন্ধীর শব্দ করিল। ভবানন্দ তখন . मूक्करर्छ विलाख नाशितन "ও कि जिन ? कार्टश रचन रजन, रचन यम जामान

তথন সেই ভীষণ কানন মধ্যে হইতে
অভি মধ্র অথচ গীন্তীর, মর্মাভেদী
মহাষা কণ্ঠ প্রভ হইল; কে বলিল
"ধর্মোভোমার মভি থাকিবে—আশীর্মাদ
করিলাম।"

किस (कर पर्णन पिन ना — (कर छेखत कित ना। ख्यानम श्रनः श्रनः छाकि-लन—ख्रित शाहेलन ना। ज पिक खिन क्षित्र ना—क्षित्र ना।

যথন রন্ধনী প্রভাতে প্রাভঃ স্থা উদিত হইরা বৃহৎ অরণ্যের শিরঃস্থ শ্রামল পত্র রাশিতে প্রতিভাসিত হইতেছিল তথন ভবানন্দ মঠে আসিরা উপস্থিত হইলেন! কর্ণে প্রবেশ করিল—'হরে মুরারে! হরে মুরারে।" চিনিলেন স্ত্যানন্দের কণ্ঠ। বৃবিলেন, প্রভু প্রত্যাগমন করি-রাছেন।

तुक्रमञी।

কান্য।

(बिनवीमहत्त (भन थ्रानी छ)

यक्ष का वा स किमर्ग नवा दक्ष नवा दला-हना करवन ना, क्लाइन ना महन्। हन काहा मगालाइनात त्याचा नरह। नगालाहा ''तक्रमको कारमात्र'' উৎসর্গ পরা বাশ্ত-विक मबादलाहनाय (यात्रा। यात्रामीत काबादगढाडांच खेलल करनरकत्र धमनहे करेन किन, दब कैश्वादा कनाप्रांत्म विद कतिएक यान ८व ''वाकानी कवि ८कन ?'' मर्ग इहेर्डिह, देमचिन अक कम रण्यक बिछाना क्षिटिक्टिशन " वाजानी कवि नम (कन ?'' दकान् कथा डिक् अदकवारम वित्रा छेठा वफ जरूक नरह; जर्फ, वानानीरक चहनिक चलिएक खान दवन कॅमिया छिट्छं। ८म राहा इडेक, ८व देवित कविवासिका विकारभन्न व्यथाम উপকরণ, বঙ্গসমাজে ভাহা বড় নাই। धरे विविद्धिणीय समाद्य देववित श्रामित्र क्षाः चाष्ट्रविंडा भाजनामी। छेडतार िखानीन चीकात्र कत्रिटयन ८ए 'यमग्रास काटवाज आण्य ८क्टल नरहा वरकत जय-जन (क्टब अनशामिन (यमन क्या)हरू-गिष्टिक विरिष्ठ लाज, ममाबदकट्य को गा-मभीत्रव दक्षम्म दक्षीकाभाभाभी मदस्।

कि जारण । देशान केवल जरूका । स्थारे

এই চিরস্থিভিশীল সমাজের অটুট বন্ধনী-গুলি কালপ্রভাবে এক এক বার भिथिन रहेशाटक, अप्रति वटक कावा जित्रयारक। देवरमिक ভाবপ্রবাহ যপন বহিয়াছে, ভপনই কাব্য দেখা **मियारह— (कम ना उथन ममाक टेविड-**द्वात महिमा वृक्षित्राष्ट् । श्वीकात कति, সমাজের এইরূপ অবস্থাতেই সকল (मर्म कावा करका। किन्न देशां श्रीकात्र করি যে, ভিভিশীলতায় বঙ্গসমাজের कुलना नारे। नतीम्थनील कर्मम-রাশিতে কতিপয় সহস্র বর্ষ মধ্যে বঙ্গভূমি গঠিত না হউক, কিন্তু স্থিতিশীল আৰ্য্য-জাতির শেষ লীলাস্থলী এই বঙ্গভূমি। তাই সমাজবন্ধন এত কঠোর।—কেন ना, निविवात चारश श्रामी अक्रमजत रम ! मगाव्यक्त এত कठीत विद्यारे, मिथिलावशाम हेरांत कार्याटक अख প্রাপন্ত হইয়া উঠে। যেখানে ঘাতের द्यशं क्षवन, व्यक्तिशास्त्र द्यशं द्रम्थादन অসহ।

वाजनात ''तज्ञमधीत' कवि, छेरमर्ज-भट्य चीत्र कीवटनत देविका वृक्षाहरूष्ठ खन्नाम भारेत्राद्यन । जना (मटम मा कार्या ममार्गाहरूव । देवार्ड बर्ड कार्यम व्या गात्। कवित्र श्राष्टि जामारमत छकि रक्षमन, छाहा जानिएछ छछ कहे भारेएछ हम मा। সাधात्रभण्डः वाकामी ममारणा-ठक यमि वजकविजीवरनत दैविज्ञा वृत्रिर्छन, छरव जात्र वाकामी कविरक निर्ह्मत कथा निर्म बनिएछ हरेछ ना।

इत्र गर्भ "क्रम्यको" कावा त्यव इत्राह्म। क्षयम गर्भ, कारवाम नीमक वीरमस्मम त्योक्षम काव काव-काम कावाम इतिमक्षम वर्षिक इत्रमास्य। गर्भामस्य निमारयम इतिम्न कमनीम वर्षे। व्यास वामनोक्षामाम "क्ष्यक्षमाम भीक" क्षम न्यम क्षिमिम। कावा याका व्यार्भ व्यथाकिम वामा बाम किल्नु नाहै।

विद्यास मार्क-"कानम क्रमीत त्यन-क्रायस मन्दित " स्वृथ प्रा वीद्रित । क्रायस भाषाँ विजया जनविनी । स्वृथं वीद्रितस मिलास भाषि नारे---

निजांत्र गांगरत

क्षणियोश "वरम वीद्रिख!" म्यापन क्षणियोश "वरम वीद्रिख!" म्यापन क्षणियो युवान निजा क्षण हरेग। क्षण क्षिम जानन चश्रकाकहरण कीव्यनन भूक्षणियो विश्वक क्षिणम ।

करे नीचं विद्विष्ठ यक जवाणाविक करेशारक। कवित्र मरनावत कवित्रक्षण रेशा भक्तिक जारक। करे गर्ज मरावाडे क्रिकेश जरक। करे गर्ज मरावाडे क्रिकेश जिसकीत कर्की यक समाप्त क्रिकेश जिसकीत कर्की यक समाप्त क्रिकेश जारक। करे विद् भून करे कालत। क्रिकेश जिसकीत रहते भक्ता जाकुक

बीत्ररचत्र काश्नी পड़िया लाउंटक्स महन डीरात शकि त्य खिल जाता, कवि नदीन-राखन धरे यमाणनविष्ठ, मूज दिव ভাষার শত খন কল হয়। এই দেখুন, "नगरम किशारम भूनः खनीखं रमभ, " नगरि धमनीयत्र चीक, चात्रकिम,---यागार्क कित्रनदत्त्रथा, साम दत्र दयमि किम गगरन चरन निमाच-टाकारक। क्षिड व्यथरत भूनः विगिष्ठ जातिना। 'पद्मा चानि ! चानि पद्मा महाबाह्रेक्रन!' त्याव चढ़ शनि बीज छेडिन शनिया। रामिया र पामि छ मरर। देखन्न भक्ति चारवनं कृषत ऋष रूजानन-त्राणि **रहेम निर्मेख (यन !— उन्नहत्र हानि !"** . अरे डिस चड़ समात्र, यड़ डिमीशक बटि, किन देश वधानात्म निर्विण स्म मारे। चन्नवृष्टांच (माम कतिया जीवन वृष्णां चात्रष कतिया निर्कानवानिनी क्षिमीय अक्षिम क्षांभ गागिरमध শাগিতে পারে, কিছ অন্যের পক্ষে তাহা चनरा। ८मरे छेलनग्रमकारर निवजीत धरे मुख हिंच चानिया निवाद ;-- कविव छिपीनमा ७८५७ देशाव कम हात्री रत गारे। लिक्जीन छेलन क्फ जिल्लान कत्रा स्टेबाट्य। अटे ब्रहाहिस्कत्र (भीष-बाष्ट्रवाद्य कवि श्रमा क्टर्मम हिल, काट्याम व्यथम गर्भ मधायम निरम जान कति-**(छम। ट्राईबाटम ज्यामना सम्म छ**निमा यहाताडे इंटम ट्लिय हिन्दूक्जिकिनक निव-कीत्र जनक शबीत्र मृष्टि त्यांच्छाम ! छारा रहेरण जान निजानरीय गंगमर्था, निम

स्त्रक्षां की कर्ष विद्यस्त मूर्य श्रीति वृद्धि मम नाट्य क्षित्र क्षित्रक्ष्म, श्रीति वृद्धि मम नाट्य क्षित्र क्षित्रक्ष, श्रीति वृद्धि मम नाट्य क्षित्र क्षित्र क्ष्मती श्रीति वृद्धि माना बीट्य, स्वन्य मूर्य स्त्रा माना क्षित्र, स्वन्य मूर्य स्त्रा माना क्षित्रक्ष क्ष्म ना। श्रीति काट्याय वाहा क्ष्म, स्त्रीति व्यक्ति, स्त्राह काट्याय वाहा क्ष्म, स्त्रीति हरेस।

एकी प्र महर्गन सूचा वर्गनी क विषय, हस्य-(भवत्य स्मृष्ठ देगर्गिक (भाषा । धारे कार्याय स्मृष्ठ स्मृण्य किम्पूर्ग वर्गन कार्याय स्मृण्य महर्ग रेहां स्मान्य स्मृण्य किम्पूर्य स्मृण्य स्मृण्

"एउँकि शक्षात्रम् जागामित्रस्य जाभाः শ্বিত করিলেন ! "लारारे ट्यामास नाना ! गारा चाटर मन দিতেছি বলিয়া—এক তণ হয় তাহে मधि इरे ७१-- जिम ७१ मू 5 जात मथा ठळूळें । क्या छेएत मार्गरत क्षि, इश्र जब्बाणि, जुडि मश्राहत । कीवन यहिका काटक, — वर्षत्र भिभागा।" हर्ज्य मर्टर्भ "क्रममञ्जी यदनव" ছवि ।— त्म वर् स्मार । উक्तरम मृत्य विमा व्यक्षाटक वीरमञ्ज किसायमः। त्रवेशात्र वित्रम जिनि देममद्दन कथा छावित्ज-**हिट्या ट्रियाट्य , ट्रेक्ट्याट्य अ**त्रम स्थ, मत्रम की जित्र महिल योगतन कृष्टिम ভাবের ভূদনা করিছেছিলেন। रेममरदत्र (क डिज्रमंकिनी,—मृनाक्षमत्रा कालिका,--(योवटनत दय अथयथ जाकात कथा—(मरे कुक्रुरमद कथा—किनि अक-भाग काविष्ठिक्तिन । এই वर्ग वालिक। कुक्रुरमत मरक रक्षमम रचना कतिर्जन, (क्यन व्यव्हेत विवास कतिएक्स, रम मन কথা মনে পড়িয়া ভাঁহার স্বভিদাগর মঞ্চিত্র इहेट छिन। दय मकन कविजात धने দুশা চিত্রিত কট্রাছে, ভাছারা বড় (म।इमन ;-- भार्रकटक दक्ष मञ्जूष करते। किन वहे पृथा याषामा कारता जात क्रवात (मिथ्राक्रिगाम। वीद्यक्षः कृष्ट-मटक (कथिया, खाळाण-टेलविक्रीय वाना-काटनत दागरो। मरम अभिना वाक।

वीरतरस्त स्टब्स किया थामिया रणन — दक्त ना जिन पूरत निकातीत वीतर्गान

खनिएक भाष्ट्राचम । এই मिकातीत गारमत व्यापः मा कतिया छैठ। याच नाः चन्न-সাছিত্য-সংসারের প্রধানতঃ গীতি কবি ভার জনাই নবীনবাবুর প্রভিষ্ঠান ৰ্ডা-हात्र "जनकाण तकिनीत" शीवृष्यत्री গীতি কবিভানিচয়ের নৃতন করিয়া পরিচয় मिट्ड इट्टब्सा। डाङाब "ननाभीत युरक्षत्र" नीजि कविकास मुख रहेना नामा-णात्र अर्काट्यके समार्गाहरू चीकान कति-স্নাছেন বে; গীভিক্ষিতার ভিনি মন্ত্র-भिक्त। देश निःमः भट्य दना याष्ट्रिक भारत र्य "प्रक्रमञी कार्या" जिमि रम यणः जन्मूर्व दक्षा कवित्राटकमः ववः शास्त्रीग्रा ७ देनभूरना अ मस्ट्या जिमि ममिक **देश**िकाञ कतियाद्यम ।

নার্থ কের দক্ষা বেঞানিনের সংক্ষ
বীরেজের দক্ষা বুদ্ধ বর্ণিত হইরাছে।
ভাষা পড়িতে পড়িতে অন্যাদের "Lady'
of the Lake" মনে পড়িরা গোল।
রঙরিকের (Roderick) সকে ফিজেমক্ষের (Fitz-James)ঠিক এইরূপ বৃদ্ধ হইরাছিল। "রক্ষমতীর" ধরণ অনেকটা
(Lady of the Lake"এর মন্ত। বে
সমর গীতি ভানিতে ভনিতে Roderick
ভাণতাপ করিয়াছিল "রক্ষমতী কাবো"
ভপশিনীর কাছে পুরোহিতের বিজয়
গীতি ভারারই স্থলাভিবিক্ত। ভবে
বাম হল বে, ইক্ষীপনার নবীন বাবুর
ক্ষিডার লার্থকভা অধিকভর।

भक्ष मर्गत खालार 'तम मेरी मिता मित्र' की वस विवासित गीजि!— खनिया आक्र महत्व कता राक्ष ना।

सदीन रात्त शिक्षका कृष्णका जान आ

सता विखन श्रम्भाक कृष्णका कि — कृष्णका कि

निव्यासान । पश्रम मर्शन क्षाकर्षन
विवाद रात्रक कृष्णि शिक्षक — कृष्णि नित्र विवाद रात्रक कृष्णि शिक्षक — कृष्णि नित्र विवाद श्री कात्र जप्णिनीन कार्ष्ण कामन काणीन श्रीकृष्णक समन्त्री जि।

रम कथा श्रम्भाक व्यक्षात विवाह हि।

मंद्र मर्गक किन्छात क्रिकारण वड़ कारवाकी गर्का, क्रिका त्रमणे विद्वित क्रिका विद्या क्रिका व्यक्ति विद्वित साम वृत्तिष्ठ वृत्तिष्ठ, विद्यार्ग, रच विद्रह् भीति भाषिरकरक, छाङ्ग क्रिका क्रिका क्रिका भिर्ष्ठ मा करता । क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका माथ करता ! क्रिका क्रिका,

"य लिएन तरबङ ज्ञित, नाहि कि जाकान ज्ञि दम लिएन, मिलन माहि,नाहि ति भनी? जाकारण नोलिया नाहे ज्यम, त्रकल्डा नाहे, मिलिस जबन ल्लाङा,निम कर्ड मनी?

'मिरम मिराक्त मारे ? टारमाय, शखाल मारे ? मरत्रत समत्र गारे, समस्तरत पृष्ठि ? भांकरम, ० इश्मिनीस्त स्थागस्त्र निपृष्ठि मीस्त्र, स्थागस्त्र निपृष्ठि मीस्त्र,

. 'प्रमम दय विदयः का है। ' दक्षण दक्षिट्ड गाहे का कि एका यात्र सूथ, — मृताः, धताकणः। सन्दर्भावत्यस्यः

त्रका **्राम्य भी क यदन**्

ন্দ্রীন বাব্র বিশ্লেষর শক্তি "পলা
শীর রুদ্ধ" কাবো পরীক্ষিত হইয়া লি
যাছে। "ক্রেমানী কাবো" তাহার ছেন, তাহার কাব

যালেন শক্তি স্টু চালাল না করুক, তীর উদ্দীপ্রা উদ্দী

বোগা দিরাছে। "রুলমানীর" মধিকাংশ মর্লুভেদী রোদন

চিত্র ফোট ফোট হইয়াও ফুটে নাই, পলার! প্রভেদ ও

তবে ফুটাইবারল উদাম আছে বটে। কেবলমাল স্থপটে

বীরেজ্র চরিত্রে ভিনি কয়নী রেরাপাত বড় একটা লক্ষা ন

করিয়াছেন; ভাহারা তাহার বিকাশো
ব্যালাম্বণ শক্তির পরিচারক। তা
হার বীরেক্স কাশার যেন অবভার! উঠার হইয়াছেন।

खिनि तक्षमधीत स्मात कानम (पश्चिट्ड स्पिथिट डेक्ट्रारम बनिया फेटर्रन

> "এक है। तारकात उपकर्ण ज्याता तरमुख्य अफ्रिया!"

''পলাশীর ফুলে' নবীন বাবু যখনই
মাতৃত্যির ফুলে জাবিয়া বোদন করিয়াছেন, তাঁহার ফ'বতা গৈরিকনিজকবং
ভীর উদ্দীপ্রা উদ্দীর্ণ করিয়াছে। সেই
মর্মজেদী রোদন ''রক্ষমজীর'' অন্তি
পঞ্জর! প্রভেদ এই ''পলাশীব যুদ্ধ''
কেবলমান ফুপদোর সমন্তি! তাহার
বড় একটা লক্ষা নাই। ''রক্ষমতী কাবোর'' কেক্স আছে, বীল আছে। ফ্লেবাং কবি, কাব্যসোপানে আর একপদ
উতীর্ণ হইয়াছেন।

- messer fill form

शाला (यो।

कावात श्राण्योत कथा निधाल
विश्वाह : किन्न क्वाविट्डिंड এयात कि
निश्व : किन्न क्वाविट्डिंड এयात कि
निश्व ! निश्वात विश्व এयन छ किन्न है

गटन इत ना. कथा किन्न ना किन्न
निश्वाद इते हिल्हा श्राप्त श्राहाड़
कश्राल क्वाव कार्य नाः श्राहाड़
कश्राल क्वाव कार्य नाः श्राहाड़
कश्राल क्वाव क्वाव इते किन्न श्राहाड़
क्वाव निश्वात क्याट्डिंक क्वाव वान करत
णाहात्रा क्वाव क्वाव वान करत
णाहात्रा क्वाव क्वाव वान करत
णाहात्रा क्वाव क्वाव वान करत

वात्र, जाहादमञ्ज পরিচন্ন লেখা বুণা।

किन्न व्यावादयम् । श्रामादमो स्वयं ता विक्र विक्र व्यावादयः । विक्र विक

कित्र महा। त निक्र कित्र निक्र कित्र कित्

खिता छेटिक। अथन शिंम भार, किछ छथन वर्ष्ट संग स्टेमिका। संग स्टे-यात जरमक कात्रवंश किया; कात्रव, मर अक अदे त्य आणि माना गाणि; जामारक छाकियात माथा कात्रत ? जामि यादाय जयोग, जथवा यिनि जामा जरभका जाणि छायान, किया विनि जामात्र विरुग्य जायोत, त्यवन छिनिहे जामारक छाकिएक भारतन। जना त्यात्म "श्रम्न" विश्वत महा हत्र मा।

कात्रन नः पृष्टे (व, व्यामादक " वी मारहर" विवदारह वर्तर "वी वाहाहत " विनिद्या कलक महा कतिएल भाविकाय, ভাৰিতাৰ হয় ভ লোকটা আমাকে মুছল-यान विरवहना कत्रिशारक, किन्न भरतत्र चटनोत्रव कटन्न नाहे। "या नाटह्व" व्यर्थ यादारे रहेक, वावरात्र छारा चामारमञ " द्याम मनाज " वा " मान मनात्र" ज्ञारभक्का कांधक मारनात केंगाबि नरह। हात्रमान (काल्यानि याहात कार्यकृ टमलारे कट्य, कतामि एएटल यादाय क्ञा (मनावे स्व खासाटक " (वाम महाजब " या "मान महालंग" विनातन महा रहेरव (कन ? वाबू महाणत्र विशिष्ण यन উঠে ना। चाउज्य दित कतिलाम ज वाकि (यहे इकेन, नामादक कुछ कति-मार्ड् जामाइक जनमान कवितार्ड् ।

राहे मूहार्थ जाशादक देशात विराम आणि मूर्यत आणि हासिया जाविरज हि. कडकर्व यग नारेटज रहेड, किछ " शातामकाम्", किनिया जागरवासात यमाहेशा जिल्ल, "यम्बाज" अकृषि मारहवयकाय स्थाक अयन मस्यत सारंग्रस नार्थ किल्लिक, गानि वीजीय जाम जाशादक विसूहे विषे जाविशा विश्वास स्वामिश्य विसूहे नाहे,

नारे, अरे जामान बाराइति। त्यांप क्या, तम वाट्य वज् भी क शिक्षाहिन, क्वारार कायून वाहित्त वाहेटल माहम ककि माहे। जान-ত্তক গালি খাইয়া আয় কোন উত্তর করিল ना : त्याय एव एकिया दशन। जामि हित-कोन कानि, त्य भागि चार, तम क्य करम विनक्षि करत्र, बङ्गा शानि ककात्र (ब एता रहेशाय अधिनाम करियाम निमित्त छर्क करत ; जारा किन्द्रे का कशात, जाति जावि-नाम अवास्ति हम्दनात दनाक। दम् इस क जामाटक काबिम^{ें दे}ठक्कात्र टमाक।" नाम कारन मा, अम कारम ना, कि वरम **डाकिट्य काश बाद्य मा ; ख्रुत्रार दण्यीय** व्यथा जञ्चमारत मञ्जय करव 'बी मारहर' विनिन्ना काविनाटक, कार्यत केवटत (व 'हाजामकाक' जानिया जानि दमय, कारादक '' চমৎকার পোক'' ব্যক্তীত আর কি মনে कब्रिदर ?

मरक्षक परत कामात "कामणामा वाव्" कावृत वारत काणिया केवर कर्कक्ष्रमभक्त वारा काणमात काणमानवार्छ। कामाहेन। कामात्र क्ष्मक क तान कारह,
"कामाया वाव्"क कार्य कार्य कामिक,
वह समा किवा हर्ष्य काव्रक स्टार्थम
कतिन, किव कार्यम हरेन मा, बार्यन
किवा "क्" विरक्ष मानिक, काणिया कार्या कार्यम
किवा काण्डिया, कार्य मानिक, काण्डिया
प्रवा कार्य कार्यम कार्य कि महिन,
विभा कार्यम कार्य कि महिन,
कार्यम कार्यम कार्य कि महिन,
कार्यम कार्यम कार्य कि महिन,
कार्यम कार्यम कार्यम कार्यम

हक्रवा नीम चाकार्य मक्त चनिर्छ ; लाहाब गरबंदे रमिय प्रेष्ठि जन्महे मध्या- इत छ कथन बाजूब रमस्य नार्वे रमिरम मुर्कि माण्यविष्णाटक, टिविटनव वाकि वियागवाक्टक किनिक।" চিনाইवाब अवादेगांव, चार्याक डाहारमञ्ज् 'পড়িল। ৰেখিলাম একটি বুদ্ধ আৰক (पंड पोटाटड भविद्याड, मापान व्यक्तां नानकि, काराव नाटर्च अवनि जीटनाक (याव इस त्यम सूवजी। जानि जाहारमन क्षकि शक्तिमान केल्ट्स पारमम निक्रे व्याग्रह रहेशा त्याफ्र्ट्छ मछनिया चा-मात्र (ननाम किसी देशकोरन । यूनकीत यूथ (मधिया स्वाथ क्टेन राम राष्ट्र कर भारेबारक, **जय**ह खर्ड केंबर हानि . जारह। जाशात यूका व्य त्वित्रा जामात यत्न रहेन त्यम चा कि केटर्स नीन जा-कारण दकान युर्द शकी शक विकास कत्रिया जागिरज्ञा । जाबि जनिविय (माउटम ख्यात्री दाबिएक मानिमाम ; दक्य णानिशाद्य, दकाषात्र राष्ट्री व कथा छथन यत्न व्यक्तिम ना । व्यक्ति दक्ष्यम छोहात्र मन त्यविद्य गानिमात्र, खाश्चरक त्यवि-बारे खश्राम अवि ज्ञानवि निक्नी मान भिष्ण ; *(श्राकाशाणि "(बाह्यनाम्न" (*य पार्व देश्टयरच्या टाव्य डेलनियाम दालन क्टब्रम, स्वरंभारन अक्तिन जनशास्त्र वन्त प्रत्य भक्ती निकात कतिएक शिवा-हिमान, ख्यान दकान पुरक्त एक छाइन अरुटि पूज शकी चित्रकार्य विनाहिन, जानि छाहात मन्द्रव निवा र्गाणारेवाम, वामात रमित्रा गकी छेक्नि ना, माना - दरमारेका नागाम त्विरक

मानिम। ভাবিনাম, ''बननी भावी নিমিত আমি হাসিয়া বন্দুক তুলি-माम; खबू भकी छेड़िन ना, त्क পাতিয়া আৰাম মুখপ্ৰতি চাহিয়া মহিল। चामि चशक्ति इरेगाम, ७ थन शेरत शेरत वसूक नामाहेश जनिविद्याणाहरन शकीरक मिषिट मानिमाय; जाहात्र कि जान्दर्श क्रभ! (मर्छ भक्षिगीट एवं क्रभवाभि मियाहिनाम, এই यूवडीएड ठिक् छा-राहे (प्रविनात्र। जामि क्यन कवित्र ठटक क्रथ दश्य नाहे, विव्रकान वानदक्त येख ज्ञेश दम्बिमा शांकि, धरे चना णामि यादा (क्षि, छादा जनारक वृता-रेट्ड भाति ना। ऋभ य कि किनिम, क्राट्य ज्ञानात्र कि, भनोदन कान কোন হালে ভাহার বাসা, এ সকল बार्डा वामारमञ्ज यककवित्रा विर्णस बादनन, अरे बना डीहात्रा कक वाहिता वाहिया वर्गमा कतिएक भारतम, कुर्फाभा-বশত: আমি তাহা পারি না। ভাহার কারণ আমি কখন অঙ্গ বাছিয়া রূপ खन्नाम कत्रि नारे। जामि दव खकारन क्षेत्र (प्रिश्विमिल्क स्ट्रेसा काहा विगटक भाति ; अक्वात जामि हुई वर्षदत्तत अक्ष निश शृद्ध साथिया विद्यादन विद्राष्ट्रिया भिक्टक मर्बागारे बदन हरेक, काराज नाज क्रण चात्र काहाज ७ एक भिटक भारेकाम ना व्यानक विद्यात अत्र धकि छात्र निष्ठाल टमरे क्रांन (मिक्स जाकारम डीस्टिक

यूटक करिवाकिनाम। कामाव टमके छक्। कामि क्रम वाक्षि कि त्यिव । ज्यानि यूरकीटक स्विटक मानिनाम।

'यानाकारम व्यक्तांत-मत्म एके**ड** ट्य कुछ (প্রত যে প্রাকার নিজে দেহছীন चारञ्जत (मरु जाविकार्य विकास भाष, जाने ७ (महे शकात जन्माम् जनम्बन कतिया প্রকাশ পার, কিন্তু প্রভেদ এই বে; ভূতের আশ্র কেবল মনুষ্য, বিশেষতঃ মানবী। কিছ বৃক্ষ, পরব, নদ ও নদী প্রভৃতি সক-(लहे ऋभ चाजा कर्य । युवडीरक स्वतंभ, मलाय (महेक्रम, समीरङ ७ (महे क्रभ, शकीरक ए रमहेज्ञभ, ছाগে ए रमहेज्ञभ পুতরাং রূপ এক, ভবে পাত্র ভেগ। चामि भाव (मिचना जूनि मा; (यह पिना खुनिमा; जूनि (करन ऋभि। मि क्रभे, লভার পাক লগবা মুবতীতে থাক, আমার मटनम हरक छाष्ट्रांत रकान धरछम रमि ना। चटनटकत्र धार्रे श्राकात्र क्रिविकात्र चाएछ। रीष्टाता वरणम यूवजीत राष्ट् '८क्षिया कृषियाटहर काहाटबर मिथा कथा ।

আমি ব্ৰতীকে দেখিতেছি এমত সময়
আমার খানসামা বাবু বলিল " এরা
বাই, এরাই তথান গা সাহেব বলিরা
ভাকিয়াছিল" শুনিবামাত্র আখার রাগ
পূর্বামত গর্জিয়া উঠিল, চিৎকার করিয়া
আমি ভাহাদের ভাড়াইয়া দিলাম। সেই
অব্ধি আর ভাহাদের কথা কেই আমার
বলে নাই। শর্দিবস অপরাহে দেখি
এক বিউত্লাম, ছোট বুড় কভক্তলা

जीत्नाक यित्रा बाह्म, निकट कृष्ट् क्रिकामा कराय बार्गिनीय काराता क्र 'वाहें:'' बार्ग नायन करिवान निमित्र काराता भागार्थी मिन्ना बाहेरक बार्गिय कर्न क्रम्य প्रविधास्त्र बाहेरक बार्गिय क्रम्य क्रम्य প्रविधास्त्र बाहेरक बार्गिय क्रम्य क्रम्य श्रितास्त्र बाहेरक बार्गिय क्रम्य क्रम्य श्रितास्त्र बाहेरक बार्गिय क्रम्य क्रम्य श्रितास्त्र बाहेरक बार्गिय क्रम्य क्रम्य कार्गिय क्रम्य विश्वास्त्र का्र्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य विश्वास्त्र, बाग्नि बान क्रम्य क्रम्य क्रम्य विश्वास्त्र, बाग्नि बान क्रावश्च क्रम्य क्रम्य नी स्विश्वा क्रम्य नावश्च क्रम्य क्रम्य नी स्विश्वा क्रम्य नावश्च क्रम्य क्रम्य नी स्विश्वा क्रम्य निवास्त्र क्रम्य क्रम्य नी स्विश्वा क्रम्य निवास्त्र क्रम्य क्रम्य नी स्विश्वा क्रम्य

जा। (कन?

निष्ठ छोषात्र मित्रा मित्रा मित्रिक छोनिष्ठ छोषात्र मित्रित्रा मित्रिक छोषात्र मित्रित्रा छिन अवतात्र करत्र छुटे निम छेन्यां मित्रिक छत्र कर्मा मित्रिक छोत्रिम छेन्यां मित्रिक छत्र वर्गा यात्र मा। ध सम्म नाहाक मर्या स्मित्री छिन्दा मित्रिक छानित्रा छिन्दा सामित्र छोन्दा छन्।

ध कथा छनिया जामात्र महे हरेग,
छाहात विभव कछक जञ्चन कतिएउ
भातिमाम, निट्म मिट जयमात्र भिएएग
कि घडाना भारेणाम, जाहा कत्रना कतिएउ
गाजिसाम। समरण जताजान जात जन्मात्र मिट मिट जामात्र जाना करिए जामात्र करें भीठ
हाना किए जासिकां जानाएं हरें भीठ

कल এक फिन क्यानाग्न का वना शहरक इहेर्य, এই ऋण कथा चाभा त मर्जना मरन हरू । छूरे हाति मिटनत्र भव धकि সাতেবের সহিত আমার দেখা হইল, छिनि ममार्काम मृद्र এका शांकिएजन, शहा कतिवात निभिष्ठ मध्या मध्या आभात তাব্তে আসিতেন। গল করিতে ক রিতে আমি ভাঁহাকে ব্বভীর কথা वंलियाम, छिनि किम्रद्रमण ब्रह्मा कति-त्नन, ভाহার পর বলিলেন, আমি जी लाक हित्र कथा छ निग्नाहि; रम ज बन्न चिक्रिय क्रिक्ट भारत नाहे, পথেই মরিয়াছে; এ কথা সতাই হউক বা গিখ্যাই হউক, আমার বড়ই কট হইল; আমি কেবল অহন্ধারের চাতুরীতে পড়িয়া ''বাঁ সাহেব" কথার চটিয়া ছিলাম। তখন জানিতাম না যে এক-मिन वाशनांत व्यक्कारत काशनि হাসিব।

• गाह्रवरक विषाय पिया खनवारू यूत्रजीत कथा खातिराज खातिराज नाशास्त्र पिरक याहराजिहिलाम, निर्धित कडक-खिल कालकनाति महिंड माक्षार हहेल, खिल कालकनाति महिंड माक्षार हहेल, खिला कालकनाति महिंड माक्षार हहेल। धिर खंकरल खलानेय धरकबारत नाहे, नमी भीउकारल धरक वारत खकशाय हहेगा गाय, खित्रवार खामारलाएकता धक धक खारन ''गांडक्यांत' कालारत कृत थांड धनन

কোন ক্ষতি হইত না; অগচ সে রক্ষা করে—তাহা ছই হাতের অধিক গভীর পাইত। আমি তাহাকে উদ্ধার করি করিতে হয় না—সেই থাতে জল ক্রমে লাম না, তাড়াইরা দিলাম; এ নিষ্ঠুরতার ক্রমে চুইয়া জমে, আট দল কলস ফল একদিন স্মানার অবশা পাইতে তুলিলে আর কিছু থাকে না, আবার হইবে, এইরূপ কথা আমার সর্বাদা মনে জল ক্রমে আসিয়া জমে। এই কুদ্রে হইত। ছই চারি দিনের পর একটি থাদগুলিকে দাড়ি বলে।

কোলকনারা আমাকে দেখিয়া দাঁড়াইল। তাহাদের মধাে একটি লখােদরী—
সর্বাপেকা বয়ােছ্যেষ্ঠা—মাথায় পূর্ব কলস তুই হস্তে বরিয়া হাস্যুথে আমায়
বলিল, রাত্রে নাচ দেখিতে আদিবেন গ্রামি মাথা হেলাইয়া স্বীকার
করিলাম, অমনি সকলে হাসিয়া উঠিল।
কোলের যুবতীরা যত হাসে, যত নাচে,
বোধ হয় পৃথিবীর আর কোন ভাতির
কন্যায়া তত হাসিতে নাচিতে পারে
না; আমাদের ত্রস্ত ছেলেয়া তাহার
শতাংশে পারে না।

সন্ধার পর আমি নৃত্য দেখিতে
গেলান; প্রামের প্রান্তভাগে এক বটবৃক্ষতলে গ্রামস্থ যুবারা সমুদয়ই আসিয়া
একত্র হইয়াছে। ভাহারা "বোঁপা"
বাবিয়াছে, তাহাতে ছই তিনধানি কাঠের "চিক্ষণী" সাজাইয়াছে। কেহ
মাদল আনিয়াছে, কেহ বা লম্বা লাঠি
আনিয়াছে, রিক্তহন্তে কেহই আ্দে
নাই; বয়সের দোষে সকলেরই দেহ
চঞ্চল, সকলেই নানা ভঙ্গীতে আপন
আপন বলবীর্যা দেখাইতেছে। বুদ্ধেরা
বুক্ষমুলে উচ্চ মুগ্রয় মঞ্চের জারু প্রান্ত
বিদিয়া আছে। ভাহাদের জারু প্রান্ত

क्ष ছाড़ाইग्नाट्ह, डाहात्रा वित्रा नाना कत्रित्न यूवात्तत्र मत्न मामन वाजिन, खनीरा दक्रवन अर्रेकी ए। क्रिएए हि, আমি গিয়া ভাহাদের পার্ছেবিদিলাম।

আসিয়াই যুবাদিগের প্রতি উপহাস আরম্ভ করিল, সঙ্গে সঙ্গে বড় হাসির ঘটা পড়িয়া গেল। উপহাস আমি বারটি, কিন্তু যুবতীরা প্রায় চলিশজন, (मरे **हिमम**ान शंगित राहेन ७ त भन्छेन ठेटक।

উদ্যোগ আরম্ভ হইল। যুবতী সকলে হতি ধরাধরি করিয়া অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি রেখা বিন্যাস করিয়া দাঁড়াইল। দেখিতে বড় हम्दकान इरेन, मकल खिनरे मम्बेक, मक-लश्चित्रे भाषूरत्र कान ; मकरलत्ररे जनात्र (पर; मकरनद्र (गरे अनाव्छ वरक আরসির ধুক্ধুকি চন্ত্রকিরণে এক এক-বার জ্বলিয়া উঠিতেছে। আবার সক-लেत याथात्र वनश्रुष्ण, कर्ल वनश्रुष्ण, ठिकिट्छ । जान भाशार्फ ठिका घरन করিতেছে।

• मञ्रू व्यात्रा माँ का हिन्ना, यूनारमत পশ্চাতে মৃথ্য কোপরি বৃদ্ধেরা এবং তৎ- ভাছাদের মাথার বনফুল সেই সঙ্গে मार्क वर्षे नवाधम। न्याकवा देकिए' উঠিতেছে नामिएएছ, बादाव मिल्यू

অমনি যুবতীদের দেহ ফেন শিহরিয়া **উঠिল। यमि (मर्ट्स क्लानाइन थारक** আলিয়া জমিতে লাগিল; ভাহারা পড়িয়া গেল, পরেই ভাহারা নৃত্য আরম্ভ করিল। ভাছাদের ভৃত্য আমাদের চকে নুডন; ভাহারা ভালে ভালে পা (फिलिट्डिइ, अथि (क्ह करन ना: किছूरे वृक्षिण शांत्रिनाम ना; क्वन (माल ना, ऐल ना। य रायान অমুভবে স্থির করিলাম যে, যুবারা দাঁড়াইয়াছিল, লে_দেইখানেই দাঁড়াইয়া ঠকিয়া গেল। ঠকিবার কথা, যুবা দশ ভালে ভালে পা ফৈলিভে লাগিল, ভাহাদের মাধার ফুলগুলি নাচিতে লাগিল, বুকের ধুক্ধুকি ত্লিতে লাগিল। न्डा चात्रच हरेल পর একজন वृक्ष ছাস্য উপহাস্য শেষ হইলে, নৃত্যের মঞ্ হইতে কম্পিড কঠে একটি গীতের "भर्ड़।" आत्रस्थ कतिल, अमनि युवाता मिट गीं डेकि: बद्र गारेबा डेिंग, সঙ্গে সঙ্গে যুবতীরা তীত্র তানে "ধুয়া" धित्रण। यूवजीमित ऋत्त्रत्र ८७छ निक **द्वित পा**हाएं शिशा नाशिए नाशिन। वाबात ज्यन न्यांडे (वाथ इट्रेंट नाशिन যেন হুর কখন পাহাড়ের মূল পর্যান্ত, কথন বা পাহাড়ের ৰক্ষ পর্যান্ত গিয়া ওঠে হাসি। সকলেই আহ্লাদে পরি- কের নিকট রহস্যের কথা কিন্তু আমার পূর্ব, আহলাদে চঞ্চল, যেন তেজঃপুঞ্জ নিকট ভাছা নছে, আমার লেখা পড়িতে व्यक्ति नाम मकरण एक एक एक मार्थ (भरण अक्रम क्षाम वाका मर्था मश् किंद्रिक द्देर्व।

যুবভীয়া ভালে ভালে নাচিতেছে,

স্থানে হুছ্ করিপা অগ্নিঅলিতেছে, অগ্নির তান্ধকারে বসিরা আমি হাসিতেছি। আলোকে নর্ভকীদের বর্ণ আরও কাল দৈখাইতেছে; ভাহারা তালে তালে নাচি-তেছে, नाहिए नाहिए क्ला পाপिक नाम नक्ष्म अक अक वाद " ि जिला "

হুটি একটি ঝরিরা ভাহাদের ফফে পড়ি- পড়িতেছে; আকাশ হইতে চক্র ভাহা তেছে। भौजुकान निकर्षे पृष्टे जिन प्रिथिया श्रिप्टिष्ट, जात विमूलिय

> নৃত্যের শেষ পর্যাস্ত থাকিতে পারিলাম ना ;त्र भीड अधिकक्षण थाका (त्रम ना।

> > वः ।

त्रम्।

नाग्र (य, त्रम नग्रहि। चानि, हामा, कक्रन, ভाব हहेग्रा थारकः। छीहारनत्र मटङ বীর, অস্তুত, ভয়ানক, বীভংগ, রৌঞ স্থায়ী ভাব নয়টির অধিক হইতে পারে ও শাস্ত। ইহাদের মধ্যে জীবিষয়ক রতি व्यानितरमत शांत्री ভाव्, हाम हामात्ररमत-স্থায়ী ভাব; শোক কর্মণরসের স্থায়ী ভাব; উৎসাহ বীররসের স্বামী ভাব; বিশ্বম অভুতরসের স্থায়ী ভাব:; ভয়, ভয়ানক-রসের স্থায়ী ভাব; জুগুঞ্চা অর্থাৎ ঘুণা वीज्रमद्रमद्र शांशी जाव ; त्जास, द्रोस-त्रम्त शामी ভाব এবং निर्द्धन भाखत्रमत श्रोपी ভাব। जानकात्रिकता वरननः श्र्वाक षाम्री ভাবসকল প্রকৃষ্টরূপে षाचामामान इट्टल छाटाटक हे तम कटक ।

তাহারা মনের ভাবসকলকে স্থারী ও मकाती अहे घ्टे जाता विज्ञ करतन, किंद क्लानच्टल है कि निग्रम क्लान कति-बाट्डम, जाशु बर्णम नारे। जीशामित्र

সংস্কৃত অলকারশান্তপাঠে অবগত হওয়া মতে কথন কথন স্থায়ী ভাবও সঞ্চারী না, স্তরাং রসও নয়টির অধিক হইতে পারে না। প্রাচীন আলঙ্কারিকদিগের मत्म याशके थाक्क ना, आधुनिक णानकातिरकता नवाधिक तम श्रीकारत একান্ত অসম্বত।

> তাহাদের মতে প্রত্যেক त्रामत দেবতা আছে ও প্রত্যেক রদের তাহাদের মতে ক্লপও আছে। व्यापित्रम भाग्यवर्ग, উद्यात (फवला विकृ। হাস্যরস শেতবর্ণ, উহার দেবতা প্রমর্থ। রোজরস রক্তবর্ণ, উহার দেবতা রুজ। বীররস হেমবর্ণ, উহার দেবতা মহেন্দ্র। वीज्दमत्रम नीलवर्ष, উহার দেবতা মহা-कान। ভग्नानक तम कृष्णवर्ग, উद्यात দেবতা কাল ১ অন্ত্ররস পীতবর্ণ, উহার

চছায় অর্থাৎ উহার কান্তি কুন্দপুষ্প এবং **एट्यंत्र नाम य्नत्र, উश्रत (**पवर्ण শ্রীনারায়ণ। কর্মণরস কপোতবর্ণ অর্থাৎ পারাবতের গলদেশের বর্ণের ন্যায় উহার বর্ণ, উহার দেবতা যম।

भःश्वृ **जान्यश**िक्षिरगत त्रमशित-চ্চেদ পাঠ করিলে, কতকগুলি প্রশ স্বতই আমাদের মনোমধ্যে আবিভূতি र्य। ' छाँरात्रा तम काशांक वनिष्ठन? भरनत ष्रञ्चः था ভাবের गधा नम्रिक वाছियारे साथी जाव विलियन (कन? এই नम्रिं जिन्न, जात्र ज्ञानक छिन जात **७ मत्नामरक्षा ऋशि ६२.७ भारत्र। औ**र বিষয়ক অহুরাগ রস হইল; কিন্তু অহু-রাগ কি জ্রীভিন্ন অপর কাহারও প্রতি वर्क्टिक পाद्र ना ? ना, वर्किल शाशी इहेट जुशादा ना ? जामता छ मिथिए ছि অপত্যমেহ, বন্ধুতা, পিতৃভক্তি, মাতৃভক্তি, রাজভক্তি প্রভৃত্তি অমুরাগের নানা चक, এবং সকলগুলিই शामी। यनि জীবিষয়ক অনুকাগভিন্ন রস না হয়, **जाहा इंश्ल यामाञ्चालाकी भक** বাঙ্গালাসাহিত্যের উৎকৃষ্ট গ্রন্থাবলী नीतम अथवा नीहत्रम विषया পরিগণিত **बरे श्रांद तम कि** ? ७ तम (कन नम्बि , रहेन । जारा (मधाहेवात (छ्डा कत्रित।

রস কি ? এ সম্বন্ধে সংস্কৃত আলকারিক-मित्रित विखन गठएल वार्छ। नरमन

Cहर्यका शक्का वा भाष्ट्रतम कूर्लिक्युक्त कार्यात नाम क्यूकार, कात्रवात नाम বিভাব। উহা হুইপ্রকার, আলম্বন ও উদী गन। याशा जिस जारगा ९ १ इत না, তাহার নাম আলম্বন। যাহাতে व्यावना ज्ञास्य जास्य नाम जिमीलना त्ररमत्र गरभ मरक रय व्यनाखारवत हेकी. शन रम कारात नाम मकाती। व्यक्तितरमत क्षी जालक्रम हक्षकित्रण मलग्र भवनामि উদ্দীপন, দীর্ঘ নিঃখাসাদি অনুভাব উহাতে হাস্য প্রভৃতি যে নানা ক্ষণস্থায়ী ভাবের উদিস হয় তাহার নাম मकाती।

> ভট্টলোল্লট প্ৰভৃতি বলেন, मननो, উদ্যান প্রভৃতি কারণজনিত অমুরাগাদি श्वामीष्ठाव, कठाष्म, जूबारक्म প্রভৃতি कार्यात्र बात्रा প্রভীতিযোগ্য, এবং नि র্বেদাদি সহকারী ভাব দারা উপচিত रम। छेरा म्याकरत ध्वक्र जामानिट इ .पादक। किन्द (कहरे यज्ञेश अञ्चनकान क्रबन ना विनदाहे कावाइ बामापिएउउ व्याहरू द्वाक रुक्, ज्यनरे छेरात नाम রদ। এই মতে বিভাবাদি দারা অমু-वाशांक्ति अञ्चान इस।

शिमक्क वरनन, ममाक् छान, मिथा। कान, সংশয় ও সাদৃশ্যকান (यथा রামট **এरे, এरे ताम; উত্তরকালে এ** রাম नग्न, এक्रण बाधा मछाबनामरच এই রাম, **व वाकि ताम इहेट अ भारत, नाउ भारत**ः **७ त्राममपुष) धहे (य ठात्रिक्षकात कान**, वारह खरममुख्य हहेट श्वक् वान िंख उ जूतक (मिथका जूतक कारनेत ना त

नर्खकरक ताम यानिया छाजी छ इटेल, (म यथन निका, अन्याम, देनश्रावत्न —

এই সে गागात (पट्ट स्थातगछ्डे। कर्त्र नगकात्रानि नगनग्राम मृर्डिमछी मरनात्रथ मन्त्री अति शिगी लार्वित्री लाहनरगाहरत रम्था मिल

रेनवक्रम जानि भारत हलनगरना (भग होंग প্রাণ্থিয়া সহাস্যবদনা অমনি বিষম কাল হল উপস্থিত **অবিরল হয় যাহে अनिদগর্জিত**

हेजामि कक्षण वाकाषाता कात्रण, कार्या ও महकात्री ভानमगृर প্রকাশ করে, (हेहां ब्रहे नाम विखान, षञ्चान ७ मकाती ভাব) তথন ভাছারা ক্ব তিম लिও लाक् कुछिम विषया अञ्चनान করিতে পারে না; এবং সেই শক্ল উश আছে विनिया आसानामान हम। ष्यना षश्यान इटेट षश्यागाषित जूरगानित विष्य कहे (य, बख मिन्या-वत्न, खवर व्याप्तामामान विनिद्या छेटा षश्यान विवाहे द्वाध हत्र ना। প্রভাক बिनिया (वाध इय, এই মতে নর্তকের ভাব দেখিয়া जीতাবিষয়ক রামের অমু-त्रांग जामन्न धक शकान मार्काटकारत शिथिटक भारे।

जारह जामि स्विर्डिह, ज्या जामार्ड

আছে আমিই অমুভব করিতেছি এই উভয়থকার গিদ্ধান্তই ভ্রমাত্মক। কিন্ত কাবা ও নাটকপাঠে ভাবকত্ব স্থামে একটি ব্যাপার (মানর কার্য্য) উৎপত্তি इस এবং উহার काর। विভাবাদি সাধা-রণীক্তত হয়, (ভার্থাৎ ঐ ব্যাপার দারা ताम गीठा छान थारक ना, रकदनगाव न्ती প्रक्ष नामिका छ।न था(क।) ঐ ভাৰকত্ব ব্যাপারে অনুরাগাদিকে উগ-স্থিত করে সেই অমুরাগাদি আমাদ্য অস্থাদ সময়ে রজঃ ও তসঃ গুণ অতিক্রম করিয়া সত্ত্রণ প্রবল হয়। স্থাকাশ আনন্দময় छानगाज वर्त्तमान थाटक। এই अर्थकांभ व्यानमभा জ্ঞানস্বরূপ রুগাস্বাদের নাম ভোগ বা ভোজকর ব্যাপার।" এই মতে মাহুষের। मत्न ভावकच ७ ভाककच नारम इरेडि কার্যা কারণাদির স্বারা অমুরাগাদির অমু- ব্যাপার আছে। প্রথমটির দারা অমুরাগ মান করে। অফুরাগাদি যদিও নর্দ্তকে কারণ সকল সাধারণরূপে প্রতীত হয়, নাই, তথাপি মাসাজিকদিগের মনে ঘিতীয়টির দারা উহাদের আস্থাদগ্রহণ कता गात्र।

वाठाशं विजन खश रालन, "या-ছারা সর্বদা প্রমদাদিসহকারে অমুরা-গাদির অনুমান করিতে নৈপুণালাভ कतिशाष्ट्र, अक्रिश भागां घिरकता कावा वा नाउँक शार्ठ कब्रिट्स शूर्ट्साक विভाव অমুভাব ও সঞ্চারী ভাব কারণ, কার্যা, এবং সহকারিতা পরিহার করিয়া অলো-কিফ বিভাবাদিরূপে পরিণত হয়। তখন खंडेनायक वरणन, ''जासूत्राशामि त्रार्थ এই সকল विভাবাদি আমার অথবা শত্র অথবা উদাদীনের অথবা আমার্নায়,

अल्ब नम्, ज्याना উषामीत्नत्र नम्, कात्र निभनाथ कित्राज्ञ मुशाकरत्र जरु अक्रम मुच्कि विल्लिय अजीज इस ना। गजरे श्रीकात कतिया लहेग्राहरून। শ্রেমাতৃগত তথাপি সাধারণ উপায়নলে তৎকালে উহার নিয়মিত প্রায়ত-ভাব বিগলিত হয়। তপন প্রমাতার জ্ঞানাম্বর সম্পর্কশৃত্য অপরিমিত ভাবেব ভাবকত্ব মনের কার্যা, এই কার্যা দারা উদয় হয়। তিনি দেন দকল হাদরে পরিমিত ব্যক্তিগত শোকাদি সাধারণ রই সংবাদ অবগত হইতে পারেন। রূপে প্রতীত হয়। তণন পূর্বোক্ত অমুরাগাদি জ্ঞান চটতে ভোজক্ব ব্যাপার শব্দেও মনের अधिन इहेटमञ्ज रधम निद्य आकारतः कार्या वृक्षात्र। मन्त्र रण कार्यात्रात्रा প্রকাশ পাইতে লাগিল। আফাদই কাবার্ষের আহ্বাদগ্রহ হয়, যাহাতে खेशक खान। विভागामिक व्यविधि हिख व्यानत्म खेना छ होता छैठि, छाशक ' উহার জীবনের অবধি। বেমন পানক নাম ভোজকত্ব ব্যাপার। त्रम नामक (भाषरक मतीह थाकित्वख তাহার আখাদ নষ্ট হয় না, অমুরাগাদির আস্বাদণ্ড ভদ্রূপ বিরোধী কারণে বিক্বত इत्र ना। উद्दा स्थन मधूरण कृर्छि পा-हेटल शारक, छमरत्रं श्रायम कतिराज्यातक, मर्काक चानिक्रम कतिएक थारक, जना সমস্ত ভিরোহিত করে। যেন ব্রহ্মা-चाम जरू इव कन्नारेमा (म्म । ज्लाक- कमजा। क्रमम्बद्धमम्द्र मर्था जारी-ছল্ল চমৎকার উৎপন্ন করে। তখন দের মতে কতকগুলি বৃত্তি আছে, যাহার উহাব নাম রস হয়।"

नाम वााभावषय क्षीकृत इतेवारक। देश श्रेट इहेरन खेराव बाबा बामवा खुन्नव ভটুনায়কের মতেব উপর কিছু উন্নতি বস্তাকে শুক্ষর বলিয়া বুবিতে পারি भाज। रेशन मण्ड क्लोकिक वााभाव ভারা রস নিপত্তি হয়। সাহিত্যদর্পর

সম্বন্ধশ্ন্য সাধারণভাবে উহা অভি- ভাবকত্ব ব্যাপারটি কিণ্ উহার স্বরূপ बाक्क इष्ट्रेया मामाजिकिविशिय मान कि? कामा व्यावभाक। অবন্ধিত হয়। যদিও উহা নিয়মিত ন্যায়মতে করণের কার্যাকে ব্যাপার বলে। যণা দাত্রের পতন উহার ব্যা-পার। সংস্কৃতমতে মন জ্ঞানের করণ। মনের কার্যোর নাম উহার ব্যাপার।

रेडेदब्राभीयिषिरगंत यरक यन खारनाथ-निका करण नरह छेहारे कर्छ।। मः স্কুডমতে আত্মা কর্ত্তা, মন করণ। देमानीसन देखेदबाशीरमता मन जिन्न সভন্ত আত্মা স্বীকার করেন না। তাঁহা-দের মভে মনোবৃত্তিসমূহ তিনভাগে বিজ্ঞা। বুদ্ধিরতি, হাদমবৃত্তি ও কর্ম-নাম (Esthetic faculty) বা সৌন্দর্যা-वर् मण्डल , जावकच 'अ (जाककच आश्वाका अज्ञामवाम वर्ष वर्ष भवि-এবং ভাছার আখাদও গ্রহণ করিতে शाति। धरे भागवाजार्कजावृज्जि जागां-

দিগের ভোজকন্ব ব্যাপার। সামরা

যাহাকে ভাবকন্ব ব্যাপার বলি, ইংরেজেরা তাহা মানেন না। কবিরা সৌন্দর্য্য

সৃষ্টি করেন। আনরা ভাহাব আন্ধান
গ্রহকরি। যাহার সৌন্দর্যগ্রহক্তাবৃদ্ধিসমূহ যত পরিপুষ্ট দে দেই পবিমাণে
ভাহার আন্ধান গ্রহণ করিতে পাবে।

भानमध्यश्च । तमश्च यम धकरे इडेल, তবে जम नग्नी इय (कन १ त्मीनार्गा व्यत्नविध, श्रृङ्कताः तमञ व्यत्नघ विध इछ्या छिछि। गिन वन वाञ्चिक भानमधा तम नरह किर्नाव व्यक्तिक (मोन्तर्गाहे तम। वाद्यवस मग्र—काकान, नम, नमी, পर्याज, कमात्र, भूती, एन्ड्रा প্রভৃতিগত সৌন্দর্যা রস নহে কেরল মনের অম্রাগাদি ভাবসমূহগত সৌন্দ-র্যাই রস, ভাহা হইলেও বাহাবস্তগত भानाया यथन आश्वारमत विषय इटेटज গারে তথন উহা কেন রস হইবে না ইহার কারণ বুঝিতে পারিলাম না। यिषि अ (कवन मानावृद्धिशंक मोन्सर्या करे तम विषया श्रीकांत्र कतिया लहे, छद देश किन एय नम्बीमाञ स्टेर्य वृक्षिए পারিলাম না। মনোবৃত্তি অসংখ্য। , স্তরাং রসও অসংখ্য হওয়া উচিত। यथन त्य भटनावृद्धिगठ भोन्नर्या जाञ्चाम-नीय रय उपन डाहारे तम रहेरव। ग्रश्य जामकाविक्तिरात मर् नव्ही शत्री এবং ভেত্তিশটী मकात्री ভাব শ্বীকার क्त्रिंस गाक्रवरथंत श्राबाङ्का, शाम-लिए ते जायू बार्गम खिरिश्माथायृष्टि, প্রস্পেরোর উদারচরিত্রতা, মানুমফ্রেডের
মানবজাতির প্রতি ঘুণা, রসের মধাই
পড়ে না অথচ সহাদম কাজিমাত্রেরই
সংস্কার এই যে, পুর্বোক্ত গ্রন্থচভূত্রিরই
রসাংশে পৃথিবীর সমস্ত কাব্য অপেক্ষা
উৎরুট। অতএব আমাদের মতে মনের
যে বৃত্তি স্থলরক্রপে লিখিত হইতে পারে,
তাহারই নাম রস। কেবল একজম
মাত্র সংস্কৃত আলক্ষারিক সৌক্র্য্য কা
চমৎকারকেই রস বলিয়াত্রেন।

রদে সার: চমৎকার: সর্বত্তিবামূভ্রতে তচ্চনৎকারসারতে সর্বত্তিবাদূতো রস: ॥ তত্মাদভূতমেবাহ ক্বতী নারায়ণো রস:।

কিন্ত নারায়ণের মত সংস্কৃত আলকা-রিকমণ্ডলীমধ্যে তাদৃশ সমাদৃত হয় নাই।

সংস্কৃত আলক্ষারিকেরা যে নয়টি মাত্র রগ নির্দ্ধারণ করিয়াছিলেন কেন, সহজে বৃকিয়া উঠা যায় না। কিন্ধ আমাদের বোধ হয় যে, যখন অলক্ষারশাস্ত্র প্রণীত হইয়াছিল তৎকালে প্রচলিত গ্রন্থাদি-মধ্যে এই নয়প্রকার ভাবেরই প্রাধানর দেখিয়া তাঁহায়া কাব্যের নয়টি মাত্র রস নির্দ্ধারণ করিয়াছেন।

প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায় এক এক সময়ে সামাজক অবস্থা অফুসারে এক একপ্রকার লিখনপ্রণালী প্রচলিত হয়। কখন নাটকের বহল প্রচার হয়, কখন গীতিকাব্যেয়, কখন, উপন্যাসেয়, কখন ন্বনাদ্রেয়, কখন বা মহাকাব্যেয়।

नीमांकिक, जावचा असूमारत (मारक किश (भाक, कथन विश्वत्र, कथन युवा हेजाति किञ्चविष्यक अद्योगिपिक्टिल कालवाटम। विषयक अञ्चामि क्षिक मनिवाटन मिनिक क्रथम युक्तविष्यानी कविजा, क्रथन व्यव- ७ পडिज इटेज। जीनशाबिक পश्चि त्यत्र क्षत्रक, कथन ब्लाटकाकी नक क्षरांच, कचन वर्षा अध, हेजानि हेजानि । यथा-সময়ে ইউরোপধতে প্রাণয় ও যুদ্ধের काराहे अधिक ममानुष्ठ इहेड। आमा-(मत (माम वर्डमान नमाम खानम ख चरमभासूत्रागरे करिक পतिमार्ग निषिक ও পঠিত হয়। এরূপ অসমারপ্রছ প্ৰণীত হইবার পূৰ্কবৰ্তী সময়ে কথন व्यवम, कर्यन युष, कर्यन शतिशाम, कथ्न

एक वा वसन कालका बनाय निर्धित विभा किटनन, जयन जाशामद्र द्यांच रहेशा हिन (य, এই नयुक्षकांत्र महनत छाव शकाम कवियां श्रष्ट निभिष्ट भारितन्हे **उहा अममगाम वित्यवक्राभ जा**न्छ क्ट्रेट्स, अर्थ जना छीहांत्री छेळ नब्रिटिक्ट्रे ल्यान जाव वा तम्मद्या हित्र कतिता-(छन। नटिए धारे नग्रिक्ट ऐकियान जिवांत्र जांत्र टकांन कांत्रण टक्या यात्र ना।



वाकाला ভाষा।

বাজালা ভাষায় লিখিতে গেলে প্ৰথ-यकः बहनाव्यनामी नहेशा वक्ट भान वीरका अक्षमण, जनरमञ्जय रयमन मर्भ **(मिरिक्ट्रें चार्ड**ि मिर्डिन, रमरेक्रेन भावमी **क्या** स्थित्मे छाहात्क छाहात्र আহুতি 'मिन। भाष এकमन आह्म, ভাঁহারা সংস্কৃত কথার প্রতি সেইরূপ अमग्र। ८कर कार्यात्र मध्या मश्युक किय चामा काचाम कवा विचारणहे छछिया किर्फिन, टायरकात मध्या शामात्र सामा चि-मिन पाकूक, जीव भरएन ना। जागाव टक्ट चाट्डन ८५३ · तिविद्यान, इ.टे. পাঁচটি সংশ্বত শকা বাধহার হইয়াছে,

অমনি দে গ্রন্থ অপাঠা বলিয়া দুরে निटक्ल करतन। अथन आयता गतीव, में फाइ टकाथा ? जामना हे स्तिक शिष् व्यामारमञ्ज व्यक्तिक छावना देशस्विष्ठ। चामन्ना कनम धनिटलहे हेश्टन कथान हेरदिक छाव षाहेटम । সংশ্रु षामद्रा ধা পড়ি, তাতে সে ভাব বাক হর না। वांचांचात्र विमा। विमानांचाद्यत मीलांत्र वनवान, जात्र विक्रमवावृत्र नरवन कंग्र-थानि। তাতেও उ कुनाम ना। न्डन कथा अकि जबन कवलाल मारेन छाउँ जानारमत कि स्टेटन । एम क्यान छाडिए र्य. ना एवं ध्यक्त श्रीत मानद छोव

वाक कतियां निष्ड रहा। निष्कत कथात्र নিজের ভাব আমি ব্যক্ত করিব, ভাহাতে जातात कथा कशात चच कजमूत जाहि बानि मा। किस, श्र्कांक इरे मत्नत लाक इरेषिक् हरेएक क्ठांत नरेया ভাড়া করেন। স্থতরাং এক এক সমরে (वाथ इस " * * * जख सोनः हि । । ভতে" किছ जावात यथन जन्न निकल्तन উপস্থিত হয়, তখন না লিখিয়াও थाकिएक भाषि मा। विस्थिव এই रिय, यथन कर्छवारवार्थ कान कार्या ध्यवृष्ठ इंख्या यात्र, ज्यम शीहणात्त्र कथात्र তাহা হইতে নিরম্ভ হওরা নিভাম্ভ কাপু-(यत्र काम। (य कान ভाषाई इंडेक, य रकान ब्रह्माञ्चनानी एउँ रेडेक, यमि छ्ठा ভाल कथा वलिए भात्रि, পাঁচলনের ভারে চুপ করিয়া থাকিব (कन?

ज्राव जान कथा विलय्ज यमि मन्त कथा निन, जाहा हरेल भीडकात्मत्र भाषा-भागि मिवात वास्त्रविक अधिकात आह्य । किन प्रजाजात्म श्राका प्रदेशक प्रेट व्यनीत नुमारमाहक गन कथा है। जान कि मन পেদিকে লকাও করেন না। নাই সাছি বলিতে পারি না। কতক অনুভব क्क्रन, कथाणा खान कत्रिया वना इहे बाह्य कि ना, छारां परपन ना। छारा मूळकर्छ वनिव। এश्रम कूठा-पिर्यम (कवन लियात मर्या वज् वज् गःकुछ कथा जारह कि भावमी ७ हे:-द्रिक भक्ष भाष्ट्र। यात्रायात्रि कद्रव (करण ভाराई महेता। ञ्छत्राः चामात्र अवन कतित। • में कुछ (अवक्दर्भन त्मेर विवासरे कथा कि अहे र्य, याहाना क नर्याक

मृष्टि त्राथित्रा চলিতে হत्र। , তাহাতে ও (गान र्या ग्रान प्रे पन प्रे पिक ধরিয়া টানাটানি করিতেছেন, তথন **উভয়দলের মন রক্ষা করা অসম্ভব।** व्यथे एय मरलं यनव्या ना इहेर्द, তিনিই কুঠার উত্তোলন করিয়া লেখকের প্রতি ধাবমান হইবেন। এ অবস্থার ल्थक (वहात्रा विषय मयमाप्र পड़ित्रा यात्र ।

এ সমসার কি পূরণ হয় না? এ मक्षे रहेट कि পরিত্রাণের উপায় নাই ? वजीयलथककून कि এই প্রতিকৃল বা-ভাায় ভগপোত হইয়া অপার সমুদ্রে ভাসিবেন ? ভাঁহারা কি কূলে উঠিতে भावित्वन ना? नमात्नाहकिष्णित अहे বিষম রোগের কি উপশম হইবে না 🝷 **উপশম नाहे इडेक. हे: दिखिट** यटन রোগের নির্ণয় অর্দ্ধেক উপশম। এ রোগের কারণনির্ণয়ের কি কিছুই চেষ্টাও इहेरव ना।

অনেকগুলি স্থচিকিৎসকের সহিত বিশেষ পরামর্শ করিয়া আমরা ইহার কতক কারণ ঠিক করিয়াছি। ঠিক করি-कतियाि । याश वृक्तिष्ठ रुरेयात्र, चात (कर चनारर्ज्यमर्पन कतिएज भारतन, नित्रिष्मत्र जानमगरकारत

वाकावा श्राया स्मध्नीशावन कतिया-एक्न, छाइका दक्कर वाकाना खावा खान किवा भिका करवन नारे। इस रेश-दिक्न श्रीष्ट्रकारकन, ना क्य मश्कुष्ठ शिष्ट्र-ग्राह्म, शिष्ट्रबार कवियारकन। कष्णभानि जाशकाका कथा कनिष्ठ किवया शिवारकन। निर्म्म खाविया दक्कर वरे रमस्मिन नारे, स्वव्याः निर्मं खावाय कि चारक्ष ना जारक खावाय क्यारक्ष ना जारक खावाय क्यारक्ष ना जारक खावाय क्यारक्ष ना जारक खावाय

अथन छाहारम् तरे अज़िया यांश्रा राक्षांना निश्चित्राट्न, डांश्टमंत्र यथार्थ মাজুভাষার জান সুদ্রপরাহত হইয়াছে। स्थित वैद्यात्राहे यथन क्यानीधात्रव करत्रन, **७५**न मटन कर्त्रन ८४, जामात्र वाकाला मसीरिशका . छेवक्टे। छाहात वाकाना তिनि धवर छै। हात्र भातियम वर्ग द्विम, चात्र (कह यूकिश ना। (कमन कतित्रा वृशिद्य! (म छ मिनाम छावा नहरू। নে অমুবাদকদিগের কপোলকলিত তা-यात्र উष्णिष्ठे याता। त्राराभत्र अधिकाश्म लाकरे উচ্ছिट्डाबरन बाजिगारजन कद करत जर्भा स्थापकमश्यादात्रा छोश-क्रिशक कूमः इतिशत वृर्ध वित्रा छेनेहाम सहस्रा । अरे शिन अक्तरनित्र कथी १---चावात यथन चल्लामकविद्यत वरे-क्रभ कीर्य एक सरवटकर "निविद्ध पनपठी-कार्यात्रेश नम्, नमी, अर्थाठ, कमारवत्र व्यमख्त वाफ़ावाफ़ि रहेना छेठिन, स्वन मश्कृष, देशदबिक गर्का व्यत्भवा बाकामा

পড়ায় অভিধানের অধিক প্রয়োজন रहेशा পড़िन, खपन कक्षक्शिन लाक **हिंद्रा विलियन, अ योक्यां मंत्र । विनिद्रा** डाहात्रा यङ हिन्छ कथा भारेहनन. **जारारे मरेबा निषिट्य जात्रक कांत्र**-(गन। ऐटें। एत्र जरपा जन्न, कि ইহারা সংস্কৃতের সং পর্যান্ত শুনিলে **हिमा फिट्टिन। अपन कि हेद्दांची मःकृत-**मृलक नय रावरात्र कतिए त्रांक नन। चानवः मान, हेर्ट्याचनन, नावनीमन ७ दिनीत्रमत्मक पात्री निषिद्ध भातित गःष्ठणेय श्रीनाटक वावहांत्र करत्रन मा। **এই গেল আর একদলের কথা।** স্ত্রাং **এই উভয় দল যে পরস্পর** বিরোধী हर्दिन, धवर वजीत्र मिथकर्गगरक वाजि-वाष कविषा जूनिद्यम, जानिश कि।

আমরা যে পূর্বে লিখিরাছি বালালা ভাষার ঘাঁহারা এ পর্যান্ত লেখনীধারণ করিরাছেন, তাঁহারা কেহই বালালা ভাষা ভাল করিয়া শিক্ষা করেন নাই, ইহা অভি সভ্য কথা। আমরা ইভিহাস ভারা এইটি সমর্থন করিব।

मकरमरे भारतम थांछ जहामन পृर्क् वाणांगा छावात भगा अर हिल ना, विख भगा अरूत हिल। देश्यांक निका आ-त्रस रहेवात भृर्क्त व्य मकत भगा निविष्ठ रहेत्राहिल, छात्रा विश्वच वाणांगा छात्रात निविष्ठ। इखिवान, काणीमान, जहाति क तिवाहिल, क्ष्म काणीमान, जहाति क निवाहिल, क्ष्म काणीमान, जहाति क निवाहिल, क्ष्म काणीमान, जहाति क निवाहिल, क्ष्म काणीमान, जहाति, ह भांति जव्यक्रमिक सम्बद्ध भन्न थारि-क्ष्म केरा क्षमानकः विश्वच वाणांगाः

कविषयन, खोत्रकहत्व, त्रांगळात्राम राम निविर्कत। रेमनीरवर्ता रामनीत्र छावात्र शहा मा थोक्टिन खन्ममाटन (य छावा श्रामक बार्य कार्याकरे विश्वक वाकाना े ह्या करह। जामारमन्न रमर्प रमकारम ভত্ৰসমালে ভিন্পাকার বালালা ভাষা **हिन्छ हिन। यूमनमान नर्वाव छ** ওমরাহদিগের সহিত যে সকল ভজ-लारकन्न वावशान कतिरा हरेड, डांश-(मत्र वात्रागात्र चटनक छर्म् नक मिनान थाकिछ। याहान्नां भाजानि ज्यान्न कति-**(छन, छोहोरमंत्र ভाষার অনেক সংস্কৃত** भाषा वावज्ञक रहेल। अहे इहे कूछ-मध्यमात्र किन्न वहमःथाक विषद्री लाक हित्नन। छाहात्मत्र वाकानात्र छर्न् ७ गःश्रुष्ठ घुरे मिणान शांकिछ। कवि छ পাঁচালীওরালারা এই ভাষার গীভ বা-ধিত। মোটামুটি ব্রাহ্মণপণ্ডিত, বিষয়ী लाक, ও बादानराउत्र लाक এই जिन मन लाटकत्र जिन त्रकम वाकाना हिल। विषयी लाटकत य वाकामा जाहा हे भवा-मिए मिथिक रहेक, जबर निम्रास्थिगीय लाक्त्रा क्रेक्स वाकामा निश्चित्वहे यरथहे তান করিত।

देश्टब्रद्यक्षत्रा अदम्भ मथन कतिवा छात्राव किइमाज পরিবর্ত্তন করিতে পারেন নাই। किंद छोहाता रहमः बाक जामान ज्ञानन क्राम ध्या जामानटक छर् जामा छह-. निष्ठ सामान मानामात्र भाष्मी भएमत विष् जिन जान्दीन स्रेमिक्न गाव। मार्ट्स्सा भावमी मिरिडन, यामामा

প্রভুতি কৰিয়াণের লেখা বিশুদ্ধ বালালা। তীহাদের সহিত কথা কহিতেন। প্রতরাং हैश्द्रिक कथा वाकामात्र मध्या अविष्ठ रुरेट भारत नारे। याहाना रेश्टन मिथिएजन वा देश्दारक महिल जिथक मिनिएजन रमर्गित मर्था श्रीत्रहे छै। हारमञ्ज কিছুমাত্র প্রভূষ থাকিত না।

> কথক মহাশদেরা বহুকালাবধি বাঙ্গা-লায় কথা কহিয়া আসিভেছেন। তাঁহায়া সংস্তব্যবসায়ী কিন্ত ভাঁহারা যে ভাবায় কথা কহিতেন ভাহা প্রারই বিশুদ্ধ विवन्नी (लाटकत्र छाता। (कवल स्वन-কাল বর্ণনাস্থলে ও সংস্কৃত প্লোকের ব্যাখ্যা স্থলে ব্রাহ্মণপণ্ডিতী ভাষার অমুসর্প করিতেন।

> আমাদিপের ত্রভাগাক্রমে যে সময়ে हेश्द्रक महाभूक्र एवत्रा वाकाली निश्र क वानाना निशाहेबात बना छएमाशी हहे-लान, त्रहे नत्रद्र य गकन পভিডের महिত তাঁহাদের আলাপ ছিল তাঁহারা সংস্কৃত কালেজের ছাত্র। তথন সংস্কৃত कात्वस्य वाक्रांचा व्यक्षद्र। ত্রা শ্বণ পভিতেরা ভাঁছাদিগকে ববনের দাস विषया भक्त भिनिष्ठ मिट्डन ना। ভাঁহারা যে সকল গ্রন্থাদি পড়িভেন ভাহা ध (मन्यार्था इतिक हिन ना। ध्रमन कि (मनीय ভज्रमभाष्य डीशायम किडू-माख चानत किन ना। ञ्चताः छाराता (मर्भ (कान् ভाষा চলিত কোन् ভাষা बहारिक, खाराज किंदूरे वृतिएवन ना। र्हा देशित्वत देशक वाकाला श्राक

প্রণায়নর ভার হইল। উহারাও পণ্ডিত- অবসর পাইলে, পেলার আসক হইত;
অভাবস্থাত দান্তিকভাসহকারে বিষয়ের কিন্তু তিনি সেই সময়ে নিবিষ্ট্রমনা হইরা,
শুরুত্ব কিছুমাত্র বিবেচনা না করিয়া হর্ট প্রভৃতি বত্রের প্রতিক্রপ নির্মাণ
লেখনীধারণ করিলেন। করিয়েন করিছেন। একলা, ভিনি একটা প্রান

পণ্ডিভদিগের উপর পুত্তক লিখিবার ভার হইলে তাঁহারা প্রায়ই অমুবাদ করেন। সংস্কৃত কালেজের পণ্ডিতেরাও তাহাই করিলেন। ভাঁহারা যে সকল অপ্রচলিত গ্রন্থ পাঠ করিয়াছিলেন ভাহারই তর্জ্মা আরম্ভ করিলেন। রাশি রাশি সংস্কৃতশন্ধ বিভক্তিপরিবর্জিত হইয়া বাঙ্গালা অক্ষরে উত্তম কাগতে উত্তমক্রণে মুদ্রিত হইয়া পুস্তকমধ্যে বিরাজ করিতে লাগিল। যিনি কার্দ-चत्री छर्জमा कत्रित्राहित्वन, जिनि निथि-'लिन, "এकमा खंडाडकाल ठक्तमा অন্তগত হইলে, পক্ষিপণের কলরবে অর-गानी (कामाइनमम इट्रेल, मर्वापिछ রবির আতপে গগনমণ্ডল লোহিডবর্ণ हरेल, গগনাসনবিকিশ্ত অশ্বকাররূপ ख्यवामि क्रिकटदेव कित्रवेद्रश म्यार्किनी षात्रा मृत्रीकृष्ठ इहेटल, मश्रविमखन व्यव-গাহনমানসে মানসসরোবরতীরে অব-छीर्व इहेटम, भाग्रनीवृक्ष डिड शक्तिश्व আহারের অন্বেবণে অভিমত প্রদেশে खाद्यान कतिन।" आयदा शूर्का (य जिन खायात উল্লেখ कत्रियाहि, देशात गरिड काहात्र এकिए सम्मर्क बारे।

्थ छ त्रिल मश्युष्ठ इहेटल कायुवाम। कित्न ना। किस्कि केहारम्ब छ। व हेरदिक इहेटल कायुवाम् धकवात्र तमथून, हेरदिकिटल बत्नामरका केनिल इहेड, व्योजनानात्र जकन दानकहे, विद्यारम्ब इसम कृतिया विक कथूनि काला वाक

অবসর পাইলে, শেলার আসক্ত হইত;
কিন্তু তিনি সেই সময়ে নিবিষ্ট্রমনা হইরা,

ঘরট্ট প্রভৃতি বল্লের প্রতিক্রপ নির্দাণ
করিছেন। একদা, ভিনি একটা পুরান
বাক্স লইরা জলের ঘড়ী নির্দাণ করিয়াল
ভিলেন। ঐ ঘড়ীর শব্দু বাক্সমধ্য হইতে
অনবরত বিনির্গত জলবিন্দুপাতের ঘারা
নিময় কাঠ্যওপ্রতিঘাতে পরিচালিত
হইত; বেলাববোধনার্থ ভাহাতে একটি
প্রকৃত শব্দুগট্ট ব্যবস্থাপিত ছিল।" ইং
রেজি পড়িলে বরং ইইা অপেকা সহজে
বুঝা ঘাইতে পারে।

এই শ্রেণীর লেখকের হল্তে বাদালা ভাষার উন্নতির ভার অর্শিত হইল। লিখিত ভাষা ক্রমেই সাধারণের চুর্বোধ ও চুম্পাঠা হইরা উঠিল। অপচ এড় কেশন ডেম্পাচের কল্যাণে সমস্ত বন্ধ-বাদী বালক এই প্রকারের প্রক পড়িরা বাদালা ভাষা শিধিতে আরম্ভ করিল। বাদালা ভাষার পরিপৃষ্টির দফা একে-বারে রক্ষা হইরা গেল।

সংস্কৃত ব্যালেকের ছাত্রদিগের দেখাবেখি নুইংরেজিওরালারাও গেখনীধারণ
করিলেন। বাঙ্গালার সংস্কৃত কালেকের
ভাত্রেরা বেমন একখনে ছিলেন, ইংরেজিওরালারাও ভাত্রা অপেকা মর
ছিলেন না। তাঁহারাও প্র্রোক্ত ত্রিবিধ বাঙ্গালা ভাষার কিছুমাত্র অবগত
ভিলেন না। অধিকত্ত ভাহাদের ভাব
ইংরেজিভে খনোমধ্যে উনিত হঠত,
হলম করিয়া বিশ্ব কথার ভাতা বাজ

পারিভেন না। নৃতন কথা व्यासम्बन हरेख। ठ। हाटल त्र ' न पूर्व निक स्ट्रेंटन बीनक छायात्र ७ मश्कुट (यहेकू मधन थाका जावनाक छाहा ना शीकाम ममस्य ममस्य वर्षे विभन्न इरेड हहेछ। छे९िनी डि्या, निनी विया, नि-ঘাংসা,প্রভৃতি ক্থার স্ষ্টি হইত। "তুষার-मिखिङ दियानम, नित्रि-निः एङ निर्दात, वावर्खमशी (वशवडी नमी, हिउहम९-কারক ভরানক জলপ্রপাত, অ্বসমূত डिकथ्ययन, मिक्नाहकात्री मानमाइ, বস্মতীর তেজঃপ্রকাশিনী স্চঞ্চশিধা-निः नातिनी दनानाम्याना खानाम्यो, विः-भिज्ञह्य ब्यानियं म्हानियामक विकृष्ठ-भाशाध्यमात्रक विभाग वर्षेत्रक, श्रांभमनारम নিনাদিত বিবিধ বিভীষিকাসংযুক্ত অন-শুনা মহারণা, পর্বতাকার তরঙ্গবিশিষ্ট প্রসারিত সমুদ্র, প্রবেশ ঝঞ্চাবাত,বোরতর मिनावृष्टि, कीविजामामः हात्रक श्रू कम्म-कात्रक रह्मश्वनि, व्यनत्रभक्षाममूहावक षोज्ञिनक कृमिकन्त्र, **अ**श्वत्रत्रिश्राशिश निमाचमशास्, मनः अकृतकती स्थामशी भावमीय পূর্ণিমা, অসংখ্য তারকামভিত छिमित्राव्छ विखन्न गगनमखन हेनामि ভারতভূমিসম্মীয় নৈস্গিক বস্তু ও শৈসর্গিক ব্যাপার অচিরাগত কৌতৃহলা-काख हिन्तू का जी मिरशंत का खः कत्र न अक्र न ভীত,চমংকত ও অভিভূত করিয়া ফেলিল ्य, डाहाजा व्यकावणानी প्राकृत भनार्थ गम्बद्धक मटाक्रम द्वारा काम कवित्रा गर्नारभना ज्योत्र छेभागगार्ड छाउ्छ

থাকিলেন।" এ ভাষায় মন্তব্যপ্রকাশ निष्टारमञ्जन।, ज्यामना वित्मध यञ्जभूकंक **(मिथित्रांछि ८१, ८य वालटकता এই मकन** গ্রন্থপাঠ করে, ভাহারা অভি সম্বরেই এই সকল কথা ভূলিয়া যায়। কারণ, এরপ नम् ভाशामिशक कथनरे वावरात्र कतिएक र्य न। आभाष्म्य এक श्रुक्षभृर्द्ध লোকের সংস্থার এই ছিল যে, চলিত **जिस श्रुटक वावशांत्र कत्रिंग (म श्रुष्ठ-**(क्र (गोवर थारक ना। (मर्ट क्रना তাঁহারা বরফের পরিবর্ত্তে তুষার, ফোরা-রার পরিবর্ত্তে প্রস্তবণ, ঘুণীর পরিবর্তে .আবর্ত্ত, গ্রীম্মের পরিবর্ত্তে নিদাঘ প্রভৃতি আভাঙ্গা সংস্কৃত শব্দ ব্যবহার করিয়া, গ্রন্থের গৌরবরকা করিতেন। অনেক मगर्य जैश्वारम्ब वावश्व मःश्रु भक्ष. সংস্কৃতেও ভত চলিত নহে, কেবল **সংষ্কৃত অভিধানে দেখিতে পাও**য়া যার भाज। ভট্টाচার্যাদিগের মধ্যে যে সকল गःषुष्ठ भक्ष धाद्रमिल हिन, खाहा शहः কারেরা জানিতেন না, স্থতরাং তাঁহা-(मत्र श्राष्ट्र (म मकन कथा मिरने जा। खिनिग्राष्ट्रि बाष्ट्रकात्रिमिरगत्र मरशा घ्रे ने। ह-खन रुष, धक्षानि किशान, ना रुष একজন পণ্ডিভ সঙ্গে লইয়া লিখিভে বিগতেন।

এই সকল কারণবশতঃ, বলিয়াছিলাম যে, থাহারা বাঙ্গালা গ্রন্থ লিপিয়াছেন, ভাঁচারা ভাল বাঙ্গালা শিখেন নাই। লিপিত বাঙ্গালা ও কথিত বাঙ্গালা এত ভফাৎ হইয়া পড়িয়াছে বে, তুইটিকে धक जावा विनिन्नार्थ (वांध रंग ना।

(मरमंत्र जंशिकाश्म लाटकरे निश्चिक जावा

वृक्षिरक भारत्र ना। ध जनारे माधात्रन

(लाटकत मरश जाज श भार्यक मश्मा

क्षक जात्र। ध जनारे वरुमश्मक मशाम
भव क जामित्रक्र मिलित्र। जनपूर्मत्र

नात्र जेश्मत रहेनारे जावान जरम

मिलित्रा यात्र।

গ্রন্থকারেরা বাঙ্গালা ভাষা না শিধিয়া শব্দ সকল পরিত্যাগ করিয়া অপ্রচলিত भक्तित्र चाल्य नहेत्रा ভाষात य चेशकात्र করিয়াছেন, ভাহার প্রতিকার করা শক্ত। यि छाँ हार इस मार्थ है र देखा अ वार्का-नात्र वहन ठर्छ। ना श्रेष्ठ, তाहा श्रेरन चानःथा क्ष श्रहकात्रियत नाम छ।श-দের নামও কেহ জানিত না। কিছ ভাঁহাদের সময়ে শিকাবিভাগ স্থাপিত रक्षत्रात्र, डांरांनिश्तत्र व्यक्षाव किছू अणि-রিক্ত পরিমাণে বৃদ্ধি ছইয়াছে। এবং **७२ क्युवर्मा**त्वत्र माथा देश्या क्या कि ब्रिक ठर्क। इश्वत्रात्र वहुनःश्वक देःदब्रि भक् ७ छार, बानानामम हड़ारेमा পड़ाम विषदी (लारकंद्र मध्या (य छाषा व्यव्हानि छ ছিল, তাহার এত পরিবর্তন হইয়া

शिवाद (य. शूर्क छैहा किन्न हिन, छाहा जान निर्म कतियान, त्या नाहे।

छो। विश्व कथक मिर्श्व मर्था (व ভাষা প্ৰচলিত ছিল, ভাহা'এখনও কতক कछक निर्शेष्ठ इहेटक शार्त्र। किस्- वह ছই শ্ৰেণীর লোক এত অৱ হইয়া আসি-माष्ट्र (य, त्मक्रभ मिन्म कत्रां अञ्च नटर। शहकात्रिक्तित्र वाकाला वाकाला नरह। विश्वक राजाना कि हिन, छाहा कानियात्र छेभात्र मारे। এ व्यवस्था व्यामारमञ्ज मङ रमपरकेत शकि कि ? इय, रेश्टब्रिक, भावनी, याभागा, ও मःश्रुष्ठमव त्य कायात्र जिप्तिम देखिताम क्यारिना-निरम्मनापि व्यनिष छक्तमभाष्य कथा वाखी हत्न त्मरे छावात्र त्मथा, मा हत्, याश्रंत रचमन ভाষা रागात्र रमहे ভाষার निष्यत्र ভाব वाक करा। এই निका-জের প্রতি বাঁহাদের আপত্তি আছে. ভাঁহারা কিরূপ ভাষাকে বিশুদ্ধ বাঙ্গাণা ভাষা বলেন, প্রকাশ করিয়া বলিলে गतीय लाटकत्र बर्पष्ट উপकात्र कता रत्र। यङ्गिन ना बिगट्ड भारतन, उङ्गिन কুঠার আঘাত বিষয়ে ভাছাদের কিছুমাত্র अधिकात्र नारे।

প্রাড়ু এট—



রত্বর্হস্য।

মাণিক্য।

দ্বিতীয় প্রস্তাব।

श्रीय श्रीविष्ठ व्हेत्राट्छ। जनजिहे वहे श्रीयाद नमाश्च हहेद्व। श्रीयाँहे
वना हहेत्राट्छ (य, छात्रा जञ्जनादत क्षेत्रहे
वाकिका भर्मार्थ छित्र छित्र नाम्म वाव्ह्राठ हत्र; किन्छ छात्रा कि १ व्यव्स कछश्यकात १ छाहा बना हत्र नाहे, किन्छ छाहा जनमा वस्त्रवा विधात्र ज्याद्य छाहाहे वान्ह कतिव, भन्ना छाहात द्यात्र विधात्र प्राच्य छाहाहे वान्ह कतिव, भन्ना छाहात द्यात्र विधात्र विधात्र व्याव्ह्र विधान वि

ছान्ना वा वर्ग।

মুকা, মাণিকা, কি অনা যে কোন

রন্ধ হউক, তাহাদের বর্ণ বিশেষই (রঙ্.)

রন্ধণান্তে "বর্ণ "ছারা " "ভিট্"
"ভাস্" "আভা" প্রভৃতি নানা নামে
উল্লিভিড দৃষ্ট হর। রন্ধভৃতি নানা নামে
উল্লিভিড দৃষ্ট হর। রন্ধভৃতি নানা নামে
বিশাচন করিরাছেন বে, মাণিকারত্বের
বহুপ্রকার ছারা বা বর্ণ থাকিলেও ত্রাধ্যে
প্রধানতম বর্গ ১৬ বোলটা। সেই বর্গ
রা রঙ্গ অনুধানে উহা পৃথক পৃথক নান
প্রার্থ ব্রন্ধান্ত প্রস্থ ছাহাদেরই ভারত্বাঃ
সম্সারে মাপ্রকারত্বের মুল্যান্তির প্র-

ভেদীকত হইয়া থাকে। ইহা বিস্পৃত্তি
ব্বাইবার জন্য করজনগৃত যুক্তিকরতক্ষ প্রভৃতি গ্রন্থের প্রমাণ উদ্ধৃত করা
গেল এবং বৃহৎ সংহিতা প্রভৃতির তৃই
চারিটা প্রমাণও যথাস্থানে প্রদর্শিত
-ইইয়াছে।

যুক্তিকলতক্তম প্রমাণ যথা—

"ব্দুক-শ্বনাসকলেব্রগোপ-वरा-भवाक्क्-সমবর্ণোভাঃ। वाविकत्वा गाजिमवीववनाः তথাপরে কিংভকগুপভাসঃ ॥" "निम्त्र भरचा १ भन क्षूमानाः माकावमगानि ममानदनीः। गांख गित्रारंश श्रेष्ठवा चरेत्रव ভাত্তি पनका। कृष्टेमशास्त्राजाः॥" कूष्ट्रकोनी वार्डिया वान-প্রতাপ্ত রক্তাবরভূল্যভাসঃ। ज्याश्यद्यश्यक्त क्रिकादी शूर्णाष्ट्रिया हिन्नुगक्षिट्याक्ष्ट्रया ।^१ "চকোর श्रहणिकनमात्रमानार নেত্ৰাৰভাসাশ্চ ভবন্তি কেচিৎ। चाता भूनगींच विभूचिणांनाः॥ जुनाषियः द्वाकनमानवानाम् ॥^{अं-}

मानिकात "वक्क" वैधिलक्भ [১] " खन्नामकन" खन्नार्क व्यर्शाद कान चाथयान ভिन्न कूँ ह [२] "हेक्सरभाभ" वदाकी है [७] "बवा" खवाकूल [४] " অস্ক্" শোণিত [৫] এই সকলের সমান বর্ণ এবং ইহাদিগের বর্ণের ন্যায় वर्ष ७ मीशियुक्त जवः "माज्यिवीज वर्ग माजिम वीद्यत वर्ग (७) हेश छ वात्र तक्तर्व " किः एक वर्व " भनाभ क्टनत वर्ग [१] "तिनृत" [৮] "भट्या९-भन" तुङ भन्न वा द्रक्षकश्रनगरेन (১) " कूकूम " बाफदान (>०) " नाक्नादम " चनक्कक्रुनावर्ग (>>) "क्रूड्ड" क्रूप क्स ७ "नीनी" नीन तम, এই इरे भिर्मः वर्ष (১२) "द्रख्याच्यत्र" मात्रःकारणद्र त्रख्य-• वर्ग আकाण अर्थाए मिंशूरत्र स्मरपत्र वर्ग (১০) ''अक्रकत्र शूष्ण'' ''(छन।'' दूरक्रत क्न () ४) "कफेकांत्री भूजा" () ६ " "हि-সুল" হিঙ্ক ধাতুর বর্ণ বা ছারা (১৬) रुरेत्रा थाटक ।

क्ष्म (कह वर्णन मानिका "চংকার" हरकात शकी, शूक्त काकिल ख मात्रम शकीत हक्त्र नात्र वर्ग्युक्छ हरेत्रा थाक । जनामा त्रक्रक्षतकात्रा वर्णन जत व्यक्षिक काकनम जर्थार त्रक नारेण क्रम्त शर्क्ष वर्णत नात्र वर्णक हरेत्रा थाक । वर्ग अस्तादित मानि देशवा ।

'तिः स्टा पू केंदिककः

श्वातां मस्क्रम्।''

श्वीकः कानश्रताद्वः

कृकिनमिकि मुक्म्।''

''अप्नाक्षेत्रकः विदः।''

''कृष्र हात्रश नीनः

नीनश्रक्त क्षत्रश नीनः

भागश्रकः श्रद्रताद्वम्।''

मधामः मधाकः रक्षत्रः

मानिकाः रक्षवरक्षकः।''

নিংহলদেশে যে মানিকা জ্বে তাহা রক্তবর্ণ, নাম "পদ্মরাগ' ইহা অপেক্ষা উত্তম কুত্রাপি হয় না। কানপ্রদেশআত মানিকা "পীত" বর্ণ হয় এবং তাহা "কুরুবিন্দ" নামে বিখ্যাত। এই একই মানিকা যদি অশোকপরবের কান্তির নায় কান্তিযুক্ত হয়, তবে ভাহার "সৌগকিন্ধিং নীলাভ হয়, ভরিমিত্ত ভাহা "নীল" নামে প্রসিদ্ধ। সিংহলীয় মানিকা কাই অভ্যান্তম। তুস্বদেশীয় মানিকা অধম এবং কানপ্রাদ্ধি মধ্যদেশোংপর মানিকা মধ্যম। এইরূপ, ক্ষেত্র অর্থাং উং-

कानश्र ? कानश्र १ विक् बाधूनिक कारणत्र मर्खनाधानिक कान श्र व्य, जर्प देशरे वृद्धिष्ठ इदेरिन, र्य, अथम बान्न जरकारण कान प्रश्रे व्यक्ष्मीना

পতি স্থানের ভিন্নতা অনুসারে মাণিকাও विकिन्न क्रभणवामि वुक रहेना थाएक। "क्षकाव काठिना श्रक्तकरगादेशः श्राप्तः स्थानाः किटकाडवानाम्। वानीन बरकार्शन ठाक्रकामः क्रिक रहेर्ड अक्टाकात्र मानिका উৎপন্ন হয়, ভাহারা কি প্রভাবে, কি यानिका जुना द्रेया थारक। त्रोनिक-नामक मिन जेयर नीना छायूक बरकार-পলের ন্যায় মনোহর কাজিবিশিষ্ট হইরা शांक ।

মাণিক্যরত্বের জাতিবিভাগ। রত্তভারো আর সকল রডেরই চারিপ্রকার ভাতি কল্পনা করিয়া থাকেন। তাহাও আবার ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও ভাতিকলনা করিবার মূল কি ? ভাছা আমরা জ্ঞাক্ত নহি, চিন্তা ক্রিয়াও বোধ-गमा क्तिएक भादिना। याहाई इक्डेक, মাণিক্যরজের জাতি, যাহ। রক্তপাজে डिविधिङ बार्ट्स, डाङ्ग्रंत किम्रमः अन्दरम উদ্ভ করিয়া পঠিকবর্গের কৌভুক্ল • इकि कतिय।

> मानिकामा धारकामि यथा बाजिङ्के इस्। वनक विष्टेषणां क न्यान्धार्थ सर्थाक्रमम्।" "मञ्चल्डा करक्रिया-ব্ভিন্নতক কলিয়:।

बक शीरका जरबरेबरभा मक्तीन उथायायः॥"

व्यर्थ এই या, स्थिकारत यानिकातरक्रत চারি জাভি স্থির হয় ভাছা বলিভেছি। ব্রাহ্মণ, ক্ষজিয়, বৈশ্য ও শৃদ্ধ, এই সৌগন্ধিকাৰ্থা মণরে। ভরম্ভি॥'' চারিপ্রকার জাতি। যাহা রক্তখেত অর্থাৎ অয়রক্তিম তাহা ব্রাহ্মণভাতীয় মাণিকা। যাহা অভান্ত লোহিত ভাহা कांद्रिता, कि शक्दा गर्काः एवं काला क्वित्रवालीय मानिका, यादा त्रक्रभीक অর্থাৎ পীতাভাযুক্ত রক্তিম, তাহা বৈশ্য-জাতীয় এবং যাহা নীল আভাযুক্ত রক্তিম ় তাহা অস্তাজ অর্থাৎ পুদ্রজাতীয় মাণিক্য। ' (এই ভাতিবিভাগদাধক ৰচনাবলীর षाद्या शृत्क्त विश्विष्ठ शीजामि भरमन वर्ष रेरात जञ्जन कतियां नरेरवन। जर्थाए रम्थारन शीजनर्ग नना हहेबारह रमथारन তাহা পরিষার পীত নহে, পীতাত त्रिक्तम, अर्जेन्ना वर्ष इरेटवक ; क्निन नी त्रक्टवर्ण मणिके माणिका हेहा "(मार्गाशन" প্রভৃতি নামদারা ব্যাখ্যাত হইরাছে।) যুক্তিকরতক্তান্থে এই আভিনির্বাচন मयदक विष्णेय छेकि चाटक। यथा-

> ''भग्नतारमा छरविष्यः क्कविनाच वाह्यः। त्मोशकित्का **क**दबरेक्टणा । याः मथ्छ ख्यां भटत ॥²²

शृर्काक भग्नताग -मनिर विधानाजीय। কুম্বিন্দনামক সালিক্য কাছল অর্থাৎ ক্ষত্রিরভাতীর। সৌগদিকনামক না-विका देवणाषाजीय जवर याःमधर्मामक याणिका भूजवाकीय।

वैदर्शन-नामुणामि।

गाणिकात्रदश्व वर्णत टाएक धाकात छेहा नाना नात्म वावछछ हम अवर कमञ्चादंत्रहे बाजानि विভाগের कन्नना করা হয়। অতএব মাণিক্যরত্ন সাধা-রণতঃ রক্তবর্ণ, ইহা স্থির রাথিয়া তাহার थाएक व्यारेवात बना वर्गास्त्रत महिल সংযোগের কথা বলা হইরাছে, ইহা वृक्षिष्ठ हरेरक। यथा—''द्रकृष्याठा भागमा वर्षाद द्राकादमन এवः ভবেৰিপ্রঃ'' ইত্যাদি। সেই মিশ্রবর্ণের থদিরালার (অলক্ট থদিরকার্চ) সদৃশ यथार्थ ভाব ও অবস্থা ব্যাইবার জন্য ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের রক্তিম বস্তর সহিত , এবং ভাছা ব্রাহ্মণভাতীর। जूनना कतिया (कान मानिकात किन्नभ ब्रह् जारा व्यान ररेबाए, পत्र व्य- माफ्निश्य्लाव नााव मीखिय्क ररेल পরীক্ষার অভ্যাস না থাকিলে কেবল তাহাঁ "কুরুবিন্দ" ও ক্ষল্রিয়জাতীয়। লেথারহারা সে প্রভেদ অমূভব হইডে পারে না! মাণিক্য চেনা স্কটিন; ব্যবসায়ী ব্যতীত সহস্ৰ লেখাপড়া জানি-लिख मानिकात्र निकाठन कतिए मक्स रुखा यात्र ना। यन, वहन छनि छक् छ ना क्रिल ख्रांच चगण्यूर्न ७ शार्ठक वर्णन कुष्टम विक्रिम स्टेट्व विनम्ना मिक्न লিখিতে বাধা হইলাম।

"লোৰপদাসমাকার: ধরিরালারসপ্রভঃ। পদ্মরাগো ছিল্পগ্রোক্ত-**म्हाबार्ट्डाएन गर्का।**" ल्खा निम्त्र रक्क नागत्रममध्यष्टः। ু ভাড়িমী কুন্তমাভাসঃ कुक्विक्ष वाह्यः॥"

"हित्रुवाका (बोकश्रुवा-चनीयर शीजत्मध्रिकः। ু জবা লাক্ষারস প্রায়ং देवणाः त्रोशिक कः विद्यः।" ''बात्रकः काखिशीनक **किक्**रण वित्नवणः। याः नचटला नयाकारमा-क्छाबः পाপनामनः॥" देजाति

ছात्रायुक याणिकात नाम "शैषातान"

कुँठ, मिन्मू त, वैधिलक्ल, नांशत्र ववः

हित्रुन, ज्राणांकशूण कि जेवर भीठ-युक्त लाहिङ, व्यथवा व्यवाभून्य कि অলক্তকসদৃশ কান্তিযুক্ত হইলে ভাহা "দৌগত্তিক" ও বৈশাব্দাতি।

व्यव 'त्नाहिल, कास्विव क्विंड किस िक्विथ्यव्यक्त भाश्मभए अस नाम वाछा-युक्त रहेरण जाहा "माःमथछ" जलवा "नीनगिक" ध्वर छाहा खळाच वर्षार শুদ্রবাতীর।

এতভিন্ন আটপ্রকার লোব, চারি-टाकांत्र ७०, (बालटाकांत्र होग्रा ममखरे शूर्क गारमन वक्रमर्गत विवृष्ठ कता रहे-ब्राट्य। अक्टब महत्वाच मानिका श्रांत्रव्य शरे धकरी कनाकन वर्ग कतिया भगाद भन्नीच्या । ब्यामि निक्रभन कन्ना गारे-CARI

"(य कर्कन्रा न्हिज्य लाभि पिश्वाः প্রভাবিষ্কাঃ পরুষা বিবর্ণাঃ। ন তে°প্রেশস্তা মণয়ো ভবস্তি म्यामरका चाकिखरेगः मगरेखः।" "(मार्याभण्डे: मनिम श्रादांधार विखर्खि यः कण्डन किशाकम्। তং বছুত্ঃখায় সবন্দ বিত্ত-नामाण्या (पाष्ण्या जनस्य।" "দপত্নধ্যেহিপি ক্বতাধিবাসং প্রমাদবৃতাবলি বর্তমানম্। न भणतांशमा महाखनमा ভর্তারমাপৎ সমূপৈতি কাচিৎ॥" "(मार्याभमर्गश्रक्याम (य (क নোপত্ৰবা ন্তং সমভিত্ৰবন্তি। खटेनः সমুदेषाः मकरेनऋरभङः यः भग्नत्रात्रः व्ययका विভर्कि ।

কর্মর অর্থাৎ কাঁকরযুক্ত, সচ্ছিত্র, মলিন, বা মললিপ্ত, প্রভাহীন, কর্মণ ও বিবর্ণ হইলে সে মনি অপ্রশস্ত অর্থাৎ ভাল নহে।

मक्रमाथा वाम कतिरमञ्ज श्रमाम प्यत-णात्र प्रवणान कतिरमञ्ज श्रमणात्र भणताश्रमभिषात्रमक्षी कमाणि प्राणम्श्रस्य रत्र ना।

खामन खामन खनमूक भाषामा मनि यनि छा विकास स्वान् स्वेता यात्रम कता यात्र, कादा स्वेदन द्याम क देवभाक- সম্ভব কোন প্রকার আগদই উপস্থিত হইতে পারে না। এত্তির আরও অধিক ফলশ্রুতি থাকিলেও বাহলাভ্তরে পরিতাক্ত হইল।

পরীকা।

"পদ্মরাগ" প্রভৃতি নামধারী মানিকাও একপ্রকার হীরক; স্বভরাং হীরকপরীক্ষাকালে ইহার স্ক্রাস্থ্র পরীক্ষা
প্রকটিত হইবেক। এক্ষণে সামান্যাকারে
কেবলমাত্র জাত্য ও বিজ্ঞাতীর এই
স্ইপ্রকারের ভেদবোধক পরীক্ষা ব্যক্ত

'বালার্ককরসংস্পর্গাৎ
যঃ শিখাং লোহিতাং বমেৎ।
রঞ্জমেদাশ্রমং বাপি
স মহাত্তণ উচাতে।'

হিতাদি] নবোদিত সুর্য্যের কিরণম্পর্ণে যে পদ্মকর্যুক্ত, সচ্ছিদ্র, রাগমণি, রক্তবর্ণ শিখা উদ্মন করে
হিন, কর্মণ ও অর্থাৎ যাহা হইতে রক্তিম আভা নিজান্ত
অপ্রশন্ত অর্থাৎ কর, কিলা আধারগৃহ রক্তবর্ণে রঞ্জিত
করে, সেই পদ্মরাগ মহাগুণশালী।

"ছ্যে শতগুণে কিথাে রঞ্জেদ্য: সমস্তত:। বমেছিখাং লােহিতাং বা পদ্মরাগ: স উক্তম:।"

भण्डल प्रश्न निकिश्च कतिल (व भण्यतां ममस प्रश्न तस्त्र किया तस्त्र भिषा वमन करत, (महे भण्यतां गहे देशके।

> ''बककारत्र महास्वारतः। 'स्वा नाषः मन् महामिनः।

প্রকাশপুতি স্ব্যাতঃ ण्टलंडः भगवागकः॥" रिय महामनि द्यांत्र व्यक्तकारम त्राधिरमञ স্থাবৎ প্রকাশ প্রাপ্ত হয় এবং অন্য वखरक७, ध्वकाम करत्र रमरे भगतागरे (अर्ह ।

> "भग्नदकार्य कू (या नारखा বিকাশয়তি তৎক্ষণাৎ। भणवारमा बरबारहाय (म्यानामिश वर्लकः।"

यादां भरमामद्र ज्ञाभन कतिरम भग्नि বিকশিত হয়, সেই পদারাগই শ্রেষ্ঠ ও रिवर्ष्ण ।

> "চডाরম্ভ মরোদিটা श्विनक यर्थाखन्म्। मर्कादिष्ठे श्रममनाः

উল্লিখিত চারিপ্রকার পদ্মরাগ আমি উদ্ভ করা গেল। যথ।— वर्गन कतिलाम, উহারা পর পর অধিক अगयुक धवर छेरात्रा मकलारे अभिष्ठे- मिनात्राः भतिषर्यस् । ्नामक ७ नकरनरे मन्निख्विकातक।

> त्या मनिष् भाष्ठ प्रा९ नर्यमण्णिकात्रकः॥"

त्य मनि प्र स्टेट जनस जाित ना। व मृणा रंग, छारात नाम "वःणकाशि" धरे वः नकां छि मानिका, धात्रकर्सात मर्कशकात्र मण्णि जानवन करत्।

''পঞ্চ मश्च नवविश्मिणि त्राशः ''मरकाः जन्माजिष किस अव मक्मर पम् रहत। (सम् । कारमः विकार मः ।"

রঞ্রেদমতি বা ক্রভালম্, **উउदाउत महाअनिमस्य ॥"** ''नीमत्रमः क्षत्रमः खलः वा, যে রঞ্মতি বিশত প্রমাণম্। তে তে যথাপূর্ব মতিপ্রশন্তাঃ भाषामा मण्यकि विधानमामकाः।" **८य मनि जाशनात अवस जारशका** छ्हे শত গুণিত অধিক পরিমাণ নীলরস, प्य, कि जनक जागवान कतिए भारत रिन्हे नकल मणि श्रृक्तिकरम अनेख वर्षाए नीनत्रत्रक्षक जिल्ला उत्तर्भक्षक অপেকাকত অমুভ্য,অলরঞ্জ ভদপেকা व्यक्षम । देजापि ।

विटमय भद्रीकाः।

গভ মাদের বলদর্শনে পরীকাদযমে कारनक कथारे वना इरेब्राइ। अठवाः गर्सगण्यविषात्रकाः॥" क्रेडियाज मत्मरनाणक पद्रीका এएल

> ''অপ্রণশ্যতি সন্দেছে श्रु। (सार्डास्टमानानान् পরিমাণং ন মুঞ্জি।।"

व्यमस्थिममञ्ज्िः। यानिका स्मिर्ग ভाष्टा बाजा कि यःभकास्तिः म विरख्याः विकाषीत्र कि कृष्टिय, यणि कान व्यकात मत्मर मृत ना रुत्र, छाञ्चा रुवेल তাহা অন্য এক জাত্য মাৰিক্যে ধৰ্ষণ कति (वक। वर्षण कति (माछ। वृद्धि इत्र जात्र भतियान कर्णाए उक्तरन ना करम, जारा इहेरन जारा-

—শুদ্ধ জাতি এবং বিপরীত হইলে তাহা विवाजीय क्विटक स्टेटवंक।

পরিমাণ।

्यानिकात्रपत्र व्याकारतत ७ ७व्यन्त एक मीमा कि, जारा बना यारेट ज्हा उन्न कतिरम मणकूर, व्यर्शि मणति পর্যাস্ত হইতে পারে এবং দেখিতে বিশ্ব-তোলা পর্যান্ত হইতে পারে। রত্নতত্ত্ব- হইরাছে। विष् পश्चिरजैता वरनन, कि जाकारत, कि उज्ञत, উহা जिल्ला अधिक द्र अज्ञल गानिका त्कर कथन नाज करत्र नारे। যথা---

> ''खक्षां कल ख्रां नव मन मश्र जिथ्यकान्। পদারাগ স্তুলয়তি यथाश्राः यहाखनः॥"

य পদারাগ দেখিতে গুঞাপ্রমাণ, তাহা ১০, ৭, ও ৩ গুঞ্জার তুলিত অর্থাৎ ওলন হইতে পারে। ভাহা হইলে পূর্ব পূर्व उक्त युक्त भग्नतागरे अन्छ विना गर्ग। अर्था९ এक छि ख्याकात भगता ग उषन कतिरण यपि >० श्वभात गमान इत्र, 'डारा रहेरन छाहा यक छान, १ खझात ममान इहेरल जाहा जल जान नरह। विकाश ७ श्वात मयाम इरेटम खाद्या "यनि मट्डाफ शूरवाम व्यापका व्यथम विविद्या क्षानिष्टक स्ट्रिक ।

"ट्यार ट्यांगक्यांकारता

পদ্মাগন্তলরভি यशासूर्याः महाखनः।"

क्यां क्यां वर्षाद भृशान्यम्त्री, यांदात वक्षाया "गाक्न।" . ८मरे नाक्टलत नमाम मृणा এकि श्रीवाश ১২, ১০, ৮, কি ৭ গুঞ্জার সহিত জুলিত দেখিতে কুঁচের ক্ষান একটি মাণিক্য অর্থাৎ ওজন হইতে পারে। তাহা ছইলে তাহারা পূর্ব পূর্বক্রমে মহাগুণ বলিয়া गंगा दहेरत । अञ्चरन छ। ति इश्रवाहे (य यन সমান একটি মানিকা ওজনে "দশ. একটি মহৎওণ তাহা পূর্বেই বলা

> "वनतीकनजूरना। यः স্বলিক্ বস্থাযক:। তথা ধাত্ৰীফলত্ৰিংশ দিংশতি ছাইমাষক:।"

यमत्री अर्था९ क्या। तमिराफ क्रमत ये अक्टि यानिक, **अज्ञात १८, १०, ४,** याचा इटेट भारत। এই ज्ञान धाळी वर्षा९ (मथिएक वामनकी करनत मक এक हि गानिक ७० ७ २० ७ ३७ गाना পর্যান্ত হইতে পারে। এখানেও বে যত ভারি সে তত ভাগ ইহা ব্যিতে হই-(वक।

''विषीक्षणभ्याकारमा বস্ষট্দশভোলকঃ। অতঃপরং প্রমাণেন মানেন চ ন লভাতে।।'' **जना निकि मनाध्यार ॥**" वामणाशिक्षिकाम्। धक्राय ৮, ७, ७ मण ट्यांना, इरेट्ड

भारत। कि क्षेत्रांप कि यात देशत क्षिक देत्र क्षेत्रण यानिका भाक देत्र ना। यि क्षिक क्षेत्रण श्रीकरण माक कतिर्द्ध भारतन, करव क्षित कष्ठिमिक माक कित-रवन, वना यादेख भारत।

छेशत्त्राक वहननिहस (य क्षमां । अ मान्तर निर्मण करा हहेन, छाहा (करन मिक्मणन माळ। कन, छेहात्र छात्रछमा छ हहेत्रा थाटक। विषक्षन (यमन ह्या छे वफ हम, विश्वक्षनाकात्र माणिकाछ (छमनि किकिए ह्या विष, जवर छाहारमञ्ज छन्न ५, ७, छ : ना हहेन्ना ।। ।, ७।। ०, ১०।। ० कि छाहात्रछ किकिए नानाधिक हत्र, हेहाछ वृक्षिण हहेरवक।

मुना।

अकरन मृत्नात्र कथा वनिष्ठा वास्ता **(मर क्या याडेक। भरूड भाजाञ्यात्री** मुनारे निथिज स्रेट्यक। (य नम्द्र ভারতবর্ষে রত্নশাস্ত্র সকল লিখিত হইয়া-हिन, ७९कारन त्व क्षकांत्र मुला क्लीज विकीण रहेळ भावकारववा जाहारे निभि-यह कतिया शिवाद्यम, क्षि धक्रा काराब जातक कानावा रहेवा शिवाटह। ज्यम गत्रक वृक्षित्रा पत्र ; ज्यर त्य याश्रत निक्रे वर्ड नहेटल भारत रम उठ नत्र। भूटर्स अक्रभ व्यवसा हिन ना। व्याप्र मकल वखत्रहे जक जक्री मृत्लात्र नित्रम हिना পृर्ककाल कि क्रथ निवरम ७ कि ऋभ भूत्मा मानिक त्राप्तत क्रम विकय निष्णित एरेड, डाहा क्रांब क्षांब-निक व्रकेटकरक्।

''वामाकाणियुवः सुषा पर्णदेन भारत्यस्थिम्। ज्ञ काखिविजात्यम ज्ञा जाशिविजात्यम

প্রাভঃকালে নবোদিত স্ব্রোর অভিমূথে দর্পণের উপর মণিটি রাণিবেক।
রাথিয়া মণির কান্তির প্রভেদ হির করিবেক; ছির করিরা ছায়া বা কান্তি
অনুসারে নির্দিষ্ট মূল্যের তারতমা নির্দিষ্ট
করিবেক। (এ নিরম আমরা বিশেষ
করেবেভাত নহি এবং এক্ষণকার মণিকারেরাও জ্ঞাত আছেন কি না সন্দেহ)
নির্দিষ্ট মূল্য কি! তাহা বাক করা
যাইতেছে। যথা—

"वक्षमा यख्णून मःश्वादाखः म्नाः मम्बाभिक्टगोत्रवमा। ७९ भन्नद्रागमा खनाविक्रमा

मामायकाशा जूनिङमा म्नाम्।।"
जर्भ এই दिन, এक उल्लून खक दीवरकत दिस्मा; এक साथ। পরিমাণ উৎকृष्टे পদারাগের সেই মূলা।

> ''यमुनाः भगवानमा मधनमा ध्यकीर्विजम् जायम् नाः जथा ७८६ कुक्रविस्म विधीयटा ॥''

खनबुक जवाद छक्तम भग्नतात्मत् (य मृना बना इहेल, विश्वद "कूक्रविम", मनित्रश्व त्मरे मृना विश्विष जाटह ।

> "मक्षर्य क्रिविटम ह यावण्याः क्ष्मिविडम्।

ভাষমুল্য চত্থাংশ-होनः गुादेव छशक्तिक ।"

"वावस्वाः ममाथााउर देवनायर्व ह स्ट्रिजिः। ভাবসালাচত্থাংশং हीनः गार मुख्यमानि।"

त्रष्ट्रविद পণ্ডিতের। "সৌগদ্ধিক" रीन रहेशा थाटक।

'পেলুরাগঃ পণং যম্ভ ধত্তে লাক্ষারসপ্রভ:। কাৰ্যাপণ সহস্ৰাণি ত্রিংশব্যুল্যং লডেত সঃ।" অলক্তকাভ পদারাগ যদি কর্ব পরিমাণ धक्ष यात्रण करत, जरव जाहात मुना बिममञ्ख कार्षाभव।

"ইন্ত্ৰ গোপকসন্বাদঃ ি কৰ্মস ধতো মণিঃ। ষাবিংশতি সহস্রাণাং ত্যা মূল্যং বিনির্দিশেৎ।" रेक्टांग वर्षार वर्षाकी छित्र नाम বিচিত্ৰচ্ছান্ন একটি মনি বদি ও কৰ্ম ভান্নি र्य, তবে ভাষার मृत्रा बाविः मिक महत्व कार्वाभव निटर्मण कतिरयक ।

" अदकारना न्त्र एक यक प्रवाक्ष्य महिष्ः।

কাৰ্যাপণ সহস্ৰাণি তস্য মূল্যং চতুৰ্দশ।"

উৎक्षेष्ठ . क्षिवित्मत (य मूना वना व्यवाभूत्नित नात वावायूक এक इहेल, " त्रीशिक " याणिकात यूना यणि यणि एकत्म शालान कर्ष शतियान তাহার এক চতুর্থাংশ নান হইরা থাকে। হয়, তবে তাহার মৃলা চতুর্দশ সহজ ं কাৰ্যাপণ।

> ''वानामि ग्राञ्चिभिष्ठः কর্ষং যম্ভ প্রভুল্যতে। কাৰ্যাপণ শতানাস্ত মূল্যং সন্তিঃ প্রকীর্তিতম্।"

মণির যে মুল্য অবধারিত করিয়াছেন, নবোদিত স্থ্যের ন্যায় অনতি গাঢ় শূদ্বর্ণের মণি অর্থাৎ মাংসথও বা নীল- লোহিত হাতিষুক্ত মাণিক্য যদি ওলনে গদ্ধি মণির মূল্য ভাহার এক চতুর্থাংশ কর্ষ পরিমিত হয়, ভাহা হইলে পণ্ডিভেরা बलन रय তাহার मूना একশত कार्वा-भव ।

> ''যন্ত দাড়িমপুপাডঃ কর্ষার্ছেন ভু সন্মিতঃ। কাৰ্বাপৰ শতানাত विश्मेखिर मृला मानि (भर।" দাড়িমপুল্পের আভার ন্যায় আভা-युक्त भि यिति शक्तर्य अक्रिक्य इत्र, ज्य ভাহার মূল্য ত্ই সহজ্ৰ কাৰ্যাপণ অব-

> > "চত্বারো মাৰকা বস্ত त्राकार्यगण्यकः। **ৰুণাং ভস্য বিধাভবাং** স্রিভিঃ শতপঞ্কম্।"

ধারিত করিবেক।

त्रक भग्नमरमञ्ज्ञ, नाम अखायुक यनि यनि চারি মাবা হয়, তবে রম্ববিংশভি-ভেরা তাহার মূল্য পঞ্চাত কার্বণিণ श्वित्र क्तिरवन।

भाविष्यावदका यक्ष खटेनः मदिवदिवय ममिष्याः। कमा मृजाः विषाक्याः विभक्तः कषद्विष्णिः।"

मर्का अवस्था स्थान विश्व विश्

"মাৰকৈকমিতো যন্ত্ৰ পদারাগো গুণাবিতঃ। শতৈক সন্মিতং বাচাং ম্ল্যাং রম্বভিক্ষণৈঃ।"

বে শুণযুক্ত পদ্মরাগ ওজনে এক মাধা পরিমিত হয়, রত্নতন্ত্রিচক্ষণগণ ভা-হার এক শত কার্যাপণ মূল্য বলিবেন।

> "बट्डानान द्यमानास भग्नाभाः स्ट्रास्त्राः। सर्व विस्तृयान

म्णाः एकषाः श्रकत्तवः ।" छेरा षरभका न्यभित्रमान खनग्रः भवतिक स्वर्णन विश्वन मृणा चित्र क्रि- (वक। जार्थाम अक्ट्राक ख्रादर्वत (ग्र म्मा,) तकि भणनारमञ्जू जारात विश्वन म्मा।

> ''जाता क्रूड भागीय मिंडिशिक मिंडिशि । कार्यामा है जिल्ला । कार्यामा है जिल्ला । ''टिक्स कार्याक एक।'' ''टिक्स कार्याक एक। याणि भग्नामा में मिंडिश । मूना मैं जे के विट्डा प्रश्

(इंडामि)।

অন্যান্য যে সকল মণির রঙ্ কুস্মফুলের বা মঞ্জিলিকের ন্যার, তাহারা
ফুলিক হইতে সমুৎপর এবং তাহাদিগকে
'কাষার" মণি বলে। তাহাদিগেরও
দোষ গুণ পদারাগমণির ন্যার বিচার্যা
কিন্ত তাহাদের মূল্য অভিজন্ন এবং
ধারণেও ফল জন্ন।

মাণিকাপরীক্ষা প্রস্তাব সমাপ্ত। শ্রীরামদাস সেন।

^{*} ৮० इकि काकनरक श्राकारण स्वर्ग विषठ। छेशहे छरकारणत मूछ। (म वर्ष अवरण गृहीक बहेरवक मा।



यञ्जाना न

৮৯ मर्था।

বহুপতিত্ব।

वहविदाह विगटन जामत्रा भूतर्यत्र वहविवाद द्वि; (कन ना वाकानाय **(क्वन भूक्राब्द्र माधारे वक्**विवार धार-गिष्ठ। कि**द्ध** (कान (कान (मर्ग छो-लारकत मर्या बद्धिवार चार्छ; चामत्रा **७४८न ८७६ वह**विवाद्य कथात्र উद्राथ করিতেছি, এইজনা বহুপতিত্ব বলিয়া मिद्रागामा विमाम।

- এক ভার্যার বহুভর্ত। এ কথা শুনিলে षामत्रा हानि। हानिवात्र मावि त्राचि; (कन ना, रणपूरणीता वहविवाइ करत्रन ना—हेरा छ।रात्तत्र बस्तर—किस गत वहिवादहत्र खाणा छोहादमत्र मद्या खाठ-निड थाकिछ छाद्या इहेटल (कान वान्नानि ्रामिङ ? धरे (य जामारपत्र भूक्षवादा-ध्रत्रा वस्विवार कतिएक एक वा कार्निक क्रान्ति कारिय कार्याप

শ্ৰীমুপপ্ৰতি বিশ্বিতলোচনে **তাহাদের** চাহিয়া পাকে? निजा प्रिथिटन त्रह्रिंग ष्यात तम थाटक ना।

यেक्रभ मगम পড़ियाह, वह्नि उद् পরিচয় বা**লালায়** নিতে কিছুভয় হয়। তবে এক ভরদা যে সর্বাকার্য্যে অগ্রসারী, मस्वक्रमाकाती, मस्बाधिमःश्वा কারী মার্কিন স্থলরীরা বছপতিবের কথা শুনিয়া আগ্রহতাপ্রকাশ করেন নাই; তাহারা ব্ঝিয়াছেন যে, একদিকে বছ-পতিত আর একদিকে অভিদানীত। য়ত ভত্তা, ভত প্ৰভু! অতএব নিৰ্ভয়ে व्याग्या बद्दशिष्टाच्या कथा উत्त्रिश कति-তেছि: मार्किन , इन्म त्रीता विश्व विनाम कक्रन।

मञ्दरमाता यदथक्क्ताती थाटक। क्रमाशि **८मथा यात्र' शास्त शास्त वनाका** जिएत याथा मान्नाजामसस একেবারে नारे, क পতি. কে পত্নী, তাহার কিছুই ছির नारे, शेखामत नाम जारामा शतकात পরস্পরের অভিসারী। ভাহাদের সন্তান कत्य, किंद्ध (म मञ्चारनत (क क्रमक ভাহার স্থিরতা হয় না। তাহাদের সংসার नाहे। (यथारन मःमात्र नाहे ऋकताः (मशात मगान रहेट भारत ना। मःभाव नगाजित जानि।

वनारमत्र এই यश्यक्तानात्रिका स्टेटल क्रा विवार्द्य एक्षांक भावन ह्य। छथन এक জानित्र माम (क वन अक जानित्र विवार ना रहेबा, वहकरनद्र मरण विवार व्यव्या व्यव्या व्याप्त स्था विष्या भी, প্রত্যেক স্বামীর বছস্রী। যথেচ্ছাচারিতার তাহা নিরাকরণ করা একণে কঠিন; ज्थन वह्विवाह्हे मछव ७ मण्ड; निथिज नाहै। हेःदब्रक्षणव भूबावृत्व वहविवार कर्याद वहनक्रीय धवः वह-পতিছ।

वर्षिण्य धकमभन्न मकन (मर्भरे व्यव्यव्यव्यक्ति विश्वा विश्वान ; छाहात्रा वरमन (य, वना व्यवहा हहेए उ **छेत्र इट्रेंट जिल्ला क्या एय एय जिल्ला** উঠিতে হয়, বহুপতিত তাহার মধ্যে व्यथम। युज्राः এই সোপ न উল्ভान कत्रिया (कान जाजिरे मछा वा छेत्रड रम नारे। किंद्र ७ विषय मङ्ख्य बाट्ड।

ध्यक्टल (प्रथा यात्र· (य **ध्यम्**डा

का जित्न मर्था व्यानक रम्हा वहः পতিত্ব অদ।পি প্রচলিত আছে। বোম্বে जक्ष्य नायत्र नाय कक्षां वाम करत्र, **जाहारम** त यटश বহুপতিত্ব षाष्ट्र। नागभूत ष्यक्षण गेम नाम षात्रे এক জাতি বাস করে, ভাছাদেরও যুৰ-তীরা বহুবিবাহ করিয়া থাকে। এতদ্বির माखाज जक्षान ७ উত্তরাখণ্ডের পর্বতে এইরূপ বহুপতিত্ব সাধারণতঃ না হউক, স্থানে স্থানে আছে। ভারতবর্ষের বহি-র্ভাগে তিকত, সিংহল প্রভৃতি অনেক দেশে এই রীভি প্রচলিত দেখিতে পাওয়া यात्र। किन्द्र अ जकन (मनत्र मध्या (कान-**हिरे म**ञाजाश्राश्च रम नारे। (य मकल (मर्भ में एंड) जानां छ कत्रियाद्य, (म मकन দেশে এক সময় বছপতিত ছিল কি না পর্ই একচারী হওয়া অভি কঠিন, সকল দেশের পুরাবৃত্তে এ কথা পাওয়া যায় যে, যখন তথায় কেবল বন্যরা বাস করিত, তথ্য ভাহাদের মধ্যে বহুপতিত্ব প্রচলিত ছিল। चामारमत्र वामानात्र भूतावृक्त नारे, কখন তাহা লিখিত হয় নাই; কিন্তু যাহা আমাদের গ্রন্থে নাই তাহা অনে-कठा जामारमत वावरात वाकिया निवारः : **অতএব বহুপতিত্ব সমঙ্কে আ**মাদের वावरात्रदाता यलमृत अञ्चल कता यारेट भारत जाहा चारम सारम ८५डी कत्रा याहेट्य ।

(১) বহুপতিত প্রধানতঃ তিন প্রকার।

जाहान वाद्या क्षथम क्षकादन कथा वना याहेटलट्ड। यथन दच्छानात्रिका चूनिया বহুপতিত্ব প্রথম আরম্ভ হয়, তথন विवारकृत दकान वैश्वाकाशि श्वाटक ना ; • बुवजीता बाहाटक हेव्हा अवश्यक हेव्हा निःमण्यकीत वाक्तिक विवाह करत्र, এই বিবাহ স্বেক্তাচারিতার অনুরপ; ভবে এইমাত্র প্রভেদ যে কোন্ কোন্ ব্যক্তি কাহার সহিত সহবাদের অধিকারী **८क्वम छारारे निर्मिड रम, ८च्छा** हात्रिणात्र (मक्र निर्मिष्ठ था कि ना। भू र्स स्य नामन जाजिन कथा वना हरेगाए, তाहारमञ्ज मर्था अहे स्थानीत वहनिष्ठ थान्तिक, खर्क क्ह क्ह बर्मन एक, जाशिक मह्यदिना। मरहामन्नीत मञ्जानक नायत अन्मतीता चामभेषि भर्याख भि গ্রহণ করিতে পারে, তাহার অধিক পারে नरह। छाहा याहाहे हडेक, এहेक्रश বহুপতিত্ব যে দেশে প্রচলিত, সে प्रिंग द्यार इत्र त्री जिया ज मः मात्र नाहे। (क कार। टक नरेश मः मात्र कतिरव ? खोत वर्षामी, यामीत वर्षे हो, दक কাহার গৃহে থাকে ! তথ্যতীত কে পিতা, • क् शूख किडूरे हित रुप्त ना। २५७-রাং পিতাপুত্র বলিয়া তথায় কোন गयम नारे, भूद्यकाल, ब्लाइनाल, ब्लाइन গোত किছूरे नारे, मःमात्रवसनीत थात्र (कान डिनक्द्रन नारे। चनन्निकीरम्ब मत्या दक्वन, मत्रामन मत्रामना, माजा • আর মাতুল। কিছু তাহারা সকলে এক शृष्ट् वाम कर्ज का ; दक्वम भाजा रेमभव

পিতার যত্নে সম্বানের থাহা সম্ভব, কেবল মাভার যত্নে তাহার শতাংশ হয় ना ; ज्यानक मसानित्र व्यानत्रका भरीस हम ना।

এই জাতীয় বহুপতিত্ব বে অঞ্চলে প্রচলিত সে অঞ্চলে পিতার সম্পত্তি পুত্র পায় না। কে জনক তাহার স্থিরতা নাই, স্তরাং সস্তান কির্পে পিতার मणिक मावी कतिरव ? रक भूख, भिजात छारा बाना नारे, ऋखताः निजा काशांक मन्यि जित्रा याहेर्त ? किन्न भूजमयस्क **এই यে जाপन्छि, ভাগিনেরসম্বন্ধে** সে সকলেই জানিতে পারে,স্তরাং পুরুষেরা अिंगित्मम्दक উखन्नाधिकानी कदन । वना অবস্থায় সম্পত্তি কিছুই নাই, তথাপি তীর, धक्क, हन्म वा उद्दर मामश्री याशहे थाटक ভাগিনের তাহাই পার।

श्वादन श्वादन (मथा यात्र (य, वर्-পতিত্ব নাই অথচ তথায় ভাগিনেয় উত্তরাধিকারী; এম্বলে বুঝিতে হইবে (य, वहপতিত একসময় তথায় প্রচলিত हिन; वहপতিত্ব লোপ পাইয়াছে, ভথাপি তাহার আহুষ্টিক দায়ভাগ थाकिया शियारह। मासाम ज्यक्टनव श्वात श्वात श्वाम खंड जागित्न य উত্তরাধিকারী হয় তাহার হেতু এই।

(২) ইহার পর আর একজাতীয় বছ-পতিত আরম্ভ হয়। যাহাকে ইচ্ছা যত हेव्हा विवाद क्रियात्र त्य व्यथा हिन जाहात्र

পরিবর্ত্তে, কেবল স্বসম্পর্কীয় পুরুষদিগকে विवाह करिवाद प्रथा करमा। शूर्विह वला रहेशारह व्यथम जावसाम जामन्त्र भूक-ষদের মধ্যে কেবল মাতুল আর ভাগিনেয়। স্থতরাং যে জীলোক বিবাহ করে সে মাতুল আর ভাগিনেয় উভয়কে পতিত্ব বরণ করে। ভাগিনেয়েরা স্থতরাং মাতৃ লানী বিবাহ করে, মাতুল ভাগিনেয়বধূ विव र करता

একণে বোধ হয় অনেকে বুঝিতে পারিতেছেন পশ্চিম অঞ্চলে মাতুলানীর আদিরদের রহ্দ্য কেন প্রচ-এই জাতীয় বহুপতিত্ব এক সময় माञ्रुलानी जात्र खी उथात्र धक हिल। পরে এ সম্বন্ধ রহিত হইয়াছে কিন্তু এ ভাষ কতকটা অদ্যাপি থাকিয়া গিয়াছে। चाराएव निष्कत ख्रापि चालाहना कत्रिया (मिथिटन ट्वांश इम्र एयन धक-সময় বাঙ্গালায় এই ঘুণিত বিবাহের प्राथा पानिवात पानका रहेगाहिन, অথবা হয় ত আসিয়াছিল। তাহা উঠাইবার নিমিত্ত মাতৃশানীকে শাঙ্গে মহাগুরু বলা হইয়াছে। ভাগিনেয় वध् मश्रक्त चाकि कठिन नियम कता इरेशार्घ, তाराक (पिश्टिंश नारे वना हरेबाहि। धरे नियम धकाल जनर्थक, অনাবশাক, কিন্তু একসময় ইহা বিশেষ व्यायभाक रहेशाहिल।

যে আতীয় বহুপতিত্বের কথা বলা याहेएएए, এক্ষণে তাহা রহস্যের বিষয় বহুপতিছে সন্তানদের প্রতি রীতিমত বন্ধ

रहेटल अक्षणम उप्चाता अधान ऋक्ष क्तिशाष्ट्रिता এই বহুপতিত্ব উপলক্ষে গৃহান্তর সংসার প্রথম স্থাঞ্চিত হয়, পূর্ব অবস্থায় প্রাকৃতপক্ষে তাহা ছিল না। ত ভার আত্মীয় ও স্বদম্প্রীয়সংখ্যা এই বহুপতিত্বে বৃদ্ধি পাইয়াছিল, ইহাও আর क श्रधान नाज वनिर्छ इहेरव। (कन ना जनमानीरयत मः था। वाष्ट्रिंग करम मगारकत উৎপত্তি হয়।

(৩) ভূতীয়, আর এক জাতীয় বছপতিত্ব चाट्या भित्रिवादतत्र मस्याय छ भूक्ष थारक, তাহাদের সমুদয়কে বিবাহ করিবার যে প্রথা ছিল, অর্থাৎ মাতুল ও ভাগিনের পশ্চিমাঞ্চলে প্রচলিত ছিল। বিবাহ করিবার যে প্রথা ছিল, সে প্রথা পরিত্যাগ করিয়া কেবলমাতা তাহাদের कमरणत मरहामत्रागरक विवाह कविवात প্রথা প্রচলিত হয়। অর্থাৎ কেবল মাতৃল-দের বিবাহ করা হয়, নতুবা কেবল ভাগি-त्नियम् विवाह कता रय। ভारामित মধো যাহারা পরস্পর সহোদর কেবল ভাহারাই নিকাচিত হয়। সর্কজোষ্ঠ वशः श्राश्च इहेशा (य च्यन्त्री कि विवाह करत्, সেই স্থলরী কনিষ্ঠদের ভার্য্যা হয়, কনিষ্ঠ-দের আর স্বভন্ত বিবাহ করিতে হয় • না। ভাহাদের সম্ভানেরা এজমালীর व न या भना इय, এবং ভাছারা যত্ত্ প্রতিপালিত হয়। প্রথমোলিখিত বছ-পতিত্বে সন্তানদের কোন যত্র হয় না। দিতীয় শ্রেণীর বহুপতিত্বে সন্তানদের কথঞ্চিৎ যত্ন হয়, কিন্তু এই পেষ শ্ৰেণীর

आवष्ट रम। एक भिका छोरा हिन । आगामित वाकानावि এ ध्रेश हिन। , পর**স্পার আনে শস্তানে**রা একান্ত পক্ষে যায় যে পশ্চিমদেশীয় মাতুলানীর ন্যায় **डिशार्कान मर्खान एतत्र अ**त्रक हे अरक्षाद्र ना थाकिवात्रहे मछावना। তবে मछान-निरात्र अट्रेगांक (माय मञ्चर (य, বহুপিতার উপদেশ কখন কখন পরস্পর वित्राधी इटेला, जाशांनिश्तर मानिक পুष्टिमशक्त कि<u>ष</u>्ट्र बााचाङ इटेल इटेड भारत्र ।

সন্তানসম্বন্ধে আর এক কথা আছে, না, পিতৃ পিতৃবাের সম্পত্তি উত্তরাধি-কারিম্বরূপে ভাহারা পাইত না, তৎ-কালে উত্তরাধিকারিত্ব কেবল মাতৃক্লগত ছিল। এই তৃতীয় প্রকার বহুপতিত্ব তাহা পিতৃকুলগত হইল। এস্থলে পিতা কে স্থির নাই সভা, কিন্তু পিতৃকুলের श्वित्र उपारक देश प्लाप्टेर एमशा शहरज्य ।

বিহুপভিত্বের কথা কেবল একটি माज जामारमन रमरण नाष्ट्र जारछ—रखोल-' দীর বছপতিত। বোধ হয় তংপুর্বে বা मडी ছिल्न, इय ७ এक मगर

नारे ज्ञा, क्रिन तरहामरत्रत्रा जकरलरे वाजालात्र कान कान हारन दम्शा निष्णुल ना रहेक, लाङ्ग्रल निम्ह ग्ररे। (कार्ष्ठत स्नीत्क नरेगा विनक्षा कता সুঁতরাং সম্ভানদের প্রতি যত্ন বিশেষরূপে হয়। এ রসিকতার কারণ অন্য কিছু হইয়া থাকে। বিশেষতঃ বহুপিতার অহতব হয় না। পূর্ক সম্বন্ধ উঠিয়া গিয়াছে, কিন্তু পূর্ক আলাপন থাকিয়া গিয়াছে।*

ভিকাতদেশে এই জাতীয় বহুপভিত্ विर्मिष मञ्जनायक इरेग्राट्ट। छेरा वंद्रायत (मभ, भमा मामानाम् छे९भन र्य, ज्थाम ध्रमा वृद्धि रहेल, जनकहे হয়, স্থতরাং তথায় প্রজাবৃদ্ধি না হওয়াই মঙ্গল। এক্ষণে ছই উপান্ন পূর্ব অবস্থায় তাহাদের পিতৃকুল ছিল দ্বারা তথায় প্রজাবৃদ্ধি নিবারিত আছে। এক উপায় সন্ন্যাস আশ্রম, অপর উপান্ন বহুপতিত্ব। বহুপতিত্বে সস্তান অল क्त्य।

যে দেশে রাজশাসন আরম্ভ হয় নাই वा स्थानन नारे, तम तिए धरे काडी म বহুপতিত্ব মঙ্গলদঃয়ক বলিয়া পরিচিত। धककन देश्द्रक निथियाष्ट्रन (य, यथन वावमा উপলক্ষে वा कान कर्य উপলক্ষে এक कन श्रामी विस्तरण यात्र व्यथत স্বামীরা গৃহে থাকিয়া তত্ত্বাবধারণ করে। সংসাবের রক্ষণাবে**ক্ষ**ণের **আর কোন** সেই সময়ে ভারতবর্ষে বিস্তর এরপ ভাবনা থাকে না। আরও লাভ এই যে বহুসামীর উপার্জ্জনে সংসারের ব্যয়ের

^{*} অনেকে বলিতে পারেন, 'শালীর'' সহিতও ত এইরূপ রসিকতা প্রচলিত আছে। তাহা সতা। তাহার হেতু 'বহুপত্নীত্' প্রাবেদ প্রকাশ করিবার ইচ্ছা थाकिन।

সঙ্গান হয়। বোধ হয় আমাদের
একারবর্তিভার মূল এই বহুপভিত্ব।
সহোদরদের এজমালি বিবাহ বাজালা
হইতে বহুকাল উঠিয়া গিয়াছে;
কিন্ত 'ইহার আমুষ্যাকিক একারবর্তিভা
মালাগায়ক বলিয়া এদেশে থাকিয়া
গিয়াছে। ফলতঃ এবিষয়ে মত ভেদ
আছে, ভাহার বিস্তারিত বিবরণ যথা
স্থানে সরিবেশিত হইবে।*

ত্রিবিধ বহুপতিতের কথা বলা হইল। **এই পরিচয়ে স্পষ্ট দেখা যাইতেছে যে** উन্नতির সঙ্গে সঙ্গে পতির সংখ্যা ক্রমে কমিতে থাকে। প্রথম অবারিত পতিতৃ, ভাহা অভি অসভ্য অবস্থায় হয়। ভাহার পর বিবাহাকাজিকণীরা যত ইচ্ছা তত পতি আর গ্রহণ করে না, কারণ, তাহাতে क्छि इय, मखान भागन इय ना, ऋख्याः যুবতীরা পতির সংখ্যা কমাইতে আরম্ভ करत्र, याद्यात्रा भत्रच्यत्र चमन्थर्कीत्र छ আত্মীয় অর্থাৎ যাহারা একপরিবারস্থ (क्वन ভार्मित्रहे পভিছে वत्रन करत्। वरे विकीय वरुপिक जमना जवसाय উৎপত্তি বটে কিন্তু তথন স্রোত ফিরি-তেছে। ভাহার পর পরিবারস্থ অপর मकन (क विवाह क्या व्यापका (क वन मह्मानद्रमत्र विवाह कता दम हेश ज्जीम পভিত্রের উৎপত্তি হয়।

কিন্তু দেশের অবস্থা অনুসারে এই

मकन नानाविश পতিত প্রচলিত থাকে। তিব্যতদেশের অবস্থা একপৃতিত্বের উপ-(यांगी नटर, ७थात्र ताबा विक ताबन एक त **७म (मधारेमा এक**পতিত विधान करमनः, जाश हरेल किष्ट्रनित्न गर्था श्रेषातुषि हरेया পড़िद्द, किन्दु यूवजीदक बस्थान-विनी (मिश्रा ८म ८म८भव कृषि कमाभि वर्धमविनी रहेरव ना, ऋग्नाः पाराद्यव चना छेटन मकटल मित्रिटन। ८४ शिव्रमादनः শস্য উৎপন্ন হয়, কেবল সেই পরিমাণের প্রতিপালা প্রকা জীবিত থাকিবে। **जिक्क त्मरे (मर्म यक्ति दास्मामन स्नाम** ना थारक, जाहा हहेरन এकপতি कथन করিতে পারিবে না; সংসার রকা স্তরাং আবার পূর্ব্বমত বহুপতিত্ব আরম্ভ हरेरव।

• এই जिविध वह्मि छ । जान काम भाज जम्मादा निष्म छ । काम हम, द्यामी हम, नम भाम। काम में है छ । थीन नहि। काम वक्छात्र ख जभीन नहि, दि है। में ख जभीन नहि।

कात्र এक काठीत वह পতি कारह;
किन मकन प्राप्त ठाहा वह পতি ए
विनया गण नरह। वह পতি एवत नकन
विनार अक क्रम, वाक्रानार प्राप्त काना
क्रम। मह भिंछ ना थाकिरन, विनार छ
वह भिंछ वरन ना। करनक विवित्र इहै
विवाह, किन इहे भिंछ अक ममग्र की विज्ञ थारक ना विनया मारहर वता विश्ववा विवाह
रक्ष वह भिंछ वरन ना। किन वाक्राना
रम् विश्वविवाह वह भिंछ एक ना भरत वन।
याहर ।

শ সমাজতত্ব সম্বন্ধে একারবর্তিতার কথা নিতান্ত আবশাক স্করাং এক সমরে তাহা,অলোচনা করা যাইবে।

युटलत ভाষा।

• आकारण नकता रकार्ष ; পৃথিবীতে তেছে। অথবা গো–মহিষ সম্বল ভার-कुल (कार्षे। नक्ता अक्षकारत्रत चिख्त ফোটে, তথন আর আধাআধি ভাব থাকে না। তখন বিখের উপরার্চ এবং বিখের নিয়ার্ছ মিশিয়া এক হইয়া যায়। क्रान दिला देवा के निव नी दिल दीथा।

चावात्र क्लाद्र कोटि भव वांशा। **এখানেও ফুল আ**त्र नक्क এक है वस, क्न ना नक्ष्यंत्र कित्र ए छाद्र छ नी ह यात्र हे जिहारमत यूगयूगा खरतत शिहरन शिन्ना माणाख। देश्मख, कुन्मिन क्लिया याथः जीम, द्याम, भावभा क्लिया गाउ; ভाष्मरुग, शार्थिनन, ज्वरनश्रद्र, कनात्रक जूनिया याछ। जव जूनिया मछाणाविशेन, भाजविशेन, देणिशम-विशेम, जनवाविशेन काल्मीम (यर-भागकिनिरात्र मत्था शिन्ना (मथ छोटान्ना कि कत्रिटल्ट । दाशिद कारात्रा मिटन ष्डण हत्राहेत्हरू, बात्व नक्ष छावि-

তীয় আদিম আর্যাগণের মধ্যে পিয়া मिया क्ल भित्रा यत्न, जुरे कृषिम् भिथ, ভাষারা कि করিভেছে। দেখিবে वित्रा आधि कृषि; कूल व्यक्तकार्त्रत्र ভाष्टात्रा मिल्ल (গা-ধन বাড়াইবার জন্য ভিতর দিয়া নক্ষত্র দেখিয়া বলে, তুই কত গবা-কান্ত জালাইভেছে, রাজে कृषिम् विभिन्ना यामि कृषि। याकाण याकार्ण मश्चर्ष (मिथन्ना मार्थन र्गा-धन বিখের আধ্যানা; পূর্ণিবী বিখের আর পর্যান্ত ভুলিয়া যাইতেছে। তার পর वाधशामा । তाই विन यथन वाकाण (महे वामिमकान हहेए क्रम क्रम নক্ষত্র ফোটে আর পৃথিবীতে কুল অগ্রসর হও। হইরা উনবিংশ শতা-कीएक व्यापन करा। वत्रावत एमिएव माञ्च्यत এक ठक् पृथियीत जिनित्म আর এক চকু আকাপের নক্ষতো। নক্ষত্র মনুষ্ট্রের চিরন্তন চিন্তা, আবহ-मान जाकाज्या, गृज्निरिङ (कोङ्हन! चावात्र निष्ठारेत्रा याख--(माना, क्रमा, यनि, यूका, बज, जनकात्र, शृह, अद्वानिका, অৰ্বযান, ৰাশীয় যান প্ৰভৃতি সমস্ত বাহ্য সম্পদ এবং সভাতাস্চক বস্ত ভু-निया, जामिम महात्राना धार्यम कतिया व्यापिम मञ्चारक (प्रवा) (प्रविद्य (छा-यात्र याश चाह्य छारात्र ८७ अव किहुरे मारे। (कवन ভোমার যে ফুলটি আছে **जारात्र अट्ट क्लिंग आटर । जात - शत्र** क्राय व्यागन रहेगा खेनविः न नवानीन (कहात गर्था धार्यम कत। वतावन (मिथिटन मास्य जन भित्रवर्धन क्रिएएए), कि । य क्ष । ध्याप क्षित्रा शिवत्राद्ध অগনও সেই ফ্ল তুলিয়া পবিতেছে।
ফ্ল মাসুষের চিরস্তন সাধ, আবহমান
অস্রাগ, গুড়-নিহিত ভাব! তাই বলি
যে আকাশের নীচে ফ্লের ডোরে আর
নক্ষত্রের কিরণ-ডোরে সব বাঁধা। সেই
অন্যই বুঝি ঐ তুইটি ডোর মিশিয়া স্বর্গ
মর্ত্তা বাঁধিয়া ফেলিয়াছে। ফ্ল! তুমি
কি কঠিন! ভোমার করনাতীত কমনীয়
কাস্তিতে বিশ্বক্ষাণ্ড বাঁধা! তবে বুঝি
বাঁধিতে হইলে কমনীয়তা দ্বারা বাঁধিতে
হয় ?

क्न, जूमि मानव-खक ! माक्रव माक्ष আছে আর পশু আছে। মানুষের আকাজ্ঞা, পশুত্টুকু নষ্ট করিয়া মস্যাত্থ हुक् धावन करता (महे निभिष्ठ माञ्च পৃথিবীতে উদ্ভ হওয়া অবধি আজ পর্যাস্ত কত চেষ্টা করিয়াছে। কত ধর্মের সৃষ্টি कत्रित्राष्ट्र, कछ मर्नन्त्र रुष्टि कत्रित्राष्ट्र, कछ खून, कादनक, धोन कत्रियाह, कड रमम खमन कतियाहि। किन्न करे थाज्ञ চেষ্টার প্রথম কার্য্য—ফুল ভোলা। যে मिन चामिम मञ्या चामिम পশুর ना।य কুধার জালায় মহারণ্যে বিচরণ ক-রিয়া পশুব্ধকরত মধ্যাহে বৃক্মশূলে বসিয়া কাঁচা মাংস চিবাইয়া পাইয়া সহচর সিংহ বাাছের ন্যায় নিদ্রার ছারা ক্লান্ত দেহের শান্তি সম্পাদন করিয়া व्यथात्र व्यक्षां नगां मी क्र्यांत मृश्मधूत च्चर्याणिः (मिथ्रा, कि चानि क्न, विमिश्रिक मका इरेटक धकि स्वर्ग-ब्यािकः भूष्यं हिँ जित्राः याथात हृत्य

खँ जिल, रेमरे फिन मक्ट्यात्र विभान ইতিহাসের স্ত্রপাত হইল। সেইদিন काना (शन (य, यहांत्रशानियांनी महत्त्र সিংহ ব্যাত্র অনন্তকাল মহারণ্যেই বাস कतिरव, किन्न काशासित नाहित्र नाहित्र মহুষ্য মহারণ্য বিনষ্ট করিয়া মহা সম্পুদ স্ষ্টি করিবে। সেইদিন জানা গেল যে সহচর সিংহ বাছে কেবল পৃথিবী चाटह, किन्द मञ्दरा शृथिवी धवः चर्त ष्टेरे षाष्ट्र। ८ त्रहे निम काना ८ त्रम ८ य সহচর সিংহব্যাণ্ড চিরকাল নভশিরে পৃথিবীতে বিচরণ করিবে, 'কিন্তু মনুষ্য **अन्छ योकांभ एडम क**त्रिया विष्यंत्र **डिर्फ**-তम প্রদেশে উঠিবে। সেইদিন মন্ত্রোর অনস্ত শিক্ষার, অনস্ত উন্নতির স্ত্রপাত হইল। সে শিক্ষা, সে উন্নতির মূলে— कूछ, रकांभल, कमनीय क्ल! रकन नां উৰ্জতম স্বৰ্গ, অনস্ত নক্ষত্ৰক্ষপী ব্ৰহ্মাণ্ড পৃথিবীর আর কিছুর সহিত বাঁধা নাই, **क्विन क्न-एडाद्र वीक्षा। अड** व्यव यिन अर्गाडियूथी इटेटड एम, यनि अनस উন্নতির পথে চলিতে হয়, তবে আদি खक फूल जूलिय ना। जानि हाड़ा जरु नाहै। फूलात (कांभलका, फूलात कम-नीय्रां, ফুলের গগনস্পদ্ধী নির্দালত। हाताहरण উन्नजित शर्थ काँहा शिक्रत, त्रर्गगांका ज्ञकारम वक्त इट्टेंद। ज्ञाङ्क वत्, छारे जकन, आंभारमंत्र महात्रगाती वानिभूक्ष (यमम-माथांत्र कून ताथिटजन, তেমনি করিয়া মাথায় ফুল রাধিয়? অগ্রসর হও।

খুল, ভূমি জগতের গুঢ় রহসা! কুল সর্বতিই শেণটে। মরুভূমিতেও काटि, डेमान श्राम अक्षाटे, शृथि-বীর উত্তর সীমার তুষাররাশির মধ্যেও

ফোটে, পৃথিবীর উত্তপ্ত কটিদেশেও रकारि, मञ्चात्र वामचारन एकारि, मञ्द्रशत व्यापा व्यापाटन (कार्ट)।

ফুণ সর্কব্যাপী।

আমি এখানে, ওখানে কি আছে बानि ना। जुगि ७शाम, ज्यानि कि আছে জানু না। ভারতে ইংলও নাই, हे:गए छात्रछ नाहे। कृात्म जारम-विका नाहे, আমেরিকার ফ্রান্স নাই। ' কেন। একজন কবি-নাম-খ্যাত ইংবেজ এ স্থান মৃত্রিকাময়, এখানে সমুদ্র নাই। বলিয়াছেন:— ওম্বান অগাং সমুদ্র, ওথানে মৃত্তিকা नारे। जूमि जव कान ना, जामि जवकानि ना, ভারত ইংলও ভানে না, ইংলও ভারত জানে না, মৃত্তিকা সম্দ্র জানে ना, ममूज मृखिका जात्न ना। क्न मर्खज (काटि। क्न नव् कात्न। क्न नर्वछ।

ভারতবর্ষ, পার্ল্যদেশ, আরবদেশ, व्याफत्रिक महारमभ— এই সকল স্থান প্রথম রবির প্রথম রক্ত্মি। এই সকল স্থানে প্রথম রবিকিরণে সকলই জুলিয়া गात्र, भूषित्रा हारे इरेग्रा यांग्र, खन खका-रेत्रा वाष्ट्रा यात्र, कवाधात निर्मार्थ ফাটিরা বিক্টাকার ধারণ করে। কিন্ত थ नकल ञ्चारन कून रकाछ। आवात्र गाश्नाख, जीव्लाख, त्नाषात्वम्ना अञ्जि इति हिस्मन भनिमान नाहै। উপরে ছিম, নীচে ছিম, চতু:পার্শে হিম

--- যেন হিমাংশুর হিমঋতুর হিমশ্যা ---তিসদেত, হিমপ্রাণ, হিম-আত্মা ! সে হিমে किछूरे रुग्न ना, किछूरे वाटि ना, मासूय खगाउँ इरेग्रा याग्र, जल जगाउँ इरेग्रा यात्र, छशद छमाठे इहेग्रा यात्र। किन्छ (म हित्म कूल कार्छ। क्ल नर्समिङ-মান। ফুলের কোমলতা শক্তির প্রাণ।

> সুগন্ধিনিশ্বাস বিবৃদ্ধ ভৃষ্ণং विश्वाधवानमञ्जर हिटव्रकम्। প্রতিক্ষণং সম্রমলোলদৃষ্টি— नीनाद्रविष्मन निवादयञ्जी॥

এখন বৃঝিতেছি ফুল সর্বত্ত ফোটে

Full many a flower is born to blush unseen

And waste its sweetness in the desert air.

মক্ত্মিতে ফুল কৃটিয়া অপচয় হয় মাতা! মিথা। কথা। অসার কথা। অগভীর আত্মার কণা। প্রশন্ত মক্ষভূমি—জীবশ্ন্য, তৃণশ্না, বারিশ্না—জালাময়, অগ্নি-मग्र- श्रक्तित क्रा. विकरे, जन्नकत मूर्खि! (यमन कित्रशा (मथ, भ्रम मूर्छ इट्रेड কেবল অগ্নিশিখা নির্গত চইতেছে; রুজ-ভাব ফাটিয়া বাহির হইভেছে; কঠোরতা, कठिनला, निष्ठं तला धाषानित रहे जिए। किन्छ के एमध के जगन्न मज़क्रिएक একটি ফুল ফুটিয়াছে—ঐ কঠোর, কঠিন, কোমলতা অন্ধৃত রহিয়াছে? প্রকৃতি

वे (कांमलक्षेत्र व्यक्ष्यानित। वे कांम-नठा नरेया প্রকৃতি পূর্ণতাপ্রাপ্ত হইমাছে, প্রকৃতি আপনাকে সার্থক মনে করি- সেই অবধি আর্য্য ভক্ত মহাশক্তির পদে তেছে। তুমি দেখ আর নাই দেখ, कृषि व्या कात नारे व्या, श्राप्त के কোমলভার গুণে পূর্বার ভাবে ভোর হইয়া রহিয়াছে, সজীবতা অহভব করি-তেছে, আপনার প্রাণবায়ু আপনি প্রত্যক্ষ করিতেছে। ফুল, ভুমি মরু ভূমিতে ফুটিও, নহিলে মক্নভূমি প্রাণশ্ন্য বিশ্বনিশিত পৌরাণিক কবি ইহা বুঝি-বুঝিয়া বিকটদশনা, ভীম-খড়াধারিণী, অস্কর্যাতিনী, नयना, রক্তাক্তকলেবরা রণরঙ্গিণীকে কোমলতম नीलार्वनमृष ज्वाङ्गाङ्ग ज्राष्ट्रा ভিত করিয়াছেন। মরুভূমিতে ফুল না ফুটলৈ মরুভূমি কি পৃথিবীতে থাকিত? না মহাশক্তির প্রকৃতশক্তি বুঝা বাইত? मक्रज्भिए क्ल ना कृषिल जाकालाद ্নক্ষত্ত কেম্ন করিয়া মরুভূমিকে পৃথিবী ৰলিয়া চিনিত? তুমি মক্তৃমি দেখ আর নাই দেখ, কিন্তু মরুভূমিকে ত नक्त काष्ट्र भित्रिष्ठ रहेए रहेर्द। ডোর ব্যতীত পৃথিবীকে আকাশের সহিত বাঁধা যায় না।

মহারণ্যে মহান্দকার। কোণাও কিছু দেখিতে পাওয়া যায় না—বেন কোথাও কিছু নাই। সেই ভীষণ অন্ধকারের गाहित्वर्गः —

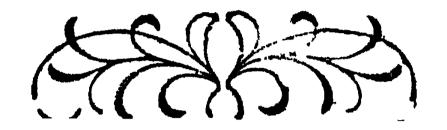
ভাবাকুস্থমসকাশং কাশ্যপেরং মহাত্যুতিং हेजामि।

জবাপুপোর অঞ্জলি দিতেছেন।

আর্থাকবিগণ বুঝিয়াছিলেন যে কুল জগতের গূঢ়রহস্য। তাঁহাদের মতন ফুলের ভাষা আর কোথাও কেহ বুঝিতে পারে নাই। গ্রীক্ কবিগণ ফুলে যত मानिक (मोन्नर्गा (मिश्डिम, उमर्भका শারীরিক সৌন্দর্যা দেখিতেন। তাঁহারা (वनी क्ल कार्तिन्थियान्-खड्छत्र णिरता-পরি চাপাইতেন। রণপ্রিন্ন রোমানেরা त्राज्ञ भाषा क्राचा क्राचा करत्राहान প্রকাশ করিতেন। ইংলতে সেক্সপীয়র ফুলের ভিতর প্রবেশ করিয়া কথা বাহির ক্রিয়া আনিয়াছিলেন। किखारम मकल कथाई शृथिवीमक्कीत्र। Midsummer Night's Dream—a उपराधका (तभी नाहै। (कवन छात्रङ ফুলে পৃথিবী এবং স্বর্গ ছুইই দেখিয়াছে। বাল্মীকি, কালিদাস, ভবভূতি স্লে পৃথিবীর যাহা কিছু দেখিবার ভাহা पिशाष्ट्रन ; भी ता निक क विशेष कृद्रन স্বর্গের অথবা বিশ্বরহস্যের সম্পূর্ণ চিত্র (मिथियार्ष्ट्न।

ফুল জগতের গুঢ় রহসা। ফুল জগতের প্রাণ। ফুল-ডোরে স্বর্গ এবং মর্ত্তা ধাধা। क्ल ছाড़ा গতি नारे, क्ल ছाড়िल স্বর্গের হার থোলা যায় না। অতএব, ভারভদ্যানগণ, ভোমাদের পুর্বপুরুষ-গণের ন্যায় ফুল মাথায় করিয়া অগ্রসর রহ্ন্য, মহাশক্তির শক্তি, প্রকৃতির প্রাণ, হইয়া পড়িবে।

रथ। किन क्नरक अधु क्न विनिमा अर्गचारत्र गांवि विनिमा ना जानितन वानित्न চল্লিবে না। আরাধা পিছ- তোমাদের যুগ্যুগান্তরের कুলে—মেল शुक्रविधात नाम क्लाक सराउत गृं जिल्ला यादेव—जामना श्थितीत हाड़ी



युक्तिमिक्त मरमञ्जाम।

व्यामिएएएम, তाहात मण्पूर्व विद्याधी मंख्छ ও পরম কারু विक, निष्ठु त्रठात्र बद्धः मर्द्धणारे मस्त्र । (मरे क्य जान **(कंद्र निक्**षे **এই मन्म्ह्वाम** विश्वय्रक्त हरेल रहेट भारत।

ष्यामत्रा (कान भाक्ष नेश्वतरक्षत्रिङ (Revelation) বলিয়া বিশ্বাস করি না, কেবল যুক্তির দারা ঈশ্বর সম্বন্ধে যত **म्त्र कित्र कत्रा गाष्ट्रेट्ड भारत छ छित्र ए**त्र পণ্ডিতগণের মতামত কি তাহাই আলো-हमा कता এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য। পূর্ব পুরুষগণ যাহা অমুসরণ করিয়া আসিয়া-ছেন ভাছাই যে বিনা যুক্তিতে অমুসরণ कित्रिक इरेटिन के कथा मन्न नहि। षायत्रा नित्रीश्वत्रांनी निहः उदब ष्यद्यत शांत्र कार्योक्तिक विश्वारमत कन्नरमांनन कत्रिना।

टेमभवाविध अकरण यादा छनिया . जाधात्रगण्डः स्रेश्वत्र अर्खगिकियान, কোন মত শুনিলে যে অনেকে বিশ্বরা- লেশ মাত্র হীন বলা হইয়া থাকে। ঈশ্ব-विड रहेरवन डारा किছूरे विष्ठित नंदर (त्रत्र डेशामना ना कतिरण शांभी रहेरक हम ; नत्रक याहै एक हम हे जा नि लाक প্রচলিত চিরাভান্ত উপদেশের বিক্লম্বে युक्ति चाष्ट वितिवहै इग्न छ जातिक षामाराद উপর খড়গহন্ত হইবেন। তথাপি নিম্নলিথিত প্রস্তাবটী পাঠকবর্গের হস্তে সমর্পণ করিতেছি। ইহাতে আমা-मित्र अक्लागकज्ञिङ न्डन उछ अधिक नारे। मर्वभिति जिल्ला महाश्वादमत धीमिक সমুদ্ভত এতৎসম্বনীয় তত্ত্ব অবলম্বন করিয়া আমরা লিখিতেছি।

> षामारनत्र बारना हा मून विषय करम-কটী এইরূপ নির্দেশ করিলাস।

> ১ম। ঈশ্বরের অন্তিত্ সম্বন্ধে যে मकल थ्रमान माधादन इः উलिथि इ इहेग्रा भारक उग्रदश रंघि जामारणव विरवहनात्र

সর্বাপেকা যুক্তিযুক্ত বোধ হয়, সেটীর विषय मः एक एभ विवि ।

হইয়া থাকে তাহা কতদ্র যুক্তিসকত কালের উন্নত বিজ্ঞান ঐ সকল শুণের অন্তিত্ সম্বন্ধে কোন প্রমাণ দিতে পারে কি না তাহাও দেখিব।

৩য়। ধর্মে বিশাস (Religious saith) দারা মানবমগুলী যে সকল উপকার প্রাপ্ত হইয়াছে, বিশাস বিনষ্ট रहेटन তाहा जल्हिं हरेट शाद कि উপকার পাইতেছি ও ভবিষাতে পাইবার আশা করি, তাহা অন্য কোন সহজ স্থাদৃঢ় **धरे इरे** जिल्ला की माश्मा क ब्रिट कि हो। করিব।

8र्थ। **এই সকল বিচারের পর আ**মা-উচিত তাহা নির্ণয় করিতে চেষ্টা করা याइटन ।

প্রথমত:। ঈশ্বরের অন্তিত্ সম্বন্ধে य मकल श्रामान माभावन : উन्निभिन इहेशा भारक छ। हा वर्खगांन काल्वत विद्धान-विद्राधी—; (म मकन थएन कता आगामित छेएम्भा नहरू, कात्रण ভাহা কেবল निর्ज्ञिकत इहेदब এবং विष्यं यः नवात्रक ७ इट्ट् ना ; ज्य नित्र भन की नाम एक त्रुम्पत्र की भन।

যাহা বিজ্ঞান সম্মত কেবল ভাহারই উল্লেখ করিব।

२य। जकल धर्यात किली ভূত नेष- को नेन मा किया पिश्विल हे রের যে সকল গুণ সাধারণতঃ উলিখিত ভাহার কর্তাকে বুজিগীবী বলিয়া উপ-निक्षि : इम्र । कीर्वरमध्य (य मकल काकुंड তাহার বিচার করা যাইবে। বর্ত্তমান কৌশল দেখিতে পাওয়া যায় ও তাহার ভিন্ন ভিন্ন অংশে যে একই প্রকার উ-পায় সংস্থান বিদামান রহিয়াছে, ভাছা দেখিলে স্পষ্ট প্রতীতি জন্মে যে ইহার धक्षन वृद्धिगांग रुष्टिकर्छ। पाष्ट्रन পণ্ডিতবর নিউটন ও লাপলাপের পূর্বের, অড় জগতের অড়ুত গতিপ্রণালী দেখিয়া গ্যালিণিও, কেপ্লার প্রভৃতি মহাম্মাগণ ना ? भर्मा द्वाता ज्यामता ज्यामञ्ज एर मकन ने ने ने पत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्र व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व्यापत्य व विषया গ্রহণ করিয়াছিলেন; মাধ্যাকর্ষণের নিয়ম আবিষ্কৃত হইবার উপায় ছারা সাধিত হইতে পারে कि ग। পর আর তাহা প্রমাণ বলিয়া গণ্য হইল ना; ७ थन ने यत ए ज ए ज ग छ त ग छि छ रुष्ठरणार्थे करत्रन ना रेरारे जकरणत्र উপলব্ধি হইল। তজপ यमि জীবদেহের रिनंत विचाम किज़भ रखगा উচিত, এবং কৌশল সমুদায় ও কোন কালে অक कार्गा (कर्षा के ना कि नि न वावहान कना कफ़ निग्रामन कल विभा कि नै कि हम ভাহা হইলে ঈশবের অন্তিত্ব সম্বন্ধে প্রচলিত প্রমাণ বিচলিত হইবে; কিন্তু, তাহার সম্ভাবনা হইয়াছে। যে Evolution theory এক্ষণে বিলাতে কতক-खिल गरागरहाभाषाम मार्गनिक एमत भन আক্ত করিয়াছে ভাহা বাঁহারা বিশেষ অমুশীলন করিয়াছেন তাঁহারাই বুঝি-शांह्न रग श्रक्षां इत मरकाहन उ श्राप्तर

विठीय छ। ने चेद्र स्व छ । मर्स मिन त्र क्ष कि । प्रे विचान त्य, मर्स मिन कि मदा मर्स छ । प्रे विचान कि मदा छ । प्रे विचान के चेद्र के चेद

ख्यंग मर्स्मिकिंगचा, मर्सक्छ । এवः मर्स्मिन्नगम् । এই जिन्नी भारमन यथार्थ এवः পূর্ণ মর্থ, বোধ হয়, সকলেই বিদিত আছেন, তবে শর্মাশক্তিমন্তা শন্দ্রী আমরা কি অর্থে, ব্যবহার করিতেছি তৎসম্বন্ধে কিছু বলা আবিশাক বোধ হইতেছে।

यिष कान शक्तिमाश मानव काित .
भिक्ति ममिश्रित काित काित छन इस छाङा

इहेलाई एए मिहे भिक्तिक कामीम विनिष्ठ

इहेलाई एए मिहे भिक्तिक कामीम विनिष्ठ

इहेलाई एए मिहे भिक्तिक कामीम विनिष्ठ

कामीम काम छा बना यात्र छाङ। माल्लून

विज्ञित एम काम छात्र माणूर्य काम विन्न विन्न विन्न विन्न गणा हहेरत ना । यछहे

कािक हिंक ना किन एम भिक्ति विन्न वााचार छत्र कािम मिल्ल विन्न वााचार छत्र कािम मिल्ल काम कामीम विन्न ना। नेता वाह्ना एम काम बा भिक्ति छ कामीम भिक्ति कर्म कार्य कािम कािन छ कािम कािम छात्र छ कािम भिक्ति कर्म कार्य कािम कािम छ कर्म कािम कािम छात्र छ कािम कािम छात्र कािम कािम छ कर्म कािम कािम छात्र छात्र छात्र कािम कािम छात्र छ कािम कािम छात्र छ कािम कािम छात्र कािम कािम छात्र छ कािम कािम छ कािम छात्र छ कािम छ कािम छ कािम छ कािम छात्र छ कािम छ

अश्रमे वना याहेरा शारत रंग मर्खा मिल्यान हेण्डामय श्रक्रायत रंगान रंगान मिल्यान हेण्डामय श्रक्रायत रंगान रंगान मिल्यान कतात ज्ञानमार नाहे। याहारणत क्रमा मीमावक जाहाताहे जालि-आत मिल्या क्रियात क्रमा रंगान क्रमा श्रीमाल क्रमण्या क्रिया श्रीमा श्रीमाल क्रमण्या क्रिया श्रीमा श्रीमाल अर्णया

কার্যার কোন কোন অংশ অটিল ও
অসম্পূর্ণ হইরা পড়ে। সমুষ্টার কৌশলের
অটলতার কারণ তাহাদের অল জ্ঞান ও
অল বৃদ্ধি। ঈশ্বরের কৌশলময়ী সৃষ্টিতেও অসম্পূর্ণতা ও অটলতা দৃষ্ট হয়
এইজনা তাহার ঐ গুণতায় তাহাতে যে
যুগপৎ অবস্থিত ইহা স্বীকার করিতে
আমরা যে কেন প্রস্তুত নহি তাহা দেখাইতেছি।

मञ्तारमर्द्र अः भ नकल रय रय कार्या সাধন করিবার অভিপ্রায়ে নির্মিত হই-য়াছে ভাহা সেই দেই কার্য্য করে ইহা স্বীকার করিলাম। কিন্তু তৎকার্যা-কারিতা সর্বতোভাবে অসম্পূর্ণতা, দোষ-विशैन, वा छिन्छ। विविध् कि ना **जाहा (मथून। (क ना श्रीकात्र क**तिएं व (य "मत्रीतः वाभिमिनितः १" व्यक्ष कात-(। इ भनीत्र यञ्ज मकलात विभृद्धना इरेग्रा थाटक। जाज्यव यहे दकोभनमञ् यञ्ज এकवादत मर्वाङाखाद निर्द्धाम न ह । देव्हा मय, मञ्जलमय, मर्खे छ, मर्ख-শক্তিমান ঈশ্বর মনে করিলে, ইহা অপেক। উৎকৃষ্টতর উপায়ে অল কৌশল ष्यवन्थन कतिया, वा এकवादा को मन-विदर्ध्वि कि कि विद्या, उँ एक्टर अन्न भान ब-(पर्निर्याण क्रिडिंग भाषिट्य, त्य তाহा वााधिमन्तित इरेड ना, এड कन-छङ्गव इरे न। यिन (कर बतान ঈশ্বর এরাপ কেন করিয়াছেন, ওরাপ (कन कर्त्रन नाडे, डाहा आंगारमत वालाहना वैतिवात व्यक्तित्व नाहे; याहा

পরাফাষ্ঠা দেখাইয়াছেন, তবে সকল বিল্প ব্যাঘাত তিনি অতিক্রম করিতে পারেন না, তলিবন্ধন বিল্ল বশবভী হইয়া তিনি এই রূপ অসম্পূর্ণ সৃষ্টি করিয়াছেন। ইহাতে তাঁহার প্রভূত শক্তিমন্তা প্রকাশ পাইতেছে, কিন্তু সর্বাশক্তিমন্থা প্রকাশ তাঁহার করণা অসীম হইলেও তিনি ভাঁহার শক্তির অধিক কিছুই করিতে शाद्रिन नारे। यजन्त्र (ठष्टे। क्रिट्ड रम छै। हात्र मञ्जनमञ्ज हेळ्। श्रकां इहेग्राट्ड, ভাছার মহিমা ব্যাপ্ত হইয়াছে, ভলিমিত্ত তिनि जामामित जमःश धनावामित পাতা! কিন্তু তিনি সর্বাশক্তিমান নহেন। यिन नेश्वत्क मर्त्वभिकिमान् ଓ मर्त्वक वला यात्र, ভाशा इहेल डाँशांक निर्ध्न विला इकेरव। किया यिन छै। हारक निष्ठं त्रहात लिण गांव होन विलिट हम, ভাহা इरेल डांशांक मर्समिकिमान वना যাইতে পারে না।

যাহারা বলেন যে ঈশ্বর তাঁহার क्रिया - त्राभियाष्ट्रन ७ 'उम्बिशायि हेश ज्या ज्योगा क्रिया क्रिया

कतिबार्द्धन डाहार्ट्ड डाहात बहिमा, कोमान नमूनरमन रहि कतिमार्द्धन, कक्रणा, क्रमणा मकलहे खाळलामान त्रहि- छाहारमत्र कि हेश हिन्छ। क्रित्रवात विसत्री-बाह्य। छाराषिशक व्यामना विन त्य, कृष्ठ रहेक शाति ना त्यः, त्य मर्खणिक-व्यवभा स्थत उँ। हात यजनूत महिमा, मान स्थत उँ। हात भाष्य वहे व्यकि किए-করুণা, ক্ষমতা প্রকাশ করিতে পারেন কর স্বার্থের অন্য এত কৌশল প্রদর্শন ভাহা করিয়াছেন ও ভাঁহার ক্ষমভার করিয়া জীবগণকে এত কন্ত দিবেন না? যিনি সর্বাপক্তিমান তিনি যদি তাঁহার নিজের অন্তিত্রের চিহ্ন দেখাইতে ইচ্ছা करत्रन, তाहा थना कान महब छेेेेेे पार्रहे कतिएक भातिएक। किन्न यमि वामना छ। हात्र भक्ति नीमावक विलया योकात्र করিয়া লই তাহা হইলে আর তাঁহাকে পাইতেছে না, তাঁহার শক্তি সীমিত। নিষ্ঠুর বলিতে হয় না, এবং তাঁহার স্ষ্টি-(कोमल (मिथिया हेशहे व्यक्षिक मस्त्र विनिया (वाध इय (व जिनि इष्हाभूक्षक जीवंगवरक कहे मिट्ड डेट्स्क नन, डरव করিয়াছেন ও যতদূর পারেন ততদূর যে জীবগণ কন্ত পায় সে কেবল তাঁহার कुछकार्या इहेब्राह्मन, उउमृत्र भर्याष्ठ शृष्टिकोभागत व्यमम्भूर्व ठा एड्र भीवभगत्क यञ्चना मिवात खना তाशामत्र भंतीरत्रत्र मध्य कान विश्व को भन कवन विक इरेशाष्ट्र अवज मृष्ठे रय ना ; তবে তাহারা (य यखना ভোগ করে দে সকল কেবল ত। হাদিগকে অধিক যন্ত্রণা হইতে রকা क विवाबानियल, किया जाशामब माळ्ना विधानथ रुष्टे कान भंदी द्राश्रमंद्र काम-ম্পানতা নিমিত্ত। একথা শরীরতত্ত্বিৎ था एगा कर्क श्रमाणिक इरेगाएए।

জ্বরকে সর্বাশক্তিমান না বলিলে তাঁহাকে সর্বজ্ঞ বলিতে কোন বিশেষ विमामान एवं हिल हाति मिर्क व्यक्ति वाशिष्ठ नाहे, छर्व मर्बद्ध विमान

তিনি জানিয়া শুনিয়া অসম্পূর্ণ স্থাষ্ট করিয়াছেন। স্থতরাং छोहाटक मर्वछ विलाख आगामित हेन्हा हत्र ना, कात्रण छाहा इहेटन च्यामारमत डीहारक अकल्यकारत निर्वृत यला हत्र, व्यथह व्यागता व्यमाना विषय उ विष्य-यकः बीवामर निर्माण कोणाल मिशिए भारे एक ए एक कि कि है कि भूकि कि कि त्रष्ठा करतम नारे। यमि क्टि वलन (य छिनि निर्श्त नर्इन क्विव क्रमणः উন্নতি ক্রিবার নিমিত্ত জানিয়াও অস म्पूर्व रुष्टि कत्रियाद्यन डांशामिशदक व्यागता **এই উত্তর দিই যে, ভাহা হইলে ভিনি** मण्पूर्व निर्फाष एष्टि कतिए कारनन मा, मिथिरवन विनया (हरे। क्रिएक्न স্থতরাং ডিনি সর্বজ্ঞ হইলেন না।

क्रमण्डः यति जेचत्र मर्ख्य । मर्ख्य । मान इन जर छ छ छ । ७ अ अ अ ई १९ यि छाँ हात्र रे रहे हत्रं, छाहा इटेटन देश অবশ্য স্বীকার করিতে হইবে যে এই ছুই জগতের যেথানে যে অসম্পূর্ণতা আছে তাহা তাঁহার জ্ঞানক্ত ও স্বেচ্ছা-সমত কার্য্য। বাঁহারা বলেন গে মহ-रिश्र स्थ द्रः थ डाहारमन्न साथीन हेम्हान किन्छ नगारमन जामिम जनसान स्मारक (Free will) ফল, डाँहानिशटक व्यामना विन (व नर्समिकियान ७ नर्सक नेपन मख चारीनरेष्ठात कन चारन चारन र्यमन ऋषकत्र इहेन्रा थारक राज्यान ्यावात्र ज्ञारन ज्ञारन विषमग्रं एरेग्रा थारक; हेन्। कानिशां ७ रकन मञ्चारक याधीम रेक्ट्रा (मध्या ररेपारह ?

এরূপ ভৃতীয়তঃ। ধর্মে বিশ্বাদের কথা। ধর্মো বিশাস বলিলে, সাধারণীতঃ লোকে नर्जगक्तिगान, नर्जछ ও পরম কারুণিক ঈশবের অন্তিত্, আত্মার অবিনশ্বরত্, পরলোকের অন্তিত্ব ও ইছ-লোকের कर्पाश्यामी फन्टांग वहे करमकि विষয়ে विश्वाम वृचिया शास्त्रन। आगता अ मटे अर्थरे ''धर्मा विश्वाम'' भाषे वाव-हांत्र कतिय। अकर्ण (मिथिएक हहेरव যে ধর্মে বিশ্বাদের দারা মহুসাজাতির कि উপकात इहेग्राष्ट्र, इहेएउएइ ख হইতে পারে।

> মহুষ্যের স্বার্থসাধন প্রবৃত্তি (Selfishness) অভীব বলবভী। কিন্তু সমুষ্যের भक्ति रयक्रभ जाझ ७ रेनमर्शिक नियम সমুদয় বেরূপ অপরিবর্ত্তনীর তাহাতে সভন্ত হইয়া নিজ নিজ স্বার্থ সাধনের চেষ্টা করিলে একজন বছকাল পরিশ্রম করিয়াও অধুনাতন স্থ সাচ্চন্যা ও ক্তানের শতাংশের এক অংশও লাভ করিতে পারিত না, স্থতরাং দলবদ হইয়া সকলের উন্নতি সাধ্নের চেপ্তা করাই নিজ উন্নতির প্রধান উপার; ইহার কিছুমাত্র অহ্ভব করিতে পারে नारे; नगारजन जन्मान्ति नहकारत जन नक्रम रहेमाछ; रेहात शृद्ध धर्यारे जकल भस्यादक এक अधितत मसाम বলিয়া একতে রাখিয়া প্রকারান্তরে সমাজ न्यन कतियारह। . '

ৰে স্কল পণ্ডিভেরা কেবল প্রয়োজন यित्रा धर्मिक मगर्थन कतिया भारकन, ভাঁহারা বলেন থে, ধর্মে বিশাস না থাকিলে লোকে নীতিঅমুযায়ীক কার্যা-कतात व्यावभाक्षा (वाध कविष्ठ भारत না। তাঁহাদের মতে পরলোকে পুরস্কার जित्रकादत्रत छत्र ना थाकित्म त्नारक यर्थकां होत्री इहेर्त, भमाजवसन এक बाद्रि ছिन्न इहेग्रा याद्धेर्य। छाञानिशदक चामना এই উত্তর দিই যে यদি লোকে বুঝিতে পারে যে নীতির প্রয়োজনীয়তার ভিত্তি পরলোকে পুরস্বার তিরস্কারের উপর স্থাপিত নহে, তদপেক্ষা অধিক নিকটবর্তী ও অধিক প্রয়োজনীর সমাজ বন্ধনে সংস্থাপিত, ভাহা হইলে ধর্মে বিখাস বিনষ্ট হইলেও নীতির ভিত্তি विठलिंड इरेवांत्र कांन चांनका नारे, ও মহুষাজাতির উন্নতির পথে কাঁটা পড়িবারও কিছুমাত্র সন্তাবনা নাই।

 বাভিচারিণীকে যেরপ ঘুণা করে ও যত দও দের বাভিচারীকে ভাষার শতাংশের একাংশও দেওার্ছ বিবেচনা করে না। ইহার কলস্বরূপ আমরা দেখিতে পাই যে বাভিচারিণী হইতে জীলোক যেরপ ভীত, বাভিচারী হইতে পুরুষ কথনই ততদ্র ভীত নয়, স্বতরাং বাভিচার করণে ভয় যতদ্র লোকনিকাভীতি হইতে সমৃত্তুত হয় ধর্মোপদেশ বা পর-লোকে নরক্যজ্বণার ভয় হইতে ততদ্ব উৎপর নহে।

अभिटक शत्राह्मांटक श्रीकारतत्र कामा অপেকা हेर छগতে यभौगाडित याना মনুষাকে সংকার্যো উত্তেজিভ করিয়া थाटक। भारत मिश्रिज चार्छ एव नक লক্ষ টাকা বায় করিয়া পিতৃমাতৃশ্রাদ্ধ कत्रित्न (ग कन नांछ इहेर्द चवचायुक्त्राप অৱবায়ে ঐ প্রাদ্ধর্যা ভক্তি সহকারে माधन कतिरमञ्ज कनं, वतः ভक्तित्र ठात्र-তমা অসুসারে ফলের ন্।নাধিকা হয়; কিন্ত যিনি বহু অর্থ ব্যব্ন করিয়া প্রাদ্ধ করেন তিনিই অধিক যশোভাজন হইয়া थारकन विषया लाटक बनावभाक भग कतिया—सन-कत्रन भाज-निधिक इटेरन अ सन कतियां— निज्ञाज आत्कानन कर ব্যয় করে। স্থভরাং পরলোকে পুর-कांत्र लाटखत्र बाकाब्का ब्यटभका हैर জগতে যশোপার্জনের ইচ্ছা মনুষাকে সং কার্যো অধিক পরিমাণে উত্তেবিত করে।

লোকে মনে করে যে মৃত্যু বড় ভরা-লক, মরিতে হইবে ইহা ভাবিতে আমা- দের হৃদয় যে কল্পিত হয়, উয়ভির চেষ্টা যে দ্রে যায়, যায়াদিগকে আময়! জীবন অপেক্ষা অধিক ভাল বাসি তায়াদের সহিত প্রমিলনের আশা যে থাকে না, গৈলকলের হেতু ধর্মে ক্রপরলোকে অবিশাস, ইহার উত্তরে আমরা বলি যে, চিরকালের নিমিন্ত বিলুপ্ত হইয়া যাইব এই চিন্তা তত ভয়ানক নহে। বৌদ্ধার্মের প্রধান লক্ষ্য ও শ্রেষ্ঠ মোক্ষ নির্বাণ, অর্থাৎ জীবাত্মার শ্বতন্ত অন্তিত্বের বিনাশ, এই মত এককালে পৃথিবীর অর্দ্ধেক লোক গ্রহণ করিয়াছিল। যদি নির্বাণ-চিন্তা এত ভয়ানক হইত তাহা হইলে যে ধর্মে নির্বাণই মোক্ষ সে ধর্ম কখনই এত লোকে গ্রহণ করিত্ব না।

ধর্ম এবং কাব্য (poetry) এই গুই-**जिट्ड व्यटनक मानुमा बाट्ड। উভয়েই** चार्यात्मत्र मञ्जू एथ উচ্চ चामर्चधात्र करत्र, উভয়েই আমাদিগকে অনেক অসীম স্থের আশা প্রদান করে, এই শোক-मद्दल, हाहाकात्रत्रवर्शन, व्यनगात्राहत्रन विश्वच छगटा यमि (लाटकत भन्नकाटन ম্পভোগের আশা না থাকিত তাহা रैहेल इःथ व्यभौष्ठि खनगण मिनार्स वस्थ्रमार्क्किक कमन्न मृष्टि छमन्न कतिरक ' পারিভ না। কাব্যরসাম্বাদন ও ধর্ম-ভাব কেবল মহুখোর মনে নানা কার-निक ऋथ ७ जामान टानान कतिया कथिए जाहामिशस्य भीत्रसात वस्म পরিতে সক্ষম করিয়াছে; তবে কাব্য ও धर्य विভिন्न जा अहे त्य, कार्यात कन्नमार्ड আমরা আনন্দ অমুভব করি বটে, কিন্তু তাহাতে আমাদের কিছু বিশ্বাস থাকে ना ; किन्न धर्मा आंगामिशक एय नकन ভাবী স্থের আখাস প্রদান করে তা-হাতে আমাদের বিশাস থাকে যিদিও এই সকল বিশ্বাস আপাততঃ স্থ্যদায়ক তথাপি এসকল বিশ্বাস কতদূর যুক্তি-মূলক ভাহাও আমাদের চিন্তা করা সমাজের বর্তুমান অবস্থায় উচিত। যে রূপ অন্যায়াচরণ হইয়া থাকে ও সাধারণতঃ লোকের যেরূপ কন্ত ভাহাতে পারলৌকিক স্থথে বিশ্বাস করিতে স্বতঃই প্রবৃত্তি হয়, কিন্তু আমরা আশা করিলে कतिराज भाति (य, मगरा क्वान्तित जेशिजित সহিত মহুষ্যের ইহলৌকিক স্থাসমষ্টি এত বৰ্দ্ধিত হইবে ও ছঃখভার এত হ্রাস হইবে रय তথন আর বিশ্বাদের অত্যল্লই প্রয়ো-সেই জ্ঞানোন্নতি, এবং তাহা হইতে শক্তি ও হ্রথবৃদ্ধির ও তঃখনিবারণের আশা-কেই আমরা ধর্ম বলিয়া পরিগণিত कतिएक भाति। व्यानारक है विनादन य এই নশ্বর মনুষাজীবনের স্থাপর আশা রূপ ধর্ম কি অবিনশ্বর আত্মার চিরস্তন স্থের আশারূপ ধর্মের সহিত তুলিত হইতে পারে? এই প্রশ্নের উত্তরে আ-মরা এই বলিতে পারি যে যদিও একজন মনুষোর জীবন ক্ষপস্থায়ী তাহা বলিয়া সমগ্র মানবজাতির জীবন ক্ষণস্থায়ী নহে, এবং সমগ্র মনুষাজাতির স্থাধের উন্নতির ८५ छ। अभाग विषय नहर। फ्रन्डः

कम्छेगांमक कतां भी मिनी स विभिन्न मार्च-নিকের মফ্রে সম্গ্র মহুষ্টাতির স্থের উন্নতিচেষ্টাই মনুষাজাতির প্রধান ও একমাত্র ধর্ম হওয়া উচিত। এই ধর্ম थाठादिश्व निभिष्ठ छिनि घरनरकत निकष्ठे छे পহাসাম্পদ হইয়াছেন। এই ধর্ম্মের (मायश्वनमयदक कामद्रा এकर्ण कार्यक কিছু বলিব না। তবে এই পর্যাম্ভ বলিতে পারি যে, সমাজবন্ধন, লোকদিগকে পাপ रहेट निवृक्ष काथा, পরস্পরের উপকার করাও অপকারী ক্রিয়া হইতে বিরভ রাখা প্রভৃতি যে সকল কার্য্য, পরলোকে তির-স্বার ভয় ও পুরস্কার লোভ ইত্যাদির হারা ঐশবিক ধর্ম, সংসাধন করে, সেই সকল कार्या लहेन्रा এই धर्मा, अधिक ख এ धर्म अधितिक धर्मा व्यापिका व्यक्ति युक्तियुक ; ইহার আরও একটা গুণ এই যে ঐখ-রিক ধর্মে স্বার্থ চিন্তা যতদূর নিকটবর্তী ইহাতে তন্তদ্র নহে। এশবিক ধর্মে পরলোকে স্থলাভের অভিলাষ্ট মমু-यात्क श्रुवाकार्या উত্তেজিত করে, কিন্ত এধর্মের মতে যদিও নিজের উন্নতির নিমিত্তই সমগ্র মানবজাতির উন্নতি চেষ্টা বিহিত তথাপি সমুদর মানবজাতির **उन्नि उट्टिश हे होत्र भूभा छ एक मा। जवः** আমরা যথন ঈশরকে সর্বাশক্তিমান विनाटि खन्न निह चथ्र हेश् जानि रय व्यामारमत स्थत्हि २७गारे छारात ইচ্ছা ভখন ভাঁহার দেই ইচ্ছা সফল করিবার নিমিত্ত সর্কতোভাবে তাঁহাকে সাহায় করা আমাদের কর্তব্য ও তাঁহার

প্রতি ক্বতজ্ঞতা দেখাইবার প্রধান উপায়। क्ट विनाउ भारतन (य, जामास्त्र मङ কুদ্রপ্রাণী কেমন করিয়া ঠোহার সাহাযা করিবে ? ভত্তরে বলি যে সমগ্র মনুষা-জাতি একল হুইয়া চেষ্টা করিলে, ও উন্নতিই তাহাদের লক্ষ্য হইলে, ভাঁহার উদ্দেশ্য সফল হইবার যে অনেক সন্তা-वना जिविष्य मत्मिक् नाहै। এ शर्मात विপক्ष (कह (कह এই মাত্র বলিভে পারেন, যে আত্মার অবিনশ্বতে বিশাস না থাকায় আত্মীয়জনের সহিত পুর্নমি-লনের কোন আশা থাকে নাঁ, স্থভরাং ভত্তরে এই চিন্তা আমাদের কটকর হয়। আমরা বলি যে এই ধর্মে বিখাস করিতে **रहे** ल जाबादक (य नचंत्र विलिट्डि) হইবে এমত কোন কারণ নাই। আ-मद्रा (पश्चिष्ड भारे (य, ध्वकुडित निव्रमरे এই যে, নিক্বপ্ত প্রকৃতির দ্রবা হইতে ক্রমশঃ উৎকৃষ্ট প্রকৃতির দ্রব্যাদি উৎপন্ন र्ग । ज ए भिर्मार्थ हरेट ज जम शहन कतिया সজীব উদ্ভিদ্ বৰ্দ্ধিত হয়, আবার উদ্ভিজ-तम গ্রহণ করিয়া সচেতন জীবদেহ পুষ্ট रम এবং দেই জীবরাজ্যের শ্রেষ্ঠ মহুষা; স্তরাং ইহা আমরা ভাবিতে পারি থেঁ মহুষ্যের আত্মা এই সকল অপেকা বিশ্বাস করা ষাইতে পারে যে মহুষ্যের আত্মা অবিনশ্বর নহে। আমরা যাহা লিখিলাম ভাহা যদিও আত্মার অবিনধ্র-ভের প্রমাণ বলিয়া গৃহীত হইতে পারে° ना जरः तमरे कात्रत्व आमात्मत आणात्र

जानी चत्र प्र विचारमां प्राप्त करें एक पारत विक नियम मकन छत्र कित्र विश्व विक् ना; তথাপি আমরা আত্মার অবিনশ্ব-্রের আশা কয়িতে পারি। ইহাও ভাবিতে পারি যে . যদিও ঈশ্বর সর্কশক্তিমান্ মহেন ভথাপি যিনি ক্ষতাবলে আমা-पिरात **এই সমন্ত স্থস্থাচ্ছ**न्ता विधान করিয়াছেন ভিনি আমাদের স্থের নিমিত্ত হয় ত আখাকে অবিনশ্বর করিতে मक्तम इहेत्राष्ट्रम । व्यञ्जाव अधितिक धर्म्य বিশ্বাস ভ্যাগ করিয়া এধর্ম গ্রহণ করিলে যে আত্মাকে নশ্বর ৰলিতেই হইবে তাহা নহে। প্রত্তি ক্রিও আত্মাকে অবি-नथन विणवानः ज्ञामारमन द्यान विरम्ध श्रमान नारे, नियंत्र विनिवात्र कान खगान नारे, वत्रः अविनयम्हद्वत्र किकिए वामा वाटहा

१८७७ ।)

্রিএখন আর্মরা এমন সিদ্ধান্ত করিতে भात्रि (य, এककारम नर्समकिमान्, नर्सक ও নিষ্মতার লেশমাত্রীন , ঈশবের षख्यि वर्षमानकारणत विकान कान প্রমাণ দিতে পারে না, কিন্তু সসীম ক্ম-जाणानी वहस्तानमण्यत प्राम् এक जेयत चाह्न, देशत विमान कथकिर भाउमा गौरा। এরূপ ঈশবের নিকট প্রার্থনা বারা কোন ফল লাভ করিবার আশা ' क्या याष्ट्रेटक পाद्र श्ना; काय्र किनि ष्पतिवर्छनीयः देनमर्शिक नियमास्मादत कार्या कतिया थारकन, अथवा इय छ, তিনিও ঐ সকল নিয়মের অধীন, হুজ-हैं। नमस सग्छवामी ममस्दर এकविन् वृष्टित क्या धार्यमा कतिरल जिनि रेनम-

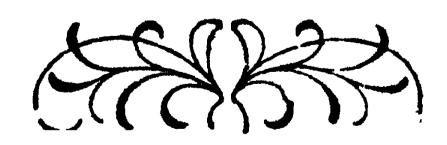
গণের মনোরথ পূর্ণ করিতে পারেম ना; कात्रन, मिथिएंड भाउत्रा यात्र (य, প্রকৃতির কোন কার্যাই নিয়মবহিভূতি नहर। (यस ना स्रेल यूष्टि इत ना, ममूज-२२८७ स्या कर्ज्क वाष्म উचाभिज ना क्रेटल रमघ हम ना, जावात रम्हे भिष्य भी उन ना इहेरन दृष्टि इन्न ना। অক্সাৎ একটি পরমাণুও সৃষ্টি করিবার তাঁহার ক্ষমতা নাই। উপাসনা অর্থাৎ ঈশবের প্রতি ক্বতজ্ঞতা প্রকাশ করিতে আমাদের বিশেষ আপত্তি নাই, কিন্ত আমাদের মতে মিথ্যা বাক্যব্যয় করিয়া কুতজ্ঞতা প্রকাশ করা অপেক্ষা কার্য্যের ঘারা ক্বতজ্ঞতা প্রকাশ করাই প্রকৃত সমৃত্তি তাঁহার প্রধান উদ্দেশ্য, তথন তাহার সেই উদ্দেশ্যসাধনার্থ জীবগণের উপকার ও উন্নতির চেষ্টা করা প্রকৃত ক্বতজ্ঞতার কার্যা। স্ক্ররাং ভীবগণের উপকার ও তাহাদের ক্লেশ নিবারণের ও উন্নতির চেষ্টা করাই আমাদের মতে व्यथान धर्य।

যদিও পরলোকের কিন্তুৎপরিমাণে আশা করি ভগাপি আমরা ইহা বলিতে পারি না যে পরলোক পাপপুণ্যের তির-কার প্রস্কারের স্থান; কারণ, -শে कथा विनवात (कान श्रियान नारे, वत्रक ভাছার বিরুদ্ধে এই কথা বলিভে পারি (ग, देनमर्शिक नियम छ दन व करे স্থানেই আমরা ভোগ করি; ধর্মের

नियम लड्यन कतिया भरतत कानिष्ट করিলে • এই ধর্মের (Religion of Humanity) মতে প্রত্যক্ষভাবে সমাজের ७ পরোকভাবে নিজের অনিষ্ট ঘটে। ইহা भगिधक युक्तिमञ्ज विनिन्ना (वाध इय (य यनि পরলোক থাকে, তথায়ও नियमाञ्चमादत ७ निज निज कार्याञ्चमादत चामारमत्र फलरजांग श्रेर्त, चात्र এथान-কার অধিকাংশ স্থত্ঃপ্র শরীরধারণ-জনিত, স্থভরাং যে লোকে এই শরীর मक्त याहरव ना भारताक ध्वानकात স্থগ্: ধ ভোগ করিবার কোন সম্ভাবনা नारे, তবে यि न्डनश्रकादित स्थरूः थ ভোগ করিতে হয়, তাহা হইলে আমরা যে আবার তথার নৃত্ন কার্যক্তে ना তাহারই বা প্রমাণ কি ? ইহাও তদ্ধারা সমাজের উপকার হইতে ভাবিতে পারি না যে, যে ঈশরকে পরম- থাকিবে এবং তজ্জনাই আমরা নিজেও काक्रिक, निर्धुक्रात (मन्माक्टीन अवना उपक्र इहेट्ड शाकित। विनिट्छि, यावात छांशाक्टे नत्रकत

शृष्टिक की मत्न कतिएक इहेटन आमातित বিচারশক্তিকে অভলম্পূর্ণ সাগরে অগ্রে निमशं कतिएक रुप्तः (त श्रूक्य रुष्टि कतिएक পात्रम, कामद्रा छार्। অপেকা निष्ठं कालाक এ खगडि मिशिडि পাই না। অভএব আমরা আমাদের अधारक नद्रकत्र एष्टिक छ। ও পরলোক কে ·পুরস্বার তিরস্বারের স্থান বলিতে প্রস্তুত निह। जागामित मण्ड स्राचिशानि उ क्रः (था९भामन ७३ क्रें छि भाभभू (वाद পরিমাপক নিজৈর স্বার্থের জন্য অর্থাৎ পরলোকে ছঃধনিবারণ ও স্থভোগ করিবার জন্য আমরা পুণাকার্য্যে রত ও পাপ इटेट वित्र इटेट विन न।। তবে পাপ হইতে বিরত ও পুণাকার্যাফু-নৃত্তন কার্য্য সকলের অনুষ্ঠান করিব ষ্ঠানে রত হইবার প্রয়োজন এই যে,

ञी यः



वानम गर्छ।

- সপ্তম পরিচ্ছেদ।

ভীবানন্দ কুটীর ইইতে বাহির হইয়া গেলে পর, শান্তিদেবী আবার সারক লইয়া মৃত্ মৃত্ রবে গীত করিতে লাগি-

> ''প্रमग्न পরোধিজলে, ধৃতবানসি বেদং বিহিত বহিত চরিত্র মধ্যেদং কেশব ধৃত মীন শরীর জর জগদীশ হরে।''

গোস্থানী বিরচিত মধুর স্থোত্ত যথন পাস্তিদেনী কণ্ঠ নিঃস্ত হইয়া রাগ তাল লয় সম্পূর্ণ হইয়া সেই অনম্ভ কাননের অনম্ভ নীরব বিদীর্ণ করিয়া, পূর্ণ জলো-চ্ছাদের সময়ে বসস্তানিল-তাড়িত তরঙ্গ ভঙ্গের ভায় মধুর হইয়া আসিল, তথন ভিমি গারিলেন।

निकानि यस्कविरधन्त्र स्विकार नमग्र क्षण्य प्रतिक পश्चार रक्षण्य युक्त स्वीत सम्बद्धार स्वा

তথন বাহ্র হুইছে কে অতি গভীর রবে গায়িল, গভীর মেঘ সর্জনবৎ তানে গায়িল,

८ लाख निवह मिनरन कनत्रिम कत्रवानः सूत्रकष्ट्र मिन किमिन कत्रानः रक्षान पृष्ठ कक्षिणतीत्र खत्र कश्मीण हरत।" শান্তি গলা চিনিল, বলিল "রহ্ পোড়াকপালীর ছেলে! বুড়োঁ বরসে তুমি মেয়েমাত্র্যের সঙ্গে গায়িতে এসো!" এই বলিয়া শান্তি সারক্ষের তারগুলি আর একটু চড়াইয়া লইরা, কণ্ঠ আর একটু উচ্তে তুলিয়া দিয়া, গায়িল বেদাত্রদ্বতে, জগন্তি বহতে.

বেদামুদ্ধরতে, অগন্তি বহতে, ভূগোলমুদ্ধিত্রতে,

দৈতাং দারয়তে, বলিং ছলয়তে
ক্ষত্ত ক্ষতে,
পৌলস্তাং জয়তে হলং কলয়তে

কারণামাতন্ত্ত।

মেচ্ছান্ম ছ রতে দশাক্তিকতে কথার তুভাং নমঃ।

বলিতে বলিতে সে দীর্ঘ তাল সেই উচ্চৈঃরব সে গগন বিদারক তান ছাড়িয়া দিয়া শাস্তি পায়িল

স্থিত কমলা, কুচমগুল ধৃত কুপুল কলিত ললিত বনমাল জন্ম জন্ম দেব হরে।"

বাহির হইতে যে সঙ্গে গায়িতেছিল
সে আর সহা করিতে পারিল না। খেত
শাশ্রু, খেত কান্তি, খেত বস্ন, খেত
পূজাভান লইয়া আসিয়া কুটীর মধ্যে
প্রবেশ করিল,—বলিল 'মা গাও, তে:মা
হইতে সনাতন ধর্ম উদ্ধার হইবে, গাও''
বলিয়া আপনি গাইল,

मिनमनिमञ्जन, छवश्यन मूनिमन मानम रूपन

माखि छक्तिणाद প্রণত হইরা সভ্যা নন্দের পদধূলি গ্রহণ করিল, বলল "প্রজাে! অংমি এমন কি ভাগ্য করিয়াছি যে, আপনার প্রীপাদপদ্ম এথানে দর্শন পাই—আজ্ঞা করুন আমাকে কি করিতে হইবে" বলিয়া সারকে স্কুর দিয়া শাস্তি আবার গারিল

"তব চরণ প্রণভাবয়মিতি ভাবর
কুরু কুশলং প্রণতেষু।"
সত্যানন্দ বলিল "মা তোমার কুশলই
হইবে।"

শান্তি। "কিসে ঠাকুর—ভোমার তো আজ্ঞা আছে আমার বৈণবা"

সভ্যা। "ভোষাকে আমি চিনিভাম না, চিনিলে আমি বলিভাম হে জীবা-নন্দ! আমার নিকট শপথ কর যে তুমি পত্নীসহবাস ভ্যাগ করিবে না। মা আমার এক ভিক্ষা আছে, তুমি স্ত্রীবেশ আর গ্রহণ করিও না। সন্তান বেশ গ্রহণ করিরা অসি চর্ম্ম বর্ম গ্রহণ পূর্বক সন্তানসেনা মধ্যে প্রবেশ কর।"

শাস্তি। 'প্রভা এ আজা আমার কেন করেন ? আপনার আজায় শিবের শক্ত জয় করিয়াছি, বিষ্ণুর শক্তও জয় করিতে হইবে ? বলিয়া শাস্তি গায়িল,

"মধুমুর নরক বিনাশন— গরুড়াসন স্বরকুল কেলি নিদান অমল ক্মলদল লোচন ख्य भार्म जिल्लाम ख्यमिशाम खन्न सम (पर रूटन।"

বাবা! মাপনি চুপ করিয়া রহিয়া-ছেন কেন, দেখিতেছেন না কি কাও, হুইতেছে?

সভা। কি কাও হইতেছে। শান্ত। আপনি কি জানেন না। সভা। সকল জানি না।

শান্তি। তবে আমি কাল বলিব।
কিন্তু একটা কথা আমার জিল্ঞাসা করিবার ইচ্ছা আছে—আমার স্থামীর প্রতিজ্ঞা ভঙ্গের কারণ আমি। মৃত্যুদণ্ড
তাহার কপালে বিধান। তিনি ধর্ম্মে
পতিত হইয়াছেন, তাহাকে মরিতে হইবে। স্বতরাং আমাকেও মরিতে হহবে। কিন্তু আপনার কার্যা উদ্ধার
হইবে কি ? কে কার্য্যোদ্ধার করিবে ?"

সত্যা। মা দড়ীর জোর না বৃথির।
আমি জেয়াদা টানিয়াছি, ভূমি আমার
অপেকা জানী; ইহার উপার ভূমি কর,
ভীবানন্দকে বলিও না যে আমি সকল
জানি। ভোষার প্রলোভনে তিনি জীবন
রক্ষা করিতে পারেন। এতদিন করিতেছেন। ভাহা হইলে আমার কার্যোজার
হইতে পারে।"

সেই বিশাল নীল উৎফুল লোচনে
নিদাঘ কাদখিনী বিরাজিত বিত্যুত্বা
ঘোর রোষ কটাক্ষ হইল। শান্তি বলিল
'কি ঠাকুর! আমি আর আমার স্বামী
এক আয়া, যাহা ফাহা জোমার সঙ্গে কথোপকথন হইল সবই বলিব। মরিতে

हम जिनि मतिर्वन, जामात क्रि कि ? আমি তো স্কে সজে মরিব। তার স্বর্গ আছে, মনে কর কি আমার স্বর্গ নাই।

बक्रामी विनन (य ''आमि कथन 'হারি নাই, আজ জেমার কাছে হারি नाय। या व्यामि (जायात्र भूख, मखान क (ज्ञष्ट कर, कीवानम्बत व्यानतका कर, আপনার প্রাণ রক্ষা কর, আমার কার্য্যো-कात इहेरव।"

विजनी शमिन। भाष्टि वनिन "आंगांत স্বামীর ধর্ম আমার স্বামীর হাতে; আমি ভাঁহাকে ধর্ম হইতে বিরত করিবার (क? ইহলোকে জীর পতি দেবতা হইল। किन পরলোকে স্বারই ধর্ম দেবতা— আমার কাছে আমার পতি বড়, ভার অপেক্ষা আমার ধর্ম বড়, ভার অপেকা আমার ধর্মো আমি যেদিন ইচ্ছা জলা-ঞ্জলি দিতে পারি; আমার স্বামীর ধর্মে बनाञ्चल मित् । यहाताच । टामात কথার আমার স্বামী মরিতে হর মরি-(वन, जामि वाद्रश कदिव ना।"

ব্ৰন্যায়ী তখন দীৰ্ঘনিখাস ভ্যাগ र्वेतिया दलिल 'भा मरनत्र कथा मकल তোমার বলি, जीवानक वन, ভবানক रण, महानम रल, (य (कह रल जामात्र মনের কথা বুঝিবার বোগ্য ভূমি ভিন্ন (कर नरह। এ शांत्र खर् विनान णारह। जाभारमञ्ज्ञ मकनरक है वनि পড়িতে শ্বাই মরিবে, বোধ হয় মা ভূমিও

मतिरव ; किन्न भिन्न कान कतिया मतिरङ हरेरव, विना कार्या कि गना छान-णामि (कवन मिण्टक मा विन्याणि जात काशांक अभाविन गारे, किन गा त्रहे युजना युक्ना धत्नी जिन्न चामत्री चनना-गाइक। (ভाমাকে কেবল মা बिलाম, कुंगि या इहेब्रा मखारनंत का क क्र যাহাতে সম্ভানের কার্য্যোদ্ধার হয় ভাহা कत्रिञ, कीवानत्मत्र প्राणत्रका कत्रिञ, তোমার প্রাণ রক্ষা করিও।"

এই বলিয়া मত্যানল "হরে মুরারে गश्रेक देखादत्र'' गात्रिएक गात्रिएक निष्ठा छ

আমার কাছে আমার স্বামীর ধর্ম বড়। ক্রমে সম্ভানসম্প্রদায় মধ্যে সম্বাদ প্রচারিত হইল যে সত্যানন্দ আদিয়া-ছেন, সম্ভানদিগের সঙ্গে কি কথা कहिर्वन, এই विनिष्ठा जिनि नकनरक षाञ्चान कत्रियाष्ट्रन। उथन परल परल সস্তান সম্প্রদায় অজয়তীরে আসিয়া ममद्व इहेट मानिम। स्माप्सा রাত্রিতে অজয় সৈক্ত পার্ছে বৃহৎ কানন মধ্যে আম্র. পনস, তাল, তিস্তিড়ী, অশ্বথ, (राम, यह, भागामी প্রভৃতি বৃক্ষাদি রঞ্জিত মহা গহনে দশ সহস্র সম্প্রান সমবেত হইল। তথন সকলেই পর-স্পারের মুথে সভ্যানন্দের আগমনবার্তা रेरेरवा चामि मनिव चौरानम खरानम अयन कन्निमा महा कानाहनक्ष्वि कन्निष्ठ नाशिन। नङ्गंभक कि क्या द्वाशात्र

शियाছिल्यन, তाहा সাধারণে ভানিত ना। श्रवास वह य जिनि मञ्चानि राजत यक्रतकामनाम जभमार्थ क्रिमान स्म श्राम कतिग्राहित्सम। चाल निकत्स काना-कानि कतिए नागिन ''महात्राष्ट्रत छ्राः-निकि इरेब्राएए--जामाम्बर बाका इरेट्य।" তখন বড় কোলাহল হইতে লাগিল। **क्रिकां क्रिकां क्रिक्र वाशिव "गात्र मात्र** নেড়ে মার" কেহ বলিল "জয় জর মহা-त्राक कि कप्र'' किर शामिन "रूत मूत्रादा यथूरेकठेखादा" (कर् गात्रिन "वत्न माज-त्रः" (कह वर्ण छाटे धमन पिन कि वहेरव कुछ वाजानि वहेगा तगरकत्व व শরীর পাত করিব ? কেহ বলে ভাই **এম**न मिन कि इहेर् ममिक छोजिया রাধামাধবের মন্দির গড়িব ? কেছ বলে **ভाই এমন দিন कि হইবে আপনার ধন** चार्थनि थाहेव ? मध्य नत्रकर्छत्र कलकन রব, মধুর বায়ু সন্তাড়িত বৃক্পত্রনাশির মর্মাররৰ, সৈকতবাহিনী তয়লিনীর মৃত্ युष् जत्र जत्र त्रव, नीन चाकारण हता ভারা খেত মেঘরাশি, শ্যামল ধরণীভলে रिविष् कागन, नीन नहीं, (चंड टेमकड. क्त क्रममाम। जात मर्था मर्था एनह गर्सकन मनाद्रम "यत्म माजदर।" जबन मजानम चानिया त्मरे ममत्वक मखान-मखनीत मर्था माँ फाइटलम । जयम रमई महत्र महत्र महान मछन दुक्ति एक प পতিত চক্রকিরণে প্রভাসিত হইরা मा। यम ज्रम्हा था । जि डेटेकः यूद्य ज्यान्यूर्ग त्नाहरन डेख्य वाह

উর্দ্ধে উত্তোলন করিয়া সতাানন্দ বুলিলেন,
"শহুচক্র পদাপদাধারী বুনমালী বৈকুঠনাপ যিনি কেলিমথন মধুমুর মর্দন
লোকপালন তিনি তোমাদের মঙ্গল
করুন, তিনি ভোমাদের বাহুতে বল
দিন, মনে ভক্তি দিন, ধর্মেমতি দিন,
তোমরা একবার তাহার মহিমা গীত
কর। তখন সেই সহল্র কঠে উচৈচঃশ্বরে গীত হইতে লাগিল

"অয় জগদীশ হরে প্রশন্ম প্রাধি জলে গ্রন্থ বানসি বেদং বিহিত বহিত্র চরিত্র মথেদং কেশব গ্রন্থ মীন শরীর ভায় জগদীশ হরে।"

তথন সত্যানন্দ তাহাদিগকে পুনরার
আশীর্কাদ করিয়া বলিলেন ''হে সন্তানগণ, তোমাদের সঙ্গে আজ আমার
বিশেষ কথা আছে। টমাসনামা এক
জন বিধর্মী হুরাত্মা বহুতর সন্তান নষ্ট
করিয়াছে। আজ রাত্রে আমরা তাহাকে
সদৈন্যে বধ করিব। জগদীখরের
আজ্ঞা—তোমরা কি বল ?'

श्रीयन इतिश्वनिष्ठ कानम विमीर्ग कित्रम। "এখনই মারিব—কোথার জারা দেখাইয়ে দিবে চল" "মার! মার! শত্রু মার!" ইত্যাদি শব্দে দ্রহ শৈলে প্রতিধ্বনিত হইল। তথম সত্যা-মন্দ বলিলেন, "সে জন্য আমাদিগকে একটু ধৈর্ঘাবলম্ম ক্রিতে হইবে। ইং-রেজের কামান আছে—কামান বাতীত ইংরেজের সঙ্গে স্বয়ু সম্ভবে না। বিশেষ वेज वीत्रवाजि। भगितिस्त सर्ग हरेटि २१ कामान व्यामिटिएस—कामान स्थी-हिल व्यामना यूक्याळा कतिव। के एमथ প্রভাত হইতেছে—বেলা চারিদও হই-লেই—ও কিও!

গুড়ুম্—গুড়ুম্—গুম্! অকসাৎ চারি
দিকে বিশাল কাননে তোপের আওয়াজ
হইতে লাগিল। তোপ ইংরেজের। জালনিবদ্ধ মীনদলবৎ কাপ্তেন টমাস সস্তানসম্প্রদায়কে এই আফ্রকাননে ঘেরিয়া বধ
করিবার উদ্যোগ করিয়াছে।

নবম পরিচেছদ।

"छज्म् छज्म् छम्।" देश्दत्र का-मान ডाकिन। ८मरे भक्ष विभान कानन क-ম্পিত করিয়া প্রতিধ্বনিত হইল, "গুড়ুন্ खड़्म् खम।" अञ्चलक वाँक वाँक ফিরিয়া সেই ধ্বনি দূরস্থ আকাশপ্রাস্ত हरेट প্ৰতিকিপ্ত हहेग। "গুড়ুম্ গুড়ুম্ धम्।" अध्यभादि पृत्र कानना खद्वत मर्था व्याद्यम कतिया ८मरे ध्वनि व्यादात जि कि जा जिल "अजू म् अजू म् अम्!" मछ। नम जिल्लामा केत्रितनन, दम्भ छा-गदा किरमद (ভाপ। करत्रकन्न मसान , काननगरधा ज्याभनारमञ्ज ज्या वैशिष्णा वाथिया माँ फारेबाहिन, जारांबा उरक्तार व्यवादबादन कत्रिया (मिथिटक क्रूंडिन, ক্তিত ভাহারা কানন হইতে বাহির হইয়া कि इ प्र रशरण है स्थायर वर्त भाराय नाम গোলা ভাছাদের উপর বৃষ্টি ছইল, ভা-

হারা অশ্বসহিত আহত হর্টরা সকলেই
প্রাণত্যাগ করিল। দ্র হইতে, সত্যানন্দ
তাহা দেখিলেনু। বলিলেন ''উচ্চ বৃক্ষে
উঠ, দেখ কি।'' তিনি বলিবার অগ্রেই
জীবানন্দ বৃক্ষে আরোহণ করিয়া শেখিতেছিল, সে বৃক্ষের উপরিস্থ শাখা হইতে
ডাকিয়া বলিল ''তোপ ইংরেজের।'
সত্যানন্দ জিজ্ঞাদা করিলেন ''অশ্বারোহী
না পদাতি।''

জীব। **হৃই আছে।** সভাগ। কভ।

জীব। আন্দাল করিতে পারিতেছি না, এখনও বনের আড়াল হইতে বাহির হইতেছে।

সত্যা। গোরা আছে না কেবল সিগাহী।

জীব। রাঙামুধ আছে। তথন সত্যানন্দ জীবানন্দকে বলিলেন ''তুমি গাছ হইতে নাম।''

की वानम शाह रहेट नामिन।

সভানন্দ বলিলেন 'দেশহাজার সন্তান উপস্থিত আছে; কি করিতে পার দেশ। তুমি আজ সেনাপতি।' জীবানন্দ সশস্ত্রে সজ্জিত হইয়া উলক্ষনে অখে আরোহণ করিলেন। একবার নবীনানন্দ গোস্বামীর প্রতি দৃষ্টি করিয়া নয়নেসিতে কি বলিলেন কেহ তাহা বুঝিতে পারিল না। নবীনা-নন্দ নয়নেসিতে কি উত্তর করিল তাহাও কেহ বুঝিল না, কেবল তারা ত্ইজনেই মনে মনে বুঝিল, যে হয় ত এ জন্মের মত এই বিদায়। তখন নবীনানন্দ দক্ষিণ বাহু উত্তোলন করিয়া সকলকে বলিলেন
'ভাই এই সময় গাও 'জয় জগদীশ
হরে!' ' তখন সেই মুশসহত্র সস্তান
এককঠে নদী কানন আকাশ প্রতিধ্বনিত 'করিয়া, তোপের শক ত্বাইয়া
দিয়া সহত্র সহত্র বাহু উত্তোলন
করিয়া গায়িল,

"জয় ড়য় ড়গদীশ হরে

য়েচ্ছনিবহনিধনে কলয়সি কয়বালং—"

এমন সময়ে সেই ইংয়েজয় গোলাবৃষ্টি আসিয়া কাননমধ্যে সন্তান সম্প্রদায়ের উপর পড়িতে লাগিল। কেহ
গায়িতে গায়তে ছিয়মন্তক, ছিয় বাহু,
ছিয়-ছৎ হইয়া মাটীতে পড়িল, তথাপি
কেহ গীভ বন্ধ করিল না, সকলে
গায়িতে লাগিল "জয় জগদীশ হয়ে"
গীত সমাপ্র হইলে সকলেই একেবারে
নিস্তব্ধ হইল। সেই নিবিড় কানন,
সেই নদীদৈকত, সেই অনন্ত বিজন
একেবারে গন্তীর নীয়বে নিবিষ্ট হইল,
কেবল ইংয়েজের সেই অতি ভয়ানক
কামানের ধ্বনি আর দ্রশ্রুত গোরার

তথন সত্যানন্দ সেই গভীর নিস্তব্ধ
মধ্যে অতি উচৈঃস্বরে বলিলেন 'জগদীশ হরি তোমাদিগকে স্থপা করিবেন
এই সময় তোমরা তাঁহার কার্য্য কর—
তোপ কতদ্র ?''

मगरबङ चारञ्जत अक्षना ७ भारति।

উপর হইতে একজন বলিল "এই কামনের অভি নিকট একখানা ছোট মাঠ পার মাত্র।" সভা। नमं विना "(क जूबि ?" উপর হইতে উত্তর চুইল "आমি নবীনাননা"

তথন সত্যানন্দ বলিলেন ''তোমরা দশসহস্র সম্ভান আছি, তোমাদেরই জয় হইবে, তোপ কাজিয়া লও।'' তথন অগ্র-বর্ত্তী অশ্বারোহী জীবানন্দ বলিল ''আ-ইস।''

সেই দশসহত্র সন্তান—অর্থ ও পদাতি, অতিথেগে, জীবানদের অন্ত্-বর্ত্তী হইল। পদাতির ক্ষমে বন্দ্ক, কটাতে তরবাবি, হস্তে বরম। কানন হইতে নিজান্ত হইবা মাত্র, সেই অজ্ত্র গোলার্টি পড়িয়া তাহাদিগকে ছিন্ন ভিন্ন করিতে লাগিল। বহুতর সন্তান বিনা যুদ্ধেই প্রাণত্যাগ করিয়া ভূমিশায়ী হইল। একজন জীবানদকে বলিল জীবানদা, অনর্থক প্রাণিহত্যায় কাজ কি।"

জীবাননা ফিরিয়া চাহিয়া দেখিল ভবাননা—জীবাননা উত্তর করিল "কি করিতে বল।"

ভব। বনের ভিতর থাকিয়া বৃক্ষের
আশ্রম হইতে আপনাদিগের প্রাণ রক্ষা
করি—ভোপের মুখে পরিষ্কার মাঠে
বিনা ভোপে এ সম্ভান সৈন্য এক দও
টেকিবে না; কিন্ত ঝোপের ভিতর
থাকিয়া অনেকক্ষণ বৃদ্ধ করা যাইতে
পারিবে।"

জীব। তুমি সভা কথা বলিয়াছ। কিন্তু প্রাক্তা করিয়াছেন ভোগ काष्ट्रिया नहें व्हेट्स, अञ्चर आमता তোপ काष्ट्रिया गरेट यारेव।

ভব। করি সাধ্য ভোপ কাড়ে। किस यमि (यर्डिटे हर्त्त, जर्द ज्ञि नित्रख হও আমি যাইতেছি।

जीव। ७। इट्टेंब ना—छवानमः। आंज আমার মরিবার দিন।

ভব। আভা আমার সরিবার দিন। ভীব। আমার প্রায়শ্চিত্ত করিতে इटेरव।

ভব। তুমি নিষ্পাপ-শরীর—জোমার প্রায়শ্চিত শাই। আমার চিত্ত কলুষিত আমি যাই !

সামি যাই।

ज्वानम नीत्रव इहेत्रा (भाष्य विनान गात्रिन "वरम माजतः"

''মরিবার প্রায়েভন হয় আজই মরিব, रय मिन मतिवात थार्याजन इहेरव रमहे দিন মরিব, মৃত্যুর পক্ষে আবার কালা-कान कि।"

জীব। তবে এসো।

এই বলিয়া ভবানন্দ্রসকলের অগ্রবন্তী रहेल। ७ थन मल मल वाँ। क वाँ। क গোলা পড়িয়া সন্তান দৈনা থও বিখও করিতেছে, ছিড়িতেছে, চিরিতেছে, উन्টाইया ফেলিয়া দিতেছে, তাহার উপর हेःदब्रक्त वस्क बद्राणा निभाही रेमना ष्यगर्थ नरका नाति नाति नद्धानमनरक ভূমে পাড়িয়া ফেলিভেছে। এমন সময়ে ভ্বানন্দ বলিল '' এই তরজে আঞ खीव। ভবানक ! ভোমার কি পাপ সন্তানকে ঝাঁপ দিতে হইবে—কে পার তাহা আমি জানি না। কিন্ত তুমি ভাই ? এই সময়ে গাও বন্দে মাতরং" णाकित्न मछात्नत कार्याकात रहेत्। ७ थन छेछ निनाम रमघमझात त्रारा महे সহস্রকণ্ঠ সম্ভান সেনা ভোপের ভালে



वक्राप्तरभव भवाधीनं ।।

পাঠশালার ছেলেরা শিখিয়াছে যে. गाजभाक बुद्भत इहेन, वथ्जियात थिनि-कित मगन इहेट ज्या परायत भना थीन छ। षात्रक रहेशाएए। एएटल एक वसम रहा, কিন্ত পাঠশালার কুশিক্ষা ভাহাদের व्यक्टत थाकिया याय ; এখনও আমাদের मध्या व्यानत्कत्र विश्वाम (य वक्रामाणत পরাধীনতা বহুদিনের। পাঠশালার পুস্তক প্রণেতা বাহাত্রগণ দীর্ঘায় হউন, সি, এস, আই হউন, কিন্তু একবার তাহারা ভাবিয়া দেখুন, একবার ব্ঝিবার (छष्टा कक्रम, छाङा इहेटन (मिथिदन ८य, वथ्डियांत्र थिनिङ्गित मगरम वाकाना 'भन्नाधीन इम्र नारे; कान मूननमारनम जयदा वाजाना भन्नाधीन इस नाहै। हेश्तरकता यथन (मध्यानी नन ज्थनध वाकाका वाधीन, डांहाता यथन भागत्नत छात्र तन, उथन्त राजाना जाभनात ধার আপনার পরে। তাহার পর কপাল काषिग्राष्ट्र। धरे मर्खान,—धरे वामा-(एत मगत्र वाकाला शताधीन इहेबाट ।

ইংলপ্তেরও পরাধীনতা আরম্ভ হই । রাছে। যে দিন হইতে বিদেশী ''সম্ভা মাল'' ইংলপ্তের বাজারে স্থান পাই-রাছে, সেই দিন হইতে তথাকার স্বাধীন-ভার আসন টলিয়াছে।

मछ। विभिन्न। त्यादकः विद्यमी मान अतिम कतिएक शांदक, स्मी विभिन মতরাং আর বিক্রের হর না, ইহার প্রথম
ফল, দেশী শিরের অবনতি; দিতীর ফল
দেশী শিরের অন্তর্ধান; শেষ ফল বিদেশের প্রতি নির্ভর। শিরসংহারের বীল্পমন্ত্র
আড়াই অক্রর—''সন্তা''। '' সন্তা''
করিতে গেলে ''ভেল'' মিশাইতে হর,
ন্যুর খাট করিতে হয়, জিনিসমন্দ করিতে
হয়, পুরুষামুক্রমে শিরসম্বন্ধে যে পারিপাট্য শিক্ষা হর্রাছিল তাহার লোপ
করিতে হয়। ইহাতে যদি বিদেশী মালকে বাজার ছাড়া করিতে পারা গেল
তবেই রক্ষা, নতুবা বিদেশের উপর
নির্ভর করিয়া থাকিতে হইবে।

বে ব্যক্তি আপনার অল্লবন্তের নিমিত্ত
অন্যের মৃথাপেকী হয়—অন্যের প্রতি
নির্ভর করে, সে বাক্তি পরাধীন: সেই
রূপ, বে দেশ অল্লবন্তের নিমিত্ত বা
সাংসারিক কোন সামগ্রীর নিমিত্ত অনা
দেশের প্রতি নির্ভর করে সে দেশও
পরাধীন। এপনও আ্যাদের অল্ল জোটে
সভা, কিন্তু বল্লের নিমিত্ত বঙ্গদেশ
পরমুখাপেকী হুইয়াছে—ম্যানচেটারের
অধীন হইয়াছে। কয়েক বৎসরমধ্যেই
বালালির চরকা একেবারে চুপ করিয়াছে,
স্থভা এখন বিলাভ হইতে আনিভেছে।
অল্লদিনের মধ্যে শভকরা আলীধানা
ভাতে বন্ধ হইয়া গিয়াছে, সাধারণের ব্যা

आत अधिक मित्नत निभिन्न नटि ।

मानिटिहेर्त जनकल घठे दिए एक, কাপাসে, কোষ্টা মিশাইয়া বাঙ্গালার "বাজারে ''সন্তা'' কাওড় পাঠাইতেছে। আর রক্ষা নাট, বাঙ্গালার ছই তিন সহস্র বৎসরের শিল্পশিকা লোপ পাইতে हिलाल ; बाकालात डांडि পूर्वभूकरवत्र কারিগবি ভুলিয়াগেল; অরাভাবে তাহারা তস্থবয়ন ছাড়িয়া দিতে লাগিল। যে कश्रश्वान डांड এখানে रिन्यान जामाि भक्ष कर्षेत्र, भीष्टरे **छा**शास्त्र कर्छ (दाध इट्रेट इ जिला। अथन मकलरक्ट्रे विलाजि काপড़ পরিতেই হটবে। করিতেছেন, সে শাস্ত্রে যে কিছু পদার্থ वाक्रालात काপড़ फूताहेल, এখন गानि नाहे अक्रभ वना यात्र ना। मर्खनाहे চেষ্টার বাঙ্গালার ''আব্রুদার।'' স্ত্ত-त्राः चामारमत्र ध्यम मा। नरहरो दितत मन- दिन्न चिना चना वित्रार्टिन, कवित्रार्धिता রক্ষা করিতে হইবে, ভাহার রাগ সেরোগ আরোগ্য করিয়াছেন। কিন্তু महा कतिए इरेर्स, खारारक विनिष्ठि कहिट्ड इडेटव, डाहात मननाकां क्यो रहेशा थाकिएक स्टेटन : भताधीरनत याहा कर्खना छार। भकनरे कदिए रहेरन। षामारमञ्ज मरक रय मचक मैं। एं हियार इ श्राहाटक मा। न दि है। दिव का हा क निभम्-গ্রস্ত শুনিলে আমাদের মাধা ঘুরিয়া याहेरव। विनारक युक्त इहेरव खनिरम আমরা খর আর বাছির করিব। কিন্তু এ শব্দ আত্মীয়ভার নছে, পরাধীনভার। वज्रमण्डक वाज्ञानात भत्राभी गङ्गा चिष-• त्रोटक, कि**य** धाना निष्य (प्रहेंक्र भ चित्राट्य कि ना (मिशिट्य (शटल अश्रायह

क्य भागि डांड जमाि जाह्य छाहा हिकिৎमात्र कथा गत्न हत्रां जामात्मव চিকিৎসাশান্ত অতি প্রাচী্য বলিয়া পরিচিত, বহুকালের পরীকারারা ইহার অन পরিপৃষ্ট হইয়াছিল। অনেক ইংরেজ আ্যাদের চিকিৎসাসম্বন্ধে বিশ্রুর প্রশংসা করিয়া পাকেন। কলিকাভায় দেখা বার দেশী বিলাতী উভরবিধ চিকিৎস। একত চলিভেছে। বড় ডাক্তারের यেज्ञा भागां श्रीमान कविज्ञास्क्र प्राचे-রূপ পসার। তুই একজন কবিরাজ मारा अञ्च : महस्रमुद्धा छे १। बर्जन क-রেন। যে শাজের বলে তাঁহারা বিলাতী ডাক্তারের সমকক্ষ হইয়া এত উপার্জন শুনিতে পাওয়া শায়, ডাক্তারেরা যে ভথাপি মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিতে হইবে य, ज्यानक विषय हैश्या ि विकिश्मात श्रीधाना चाट्छ। अक्राल वाकानात्र श्रीधान রোগ জর। পূর্বে যে জর বালালায় नर्राम। इरेज, এ म जुत नहा। कवित्रा-জেরা যে ঔষধ প্রস্তুত রাখিতেন, ইহার त्म छेयध नष्ट ; त्निभानतमञ्ज निष्यत भारता देशांत्र श्रेष्ठभ, डीहारमत्र भारत अहे ঔষধের বাবস্থা বিশেষ করিয়া লিখিত আছে। किन्न कविदारसदा (म भारता (का-थाय **प! हेटबन १ ऋ** छता छ। छ। जा निटम्ह হইয়া বাঞ্চালির মৃত্যু দেশিতে লাগিলেন। (भव गार्किनम्हा आत अकत्रण गिर्दत

পালো আবিষার হইল; তাহার নাম कूरेनिन। जाकारतता मिरे भारता वावरात कतिया जुत जारतांगा कतिर् गांगि-**टमन** ; स्डवाः डाहारमत्र जामत वाफ्रिङ नातिन, न्यूक मदन कवित्राद्यत भगात (शंग। चात्र अक्राप मामाना कवित्रारकत्र जात हत्र ना, दक्र जात कवित्रां जिएश না, এতকালের চিকিৎসাশাস্ত্র লোপ भारेल, कछ महस्र वर्मादद मर्ननभन्नीका मकलहे वृथा इहेल। वाकानात्र ज्यन है र त्रिक िकिस्सा व्यथान इहेग्रा उठिन।

তাহার পর ? তাহার পর,—পরাধী नछ। हिक्टिमा अथात्म, श्रेयथ विमाटि। षिर्व, उडिमन विमाडी हिकिएमा ध (मध्य हिल्दा छाहात्र शत्र (नशानी ভারতবর্ষে, ঔষধ নেপালে। বিলাতী অর্থশাস্ত (Poletical economy) এথানে थांिन ना। (नभान इहेट्ड निष्युत भारता अथारन चामित ना।

(मभी हिक्टिमा लाग भारे एक विम-त्राष्ट्र, आत्र किছू मित्न এक्वाद्य लान भारेत्व। (मणी श्रेषध याद्याता व्याहत्रग करत्र-वर्धार शक्षविक्-छाहात्रा ध्यमहे অনেক দ্রব্যের নাম ভূলিতে আরম্ভ করি-ब्राष्ट्र। चात्र शृक्षिण्ड कवित्राच नारे, পুর্বামত লভামুলের ফরমাইস নাই। কিছুদিন পরে ভাহাদের বাবসা উঠিয়া যাইবে, আর সে ব্যবসা পুন:ছাপিত इहेरव ना। रयक्षे क्विद्रारमंत्र भिका

कठिन, जमरणका छ। हारम त महकाती अह विक्रित्र निका जात्र कठिन। अञ् ৰারা তাহাদের শিক্ষা হর না, তাহা **ब्हेटल महस्र ब्हेछ। भूक्रम**भव्रम्भवा চাকুষ প্রত্যক্ষ উপ্লেশ খারা ভাহারা ১ नठाम्न हिनिया जानिएएए। श्रूष ভाहाता এই त्रभ हाकूष छे भरमभ ना भारेरण जात छाहारमत छेभरमण **ट्टेटव ना। (क छेश्राम्म मिटव ? याहा**ता দ্রব্য চিনিত, তাহারা তথন আর থাকিবে ना। कविताम लागः, ভाছामেत्र ঔषধ-সংগ্রহকারী বণিক্ গেল। স্বভরাং বিশাতী চিকিৎসাই আমাদের একমাত্র यङ्गित (क्ष छथा इहेट्ड छेयथ व्यानियां व्यवनयन थाकिन। किस विनाडी छेयथ निनाज इरेटज जानिएड इरेटन। श्वेषरधत निभिन्न योकांमा এখন विमार्टित व्यथीन। নিষের পালোর মত হইবে। বাবস্তা বালালার পরাধীনতাসমধ্যে এই আর একটা গ্রন্থি।

> ष्यामादमन अवस ष्यामादमन त्मरभ हिल এখন বিদেশের উপর নির্ভর कतिए इंडेन। अप्निक्ति विश्वाम द्राग य रमर्भ छेष्य (महे रमर्भ। चामना (म विश्वारमत डेलब निर्कत कविया कान কথা বলিতেছি না। আমরা এইমাজ विनिष्ठि (य, यिन शक्षिणिखन भनिवर्ष क्फ निखन चहेन खेश्य मिथिनाम তবে সে শিক্ষার ফল পরাধীনতা। পরের **(मण इरेटक कफ निवन देखन आ**मिरव ভবে আসাদের চিকিৎসা চলিবে, নতুবা **हिकिएमा इट्टिना। देहाई अन्न** मिक অধীনতা।

আহারসম্বন্ধে বাঙ্গালা অন্যাপি নিভাস্ত भद्राधीम रम् नारे मठा, किस এक है। विसम श्रद्रण इहेटन वफ़ हानि भाग। आमद्रा नवगमचा पा पा प्राधीन इरेग्राष्ट्रि। *हेश्टत्रध्यत्रा विष्ण अहेट्ड आमाप्तत गवन चानिया मिर्वन, তবে चामता আহার করিব; নতুবা আমরা আহার कत्रिष्ठ भाष्टेव ना। आशास्त्र निभिन्न ধান্য, মুগ, মহুরি, ছোলা, কলা, যাহা हेळ्। नकनरे श्रेष्ठिक कतित्र। शारेरक পাই, ভাহাতে আপত্তি ন।ই কিন্তু লবণ প্রস্তুত করিতে আমাদিগের আর অধিকার নাই। লবণ প্রস্তুত করা মহাপাপ হইয়া দাঁড়াইরাছে,—ইহার ঘোরতর দও— প্রায় শ্চত—জরিমানা—জেল। আহার প্রস্তুত করা পাপ, ইদানীং। লবণ মাও পাপ নাই, কিন্তু লবণ প্রস্তুত কর অমনি পাপ। এখানে সার্ভগ্রন্থকার ঠকিয়া গিয়াছেন; তিনি স্বতিশাল্পে মুরগী থাওয়া পাপ লিখিয়াছিলেন, কিছ লবণ প্রস্তুত कत्रा পाপ मिथिए भारत्रन नारे। ভাঁহার অল বৃদ্ধি! হয় ত ভাঁহার চক্ষ্-गজা ছিল। হয় ত তিনি পক্ষপাতী ছিলেন। হয় ত তিনি ভবিষাৎ রাজ-নীতিজের নিমিত্ত কিছু বাকি রাথিয়া গিয়াছেন, ইচ্ছাপূর্মক। কিছ বাহাই रुष्ठेक, मुत्रशि चाहेटन পরকাল যায় कि ना मत्मर, किय नवन श्रञ्ज कत्रित रेरकाल (व यात्र छारा निक्त प्रदे। त्रच्-°नमन पार्खवाशीरभन्न (भनामरकाष **षाम**, कि (भक्षि मारहरामन्न (भनामारकाफ

ভাল এ বিচার এখানে অপ্রয়োজন।
আমাদের এইমাত্র বলিবার, প্রয়োজন
ছিল যে, লবলসম্বন্ধে বাঙ্গালা পরাধীন।
সহস্র সহস্র বৎসর অবধি বাঙ্গালিরা
সমুদ্রের জল হইতে লবণ বঃশ্রের করিয়া
লইত, সমুদ্র ভাহাতে রাগ করিত না।
কেহ কথা কহিত না। এখন কথা কহিবার লোক দাঁড়াই য়াছে।

এই সম্বন্ধে সাতকীরা অঞ্চলের এক कन मतिज वाकित्र गझ विन। (लथक (महे সময় লাভক্ষীরায় উপস্থিত ছিলেন। সকল দিন সে ব্যক্তি আপনার বালক বালিকা-দের উদর পুরিয়া অন্ন দিভে পারিভ ना, रयमिन रम अन्नमः श्रह करत्र रमिन हम ७ वाक्षन कुछि ना। এक मिन पिशिन সস্তানেরা শুধু অন থাইতে পারিতেছে ना, ञन क्वाएं कतिया हत्यंत्र कर्न ফেলিতেছে; একটু লবণ পাইলে ভাহারা অন খাইতে পারে কিন্তু লবণের পরসা नारे। मञ्जान एत ह एक त जन मूहारे द्रा (म ব্যক্তি বাহির হইল। কলাগাছের কভক-গুলা গুদ্ধ বাস্না সংগ্রহ করিয়া ভাহাতে অগ্নি দিল, ভাহার ভত্ম--এক প্রকার কার —শেষ ভাহাই আনিয়া লবণ বলিয়া সন্তানদের দিল। তাহা কতক মৃত্তিকা, কতক ভশ্ম, কিন্তু লবণাক্ত, সন্তানেরা **डाहा** (डेरे ने के हे ने ने कि क्रू मिन भरत পুলিষ এ সম্বাদ পাইয়া দরিদ্রকে গ্রেপ্তার कतिम। मकरम वनिष्ठ माशिन, ''আহা! (कन (छात्र ७ वृक्षि घष्टिन ? (कन कूरे कनात्र वाम्ना (পाড़ानि?, क्न

(ड्रेंगे तिमकशात्राम नन, जिनि कः शीकः শক্ত দণ্ড দিলেন, লবণ ক্রেয় করিতে যাহার পর্সা ছিল না, ভাহার জ্রিমানা कतिरनन; आवात कातावारमत्र आखा **मि**ल्लिन, कुछ मिल्नित निमिख छाडा धकर्ण चार्यारमंत्र चत्र नारे। वानक वानिकात्रा नवन भारेख नाः, अरे हकूरमत्र ना।

व्याहेत्नत्र व्यक्तांत्रात्र मध्या मध्या मकन त्रांटकारे घटि, जामना आहेत्नन त्राय पिरे ना, यथन विष्क्रत्रा **कार्टन क**तिया-(ছন, তথন দোষ দেওয়া বুথা, আমরা (क्वन विण्डिहिनाम (य, नवनमश्रक বালালা এখন পরাধীন হই য়াছে।

এইরপে একে একে পরীক্ষা করিলে (मथा यात्र (य, वात्रामा व्यत्नक विषय তেছে। এই আমি বসিয়া যে কাগজে

कृटे लवन कंत्रिनि ?" এकि वानिका ब्राष्ट्र। आमि ए कन्य निधि छि, धुनात्र नुहोहेत्रा काँपिएड नाशिन, তাহা বিলাত হইতে আসিয়াছে, যে "বাবাকে ছেড়ে দেও, আমরা লুণ আর ত্য়াত বাবহার করিতেছি তাহাও বিলা-थाव ना।" পুলিষ সে জেন্দনে कर्न তের। যেছুরিকাদ্বারা কলম কাটিয়াছি দিল না 🗫 অপরাধী দাতকীরার মেজে- তাহাও বিলাতে 🗷 অন্ত হইরাছে। আ 💩 हेत्रीरिक वानीक इरेल। एक्पूंषि मानि- मात्र চात्रिमिर्क याश मिथिरिक , जारा সমুদয় বিলাতী দ্রব্য।

· किन्द्रं ७ (मराभाव ममूमग्र जाःम अधन ७ नम्बाद्य भवाधीन इस नारे, भनी आमाक्ष्म व्याप्यका नगत्राक्षण व्यक्षिक भत्राधीन इहे-शाष्ट्र। यपि क्टिश् किनिकाजाय कान वाबुत्र मिनयायन लक्षा कतिया थारकन, তাহা হইলে তিনি অবশ্য দেখিয়া পর হয় ত আর তাহারা অলও পাইল থাকিবেন যে, বাঙ্গালার মধ্যে কলি-कांडा विष्मिष भवाषीन। वावू लाउ উठिन्ना म्थ शकालन कतिरवन छाहात উপকরণ বিলাতী টুতব্রস, বিলাতী পাউ-**डाउँ। डाउँ। त्र भन भाग क**तिर्वे, थानगामा विलाजी मावान, विलाजी টুয়ালিয়া আনিল। বাবু সিক্তবন্ত পরি-ত্যাগ করিবেন, খানসামা বিলাতি কাপড়, বিলাতি সার্ট আনিল, তাহার বোভামগুলি পর্যান্ত বিলাভী। ভাহার পরাধীন হইরাছে; ক্রমে আরও হই- পর কেশবিন্যাসের সময় সমুখে দর্পঞ वानील हरेन, लाहां अविनाली। याहा লিখিতেছি তাহা বিলাভ হইতে আসি- দ্বারা কেশবিন্যাসিত হইল—ব্রস— তা-ৰাছে। একসময় বাঙ্গালায় বড় স্থানর হাও বিলাডী। ভাহার পর বাবু চা কাগল হইত, বিলাতী Hand laid পান করিতে বসিলেন, চার পাতা বি-कांगव व्यापका एक मरे रहेड, भवर्ष माडी, हामह विमाली, लाफ ख्रांब क्ष्मण मार्टिव **छोटा चौकात क**ित्रा विनाडी; य किट्निएड छोटा ^{शाक}" সিশাছেন, এখন সে কাগল লোপ পাই- হইন্নছিল, ভাছা প্ৰান্ত বিলাতী।

ভাহার পর বাবু সংবাদপত্র পাঠ করিতে ভাহার পর বাবুর আহারের কথা আর वितिलान-मदन कक्रन देश्लिममान- विलिलाम ना। তাহার কাগজ বিলাতী, কালী বিলাতী, কলিকাতার বাবু যেরূপ বিলাতের লেখক বিশাতী, হয় ত সম্বাদন্ত বিলাতী। অধীন পল্লীগ্রামের চাষা ততু নহে।

চাষারা অপেকাত্বত স্বাধীন।



वाश्त VERSUS विवाश

'हात्र ! वाकामीत वाहरङ वन नाहे।" বাসালীর যত ছঃথ তার একই মূল— বাহুতে বল নাই।

यनि अञ्चलकान कत्रा यात्र, वालानीत বাসীলায় অনুনাই। যেমন এক মার গর্ভে বহু সন্তান হইলে কেহুই উদর 'প্রিয়া শুনা পায় না তেমনি আমাদের षम्पृति वह-मञ्चान-ध्यमविनी विनम् छारात भत्रीरतारभन्न शाला मकरनत क्नांत्र ना। পृथिवीत कान मिण्डे वृति विश्वान मं ध्वावहना नहि। वाना-

वाकानात्र माहिलात्रिता धकरे द्वा. श्रेकात्र क्वनित्त कात्रन। श्रेकात्रिका দন শুনিতে পাই—বাঙ্গাণীর বাহুতে হইতে অরাভাব, অরাভাব হইতে অ-वन नारे। এই অভিনব অভ্যুত্থানকালে পুষ্টি, শীর্ণারীরত্ব; অরাদি শীড়া এবং

चार्निक विभार्तन, भिथ भिर्म घारनक व मान्यवत हिल बाहि—डाहारमत षादादात को कहे नाहे, कि कहे. তাহারা ত অনাহারী চণ্ডাল পোদের वाहर् वन नारे किन ? তাহার একই অপেকাও হর্কল—বড়মানুষের ছেলে-উত্তর পাইৰ—वाञ्चानी थाইতে পায় না— রাই প্রকৃত মর্কটাকার। সভ্য বটে, কিন্তু একপুরুষে অনাভাবের দোষ খণ্ডে ना। याहाता श्रुक्षाञ्चल्य मर्कि।कात्र, তুই একপুরুষ ভাহারা পেট ভরিয়া খাইতে পাইলেই মহুষ্যাকার ধারণ করে ना। विश्विष विष्माशूखित ছिलात कथा ছাড়িয়া দাও—ভাঁহারা নড়িয়া বদেন না —স্তরাং কুধাভাবে প্রস্তুত আহার मात्र अखिमात्र अकावृद्धिरे वाकालात शारेष्ठ शान ना-जुक आरात जीर्

করিতে পারেন না। সকল দেশেই শুধুভাত খায়, এমন লোক অতি বাবুর দল- মর্কটসম্প্রদায়বিশেষ। শ্রম- অয় না হউক, বেশীও নয়। বালালার (मर्भन बाह्यन।

व्यावाक श्राप्त कांश कित्रशं विनिद्यन, "এ রকম কঠিনছাদর মালথদি বুলি করে। ইহার নাম "ভাত বাঞ্জন।" थाबात कूलाम ना, তবে ভিন্ন দেশে এত নের ভাগ ছই কড়া। স্থভরাং ইহাকেও চাউन গম রপ্তানি হয় कि প্রকারে?" ् अधू ভাত বলা যাইতে পারে। বালানার (मण्य व्यक्तान थाकित्व वित्मण विनिष थात्र। তाहारङ कान **डे** भगर्भ ना था-त्रश्रानि इटेट्ड शारत्। (य जामात्र दिणी किटन जीवनत्रका इटेट्ड शारत—इटेब्राउ টাকা দিবে তাহাকেই আমি জিনিষ্ থাকে। কিন্ত এরপ শরীরে রোগ অতি द्विवि ।

यमि এ प्राप्त कान थाना कूनान रय, छं (य (म हा छेल। हा छेल खू छिला ना वल शांक ना। (मरे खूना वाकाली व বলিয়া খাইতে পাইল না—এরপ হুরবস্থা (य जकन (नारक्त चर्छ, छाहारम्त्र जश्था। এদেশে निভাক অল। অধিকাংশ লো-क्त्र जात्र याहात्रहे ज्ञान थाक ना क्न हाउटनत्र पश्चम नारे। ८भे छित्रित्रा প্রায় সকলেই ভাত থাইতে পায়। কিন্ত পেট ভরিয়া ভাত খাইতে পাইলেই আহার हरेग ना। एधु ভাতে जीवन त्रका **हरेल हरेक भारत—किंद्र रम जीवन**-त्रका भाव। भत्रीरवत्र পृष्टि इत्र ना। ठाउँ एव वनकांत्रक मात्रभवार्थ भछाः एभ সাতভাগ ভাছে মাত্র। চরবি—যাহা भरोत शृष्टित शर्क निভान्त धरत्राजनीत हाउँ ए जाश किছू माज नारे।

जीवी, माधात्रण मित्रिक लाटकत वाल्यमहै अधिकाः भ गाटक ভाতের সঙ্গে এक है **डाटनत्र हिंछी, अक्ट्रे याद्यत विम्नू, भाक** " वा जानू काँ हकना दूर, कनिका निशा (ভाজन » রাখিয়া দাও ! ও ছাই আমরা অনেক- এই ভাত ব্যঞ্জনের মধ্যে ভাতের ভাগ वात्र खनित्राहि। दकन, यि एए परिनत्र व्याना नाएए छनिभ गर्था—वाक्षः अम्छानारम् द्राप्त व्यापन ना, या, होम चाना लाक अहे ज्ञान छथु छा छ महरबहे खार्थाना ज्ञांभन करत,—(माकी मानातिना जन)—जान अज्ञाल भनीति বাহতে বল নাই।

এই मकन ভাবিয়া চিস্তিয়া অনেকে वरमन, यक मिन ना वामानी माधावनकः गाः नाहां व करत, ए छ मिन वानामीत वाष्ट्र वन हरेरव ना। आमन्ना (न कथा बिन ना। सांश्यत अध्याजन नारे, ত্থ, ম্বত, ময়দা, ভাল, ছোলা, ভাল भवजी देशरे छेखम चारात । मृहाच-शिक्टम हिन्द्रानी। देनद्रसा विन् शत्वत्र , गठ ভাতের সঙ্গে ইহাদের সংস্পর্ণ-गार्जित পतिवर्श्व चारतत मरत देशांपत य(शाहिक সমাবেশ हहेरनहे बनकात्रक আহার হইল। বালানী যদি ভাতের माजी कमारेत्रा मित्रा এर नकरनत्र माजा

वाड़ाहेटड भारत, उरव अक्शूक्रय नी- बिगरिड्ड ''अक्रूर्य रक्ता छाड भारे (दात्र) छूटे फिन श्रार्थ विश्वकात्र ट्टेप्ड भारत्र 1

लामरक व्याहरण हिमाम—रकन ना রামধন পোদের সাভগোগ্রী বড় রোগা। রামধন আমার কাছে হাত যোড় করিয়া विनन, "महाभग्न या चाछा कत्रलम, छ। छनिया तम चामारक छेशहाम कत्रिया जवहे यथार्थ-किन घि, मम्मा, छान, शिन मत्नहांनाहै। (हांगा! वांवा, ध मकन भाव कांथांत ? এমনই যে শুধু ভাতের থরচ জুটিয়ে উঠিতে পারি না।"

কথাটা দেখিলাম সভ্য। আমি রাম-ধনের ঢেকিশালে ঢেঁকির উপর বসি- হাঁ আপনার আশীর্কাদে তৃইটি পুত্রবধূ ग्राहिनाम— উঠানে একটা খেও কুকুর হইয়াছে।" পড়িয়াছিল বলিয়া আর আগু হইতে भातिनाहे— त्महे **चान इहेट इत्रायधानत मञ्जिल इहेग्राट** ?" वः भावनीत পরিচয় পাইতেছিলাম। রাম-তাহার চারিটি ছেলে, পাঁচটি মেরে, **किं एक व्याप्त जिनिए भिरम्न विवार** मिट्ड वाकि আছে—পোদছেতের ছেলের विरायाज्ञ कि अवहां, भारत्रव विरायाज्ञ वर्षे—जदव कम। (भाम विनान (य, "মহাশন্ন গা! একটু পরিবার ছেঁড়া ं (नक्षा जूठे। टेटक भाति ना—बाबात चि, मम्मा, फाल, ट्याना ।" जामि वृक्षिनाम क्थां। वर्ष व्यमक्र इरेश्वार्छ। त्याथ रहेन (यन आजनमात्री क्रश क्कूत्रिख वागात छे भन्न द्वाग कतिया छर्जन गर्जन कतिवांत छित्यांत्री—ं देवांच इंहेंन (यन तम

ना, चावात्र উनि वूष्टे পায়ে भिन्ना एँकित উপর বসিয়া ঘি ময়দার বাহানা আরম্ভ করিলেন।'' একটি রোমশ্না গৃহমার্জার আমার দিকে পিছন ফিরিয়া, লেজ উচু कत्रिया চलिया श्रां — (मरे नी द्रम द्रां य-धनामदम घुष इक्ष नवनीदखन कथा

व्यागि वामसनटक विननाम, "ठाविष्ठि ছেলে—ভিনটি মেয়ে! আবার তার উপর হুইটি পুজবধু বাড়িয়াছে ?" রাম-. ধন হাত যোড় করিয়া বলিল, ''আজা

আমি বলিলাম, "তাহাদের সন্তান-

রামধন বলিল, "আজ্ঞা একটির ছুই

আমি বলিলাম, 'রামধন শত্রুর मृत्थ हारे मिश्रा অन्किश्वनि পরিবার বাড়িয়াছে। বহুপরিবার বলিয়া তোমার चार्शि भारेवात्र कष्टे हिल, এখन चात्र छ कष्ठे रुरेग्राट्ड (वाध रुग्र।"

त्रामधन विलल, "এখन वर् कष्टे हहे-श्राष्ट्र।"

অামি তথন রামধনকে জিজাসা कतिलाम, "त्रामथन! दकन এত পরিবার वाड़ाहरन ?"

রামধন কিছু বিশ্বিত হইল। বলিক ''त्म कि महाभग्न ! आमि कि 'भिन्नवात

णाभि विनाम, ''গরিব বিধাতাকে व्यनर्थक (माय मिश्र ना। (इत्नन्न विद्य তুমি দিয়াছ—স্তরাং তুমিই ছইটী পুত্র-वध् वाष्ट्रश्राष्ट्र। जात एहल्मत्र विस्म मिराष्ट्र विषयारे जिन्हें नाजि नाजिनी বাড়াইয়াছ।"

রামধন কাতর হইয়া বলিল, "মহা-भन्न जामात्क जमन कतिया शृं फ़िर्वन ना, यमम् ८७ ८म मिन आगात आत এकि नाजि नहे रस्र हि।"

আমি ছঃথ প্রকাশ করিয়া জিজাসা कतिनाम, "रमिष्ठि किरम शिन त्रामधन !"

রামধন কিছু উত্তর দেয় না। পীড়া পীড়ি করিয়া, কতকগুলি জেরার সওয়াল कत्रिया, बाहित कत्रिलाम (य ८मि अना-र्शाद मित्र माजा भी फिल इ अया म गाञ्चात इथ हिन ना। बागधानब গোক মরিয়া গিয়াছিল—ছধ কিনিবার माथा नाहे। ८ इटनी ना थाहेमा ८ १८ छेत भीषात्र क्रिया * मतिया शियाहिन।

আমি ভগন রামধনকে জিজাস। করিলাম যে, "তার পর ছোট ছেলেটির विष्य मिटव १"

त्रांमधन विनन, ''টोकांत्र स्थांगांफ क्रिए পারিলেই দিই।"

व्यामि विकामा कतिनाम, "এই বে खिन क्षित्रक, ठारे (शटक मिटक भार ना — मार्किवाड़ार्य (कन ? विस्न मिरणरे अरे यिनमा जामि (उँकि इरेड

বাড়াইলাম ? বিধাতা বাড়াইয়াছেন।" ত আপাতঠঃ বৌ মা আদ্বেন—তার আহার চাই। তার পর তার পেটে হুট हाति इत्य-जामत्र आहात हारे। **এখনই কুলায় না—আবার বিলে?**''

> त्रामधन इंडिका। विनन, ''दियोत्र विरम (क ना (मम । (य (थएड भाम (म व (मन, (य ना (थटक भात्र (मन (मन।"

আমি বলিলাম "বে না খেতে পায় তার বেটার বিয়ে টা কি ভাল ?"

त्रामधन विमम-"जग९ ७६ वरे र्रिट्ड।"

আমি বলিলাম, "লগংঁ শুদ নয় त्रायधन, (करन वहे तम्म। निर्द्शिध काकि कात्र कान (मर्म नाहे।"

त्रामधन উखत कत्रिम, "ভा দেশ-खद (मांक यथन कत्रिटाइ, ज्यन वागाउँ कि এछ (माय रहेग?"

अगग निर्धाधरक किक्रा प्रवाहेव ? विमाम-"नामधन! (पण्डक लाक यमि भनात्र मिष् भारत, ज्ञिष कि नित्र ?"

রামধন চেঁচাইভে আরম্ভ করিল ''তুমি वस कि मणाहे ? शनात्र मिष् भात (वहात्र विरम (म अम्रा ममान ?"

আমিও রাগিলাম, বলিলাম "সমান (क वरण जामधन। धक्तभ (वहात्र विस्त (पश्यात ८ हास शनाम मिष् (पश्या অনেক ভাল। আপনার গলার না পার, ছেলের গলায় দিও।"

द्धित्रा **हिन्दा जा**निनाम । 'श्रद्ध जानिया রাগ পড়িয়া গেলে ভাবিয়া দেখিলাম গরিব রামধনের অপরাধ কি ? বাঙ্গালা एक जहे क्रभ त्रामध्य भित्रभून। ज छ • शतिव (भारमत रह्यन—विमा। वृद्धित কোন এলাকা রাথে না। ঘাঁছারা ক্বত-विना विनिन्ना जाननात्मन भन्निहम त्नन, তাঁহারাও ঘােরভর রামধন। ঘরে থাবার थाक वा ना थाक—चार्रा एहरमत्र विरय। खधू ভাতে ভালের ছিটা দিয়া খাইরা সাত গোষ্ঠী পোড়া কাঠের আকার—জর প্রীহার वाजिवाच — जबू (मरे कमझ बारेवात जना (महे जनाहाद्वत्र छाग नहेवात्र जना— म जुत शीहात माथि इहेवात जना होका थव्र क्रिया भरत्र আনিতে মেম্বে रहेरव। मञ्चाकत्य जाहारे डीहारमद ञ्च। (य बाजानी इहेग्रा (ছलের বিয়ে ना मिटल পারিল ভাহার বাদালী जगरे त्था। किन क्लिन विद्य मिटन, क्लिन विठाति वडेक बाउमारेक भातित्व कि ना, त्म है। छाविवात्र दकान ध्वरत्राधन षाष्ट्र धमे विदिन्ना करत्रन ना। ध मिर्क (इस्म रेस्न हाज़िष्ड ना हाज़िष्ड धकि क्षे प्रमा शनिवास वाश—त्रभाषत যোগাড়ে ৰাপ পিতামহ অন্থির। গরিব বিবাহিত তখন স্থুল ছাড়িয়া পুঁথি পাঁজি णेनिया (कनिया विया छेट्यम अयादिक প্রাণ সমর্পণ করিল। যোড় হাত করিয়া रेश्टब्रस्क बादब बादब हा ठाकति। हा •চাকরি! করিয়া কাতর। হয়ত, সে ছেলে একটা মান্নবের মত মান্ন হইতে

পারিত। হয় ত, সে সমলে আপনার পথ চিনিয়া জীবনকেত্তে প্রবেশ করিতে পাবিলে, জীবন সার্থক করিতে পারিত। किन्द्र ११ हिनिवात चार्ला (म मकन खत्रमा क्तारेन, উমেদওয়ারির যন্ত্রণায় व्यात्र ठाकतित्र ८ १ वर्ग — मः मात्रभरणीत क्रांगात्र,—जञ्ज ও भन्नीत विकल इहेन्ना **উঠিল। বিবাহ হই**ग्राष्ट्र— (ছলে হই-ग्राष्ट्, जात्र भथ यूँ जिवात ज्यवनत नारे— এখন সেই একমাত্র পথ খোলা— **एटाम ७ याति ।** श्रांत (गारकत छे भकात कतिवात रकान मछावना नाहे—रकन ना আপনার স্ত্রীকন্যা পুত্রের উপকার করিতে क्रुलाग्र ना—ভाहात्रा दाव्यिन त्पिह (पिह করিতেছে। আর দেশের হিতসাধনের ক্ষমতা নাই, স্ত্রীপুজের হিতের জন্য সর্কম্ব भव ! (नशा भड़ा, धर्मिडिशा—a नकरनंत्र সজে আর সমন্ধ নাই—হেলের কারা थामाहेट इ निन यात्र। य ठाका छ। त्यि -यूं कि चारमामिरयम् न गाँ न निष्ठ भाति-ভ, ছেলে এখন ভাহা বধূঠাকুরাণীর বালা গড়াইয়া দিল। অথচ বাসালার त्रामध्या देणभय्य एहरणत्र विवाह मिर्ड ना পातिल, गत्न करतन ছেलেরও সর্ক-नाभ निष्मत्र अ नर्सनाभ कतित्वन । ८ इत्न थाकित्वरे जांदात्र निवार मिटजरे दरेदन, মমুষ্যমাত্রকেই বিবাহ করিতে হুইবে; चात्र वान मात्र खाधान कार्या-- देनमाद **(हिला विवार (पश्या— এরূপ छ्यानक** लग (य प्लाम मर्बवागि । म प्लाम व मनल दकाशांत्र ? (य (मर्ट्म, वार्थ मा

क्रिश नाजन ग्रनाम वाधिमा निमा, एएटमटक स्म (म स्मन जैन्नजि इरेट्व ? .

कमलाकाटिखत (क्वांवानवनी।

অবেক দিন কোন সমাদ পাই নাই। शकिय विवास করিতেছেন। शकियाँ অনেক সন্ধান করিয়াছিলাম। অকত্মাৎ मच्छि अक्षिम छाशाक दंशांक्षाती व्यानागएड (नियनाम। (निथ (य, बाक्रव এক গাছতলায় বসিয়া, গাছের ভঙ্ ঠেসান দিয়া চকু বুজিয়া ভাবায় ভাষাকু **होनिएए हि। मरन क्रिमाम 'बात्र क्रिड्र** ना, बाक्रव लाएं अफ़िय़ा कारात्र फिविया हरेए जाकिन हुनी कतिनारह—जना नामजी कंपनाकास চুत्री कत्रिय ना-हेहा निष्ठित जानि। निकरि धक्जन कारमारकार्छ। कन्दहेवमञ् ८म्थिमाम। व्यामि वर्ष में प्राइनाम ना-कि वानि यि क्रमनाकां काश्निन हरेए वरन। **ज्याद्य थाकिया (मिष्ट्य मागिमाम (य** काखिं। कि इत्र।

किছू कान भरत कमनाकारखन डाक रहेन। एथन এक्षनं कन्दिरन ज्ञन ঘুরাইয়া তাহাকে দকে করিয়া এজলালে गरेत्रा (भग। जामि भिष्ठु भिष्ठु (भगाम। माफ़ारेना, छूरे धकि कथा खनिना, वााभावधाना व्विष्ठ भाविमाम।

मिरे वाकिन्द्रश्रेष कमनीकार्छत अन्नारम, श्रथामण मार्गारमत्र छेशत्र একজন দেশী ধর্মাবতার—পদে ও शोत्रद ि पूरि। क्यमाका खामाभी नष्ट—माकी। याकभग भाक्त्री। कत्रिवामी (मरे ध्वमन भावामिनी।

> कमनाकाखटक माक्तीत्र काउत्राप्त भूतिया **मिन।** ७४न कमनाकाउ रामिएक नाशिन। চाभवानी धमकारेन —"**হাস কেন ?**"

> कमगाँकांख (याष्ट्रांड कतिया विनन, "वाबा, कात्र एक एक धान ८ थए प्रक्रि—। एय আমাকে এর ভিতর পুরিলে ?''

চাপরাশী মহাশয় কথাটা ব্ঝিলেন না। माष्ट्रि चूत्राहेत्रा विलिटलन, ''ठामानात्र জারগা এ নর—হলফ পড়।"

कमनाकाख विभिन्न, "পড़ाखना वाशू।" একজন মুছ্রি তথন হলফ পড়াইতে षात्रेष्ठ कतिन। दिनम, "दन, षाभि **পর্মেশরকে প্রাজ্যক জানিরা—"**

कमनाकास । (मिन्यद्र) कि विनिव? মুহুরি। ওন্তে পাও না—"পর্মে-খনকে প্রত্যক্ত জেনে—"।

कमना। भन्दमयन् अंडाक (ब्रांता) কি সর্বনাশ!

हाकिम (पशिलन, माकी है। कि जिक्हा दलन, "मर्खनाभ कि ?"

(निছ- व कथा। वन् उ इ द ?

हाकिम। ऋिक कि ? इन एक त कात्र भरे परे।

কিন্ত একটা কথা বলি কি, সাক্ষ্য দিতে, তেছে উকীল।" দিতে হুই একটা ছোট বক্ষ মিথ্যা विन, ना रम विनाम—किन्न भाषाट है একটা বড় মিথ্যা বলিয়া আরম্ভ করিব আর ময়লা শামলা দেখিয়া। তা, — সেটা কি ভাগ ?

হাকিম। এর জার মিথ্যা কথা কি? कमनाकाख मत्न मत्न विनन, " ७७ বুদ্ধি থাকিলে ভোমার কি এ পদবৃদ্ধি **इहे** हु'' **क्षकारमा विनन, ''धर्माव** जात्र, যে পরমেশ্বর ঠিক প্রত্যক্ষের বিষয় নয়। আমার চোথের দোষই হউক আর যাই र्डेक, क्थन ७ ७ ० १र्गाष्ट भन्ति थन्त প্রভাক্ষ দেখিতে পাইলাম না। আপ-नाता (वांध इत्र कार्टनत हममा नांदक **पिया छै**। हादक প्राचाक दम्भिट भारतन — किन्त जामि यथन डीहारक व परत्र ভিতর প্রত্যক্ষ পাইতেছি না—তথ্য (कमन कृतिमा, बिल्-कामि, भतरम-• यत्रक श्रांक (करन-"

यतिशामीत छकीन छिटनन-छाहात

মুল্যবানু, সময়, যাহা, মিনিটে, মিনিটে টাকা প্রসর করে, তাহা এই দরিজ সাক্ষী নষ্ট করিতেছে। উকীল,তথ্ন, গওগোল বাঁধাইতেছে। জিজাসা ক্রি গ্রম হইয়া বলিলেন, "সাক্ষীমহাশ্রু। Theological Lectureটা বা্দ্রমাজের कमला। পর্মেশ্রকে প্রত্যক্ষ জে- জন্য রাখিলে ভাল হয় না। এথানে षाहरतत्र मरा हिला मनश्रित क-क्रग।"

ক্ষলাকান্ত ভাহার দিকে ফিরিল। कमला। इक्त ऋविচात्रक वर्षे। मृष् हामित्रा विलल, ''ञालिन वाध हरे-

> উकील (श्रामित्रा)। किरम हिनिटल ? कमना। वड़ महस्ब—(माह। (हन ৰহাশয়! আপনাদের জন্য এ Theological Lecture नज्ञ। जाभनांत्रा भन्नरम-यंत्रक छाजाक (मर्थन श्रीकांत कति—ं यथन (भाषां क्ल आरम्।

> **डिकील मदारिय डिविया हाकिमरक** বলিলেন, "I ask the protection of the Court against the insults of this witness."

> কোর্ট বলিলেন, Oh Baboo! the witness is your own witness, and you are at liberty to send him away if you like."

> **এখন, कमनाकाखरक विनात्र निरन डिकीमवावूत्र** भाकसभा श्रमान हम्र ना---স্তরাং উকীলবাবু চুপ করিয়া বদিয়া পজ্লেন। कमनाकाञ्च ভাবিলেন, এ হাকিমটি জাভিত্রই—পালের মত নয়।

जारमभ क्रिंगिन, (व ७१४त छाछि मा-স্পীর objection আছে—উহাবে simple affirmation माও। তখন মুহুরি কমলা- মুহুরি। সে আবার কি ? कास्टरक र्योकेल, ''আছো, ও ছেড়ে দাও কমলা। পড়ার্ম, আমি পড়িভেছি। —বল, আমি প্রতিক্তা করিতেছি— বল !''

ক্ষলা। কি প্রতিজ্ঞা করিতেছি, (मठी बानिया প্রতিজ্ঞাটা করিলে ভাল रम ना ?

यूछ्ति राकिरमत्र मिरक চार्दिता विलग, ''ধর্মাবভার! সাক্ষী বড় সের্কশ্।''

डेकीनवावू इंकिटनन, "Very dis- माउ। वाष्य कथा ছाজिया माउ।" tinctive"

काशरक मख्यक कतिया नश्यात व्ययोधे। जात'किছू दनिएक भारेव ना १ आप्तांनरजत वाहिरत हरन बानि— डेकीन। ना। **ভিতরেও চলিবে कि ?**"

मख्यं गरेए ह

मख्यक कत्रा, धकरे कथा।

হাকিম তথন সুছ্রিকে আদেশ ক্রি-लिन (य, "প্राভिका चार्श देशारक खनाहेशा नाख--(शानमारन कांब नाहे।" মুহুরি তথন বলিল, ''শোন, ভোমাকে एक (य, व्यामि (य माका निय, कां**दा** तांध लहेर्यन ना।" भे अरु व्याप्त क्यां क्या क्या क्यां क्या विष्य होकिय। यां हा क्यां क्यां क्यां विष्य हों

शक्ति शंकिक (पंथियां, मुख्बिष्क कविव ना-नजा किन जात्र किन्नू श्रेष्ट ना ।"

कमना। ७ मधु मधु मधु।

ক্মলাকান্ত তথ্য আর গোল্যোগ না করিয়া প্রতিজ্ঞাপাঠ করিল। र्छशिक विकामानाम कतिनात जना **डिकीन**नां नू शांखाणां न कत्रितनम्, कमला-काखरक ट्राथ ब्राकारेबा विगरनन, "এখन আর বদ্মায়েশি कরিও না—আমি যা জিজ্ঞাসা করি, তার যথার্থ উত্তর

व्यांशिनिया विकामा कति-ক্ষণা। कमनाकान्छ (উकीलের প্রতি) "नामा বেন, তাই আমাকে বলিতে হইবে ?

कमनाकांख ख्यन हाकिरमत्र मिर्टक छेकील। भाषा कांत्राख क एकांमात्र कित्रित्रा विलियन, " अथे कांमारक व्यिष्ठिका कत्राहेटनन (य, 'कान कथा , কমলা। কি প্রভিজ্ঞা করিভে হইবে গোপন করিব না।' ধর্মাবভার, छाहा नो बानिया প্রতিজ্ঞা করা, আর বে-আদবি মাফ হয়! পাড়ায় আজ काशटल कि लिथा इस छाञा ना मिषित्रा, धक्छ। याजा इहेर्य, खनिए याहेय हैव्हा हिन; (म नाथ धरेथारनरे मिछिन। **डिकोनवाव् अधिकात्री—आ**शि याजात्र (ছाल, या वनाहरवन, दक्वन छाहे व-लिय। या ना बनाहर्यन, छ। विलय न। या ना रमाहेरवन, छा कार्षह विन्छ इहेरव रय जामि প্রতিজ্ঞা করি। গোপন থাকিবে। প্রতিলাভলের জপ-

कत्रित्व, छारा ना किछाना स्ट्रेलिख বলিতে পার।

ক্যলাকান্ত, তথ্ন সেলাম করিয়া নাম কি ?"

कमला। क्रीकमलाकान्छ हक्तवर्धी। উকীল। তোমার বাপের নাম कि ? कमना। (कावानवनीत पाष्ट्राजिक चार्छ ना कि ?

छकील गत्रम इट्टेंगिन, विणियन, "হজুর ! এ সব Contempt of Court!" हजूत, छेकीरनन्न छर्फणा मिराश निर्णेख जमखरी नन्—वितानन, " जाननात्ररे সাক্ষী।" স্থতরাং উকীল আবার कमनाकारछत्र मिरक कितिएनन, विगटनन, "वल। विलिए इट्टेंदि।"

ক্ষলাকান্ত পিতার নাম ব্লিল। **डिकी**न **७५न बिट्या**ना कदिरनन, "जूनि কি জাতি।"

কমলা। আমি কি একটা জাতি? **डेकोल।** जूमि कान् बाजीय? কমলা। হিন্দুজাতীয়।

• উকীল। আঃ! কোন বর্ণ ? কমলা। ছোরতর কৃষ্ণবর্ণ।

उकीम। पूत्र ट्याक् ছारे! धमन শাক্ষীও আনে ৷ বলি তোমার আত আছে ?

क्यला। गांदत ८क १ • शंकिम (पश्चितन, डिकीटनत कथांग रहेरव नां। विलिट्सन, "वाक्रव, कांब्रव,

रैक वर्छ, हिन्दूत्र नाना क्षकांत्र कां कि बार्ष्ट জান ত—ভুমি তার কোন জাতির ভিতর 🤫 💘

विनन, "बहद ध्व।" छेकीन छथन कमला। भन्नीयछात्र! এ छेकीरलबहे किङागांबाप यात्रक कितिरणन, "তোমার ধৃষ্ঠতা। দেখিতেছেন আমার্ন গলায় यरकाপरीक, नाम विनेत्राष्ट्रिक कर्की— रेशएउ७ (य छेकींग बूर्यन नार्टे (य আমি ব্রাহ্মণ, ইহা আমি কিপ্রকারে कानिव ?

> राकिम निधितन, "कां जि बांकान।" তখন উকীল बिक्छांना कतिलान, "তো-মার বয়স কত ?"

> এজলাসে একটা ক্লক ছিল—তাহার পানে চাহিয়া হিসাব করিয়া কমলাকাস্ত विनन, ''আমার বয়দ ৫১ বৎসর, তুই মাস তের দিন চারি ঘণ্টা পাঁচ মিনিট—"

> **डेकील।** कि जाना! टामात्र घणी মিনিট কে চায় ?

> কমলা। কেন এইমাত্র প্রতিজ্ঞা कत्रारेग्राष्ट्रन (य, (कान कथा (भाभन कत्रिव न।।

> উকীল। তোমার যা ইচ্চা কর! আমি তোমায় পারি না। তোমার निवाम (काथा ?

কমলা। আমার নিবাস নাই। छेकीन। यनि, वाष्ट्री (काषा ? কম। বাড়ী দূরে থাক্, আমার এ-কটা কুঠারীও নাই।

" खेकीन। তবে থাক কোথা? क्रम्या। (यथारन रम्थारन। উকীল। একটা আড্ডা ত সাহে? क्ष । हिन, यथन सभी वांचू हिटलम । अथम भाव मारे ।

छकीन। जनम चाह काथा।

कन। कन, जर चानावक।

केनीनो कान हिल्म काथा।

कम। जरुशना माकारन।

हाकिम विनामन, "चात्र वकाविक्रक
काम नारे—चामि निधित्र। महेरहिं

निवाम नारे। जात भन्न?"

खेकीन। टामांत्र भिमा कि १ क्य। जायांत्र जायांत्र भिमा कि १ जामि कि खेकीन ना दिन्धा, दय जायांत्र भिमा जाटह १

डिकीम। वनि, थाछ कि कतिमा? कम। छाडित मह्म छान माथिमा, मिक्क क्रिक श्रीम छुनिमा, मृत्य भूतिमा भागिक्क क्रिन।

উকীল। সে ডাল ভাত ভোটে কোথা থেকে।

क्ष। जगवान् (काठाहरलहे .कार्छ, नहरल (कार्छ ना।

উকীল। কিছু উপার্জন কর। কম। এক পরসাও না। উকীল। তবে কি চুরী কর। কম। তাহা হইলে ইতিপুর্কেই

जाननात्र भत्रवात्रञ हरेए इरेख। जा-भनि किंद्र जाग्छ भारेएजन। डिकोन, जसन हान हाछित्रा हित्रा.

डिकोन, खश्चन हान हाछिया हिया, जानागडिक किनाहन, ''आमि ज मार्को हाहि ना। जागि देशक (जावानवसी) क्यादिक भाषित ना।''. প্রান্ধ বাদিনী, উকীলের কোমর
ধরিল; বলিল, "এ সাক্ষী ছাড়া হইবে
লা। এ বামন সভ্য কথা বলিবে আহা
আমি জানি—কথনও মিছা বলে না।
উহাকে ভোমরা জিজ্ঞাসা করিভেছে। ও
বামনের জাবার পেশা কি? ও এর বাড়ী
ওর বাড়ী খেরে বেড়ার, ওকে জিজ্ঞাসা
করিভেছ, উপার্জন কর। ও কি বল্বে?"
উকীল ভখন হাকিমকে বলিল, লিখুন
"পেশা ভিক্ষা।"

এবার কমলাকান্ত রাগিল, "কি। কমলাকান্ত চক্রবর্তী ভিক্লোপজীবী। সামি স্কুকঠে হলফের উপর বলিতেছি আমি কথন কাহারও কাছে এক পর্যা ভিক্লা চাই নাই।"

थानम भाम थाकिए भामिन मा— (म विन, "(म कि ठेक्सि । कथन ७ भाकिन চেমে খাও নি ?"

कमना। पूत्र माणि (धरमा गत्रनात्र (मरतः। जाकिन कि भन्नमा। जामि कथन क्रिके भन्नमा। जामि कथन क्रिके गत्रमां काहात्रक काट्ट जिक्ना नहें नाहे। हाकिम हानिया विनातन, "कि नि-धित कमनाकांख।"

क्रमाकाख नत्रम इहेत्रा विनम, "नि-धून, भाषा खाद्मवाखाद्मत निमञ्जन. शहरा ।" मकत्म हामिन—हाकिम छारे निधिया महत्मना

ज्थन छेकीन महाभन्न भाकक्रमात्र छ। वृक्त इहेरनन। जिल्लामा क्रिलिस, "क्रिय ध्रहे क्रियामीटक रहन?"

मा । क्य।

काल जामाक छ्र मह त्यान, जांक वन চিনি না ?"

े .कमलाकाख विलम, "(ভाষার ছধ परे हिनि ना, धमन कथा उ वल्टिছि ना-ভোমার ত্র দই বিলক্ষণ চিনি। যথনই দেখি একপোওয়া হুখে তিনপোওয়া (गात्रानीत प्रभ; यथनहे (मिर्ड भारे (य, त्यात्मत्र कार्य मंदे किंद्य, जथनहे हिनिएंड भाति (य अ अनत्रमत्रीत प्रि। তোমার ছধ मरे हिनिदन ?

প্রসন্ন নথ पूत्राहेत्रा दनिन, "আমার वा !"

कमनाकां उनिन, " त्यरम्याञ्चरक **क करव हिमिर्ड एश्ट्रिट्ड मिमि?** विरम्भ, भाषामात्र (यरप्रत्र कैंकिंग्ल यपि ছ্ধের কেঁড়ে থাকিল, ভবে কার বাপের সাধ্য তাকে চিনে উঠে 🖓

উকীল ভখন আবার সওয়াল করিতে नातिन, "वूसा राम; जूमि वामिनी क षाटह.१"

थाकिएन कि छेकीन इस !

थिटन १

नागरनत ८ एएन । त्रांत्रांनात्र क्षानज्ञ हैं। किन, "रन कि ठाकूत ! कित्रों। स्यादार कि वाशीन अवने। नचक भू किया বেড়াইভেছেন।

खकील। अयन नचक कि इय ना १ क जारन जुमि खत्र paramour कि ना ? कमना। छकीन महरम एटेए कि धकिं। मचक वित्रा भंग इस्र ना कि १ তা ना इंडेरनरे वा योग्नोक्तित्वा जानना-जन, তথনই চিনিতে পারি যে এ প্রাসন্ন দের কাছে টাকা আনিরা কথায় কথায় "निन्" विनाद किन ?"

छेकीन ७ हाकिम, व्याक्त्ररात्र मरम সম্মবিরহিত—হতরাং কেই কথাটার व्यापत्राथ नहरनन ना। उकीन दलिएनम, ''বুঝা পেল ভোষার সঙ্গে বাদিনীর व्य परे रहन, आंत्र आंगात्र हिनिएं भात्र कांग नक्क नारे-- अरक्वारत माक विन-लिहे इहेड-- এड इ:४ मा ७ (कन १ **এখন बिखामा क**न्नि, তুमि এ माक-দ্যার কি জান ?''

> कमला। कानि (य ७ (माकममात्र আপনি উকীল, প্রদান করিয়াদী, আমি गाकी, आंत्र अहे त्नर्फ् आंगांभी।

> **डेकील।** छा नम्न, शाक्रपूतीन कि व्यान ?

টেন—উহার সত্ত্বে ভোমার কোন সম্বন্ধ কমলা। গোরুচুরী আমার বাপ बाहाछ जाटन ना। विद्याणि जायात्र कमना। यम नव-०७ ७० न। निवाहेर्यम !-- जामात एव विवेत चड़ पत्रकात्र।

উকীল। ভূমি আমার কি শুণ্ দেন উকীল। আঃ—বলি গোরু চুরী দেখি-श्राष्ट् ?

क्रमणा। धकलिन (प्रथित्राष्ट्रिणाम। नभीवावूत्र . अक्षां वक्ना- अक द्वां मूहि---

छिकील। कि यञ्जना। वनि, ध्वमत र्গात्रालिनौत रगांक यथन हूदी यांत्र ७थन তুমি দেখিয়াছ ?

्रक्रमण। ना—कांत्र दिवात এख वृद्धि इत्र नारे (य जांगांटक जांकिया जांकी त्राचिया (शांकिंग) চूती करत। ভাহা **ट्रेल** ञाপनात्र काट्यत स्विधा ट्रेड, আমারও কাজের স্থবিধা হইত।

व्यमन (मिथन, छकीन क छ।का (मखन्ना मार्थक इम नारे—ज्थन जाभनात हाट रांग गरेवात रेष्हांत्र, छेकीरनत कारन कारन विणया पिल, "ও वामन रम मव किष्ट्रत माकी नत्र—ও কেবল গোর टहरन।"

গর্জিয়া উঠিয়া জিজাসা করিলেন, ''তুমি र्शाक (छन ?''

कमनाकां अध्व श्वित्रा विनन. "আজা চিনি বই कि—नहिंदग आপনার সঙ্গে এত মিষ্টালাপ করি ?"

वां कि किरिक्ट च—वित्नग, " ७ त्रव व्यानागटलंब मञ्जूर्य भार्क दीक्षा हिन-मिटक ठाहिया जिज्जामा कतिरागन, "जुमि कि ना जिज्जामा कतिय। **धरे** शाक्षि (इन ?"

ক্মলাকান্ত বোড়হাত ক্রিয়া বলিল,

"কোন্ গোকটি ধর্মাবভার ?"

श्किम बिल्लन, " (क्सन् शिक्षि कि १ এक है दहे छ मामत्मा नाहे १"

कमना। ञाপनि দেখিতেছেन একটি — यामि (मथिए छि चरनक शिम।

राकिम वित्रक रहेग्रा विनामन, "দেখিতে পাইতেছ না— ঐ শামলা ?" कमलाकाञ्च लामला शाहेरमन मिरक ना চাহিয়া উকীলের শামলার প্রতি চাহিল। বলিল, "এ শামলাও চুরীর ना कि ?"

কমলাকান্তের নষ্টামি হাকিম আর गश कतिएक भातिसमन मा-विश्वानन, "जुमि जामामटजन काटजन वर् वित्र করিতেছ—Contempt of Court জন্য তোমার পাঁচটাকা জরিমানা।"

উকীগমহাশয় তথন কুল পাইলেন। কমলাকান্ত আভূমিপ্রণত দেলাম ক-রিয়া যোড়হাত করিয়া বলিল, ''বহৎ-थूव रुजूत! कतियांना जामारमत जात কার প্রতি ?"

হাকিম। কেন ?

कमना। किक्रार भागांत्र क्रियन हाकिम (मिथितन, माकी वर्ष वाड़ा- तम विषय डाहारक किছू छे भरमण मिव राकिम। উপদেশের প্রয়োজন কি? त्राथ।" धामन (भाषानीत भाषना भारे क्रमना। हेश्टलाटक छ स्वामात्र निक्षे विद्याना जामाद्येत्र कान मञ्जावना नाहे—ि जिन भन्न लाटक याहे एक अञ्च

> राकिम। अप्रिमाना ना निएउ शोहः करत्रम याचेटव।

कमना। कछित्तित जना धर्मान-ভার ?

श्किम। अनिमाना जनामादम अय-यांन करकता

ै क्यला। इहे मारी हम ना ? (कन?

कमला। जमग्रेश किছू मन পড়িয়াছে — वाक्रावाखान्य निमञ्जा थात (कमन সুলভ নয়—জেলখানায় যাহাতে মাস ष्टे बाक्षन**्यान नि**मद्यन **र**म, रम वावन् यमि ञानिक दतन, তবে গরীৰ ব্রাহ্মণ উদ্ধার পায়।

এরপ লোককে অরিমানা বা করেদ विलिलन, "আছো তুমি यपि গোল না कत्रिया (माना (जावानवनी माअ, जदव তোমার জরিমানা মাপ করা যাইতে •পারে। বল—ঐ গোরু তুমি চেন কি ना ?"

राकिम उथन धक्यन कन्दिरलाक षारमम कतिरमन, य शांकत निक्र গিয়া প্রসন্তের গাই দেখাইয়া দের। कैनट्डियल ভार्मा क्रिला। वियव छिकील कमना। '(नोकांत्र, ना माँटका दिंद्ध ? বাবু তথন জিজাসা করিলেন, ''ঐ গোরু তুমি চেন ?"

क्यमा। त्रिः-अय्रोगा (शांक्र--छारे वजून!

छकोन। जूमि रन कि?

कमना। आमिवनि भामनाश्वाना-- গর্ গর্ করিয়া কাটরা হইতে তা বাক্—আমি ও সিং-ওয়ালা গোরুটা

िनि। चिनक्त जानाभ जाटह खेकील। **खकात शाक** ? कमला। व्यामात्र। **डिकील।** ट्यांगात!! कमला। जामात्रहै।

ट्रांकिम। दिली मित्रारातत रेष्ट्रां कत हित हित ! श्रीनातत मूर्य एकारेन! छकील ८म्बिन, ८माकर्ममा कामित्रा यात्र। প্রসন্ন তথন তর্জন গর্জন করিয়া বলিল, ু ''তবে রে বিট্লে! গোরু ভোমার!''

ক্মলাকান্ত বলিল, "আমার না ড कात! जामि अत्र इध त्थरत्रिष्टि, अत महे (थरत्रिह, अत रचांन (थरत्रिह, अत हाना ८थरत्रिहि—७ भारत हाला ना, কি হইবে ? হাকিম হাসিয়া ভুই বেটি পালিদ্ বল্যে কি তোর বাবার **८**शंक हत्ना !"

> खेकीन अख्छा वृक्षित्नन ना। वनि· লেন, "ৰশ্ববিতার witness hostile! permission দিনু আমি ওকে cross क्रि।

> ক্যলা। কি ? আমাম cross ক-ब्रिटव १

डेकीन। इँ1, कतिव।

डिकोन। ८म आवात्र कि ?

कमला। वावा! कमलाकाखनानव পার হও, এত বড় হনুমান্ তুমি আজও रुख नारे।

এই বলিয়া কমলাকান্ত চক্রবর্তী রাগে नामिया याय-- চাপরাশী ধরিয়া আবার

কাটরায় পুরিল। তথন কমলাকান্ত बानू थानू रहेशा निष्ठ इहेन-र्गिन, ''কর বাবা ক্রন্ কর!—আমি জগাধ ' সমুদ্র পড়িয়া আছি—'(ব ইচ্ছা সে গদ माও-'जशामिवाशंत्र मञ्ख्यक्रः'--- छ-কীলমহালয় । এ শ্রেশান্ত মহাসমূক্ত তরজ विष्कर्भ करत्र मा, जाशिक मक्ट्रिक छेह-न्याम कन्नच । **

खेकील उपन क्लॉर्डिक बिल्लन, धार्मावडाम, ताथा याहेट्डए य ज ব্যক্তি ৰাভুল; ইহাকে আর ক্রস করি-वात्र व्यरमाजन नाहे । वाजून विवश रेशंत (बाबानवनी भित्रिष्ठाक रेरेट्य। रेशटेक विमान्न मिखना इंडेक।"

शकिम कमनाकारस्त्र राज रहेटल निश्विष्ठ भारेटन बाँटिन, विमात्र मिट्ड শ্রেষ্ঠ, এমত সময়ে প্রসন্ন হাত্যোড় হয়, ভবে বালাল বেকের টাকাও क्तिया जामान्छ निरमम क्रिम, ''विषि रुक्त रुप्त, उद व्यापि चग्नः উহাকে গোটা কত কথা জিজ্ঞাসা করি, **जात्र शत्र विमात्र मिटल इत्र मिटवन।''**

पिटलन। अनम उपन कमनाकार जन শ্ৰতি চাহিয়া বলিল,

'ঠাকুর ! মোতাতের সময় হয়েছে न।?"

क्यमा। क्योकारखन्न व्यवित अभन किटन ८वि — अबनामन्य श्रीकः विद्यार **टममाक** विख्यात्र ।

व्यमग्र। पर देश ज्यम ग्रांथ--ज्यम মৌভাত করিবে ?

क्षम्।

थिमन । जाव्हा, जार्रि क्रामान कथान উত্তর দাও—ভার পর সেক্রবে।

कमना। ভবে कनि कनि वन-जनि जनि जनि जनि विहे ।

व्यमसः विन, भार कात ? क्यना। (शांक जिन्दाबतः (शांक खायम वयदम खज्ञमहाचादम् ; मशावयदम জীলাভির; শেষবয়সে, উভরাধিকারীর; षড়ি ছিড়িবার সমঙ্গে কারও নয়।

প্রসন্ন। বলি, ঐ শামলা গাই কার ? কমলা। বে ওর ছ্ধ শাস তার। প্রসন্ন। ও গোক আমার কি না ? क्शना। कृषे (विषे कथन अन्न अक विक् इध दथनित्न, दक्वन द्वरह मत्नि, গোন্ধ তোর হলো ? ও গোরু যদি তোর नामात्र। ८व ८वि ८ शाक्त ८ ठात्र एक एक क्षि—गतिरवत्र ८ इटल इथ ८ थेटत्र वैं। हुक । ●

शकिम (पिश्लिन, इरे करन वर्ष বাড়াবাড়ি করিতেছে—আদালত মেছো हाकिम को जूरनी रहेगा असमिक होंगे रहेगा छे छिन। जपम छे छ ग्रह थमक निमा, जिल्हामाराम निसर्ख गरेरगन। जिल्लामा कतिरगन,

> ''क्षमन वरे लाकन इप ८वट ?'' कमला। चाळा, है।। "'উरात्र शादारण करे शाक्र थारक ?'' कमना। ७ शांक्र७ थांटक, जांविए कवन कथन थाकि।

> > "व पाक्यांत्र ?" क्वा उख्याक।

"आभाव कार्या निक क्षेत्राष्ट्र—भाभि कमलाका विनीच्छाद विनेच, "पिष उदारक आत्र विकामाक्तिएक हारे ना।" (इंड किन दावा ?" এই विनिद्या जिनि छेशर्यभन कविरमन। 'তথ্ন আশামীর উক্ষা গাতোখান করি- দেখিয়া হাকিম ক্মলাকাস্তকে বিদায় (लन। (क्षिया कमनाकाश्व किकामा क्त्रिलन, "आतात्र क्रिन दक ?"

जागागीत छकीम विमादमन, ''जामि আশামীর পক্ষে ভোষাকে ক্রস্ করিব।" এक सम क जिम् क विशा গেল, আবার ভূমি কুমীর বাহাছর এলে ना कि ?

छकीन। क्यांत्र वाश्वत (क ? कमना। त्राक्र श्राद्य (हम ना? (ज्राह्य पूर्ण जार्भ क्रम क्रिस्मन, প्रनाज्ञ यहानत । जात शक्त कत कतिरनन क्यांक বাহাত্র।*

উকীশ। ও সব রাখ—তুমি গোরু • हम वरणइ—किरम हम १

कमला। कथन भिटक-कथन भाम-नाम ।

डिकीन त्रांशियां डिठियां, शब्जन कतियां, छिविन চाপड़ारेया विनातन,

शाक विमिर्ड भाति एक किर्न ?

कमना। धे श्वाबट्य।

डिकीम स्थाम स्हेग्रा, बिम्टमन, "Hopeless!" উকীল মহাশয় ব্সিয়া

वामिनीत छेकील जधन विमित्नम्, शिक्ट्लन-जात काता कतिरवन ना।

छेकीन आज (अज्ञा क्रियन ना **पिट्निन। कम्माकाञ्च ऐक्षियाम भगा-**हैन। आभि किছू कांज मात्रिया वाहित्य णांत्रिया (परिनाम, (य कमनाकाञ्च (थरम छ्का हाटल कतिया विभया वार्ह— ছाति पिटक लाक कियता एक — व्यनते अ पान पानित्राष्ट्र। कमनाकास छाहाक ভিরন্ধার করিতেছে আর বলিতেছে, "তোর সদ্বার বাটের দিবা, তোর ভূধের কেঁড়ের দিব্য, তোর খোল মউনির मिवा, ভোর ফাঁদিনথের দিবা, তুই यि (ठांत्र क्यांक (इए ना निम्!"

আমি জিজাসা করিলাম, ''চক্রবন্তী यहाभग । टात्रक शाक हाजिया मिटव **(**क्न १"

ক্ষলাকান্ত বলিল, "Liberty i Individuality! Fraternity! Humanity i মটর স্টি!"

এই বলিয়া কমলাকান্ত সেখান হইতে "(তোমার পাগলামি রাথ—তুমি এই চলিয়া গেল। দেখিলাম মাত্র্য টা, নিভান্ত ক্ষেপিয়া গিয়াছে।

(थामनवीन क्वित्रत।

পাধ্যায় দারা সম্পাদিত শীনৃত্যগোপাল চটোপাধাার কর্তৃক প্রকাশিত। অগ্রিম वार्षिक मूना . जाने ।

এই কুজ পত্রিকাথানি ত্ই ভিনবৎসর व्यविध व्यकान इहेट ७ (इ. व्यानदा मतन कत्रिप्राहिनाम अस्तर्भ मर्ख्य देश श्रीज ও পঠিত হয়। বাঙ্গালা শ্যাপ্রস্বিনী, वानानीता भना छेनबीवी, कृषिङ्ख তাহাদের উপযুক্ত পত্রিকা। **धकर**। मरमह इटेरङह वृक्षि क्वविङ् जागानि कुषकरमत्र निक्छ (भौष्ट नारे, ভাহা হইলে এতদিন ক্ষতিত্বের সহস্র সহস্ৰ গ্ৰাহক হইত। পত্ৰধানি বোধ হুদ্ম কুপথে গিয়াছে। শিক্ষিত সম্প্র-मारमन हाटा পड़िमाटह। डाहाह त्थि গত চৈত্রমাসে সম্পাদককে নিমোদ্ধত विकाशन निषिट् ररेग्राहिन ;—

" क्विजरचंत्र मृनाच्छ करत्रक मान **इटेट** विकाशन रमक्त्रा इटेट्ड ध्वरः ये। शिक्षित्रं विकिष्ठे शंख वर्माद्रं मृला वाकी चारह, डांहामिशक चावात चडत এক এক पानि পতা লেখা হইয়াছে। किन्द कि जाक्टर्रात्र विषय ज्ञान्तरक स्मा দেওরা দুরে থাকুক ভদ্রভানুসারে আমা-मित्र शिखत बवाव शर्यास्थ मिट्डिस्न ना । जामारमञ्ज्ञ जानेताथ जामेता निर्देश न व्यथ्यात्र ७ भतिज्ञम चीकात्र कतिमा छांशनिशदक क्विछच निया आनिश्राहि। , এবং মূলাজ্না অভি বিনীপ্রভাবে ভিক্স-

मानिक भाजिका, खीविधानाम मूरथा- त्कन छात्र छांचा किराज निकृषे वानचान প্রার্থনা করিভেছি, ভতাপি ভাঁহারা আমাদের কথার কর্ণপাত করিতেছেন न। भूनामान नर्भाष अक्रभ गांछीर्या व्यवनयन कता (य कलमूत्र मञ्जल लाहा তাঁহারা একবার বিবেচনা করিবেন। कांशक गरेया मूला ना (मध्या ध कलक শিক্ষিত সম্প্রাদয়ের পক্ষে যার পর নাই লজ্জার বিষয়।"

> माय निकिङ गर्भाष्यत अक्तात नटर, (माय जन्मामरकत्र निष्कत्र। (य পত্রিকা চাষার নিমিত্ত সম্পাদিত সে পত্রিকা শিক্ষিত সম্প্রদায়কে সমর্পণ করা বিয়াদবি। স্থতরাং গ্রাহকেরা পতিকা গ্রহণ করিবেন এবং রাগ করিয়া যে তাহার मुला कांग्रियन देशत आत आक्र्या কি ? কিন্তু একটা কথা বলি; উপ-**८त्रांक विकाशनां ना मिर्टिंग वर्फ छान** • रूरेज, পতিকার মর্যাদা রক্ষা হই জ, গ্রাহকদেরও মর্যাদা থাকিত। এ বিজ্ঞা-थन **मित्रा दकान कल नाहे, दकान आह**कहे এরপ বিজ্ঞাপন পড়েন না, পড়িয়াও লজ্জিত হন না, বা টাকা পাঠান ना। তবে এরূপ বিজ্ঞাপন কেন ? ইদানী বিস্তর পত্রিকার এরপ বিজ্ঞাপন **(मथा यात्र। छोडा ना (मथिएछ পা**उग्रा शिलरे जान।

षात्र एक कथा, क्षिड्य याहाट्ड পঠিত হয় তাহায় উপায় করা আব-माक। (म मचर्क छ्ट्रे धक्टा क्षा পরে বলিব।

तकान्न्।

- 100 Sections 18 30 Sections

৯০ সংখা।

वानमं मर्र।

मणय পরিচেছদ।

সেই দশসহস্র সস্তান বন্দে মাতরং
গারিতে গারিতে বর্ম উরত করিয়া
অতি ক্রতবেগে তোপশ্রেণীর উপর গিরা
পড়িল। গোলার্ষ্টিতে থণ্ড বিথণ্ড বিদীর্ণ
উৎপতিত অত্যক্ত বিশৃত্যল হইয়া গেল,
তথাপি সন্তানসৈন্য কেরে না। সেই
সময়ে কাপ্রেন টমাসের আক্রায় একদল
দিপাহী বন্দুকে সঙ্গীন চড়াইয়া প্রবলবেগে সন্তানদিগের দক্ষিণপার্শে আক্রমণ করিল। তথন ছুইদিক্ হুইছে
আক্রান্ত হইয়া সন্তানেরা একেবারে
নিরাশ হইল। মুহুর্জে, শত শত সন্তান
বিনষ্ট হইতে লাগিল। তথন জীবানন্দ
বলিলেন, 'ভেবানন্দ তোমারই কথা ঠিক

आंत्र टेवसव्यस्वरिंग श्रीराज्ञ नार्ट; धीरात्र धीरत्र किति।"

ভব। এখন ফিরিবে কি প্রকারে? এখন যে পিছন ফিরিবে সেই মুরিবে।

कीता। সঙ্গুবে ও দক্ষিণপার্শ হইতে আক্রমণ হইতেছে। বামপার্শে কেহ নাই, চল জল্লে অলে ঘুরিয়া বামদিক্ দিয়া বেড়িয়া সরিয়া যাই।

জীবা। অজমের উপর একটা পুল আছে আমার সরণ হইতেছে।

ख्य। अहे 'ममगद्य (मन्। '(महे

श्रामत उभन्न विन्ना भात कतिराज भाराम अज चिष्ठ इदेरन, त्य त्याथ इन अक्टे। जारभरे प्ययमीमाज्यस्य मस्त्राम मस्त्राम-रमना थ्यस्य कतिराज भातिर्य।

জীব। এক কর্ম কর, জরসংখ্যক সোনা তুমি গলে রাখ, এই যুদ্ধে তুমি যে লাহস ও চাছুর্ব্য কেথাইলে ভোমার জলাধ্য কাজ নাই! ছুমি সেই জর-সংখ্যক সন্তান লইরা সম্মুখ রক্ষা কর। জামি তোমার সেনার জন্তরালে অবশিপ্ত সন্তানগণকে পুল পার করিয়া লইয়া যাই, ভোমার সঙ্গে যাহা রহিল তাহারা নিশ্চিত বিনত্ত হইবে, জামার সঙ্গে যাহা রহিল ভাহা বাঁচিলে বাঁচিতে পারিবে।

ভব। আন্তা, আমি ভাষা করিছেছি। মুখ বন্ধ করিতে হইবে; ভাষা হইবে
তথন ভবানল ছইসহত্র সন্তান লইবা ভিনদিক্ হইতে উহাদিগকে বেটিড
পুনর্কার বন্দে মাতরং শক্ষ উথিত করিয়া জালের পাথীর মত মারিতে
করিয়া বোর উৎসাহসহকারে ইংরেজের পারিব। উহারা জ্রুতপদ দেশী ফৌজ,
বোললালসৈন্য আক্রমণ করিলেন। সর্বাপেকা পলায়নেই স্থাক , অতএব্
সেইখানে বোরতর যুদ্ধ হইতে লাগিল, তুমি উহাদিগকে সহজে ধরিতে পারিবে
কিন্তু ভোপের মুখে সেই কুদ্র সন্তাননা, তুমি আগে অখারোহীদিগকে একট্
সেনা কতককণ টিকে ? ধানকাটার মত বুর পথে আড়াল দিয়া গিয়া পুলের মুখে
ভাহাদিগকে ইংরেজেরা ভূমিশায়ী করিতে গাড়াইতে বল, ভাহা হইলে কর্ম সিদ্ধ
লাগিল।

वह जवमद जीवानम जविष्ठ मञ्जान

त्मनात पूथ जेवर किताहेना वामजाण

कानन विक्ति शेदिन शेदिन हिना कार्छन

हेमारमंत्र विकान महत्यामी निर्देशिय

छत्राहेमन प्र हहेट्ड मिशिनन, य वक
मञ्जान महान शेदन शेदन भनाई ट्डिट्स,

छथन, তিনি विकान को नमानी मिथाही,

हेश कारश्रन हेमांग (मिंदिल भोहेरलम ना। मखानमस्थानाहत्र गर्था श्रेथान छात्र । भगाहेट एक स्मिशा जिनि कारक्षेन (इ नामा এकजन महरशागीरक दिनतन, (य ''আমি ছুই ঢারিশত সিপাহী শইয়া এই छेशश्चि ভश्चित्याशीमगदक করিভেছি, তুমি ভোপগুলি ও অবশিষ্ঠ भात्रा ७ मिभारी नरेमा উহাদের প্রতি धावयान इछ, वामिक् मिम्रा देन एके नाके अग्राप्टेमन याहेरज्ञाह्न, मिक्निविक् मित्रा তুমি যাও। আর দেখ, আগে গিয়া পুলের मूच वक् कब्रिए रहेरव; छाहा रहेरन जिगमिक इरेटज উद्यामिशटक (व्रष्टिज भातिय। উहाता ज्ञाञ्चन (मनी कोज, नर्कारणका भनामत्नरे स्वक, व्यव्यव् তুমি উহাদিগকে সহজে ধরিতে পারিবে ना, जूमि चार्ग जयात्राहीमिगरक এक है वूब পথে আড়াল দিয়া গিয়া পুলের মুখে पाँफारेट वन, छाहा हरेटन कर्य मिक हरेदा। कारश्चन (इ छाहारे कत्रिण। "

जिन पर्टि हजा नहा। कार्श्वन

हेमान नशानिकारक जिन्दा विशेष परिता

हेमान माज नमाजिक ज्वानस्मा मान्न

यूष्ट्रत जना त्राचित्रा जात मकन रहत महिन

गाठीहेस्न । हजूत ज्वानस यथन मिनि
रान हेरदारजा रजान मकनहे र्लिस,

रेमना मन राम, यहा जहारे तहिन जाहा

महरकर वधा, जथन जिनि निक रंजाविषिष्ठ ममरक ডाकिया विगरमन य "এইक्य जनक निरुष कतिया जीवानम्बन माहारया-चामारक याहर७ हहरन। जात ণ একবার ভোমরা জয় জগদী শ হরে বল।" **७**थन ८मरे जन्माःथाक मखाग्रामना खत्र जनमीन स्टा विना काट्या नात्र কাপ্তেন টমানের উপর লাফাইরা পড়িল। त्रिरे चाक्रमण्य উগ্রহা चहामः थाक हेश्दब्रम ७ देजनभीत मन महा क्रिटिं পারিল না, তাহারা বিনষ্ট হইল। ভবানন্দ তথন নিজে গিয়া কাপ্থেন **हेमारमद हुन धदिरान। कारक्षन रा**प्य পर्याख युक्त कत्रिएक हिना। **७** वानम विनिन, "काश्यन मास्व टामात्र मात्रिव नां, देश्दत्रक कांगामिरशत्र भक्त नरह। एकन তুমি মুসলমানের সহায় হইয়া আসিরাছ? আইস—তোমার প্রাণদান দিবাম। ্পাপাততঃ তুমি বন্দী। ইংরেজের জয় रुष्ठेक, चामत्रा ट्लामारमत्र ऋशम।" कारश्चन **ऐ**भाम ७**५न छ्वानमरक** वंध क्रिवांत्र जना मजीनमहिख अक्टा वसूक छेठारेवात **हिंहा कदिएननः, किन्न छर्गानम छोर्हारक** বাঁঘের মত ধরিয়াছিল, কাপ্তেন টমান निष्टि भातिरनन ना। उपन खरानम • अश्वतंत्रवर्गरक विनन एव "हेहारक वैधि।" १२ जिम जन मजान जामिया कारशन हेमानदक दाधिन। खदानक दिनन "रेराक्य धक्छ। क्षाकात्र उभन्न जूनिन्ना ण७, ठम छेशांक महेशा जामना जीवानम श्लीयाभीत जास्क्रमा याहे।"

তথন সেই অলসংখ্যক সন্তানগণ কাপ্তেন টমাসকে ঘোড়ার উপর বাধিরা লইরা বন্দে মাতরং গারিতে গারিতে লেপ্টেনান্ট গুরাটসনকে লক্ষ্য করিয়া ছুটিল।

ভীবানদের সন্তানদেনা ভগোদাম,
তাহারা পলারনে উদ্যত। জীবানক ও
ধীরানক, ভাহাদিগকে ব্রাইয়া সংযত
রাখিলেন, কিন্তু সকলকে পারিলেন না,
কতকগুলি পলাইয়া আফ্রকাননের আশ্রম
লইল। ভাহারা যখন আফ্রকাননে
প্রবেশ করে, তথল গাছের উপর হইতে
একজন বলিল, 'গাছে উঠ! গাছে উঠ!
নহিলে বনের ভিতর চুকিয়া ইংয়েজ
ভোমাদিগকে মারিবে।' ত্রন্ত সন্তানেরা
গাছের উপর উঠিল।

গাছের উপর হইতে নবীনানন্দ গোল স্থামী কথা কহিতেছিলেন। সকলে গাছে উঠিলে, নবীনানন্দ বলিলেন, "বন্দ্ক তৈয়ার রাথ—এখান হইতে স্থামরা নিরাপদে শত্রুসংহার করিব।" সকলে বন্দ্ক তৈয়ার রাখিক।

धकांनम পরিচেছদ।

त्मिना । अर्थ किक्य प्राप्त किक्य प्राप्त किन । प्रस् किरे वा कि, की वानत्मन मिन्दिन कार्छन दि यारे ए प्राप्त किन कार्छन दि यारे ए प्राप्त किन कार्छन किन वा किन कार्य कार्य किन कार्य कार्

त्नन। जयन जनका एक एक एक एक क्ष भटक शांद्रज जेन्द्र होता देनक-शृद्ध बम्द्रज अनि शिक्ट माश्रिम। द्यांचेना अपन जेशद हाहिया द्यांचेना अपन जेशद हाहिया द्यांचेना का कि!' निकास क्ष्म स्टेटक अन्यन बनिन, ''ना माद्यन, जामना शीह द्यांचेन मानिएक, जेशदन माज़िया माज़िया शांद्रज जेशद होनिन अनि

जांत्र अक्जन बनिन, "गार्ट्य जेपारन अक्ट्रे मांफारेग्रा राष्ट्र, खनित्राष्ट्रि जीपानन नाकि यीखबीरे जिंदिन, जे जाम्रह ।"

त्वरिकाणि अविषय प्रिश्चन स्विध्वन त्वरिकाह, हेशिनरभन्न किंद्र किंद्रिक भीतिय ना। देननाभगरक विश्वन ''कामना भीत्र व्यापन रूक, क्ष्य प्रत भिरम, भीत्र वागन रूक, क्ष्य प्रत भिरम, भीरहत वागन वान कामणाहरक भानित्व ना।''

ভাষন গাছের বাদরের ক্লুকের দৌজের বাহিরে সৈন্য জইয়া গুরাটসন জতবেগে জীবানন্দের আক্রমণে চলি-লেন।

भाखि ज्यन शास्त्र छे भन्न इहेट ज निन ''छाहे ने प्रतिन्न प्रम्, ज्यान मामा-देना भिष्ना हृष्टिना नामानूर्यादमन सैनटनन स्वामद्भन प्रामाणि दम्याहमा मिन्ना प्राप्ति-द्ध दहेदन।'' भाखि मदन नदन विन्दि माशिन दम ''यिन स्मान नाम्य ना स्ट्रेंडाम द्धा'—म्बन्द्र निथिए शानिसान ना। प्रार्श-नवीमानम शाह हहेद्छ नामादेना भिष्ण, निष्ण सूर्य सार्थ किया वृष्ण मकल निष्ण निष्ण, ज्यान निर्मान निष्ण भिष्ण, ज्यान निर्मान निष्ण भिष्ण, ज्यान निर्मान भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भिष्ण, भाव निष्ण, वृष्ण, भाव निष्ण, वृष्ण, स्वाप सार्थ, क्ष्म सार्थ,

भाषि शिष्टारेमा शिष्टम—विनन "हि! कि कति एकि! शिष्टाक रहेमा यूष्क यारे किन? जामात धर्म र्छ क नम! जामि शाष्ट्रत कांक्रित शाष्ट्ररे थाकि।" करे विनमा भाषि कितिया जागिया शाष्ट्रत जेशत केंग्रिमा यूक्त किथिएक नांशिन।

सीवानम आत्र भून भारेत्राहिन, किन्ड पूत्र इहेट उटक माजतः काटन शिन। कीवानम विनन "ভाই मूत्र इहेट वर्तन याजवः खनिष्ठिह, जाहे यदि यद्दा, शूटन काम बारे, हन धकवान छेराएमत सद्भ शिश्रा वत्म काकतः शाहे। अ (य क्षिर्टिष्ट नाम काम करमा मन्क, ও भावतका मुरगत नाजू, छहाटक क्लानाती वामगारी रेश्द्रकी चाट्ट, ठल छारे देवस्व दनवात्र नव नाशाहे।" जीवानदन्त टमनात्र जात्र जानकटम नकान बहेर्ग ना। वर्क यांजनः भाविष्ठ भाविष्ठ (मरे र्তादणिक भक्षमञ्च मसामहमना (गर्भे-नाफे अवाष्ट्रेगदनब मिरक श्रायमान रहेन धवः वरस्त्र मण क्लाल्वेनाने धनावेनतन रमनात्र छभरत भिष्या छाहापिशस्क भेष

विथल कतिन। धकरिक कीवानत्मत रेमना जात्र धकतिरक नवीनानत्मत्र ८ छ-त्रिक टेमना हुई थारन करामत नामाएक मृह्दम , १६५७ ज्या देश्यम (मना कश्रिक • इट्टि गांशिन। योत्र इम उद् छाट्समा ! हेश्द्राक्षत्र काकून दल, काकून माहम, অতুল অধ্যবসায়। ব্লাউণ্ডের পর ব্লাউণ্ড, काशाद्यत अन कातात, वृष्टित अन वृष्टि, त्मरणत्र छेभरत चारता त्मच ! भृथिवी चक्क-कात रहेग, गगन खिलिध्वनिद्य विकात्रिक हरेट गांतिन, कानदम अफ़ वहिन, शख भक्षी खर्म विवरत मुकारेग, अबरत जूकान "यात्र यात्र यवन यात्र। 🗬 ७ १० १८ म अहे . त्ननात्र भरत्र की वानम आरष्ट, या ७ रको ब-माबी वामनाही (छम क्विमा याक खाहे। यात्र यात्र (कोकनात्री मात्र।" ज्यन षिक्त वारम विक इटेग्रा, आह्छ निङ्ख বিপ্লুত স্থানচাত বিজ্ঞাবিত ক্ৰীয়া লেপ্টে-नाणे अवाष्ट्रेमद्वत दमना हिन्न जिन्न जादन निधिनिटक भनात्रन ककिन। मास्थादन जीवांनरमञ्ज फरम धवर नदीनांनरमञ्ज थितिত परम रम्या हहेग। उथन मास्टि 'जात थाकिएक गात्रिक ना "हि! बान्नी-करमरे थिक् !" अहै बनिया भाकि चावात शां हरेट नामारेया भिज्ञा । दायादन इरे विषयो महानरमनात मिल्लन वरे-शांद्ध (महे बादन कूत्रजीत नाम भाषि इिया शिया छेशिष्ठ स्रेग। त्रश्रक्त • गांवधादन की वानत्क नवी नामत्क दक्षा दरेग। इरेम्बा इरेम्बाक चानिमन

कतिन। यथन धकरे जंदमत्र भारेन जयन जीवानक विनन 'भारि, जाक जाना मगरक मतिरल कि स्थ दहेख।"

नवीमानस बनिन " मित्रवात अथमछ नमय आहर, कृषि भूत्रव मास्य जामत जा कृषि कृषि गारे, मित्रवात मतकात हाल आमा विका कामि नारे, मित्रवात मतकात हाल आमा विका कामि विका भाष प्रत्या हिया मित्र ; या उपि विका भाष ।" असे विका भाषि कारश्या दित्र देगना प्राथा हेत्रा दिन, याहेवात ममदत्र की वामदन्त काम काम्य किना किन, "आस मित्र जा काम काम्य काम्य आपम ।"

ভঞ্দ বন্দে মাভরং গারিতে গারিতে जीवानक जमादबार्ट मदेमदना कार्छन **८** इत थाल भाषमान स्टेलन। नाखि विकाय नात्री जन्म कि विकास कतिएं করিতে ফিরিয়া আসিয়া পাছে উঠিয়া '' (त्रद्धा स्मरक्र' वित्रा जाननात्र निना कतिएक गामिरकन। कारथन रहे पार्थ-८णन, ८ए योशंत्र भणात्रन अवद्रांध क्ति-दात्र बना याहेटछिएनन, ८गरे चत्रः चागांत्र मञ्जूरथ चामिर उट्ह। कारश्चन रह कित्रिया जीवानमह्क जाक्रमण कित्रदान बना जाहात जिल्मियी हहेरनम। दयमन ष्ट्री शर्क्जिनः एक नहीं विभन्ने क निक् इहेट जामिया अक जेशडाकात अक शब्दाय भवन्भवरक । शब्दा करत्र—हेख् क **उत्रमानात (क्विन्य पाकार्य (थात्रिक** करत, भरक श्रविकक्तत दिलीवं करत, टियनि ८ ए । जीवानत्मन रमना प्रमुक

मरशारमत मरपर्वर्ण मरपर्विक इहेग । जन नज्ञानज्ञ नारे, मज मज शानी निरंज रहे-তেছে, একৰার ইংরেজদেনা 'hurrah'' শেডিয়া আষিয়া শত শত मनिज क्रिएएहः আৰার "कलक्रि कत्रवानः" विलिश मखादनत क्ल देश्दाक्षत्र दमनामन्यक मनिक क्रिएक्ट्छ। **अब्र भवाजव नार्ट, कि रुव यहा यात्र ना ।** कारधन एक कारक वेश्रासक बाहा वाहा (मना, विष्यं (भारा, अत्वक-भारा-षत्र कारांटक वत्त छाहाता हे छेटतांटल वा ভারতবর্ষে কখনও তা ভালে না। প্রস্তরনির্দিত প্রাচীরশ্রেণীবৎ তাহারা चित्र मैं। एवित्रा त्रहिल। मखात्नता यण. উদাম করিল কিছুতেই পোরার প্রাচীর উন্নত্ত্বন করিতে পারিল না। তাহারা শত मंठ मदान निर्ज कद्गिरज्ञ क्व शक्ष शन्दानभागी इत्र ना।

रेश्त्रां एवत्र जाशाक्रात्म अहे ममदत्र जाहाः मित्र ट्यांभशिन मिक्रिय चानिता भौछिन। ज्यन मलारनन पन अरक्रादन हिन्न जिन ष्टेन, जरमञ्जात (कान जाणा तहिन ना। मर्खाटनत्रा (य र्यथाटन भारेन भनारेट नातिन। जीवानन धीतानन छाहानिरत्रत व्यत्नक एडो कत्रित्नन किन्न किन्नुएडरे भावित्मम ना। त्यरे मयदम खेटकः मन रहेग''शूरम यां शूरम यां । अभारत याश्व। नहिरम जनस्य प्रविद्या महिर्द्य, वाधिया शूरण याखा"

कौर्यानम ठाहिशा (मिथन मणूर्थ छ्या-नमा । ख्यानम याना "जीवानम भूटन गरेत्रा याख, त्रका नारे।" , ज्यन धीरत थीरब शिष्ट एडिएड एडिएड मखानरमना श्राम किएक छनिन। श्रम निकरिष्ट हिन। कि पूर्ण निक छि भारे मा वह-गःशाक मखान একেবারে পুলের ভিতর व्यारम कत्रोक देश्टबरक्य दिला क्रायां श भारेम। পুল একেবারে ঝাঁটাইভে माशिम । 'मखारनत क्य विनद्वे हरेएछ नानिन। একটা ভোণের দৌরাখ্যো একত্ত। **७ जानक मछानकत्र इटे**ट छिल। छवानक विनन, जीवानम, बीतानम, धम उत्रवाति ঘুরাইয়া আমরা ভিন জন এই ভোপটা पथक कति। ज्यन जिन जत्न जत्रवाति ঘুরাইয়া সেই ভোপের নিকবর্ত্তী গোল-मान रमना वध कतिन। ७५न चात्र আর সম্ভানগণ তাহাদের সাহায্যে আ-मिन। তোপটা ভবানদের দখল হইল। তোপ দখল করিয়া ভবানন্দ তাহার উপর উठिया विमन। कवणानि निया विनन ''वन वर्म माजतः।'' मकरम शात्रिन''वरम माजबर।" खवानमा बनिन, "बीवानमा" **এই ভোপ चूदारेदा व्योग्य मुहित** भग्नमा टेज्यात कति।" मखारनता मकरण ' ধরিয়া ভোপ খুরাইল। তখন ভোপ **डिटेक्ट:नारम टेक्क्टबब कर्र्य राम इ**ति इति শব্দে ডাকিভে লাগিল। বছতর সিপাহী थीरत विरत देश्टतकरमनात्र मिरक त्रुष छाहारक मित्रक नामिन। छवानम मिरे তোপ টানিয়া আনিয়া পুলের মুখে স্থাপন

করিয়া বলিল "তোমরা ছই জলে সম্ভান-रमना मात्रि भिया शून भात्र कवित्रा लहेता यां भाषि ज्ञा ज्ये वृष्ट्रम्थ त्रका कतिव — তোপ . চালাইবার জন্য আমার কাছে •जन क्य शामनाजभाषा याव।" कूष्टि कार्यान मिनी शामनाज कर्त्व ठानि छ धन वाहा वाहा मखान खवानत्मन कारह तिश्व।

कीवानम ७ श्रीतामत्मत्र व्याकात्कत्म मत्मत्र छे भन्न व्यक्तिष्ट कित्रम । एचात्र मात्रि मित्रा भत्रभारत यारेष्ठ गाणिग। भरक दन नम् शित्रि मकनरे প্रक्रिश्वनिङ धका खवानम कू फ़िमन रेवक्य दिव माराया रहेग। ममछ मिरन इत्र क्रांख है १८५-সেই এক কাষানে বহুতর সেনা নিহত করিতে লাগিল—কিন্ত ইংরেজসেনা करनाष्ट्रारमाथिज जत्रक्त्र नामः! जत्रक्तां , शनामन कद्विरक नामिन। दक्वन भामा উপর তরক, তরকের উপর তরক!— পাড়া দাঁড়াইরা মরিতে লাগিল। ভবানদ্দকে সংবেষ্টিত্য, উৎপীড়িত, এনম-থের ন্যায় করিয়া ভুলিল। ভবানন্য थ्यांख, **षटबा, निर्धीक—कामा**टन कामा-त्न भएक भएक कउटे रमना विनष्ट कत्रिए লাগিল। ইংরেজ বাত্যাপীড়িত তরজা-ভিঘাতের ন্যায় তাঁহার উপর আক্রমণ क्तिएं नाशिन किन्न कुष् जन मन्नान, তোপ नहेशा পুলের মুখ বন্ধ করিয়া 'রহিল। তাহারা মরিয়াও মরে না—ইং-दिस भूरण दृष्टिष्ठ भाष्र ना। रम वीरतता व्याव्यक्त तम कीत्रम व्यविमधता चवत्रत्र भारेग्रा एटन एटन मखानदमना অপরপারে গেল। আর কিছু কাল পুল बच्चा कब्रिटक পারিলেই সম্ভাবেরা • नकरनहे भूरमद भारत यात्र— धमन नमरत्र काथा रहेट न्डन ভোপ ডाक्नि—

"अज़्र्य अज़्र्य त्र्य त्र्य।" जिल्लामन কিরৎকণ যুক্তে কান্ত হইরা চাহিয়া **८मधिल—८काथाम** कावात षिशिन, बरमन्न छिठन रहेर्ड कडक्खनि হইয়া নিৰ্গত হইতেছে। নিৰ্গত হইয়া त्मरे विद्यां कामात्मद्र त्थ्रंगी मश्रमण তথন অসংখ্য সন্তান পুল পার হইরা মুখে ধুম উদ্গীর্ণ করিয়া হে সাহেবের **(जत (मना व्याग्छ एम मिट्रिम। ज्या**न • वृष्टिएक देखनानी, मूननमान, हिन्दूकानी

> ख्वानम त्रम (मथिएडिइन। ख्वानम विनन, "छारे, रेश्द्रब छान्निट्टह, हन **धक बांत्र উহাদিগকে আ**क्रमण कति।" তथन भिभी निका (आटा वि मर्का नित्र मन्न, নুতন উৎসাহে পুল পারে ফিরিয়া আসিয়া रेश्द्रक्रिक्षिक चाक्रियन क्रिट्ड श्रावमान হইল। অকসাৎ ভাহারা ইংরেজের উপর পড়িল। ইংরেজ যুদ্ধের আর অবকাশ পार्टेल ना--- (ययन जागीत्रथी गन्ना (मह দম্ভকারী বৃহৎ পর্বতাকার মত হস্তীকে ভাসাইয়া লইয়া গিয়াছিল, সম্ভানেরা তেমনি ইংরেজদিগকে ভাসাইয়া লইয়া **চ**लिल। देश्टब्रह्मब्रा मिर्चल भिष्ट्रत छवा-नत्मत्र भगाष्टिक (मना, मन्नूर्थ मरहरक्त কামান। তথন হে সাহেবের সর্কনাশ উপ-शिष्ठ रहेग। जात्र किह् हिकिन ना-वनः

बीर्या, माहम, देकोभन, भिका, मह मकारे छात्रिया (त्रम्। (क्षेत्रमात्री, वाष्मारी, रेश्टबनी, दमनी, विनाजी, काना दमावा रेमना निপ्रजिख स्टेमा कुल्लभानी **इटेन। हेश्दारकत मन भनाहेन। यात्र** गांत्र भटक कीवानक, खवानक, नवीना-नक, देश्दबरमनात्र शन्दारक धावमान इहेन। हेश्टब्रह्मत्र गव ८७११ देवस्थरवत्रा काफित्रा गहेग, अमरण हैरदब्ध ७ मिপाही निरु रुरेन। नर्यनाम रुरेन प्रिशा कारश्चन एक ७ अप्राहेमन ज्वानरमञ निक्छ दनियां পाठाहेन " आमत्रा मकरन टिंगानिरात्र निक्षे वनी हरेटिह जात्र व्यागिर्छा। क्रिय मा।" जीवामन छ्या-. **डांहिंग, ख्वांनम** মুৰগানে गरम भरमः बनिन "छ। इटेरव ना, আমান যে আজ খরিতে হইবে।" তথুন **ख्यानक खेटेक: यदा र खाखानन क**ित्रा रुक्रियांन मित्रा यशिन "भात्र मात्र।"

जात जात थानी नैक्ति ना— भिन धक शांत १०१७ कन भाता रेमना धके जिल स्टेंग्रा जाजममर्गण कुणनिष्ठ स्टेंग्रा जिल एचात्रज्य तन कित्रक लागिल। कीनानम निल "छनानम जामारम्य तनका स्टे-गारम, जात काज नारे, धर मागतजूना रेमरनात मर्था धरे कंत्रजम गुजीछ जात कर जीविज नारे। উर्शामगरम थानमान मित्रा हल जानमा कित्रिता गारे।" छनानम निला "धक्रजन जीविज थाकिरछ छनानम कित्रित ना—जीना-नम रज्ञामात्र मित्रा मित्रा तनिर्छिष्ट, रय ज्ञि ङकार्ड में। ज्ञेत्र राष्ट्र का जाति क्षेट द० जन हेश्टब्रज्ञ निरुष्ठ कति।"

कारश्चन हेगान जयशृष्टं निवस हिटलन। जवानम जाका मिटलन ''উहारक जामान नमूर्थ नाथ, जारन की (बहा मन्द्रिय जर्ब के का जामि मन्द्रिय।''

কাপ্তেন টমাস বাঙ্গালা বুঝিত, বুঝিয়া ইংরেজসেনাকে বলিল 'ইংরেজ! আমি ভো মরিয়াছি, প্রাচীন ইংলণ্ডের নাম ভোমরা রক্ষা করিও, ভোমাদিগকে খ্রীষ্টের দিব্য দিভেছি, আগে আমাকে মার ভার পরে এই বিজোহী কাফ্রিকে

ভেঁ। করিয়া একটী বুলেট ছুটিল,
একজন আইরিসমান কাপ্তেন টমাসকে
লক্ষ্যুকরিয়া বন্দৃক ছাড়িরাছিল। ললাটে
নিবিদ্ধ হইরা কাপ্তেন টমাস প্রাণত্যাগ
করিল। ভবানন্দ তথন ডাকিয়া বলিলেন ''আমার ব্রহ্মান্ত বার্থ হইরাছে, কে
এমন পার্থ রকোদর নকুল সহদেব আছ
যে এসময়ে আমায় রক্ষা করিবে। দেখ
বাণাহত ব্যান্তের জ্ঞার গোরা আমার
উপর ঝুকিয়াছে, আমি মরিবার জ্ঞা
আসিয়াছি, আমার সঙ্গে মরিতে চাওঁ
এমন সন্তান কি কেহু আছু।''

जारंग थोत्रानम ज्ञानत हरेग, निष्ट् जोरानम—मर्ज मर्ज जात्र २०१२०१२०१८० जन देवस्य जामिम। ज्यानम थोत्रानमस्य मिया विजय "ज्ञान दय जामास्य मर्ज मित्र जामिस्य ?"

धीत । दक्त, मना कि काशत देजानी

महल नाकि ? এই विलिट्ड विलिट्ड बीड़ां- नमय जूमि व्यानिटल। नाव्धान! (खवा-नम এकमन (गांत्रांटक चार्ड कतिराम। नत्नत्र वाम वाह्छ हिन रहेल।)

পুত্রের সুধাবলোকন করিয়া দিনপাড দিও! বলিও আমি অবিখাসী নহি। कतिएक भातित्व ना !

चथ कतिरनन।)

গোরার আঘাতে ভবানন্দের দিশিণ বাহু মুত্যুকালে ভাছাকে বলিও আমি ছिन रहेन।)

थीत्र। जामात्र माशा कि दय दर्जामात्र छात्र পविद्याषाटक (म मकल कथा विन। আমি সভ্যানন্দের প্রেরিড চর হইরা গিয়াছিলাম।

ख्व। दम कि? महात्राद्यप्र आगात्र अछि विश्वान ? (ख्यानम ख्यन धक शह्ख युक्त कत्रिटणिहरणन।) धीत्रानमा, खाँदारक नात्रिण। ভार्दार जादानिभात नाहरक त्रका कत्रिष्ठ कत्रिष्ठ विनित्नम, "कन्।।-ণীর সঙ্গে তোমার যে সকল কথা হইয়া-ছিল তাহা তিনি স্কর্ণে শুনিয়াছিলেন।"

७व। कि ट्यकादत्र १

धीत। जिमि जथन यत्रः मिश्रांन हिला। जावधान थाकिए। (खवानम একজন গোরা কর্তৃক আহত হইয়া তাহাকে প্রভ্যাহত করিলেন।) তিনি ক্ল্যাণীকে গাভা পড়াইভেছিলেন এমভ ভেমিাকেই ধিক। 🗝

खव। তা नित्र । किन्न मित्रिक छी- खव। खामान मृञ्गमना छीहारक

धीताममा बाष्ट्रश्रीमामान, युक्त कतिएछ धीत। कानिकात कथा वनिष्ठहं ? कतिष्ठ वनिष्नम '' छाहा छिनि नामिन। এখন বুঝ দাই ? (ধীরানন্দ আহত পোরা কালি রাজির আশীর্কাদ বাকা মনে কর। आंत्र आंभारक विनिन्नां निन्नां एक ता-ख्व। ना—(ध्रे नमरत्र धक्षन मन्त्र कार्ष्ट् थाकि । जांक रन महिरव। व्यानीकांत कतिष्डिष्टि, शत्रांतिक जारांत्र देवकूर्र शासि इटेरव।" '

> **ज्यानम विमारणन''मञ्चारनत्र जत्र रहेक**, छारे! आयात्र मृज्यकारण धकवात वरम মাতরং শুনাও দেখি।"

७ थन बीदानटमद आखाः कटम यूट्या-गाज नकल देवस्थव महाद्राज्य वर्षा माजतः বিতাণ বলস্কার হইয়া উঠিল। সেই खन्नकत मूहर्स्ड व्यवभिष्ठे : शांत्रादेशना নিহত হইল। রণক্ষেত্রে আর পক্র त्रिंग मा।

সেই মৃহতে ভবানন্য মুখে বন্যে মাতরং গায়িতে পায়িতে, মনে বিফুপদ খান করিতে করিতে প্রাণত্যাগ করিলেন।

हात्र! त्रभगीत्रल नावना! हेह मःमाद्र



(मयनामयथ कारामयरक कराणी कथा।

" "(यम्सामवंश कृतिसम्" अञ्चल मन्ना-ह्यांचना कासिक हरेन सा। जपंच धरे क्रशकश्चित्र ८ए८म, ८काम ८गभक रहि অধুনাতন বদসাহিত্তার প্রীবৃদ্ধি দেখিরা "जनवान् मनी जियानीत्र" महिल देशन উপ্যা দিবার লোভটুকু সম্রণ করিছে ना भारतन, जर्व डींश्रंक मरन क्रिट्ड क्रेट्य (य, ''(मक्यामरे'' यटक्य 'क्यमीश প্রভাত তারা।" যিনি বাল্বিকে '(ययनायन्य कानाः नुसारे छ नक्य, खिनि व्यारेलन ना। खत्रमा हिन, विक्रियां व्यवस्थात दस व्याग भारेद्यम । কিন্তু তিনি বুকি সার তাহা করিলেন ना। ६क खर्व धरे धक्तवत बक्वार्य कदिरव ? व्यवद्यस्थायकत्र (म छेगाम ৰুবি কেবল ধৃষ্টভাষাতা। ভবে কথা धरे (य, " रमपनामन्दरपत्र" त्री जिमक न्यां क्वां का विष व्यापका श्रह् করিতেছি না।

হিন্দ্রান্থানাই রামার্থের উপাথ্যানভাগের সহিত অপরিচিত। রামের
মহন্ব, উন্থানের চরিজের বীরন্ধর্প;
অগতে অতুলনীরা, ধোষমাত্রপরিপ্না।
সীতার কমনীরভা, উন্থার পভিভত্তি;
লক্ষণের ভাতৃপ্রেম, সেই বীরপুরুষের
চিরোজ্ঞান, নিঃসার্থপর বীরভাব;
সংক্ষেপতঃ রামার্থের সেই স্পরিভাব,
বাল্যানাব্রি হিন্দ্সভান অত্নিন্ত্রশ্রে

थात्रन करत्रन। जात रमहे महक त्रांकरणत्र यःणावनीत छे भन्न जामारमन रक्मन ° किन विकाजीय चुना कतिया वाम। कवित्र ''रमोधिकत्रीरिमी'' महा भाठेरकत्र **हेटक खितिए थिटक, किन्न सम्दर्भ यान** शांत्र ना। अकात कथा मटन कांत्रित नत्रज्क् बाक्स्मत छीयन भाभागत স্কাত্রে ভাঁহার মনে পড়ে। (महे चरणांकवरम, एएफ़ीमगरविष्ठेंग, वित्रागकरमाहिनी, जनकन्तिनीत विज मध्य कतिया जिनि देखात, जनिष्ठाय **जञ्जवर्षन करतन। देहारे** त्रामायन! व्यक्त अथन मृष्टिरक त्रामात्रन हेश वाञीज जात्र किहूरे नरह । "रमपनाम-वर कारा" त्रामामन महायुष्णत् नज्ञ यां वार्षा इंडिए। किंद्ध द्यमन दक्त পাঠक एउन ना, "(मधनामवध" পাঠ-कारण डांहात मरन हरेरव, वाहा त्रामा-त्रत्व नारे, रमचनार्त खादा পড़िट्डिश "Cमक्नाम्बर' ब्राक्टमरक कुना क्रिए हेच्छा इस ना;---रम खादहे महन खरिन ना। अञ्चल भारत राम ''सगरजन जन-कात'' नकात्र व्यक्ति जहात्रकृष्टि हरा।' कवि बिटकरे वबुटक भएक निथियां-हित्नन, "People here grumble and say that the heart of the poet in (ANAIN" is with the Rakshasas! And that is the real truth." প্রাণ

अ दमरभन दर्भादकन्त अम्बद्ध इहेना विकास बाटक एय रमयनामन्ध्य कारना कवित्र भएनत्र होन द्रायम्प्रदान्त्र शक्ति। विश्वविश्व छाहारे बढी।" यानिया श्रीनया कवि • हिन्द्रमखाद्याद्य कित्राक्ष्यक मः स्वाद्याद्यकः विभवीटक कावाकवनी खानाहें छ्ट्या वाशांडिं रेशं वेष विभाग विभाग (वाध इत्र। किन्द्र छातूक रमविद्वन, अहे टाएमरे भिष्मामवश्कारवातं भिष्म।

चावात त्रामाग्रदगत दम हे त्रावनहक मरम कत्र !-- (यन खनदम्र श्वानक्षां छ छ है, मिन्हे-(नत (मर्टे मञ्जानजूना !--- नतर्व के बिंग कतित्व त्मख छामः, खथानि चढंर्गेव किजीय नधीयत इहेटक हाट्स ना ! ध मृत्रां "मिनिना त्राक्रमनाथ पीर्यक्रीयंगी जनक गांकीर्यामक चटिं, किक स्कर्मन खग्रानक! जात "(ययनामव्दयत्र" नात्व ? ক্তক্টা ভক্তি জীতির পাধার। ভিনি नियम्बद्धारम् উচ্ছारम्, रम्जूनिशक्षकः, **हित्रक्र**ज्ञानमञ्ज, हिन्नक्षीन्छामञ्ज नम्-ज्ञाक निका कतिया, जीख वादनत नहती . ज्लियां बरनन--

"कि चुक्त माना चाकि शतिश्राष्ट्र शत्व व्यटिकः! हा धिक्, ७८६ जनमन्नि ! धरे कि मार्ज रहामार्त्र, जनका, जरका ज्भि ? शत वह कि व्ह कामात जूरेन त्रज्ञाकत्र १ 👫 👉

यथन श्रांटणां कां कूत्रां, जिल्मानिनी, गांथी हिलानमा मृश्र बांटका छोड़ाटक यगिवाहित्नन,

''हांत्र नाथ, निय कर्णकरम मकारम जाकमकूरम, मिकरम कार्याम ।

खपन 'प्यस्थाय वर्ष' नर्धम्य स्वीप मक तार्थ नक्ष्रप कारा. कित्राहित्नता — (यम निक्छंदक शिट्यक दिनाय चीकाक कतिया महेत्राहित्यन। त्रामाश्रत्व द्रार्व তाहा नांत्रिएन कि क् जमछा। वर्षात्र वर्त् छ मन रममम नात्रीमाळरक जंधना रेखिक्रिक्रिके निमान गांध गरन केंद्रि, बागांत्रत्वत दांचन ८मरे श्राकृति । "दम्ब-नामन्द्रस्त्र" त्रायम कडकेंग छक्ति छ खीजित जाबात । यथन देखिकरजत य्क्रामयाम विद्या त्रा क्षाम् उत्योग् विद्याना **इ.स. क्यान क्रिक्न, क्योंब क्या**त्र मडा পূर्व इहेग,

ভীষণ জিশুল ছায়া"

जंबन मर्चाशीकृष्ठ नारमध्र প্রপাম कतिया ककि अम्भाष्यत विविद्यालिन,--किति वाक्षित्रका क्या यात्र मा,— दिनिमाहित्नम,

''कंड मिटनें शब्दें, खांगारीन पृष्ठा এবে निक्ति कि गर्म **टिंगांत ? धे मात्रा हात्र टिंग्य** बृष् णामि, यात्रायत्र ? किन्न जात्र नानि षाळा ७व ह् मर्सकः; भटत निर्वित्व या किहू आदह ज मत्न, ७ नाजीवनता !" कन्डः "ध्यवनाप्यक्ष कार्यात्रं" द्वीव-न्टक एक बिटन, जामाम्य देन हैं केवन विषा वर् जक्दा रहना यात्र मा। "त्यथ नारंतर्' द्रावन, -- द्रम नारुष चर्नक '(लाक शाहेता रेक्बालांक कतियारह ;--

श्री व यूनक (यन क्षक किया), क्षेक

व्या भाख हहेनाए । यन वाहना दि, जालिक , हिन्न कन्नाव्रम्थ कित कित्रप्रतिमात मान्यहित्यत जरू-कत्व कित्रप्रतिमात मान्यहित्यत जरू-कत्व कित्रप्रतिमात मान्यहित्यत जरू-रम्भ कर्ष हित्यत स्य छेथान, भछन हहेटल भारत जयर हहेना थारक, जरूथा मस्य ताथित, जत्रमा कित, स्वर स्वर तायप स्वनाख ''रकामन स्वर् नम'' वित्रा छेए।हेना निर्कान मा।

সামরা যাহা ব্যাইতে চাই, ভাহাতে
রাবণচরিত্রের বিশেষ প্রবোজন নাই।
তবে সে চরিত্রকে রামারণেতর চরিত্র
করিয়া গড়িবার যে তাৎপর্যা আছে ভাহা
ব্যাইবার জনাই এ প্রশ্নাস পাইলাম।
ভাবুক দেখিতে পাইবেন যে কারামধ্যে এই চরিত্রের বিলক্ষণ উপফোরিতা
আছে। আমাদের মুখ্য প্রয়েজন ইন্ধজিতের চরিত্র ফইয়া। একবার ভাহা
ত্সামুস্ত্র করিয়া দেখি।

श्री अभिन्न द्राधीत मूर्य लक्षात्र विभए-वर्षि अभिन्न द्राधान वीदत्र द्राधाणाट्य विलामण्या जाध कित्रलन;— त्रिल्लि (म क्ष्म पाम हिंजिल्ला ! येलिल्ला।

" धिक् स्थारित ।

श्रीक् त्यादत । देवतीमम त्याष्ट्र वर्णम्या, द्रशा चामि त्रामामगमाद्या ? धरे कि माट्य चामादत, मगाननाच्या चामि रेळाधिर ; चाम तथ चता कति ; पूर्णाय ध चामवाम, विध त्रिमुक्ता ।"

সেখনাদের পিতৃত্তি বড় প্রনার। উহার বীরভাব বেমন সৃত্ত, তেলনি अत्रम! এতদিন তিনি নিশ্চিত মনে, প্রমোদ-উদ্যানে পদ্দীসহবাসে আমাদ-নিরত ছিলেন। পিতার আক্ষিক বিপদ-বার্তার অপ্রতিভ হইলেন। কিন্ত বিপদ তিনি তুল জ্ঞান করেন। সে কথা-হাসিয়াই উড়াইরা দিলেন;—

"(इ तक्क्क्ल गिर्डि,
छटनिङ, सित्रवा नाकि वैद्यादि श्रनः
त्राचन । अ सम्रा, लिङः वृक्षिट्ड ना गिर्दि ।
किन्न जमस्डि (मह, मप्टन निर्मृत
किन्न जमस्डि (मह, मप्टन निर्मृत
किन्न जमस्डि जम्बि । द्यात जमानटक
किन्न जम, वायू जट्ड छेड़ाहेव छाटत ;
नजूवा वैदिन्ना जानि निन नाजगटन ।"

रेखिकिए अम्बर्भका मान्नामग्री किंद्र एवं क्रिश् श्रेख्य श्रेख्य मान्नामग्री किंद्र एवं यूकार्थ स्मानिक विमान मिरन ना। नास्मत रेमवर्ग देमनावर्गन छैद्र भ किंद्र ग्रेख्य करियं क्रियं यूक्तिवान करियं क्रियं खिलिंग क्रियं खिलिंग विमानार्थी क्रियं मान्य क्रियं मान्य क्रियं क्रियं क्रियं मान्य क्रियं मान्य क्रियं क

পারেন, কিছু মাতার, মাতৃত্নির রোদন
সহিতে পারেন না। এ সংসারে কণদ্রা।
বীরবর সেকুলরসাকে কথন মাতৃত্নির
রোদন শুনিতে হয় নাই, কিছু জিনি
মাতার অঞ্চ সহিতে পারেন নাই।
কুমার কাতর হইলেন, কিছু মুদ্ধে না
পোলে নহে।—বলিলেন,

"কি স্থপ ভূঞিব यङ निन नाहि छादत मः शति मः आदि ! আক্রমিলে হুতাশন কে ঘুমার ঘরে ? विथां ज्ञांकमकूल, त्व देवजा नद्र-वाम विज्वान (पवि! (इन कूल कानि पिव कि त्राघटव निदक, नामि या त्रावि रैक्षि ९ कि कहिट छिनिटन ध कथा माजामर मञ्द्रकद्व मन ? तथी यक बाजून ? शिनिटव विश्व ! व्यादमभ मादैनदन যাইব সমরে মাতঃ, নাশিব রাঘ্বে ! **७** र ७ न क्चनिष्ट विश्वम वरन। (शाहाहेन विভावती। शुक्त हेहेरसद्द, ছ্ৰ্বৰ্ষ রাক্ষ্য দলে পশিব সময়ে षाभन मन्दित (पित्, यांश्व किति अद्य। ত্রায় আসিয়া আমি পুলিব ৰত্বে ७ भनताकी वयूना, ममत्रविक्यी। পাইয়াছি পিতৃ আজা, দেহ আজা তুমি! क जाँदिव मारम, एवि, जूमि जानी विरन।"

धनित्र क्रिक्त क्रिक्त मध्य क्रिक्त निर्मात थन क्रिक्त क्रिक्त मध्यम क्रिक्त क्रिक्त

कूक्षवनशीएक, क्यांटबब निर्धाकक एहे-য়াছে। প্রমীশা তথনও নিফ্রিভা।--''প্रমীলার করপায়, করপায়ে ধরি त्रथीक मधुत्र चरत्र, शांत्ररत्र रयमि निनोत्र कारन जनि करह एअतिया **ट्यामित तस्मा कथा, किला (बामद्रा** চুষি निभी गिष्ठ जाँथि) "ডाकिए कुष्मान, হৈমবতী উষা তুমি, রূপসি, ভোমারে शाशिक्त ! जीन थिएत, कमन ताहन ! **डिठ हितानम त्यात ! ऋर्याकाळम्**नि সম এ পরাণকাতে; তুমি রবিচ্ছবি;— **८७८कारीन जामि, जूमि मूलिटन नयन।** ভাগ্য বৃক্ষে ফলোভ্ৰম তৃমি হে ভগভে আমার ! নয়নতারা ! মহার্ছ রতন। किठि (मथ, मनीयूथि, (कमत्न क्षिएस, চুরী করি কান্তি তব মঞ্জু কুঞ্জবলে কুসুন !

वारात्र,—ज्थन धारीनात्र निजाजन हरेत्राटल—

"পোহাইল এতক্ষণে তিমির সর্বরী; তা না হলে ফুটিতে কি তুমি ক্মলিনী, জুড়াতে এ চকুদর !"

थमीलाटक, त्रटकामशिषी देखिकिटकत्त मटक यखानाटत यादेटक निटलन ना। भूटलित वित्रदर, भूखवधूत मूथ एवित्राक्ष जश्रश्वान मोजन कतिट्यन! जबू खमीला जात वक्यात चामीटक निर्काटन ना एमिया बाकिटक भातिटलन ना। दमचनाक ''भीदत शेटन,"

"क्सम विवृष्ठ भट्य यख्यभानामृत्य" यादेटणक्रिनन्। "भीद्र थीद्रम," दक्न मा

व्यवित्री शक्ष्यम । दानिया नेदबक्क क्रम वाक्षारम बाधि वेकी बहानना ्राध्यभीनादव ।'' 🦠

देखिवर्डन (क्वछकि,—डाहाद वर्ष উत्तक । विकृष्टिणा स्टाशास्त्र किनि किट्ठित চরিত্র অনক সৌন্ধ্যময়! शास्त्र यश्च ।--- दणवदेवश्चान व मणदोस्त आविष्ट् क दहेशा वत्र किर्वन, कथा चार्ट। जनम नगरम मन्दर मन्दर यक्षशिद्ध अध्यम क्रिरमम्। पूजान सम्रताकीणने कविषा प्रिशिष्टणन पृष्टि कित्रभंदर समार्थन ।--किस हमन्यान की-হার অট্য ক্তি;—

अगोडीरकः खनिम भूत क्रुडाक्षिभूकिः किया।"

আবার যথন মৃতিমান্ অন্যায় সুম্বেদ कटन देशनगरि किल्पनात नतान, क्रांन (इक्षिकाण बहेटले जाई यक प्राप्ति गारे, ज्यन डीहाटक (४४ । जयनक (४२ होत छोहात छिष् प्रदेश। निष्यत भारभत कटन ज भाषि रहेन देहारे छैदात शामना रहेन, ज्यानि विश्वाजात नाम-भागरम महम्बद्ध स्थित ना

'देन ठाकूनमन देखा प्रशिष्ठ मध्यादय मबिद्ध कि एकांत्र बांदक ? कि भारम विश्वाका विदलन अ छान पारम, त्यिक दक्षकार्म 💅 ं निक्षिणा वक्कांशारतप त्यहे जनुस्य लाम्य उद्देश कविष्ठ नाविष्य छन्

वाजिएकिन। क्षमा मगरम, "महमा स्भूतभावि भाविम भाषादक । जामना चानि दम जःभ क्विमा चाना-कित-পतिक्षिमत्री, धोवतीत्र काटन नीत क्षाद्य ज्ञान जकत्त्र मूजिन जाटक। अश्मादेत याका किंद्र भविख, याका कि हु॰ डेबड, बाहा किहू खनाइ त्मारे डेभकत्र (वह रेखि विष्य (ब्रिन्) श्रम हिन्द एडे हरे-बाह्य। त्रीन्यर्ग नरेबारे कावा ;—हेख-त्म खन्त्र यादात्र तम यमि भाष्ट्रदत्र महाकू-**कुडि काक्र्य ना क**ब्रिट्न, जटन मानव-शप्राप्त महत्व कि ? छाई यथन निकृष्टिना যজাগারে, আত্মভিমানমাত্র সহায় कतिया जगहाय, निर्कीक देखिक जाय-**চরিত্রের সর্ক্বিঞ্ বীরদর্শ দেখাই**য়া আয়ুন মৃত্যুকে উপহাস করে, তথন

षांयारमत विषयात्र मीया थारक ना।

(मर्वाफिंगरक्७ काम नार्ग ना;—

छै। हारमञ्जू कार्या काश्रुक्र एवत नाम विवास

(वांस इम : मकल जुलिया श्वा कतिएक

रेष्ट्रा एव: -- भ्यानात्मक वीव मर्भः

(म চরিতের অতুলিভ সৌন্দর্য। क्रामाष्ट्रवेष रमधनाम्बद्ध श्रीकृतक यत्न जानम रम।--यत्न रम जग्र थिनी मीजात উद्यादत्रत ज्या चात्र वर्ष विणय नारे! किख '(ययनाम वध कारवात' त्यवनारमञ्ज्ञारक दक हरकत - जन मन्त्र कतिए भारत है 'कानात्र मुक्ता १ टम जाराम कि। स्रामात्रक लाठ-कारम (य कथा ७ मरमहे सम मा! ८म-व्यवाहि - (या ४, ८न इ.११५ नहां स्कृति

टकरण ' रममनाम यथ' भाठकारमाई सम् । वहेन्ना महीर्गाठात कल । 'खेनाक कारम हेहात अर्थ कि १

भारेनाम्। य मराविध कृष्ण भारत विश्व ं नियमिष्ठ मश्वमिष्ठ रय, ज्ञार्जन जविक्रम " দ্বাজ্যসূত্র ধ্বংস করিয়াছিল, ভাহার বীজ ভাহাদেরই অমুবর্ত্তন করে। সনের উপ্ত করিয়াছিল কে ? দাবণ! ভাছার মাধাকর্ষণ কি, আজি জানিনা, ঠিক্ ब्रुष्ट इंडेक, रम्बे ज नामायूग्ज। किछ क्टक्त्र (काट्य कटना बदन दकन ? नर्स-अंशिया त्यचनाम शिकृद्दमारम अक्षरम, कार्यकारक मित्रन (कन ?

' প্রবাদে যথা মলৌছঃথে ময়ে व्यवानी जानज्ञकारण ना रहति नशुर्ध দেহপাত্র তার যত—পিতা মাতা ভাতা चर्नका जनकात्र।"

তाই विनिত्धिनाम (य এডकार मूर्वि আলোক দেখিতে পাইলাম। নিভান দোষে পুত্ৰ নত হয়, ইহা পুদাণ কথা; किन देश देश 'रमचनामयथ कार्यात्र' वीन, महिट्न (यथनान्दक मक्न श्राट्य व्याधात्र कत्रिया शिष्यात व्यना त्कान खेर्णना मारे। চিরাচরিত সংকারত্যোতের বিপ-त्रीरक कावाजत्री कामाहेदात नहिएन कारा वर्ध गाहे।

धक कथात्र वृक्षार्ट ए एडी कतिनाम यटि क्षि कथाठा त्वांध कति शतिकात रहेन नां। जाबारणत वांश ७ जल-जगरजन काम वज महीन, जारे जामना कार्या ८व मीजि जेनरमण मिरज हारे ' তাহাও সাধারণতঃ সভীর ছইয়া পড়ে कार्यात्र मानि भवका या Poetice justice

बस्या निम क्रिम युविष्ठ भातिएउटह व <u>अक्र त्वार्थ हत्र व्यारमाक स्थितिक स्थ मक्रम निवय क्रक वर्श भौतिक,</u> कदिया दनिष्ठ भाति ना वर्षे, किन्द अमन षिन व्यक्तिरव, यथन छाद्या व्यात द्यांगत कथा थाकिट्व ना। एक छ छाउँ छानानी कवि अवन कदमक कथा मारवन, अमन चरनक छच बुवारेट एटडा करत्रन याश टिंगात जानात श्रात्रवात जारेटन कारक है ना शंगिरक हिन्दि (क्न ? . পিতার পোৰে পুজ নষ্ট হয়, ইহা আমা-रमत्र ८ मटा मन वित्र अविमाल किया कि ख धो। कि टक्चन कथात्र कथा नाज, ना किছू मठा देशाट बाएए। এर अमीम जनार ७ निषम जिप्न कथा नाहै। नामाना मीरावक्षा, ८व भट्यांशिव चार्विश गाथिया मुद्धार्ख मिलिया यात्र, ८ एरमम निष्ट्रिय व्यथितः व्यवस्य मृत्यः व्यनस्य পুরিষিত অমস্ত সৌর জগৎমগুলী তেম্মি नियम्बर ज्योम।-- नर्जक नियम ! जुर्भि कि ;--- नेत्रटक व ठीनटक कि कार्या किना-वुष रहेरण मिथिता गाथिल रख; श्रेयन बाजाम स्कूमान जन्दक धनाभानी इहेटल (मिश्टिम जार्थ विमर्ज्य कर ; ट्यामात भटन इम दर ध यक कविष्ठांत्र! कविष्ठांत्र हरेए शारक, किंद्र हैं को निषय । कए कथर कारात्रक यूपारभाषा करत्र मा ।" रेटान मकिविष्यं, यथम जाशम छाठां विषात

करत्र, जयन दिशंत अखवा भर्ष क्रिक्तांका-हें वना। संकृतिक ना।—माफ़ार्टल निम्न थान। विषवीक द्रांशन कृतिक ना; ভিচক্তের পদতলে মথিত হইয়া ষাইবে! কুশক্তিপ্রয়োগের কারণ হুইও না! विकान निका अहे कथा वरण ; देखिहामध जामात्र कार्यात्र कनरकाशी जूगि अका-व्यक्तिन वह महाख्य कीर्जन करत्र, "रम्बनाम नथ" कार्यात्र वीच जरे छय। (मोन्सर्गमात (मचनाम (मरक्रम ७ ७८० তোষার আমার আরাধা। সর্বজ্ঞ কবির वर्षे।—किंद्ध (य चर्चित्र मंक्ति इरका-चःभ श्वःभ कतिए जानित्राष्ट्रिन, जिनि देहारे नित्रम--रेहारे गछा! ध मरछात्र वाण्डिवात नारे।

भिक्डि धक, छदि अधि विधिन्न। य छन्ना-নক শক্তির উচ্ছাসে ব্রহ্মাণ্ডে প্রলয়কাল উপস্থিত হয়, ভাছার নাম অড়শক্তি; णात (व जममा भक्ति (द्रोमत्रोका शःम कत्रित्राष्ट्रिन, व्यक्ति क्रित्रा माओटका विध-बीब वर्गन कत्रिशांट्स, खादा जयः भक्ति!-শক্তি এক, তবে মূর্ত্তি বিভিন্ন। নামও विভिन्न!-- এक श्रानत्र, जाना विश्वव! তবে সাম্বনার কথা এই যে অন্তর্গতের **मक्टिविट्मद्यत्र वीम द्रांभन कत्रा माञ्** द्वत जात्रखत्र मधा। जड्मिक मब्द्र . एवमन किंदू चारह कि ना, चाच व अस्वा कारन जांश व्यक्तिणां इत नाहै। किंद र्य मिकिरे यम, अक्यांत्र विकाम हहेला चारात्र द्रा जगरा, जञ्जित्य। माधा कतात्र देशत छल्कातिया जात्मक किन-

नक्ष क्ष कि निष्य मिल्लि मा। भाव-নও। ভোমার হাই শক্তিতে, ভোমার° वःभन्नज्ञा छानिया याहेटव ।

आधुनिक देवळानिक अमृष्ठेवामीत्र ७ (सरे कथा। अकट्टे चूत्राहेमा कित्राहेमा অপূর্বা, অছুলা, মোহময় স্টি। সতা বুবিয়া দেও কথা এক। স্তরাং সতঃ ना रूडेक शत्रकः '(भघनांष्वध कावा' वामृष्टेवारमत्र मृष्ट्र चिविष्ठ धनी उ हरे-সেই চক্রে মথিত হইলেন। এ**জ**গতে সাছে। জগতের অধিকাংশ অমর কাব্যের वरे उपर (मक्षण ।

'रमचनांच वध कारवात्र' खानमन्न कवि विनिन्नोहि छ दम चफ् चन्न दन, चन्छ धामीना हित्र व कर्मक है। खन्न छन्न देन छिक् ব্দু গৎ বল ; সুইই এক শক্তির আধার। " তত্ত্ব লিহিত রাথিয়াছেল। সে গুলি স্বতঃ স্থার এবং লোকহিতকর। একণে আমরা যথাসাধা তাহা পরিক্ট কুরিতে প্রয়াস পাইব।

> रिय विनिमाहिन रिय छात्रछीत्र मभाज পক্ষাঘাত রোগগ্রন্ত, সে বান্তবিক ভাবিতে **लि** चित्राट्य। जागारतत नगाट्य जी श्रकः (यत माया कथन ছिल कि ना ठिक् वला यात्र ना। थाकित्ल छाहा (य वहकाल हहे एउ लाभ भारेबारक, जाहाट वफ मत्मर नारे। व्यार्ग धर्माभाष्ठ (मथ, यछ दक्षम क्वी कांकि गरेगा। कांगा (मथ, क्वी कांकिय প্রধান ধর্ম সভীত। ইহা গুরুতর বৈষ্মা। পবিত্রতা ইছ সংসারে সকল স্থাপর वाकतः - किस विशिष्ठी अकलत्रका •

त्राष्ट्र । यथन ভাবিয়া দেখি যে পবিত্ৰতার সাক্ষাৎ প্রতিমা সীতাচরিত্র আর্য্য নারী দমাজের আদর্শ এবং আমাদের গৃহে গৃহে त्म (मरीश्रलंड हिंदुक्तित्र जंडाव नारे, ज्थन मत्न इर्व विषादित जत्रक त्थल, वियम,— (कन ना छात्रा इहेटन मगाद्यत এ পকাঘাত রোগ বুঝি জন্মিত না। যে ধর্মের পরিণতিতে সামাজিক মঙ্গল गारे, তारा ठिक् धर्म नरह। फननित्र-পেক धर्माधर्म সংসার্বিরাগী সম্যাসীর কথা। দীতাচরিত্রের পবিত্রতা, পবি-ত্রভার একশেষ ! যে সমাজ জী পুরুষের সমবায়ে নির্শ্মিত, উভয়ের সহকারিতা যাহার প্রাণ তাহাতে ইহা একরূপ বিজ-ম্বনা। সীতাচরিত্র আমাদের জাতীয় গৌরব, কিন্ত ভাহার পরিণাম, গৌরব-विध्वः मकतः !

नीजाहिति निमाल ये ज्ञ छेरशामन कित्र ग्राह्म, लाकहिरेज्यो कित्र ग्रामन कित्र ग्राह्म, लाकहिरेज्यो कित्र ग्राह्म ग्राह्म हित्र ग्राह्म कित्र ग्राह्म नाहे। दकन मा त्म मकन कित्र ज्ञ कार्य कार्य ग्राह्म कित्र ज्ञाम ग्राह्म ग्राह्म विकार ज्ञास ग्राह्म ग्राह्म विकार ज्ञाह्म ग्राह्म विकार ग्राह्म ग्राह्म विकार ग्राह्म विकार ग्राह्म ग्राह्म विकार ग्राह्म ग्राह्म विकार ग्राह्म वित्र विकार ग्राह्म विकार विकार ग्राह्म वित्र ग्राह्म विकार ग्राह्म वित्र ग्राह्म विकार ग्राह्म

তাঁহার সহিত পরামর্শ না কুরিয়া কোন কাজ করেন না। আর একবার সে যত্ন र्रेशाहिन उद्ध भाटित। यिनि मन निश्रा তন্ত্র শাস্ত্রালোচনা করিয়াছেন তিনি প্রতি-পদে ইহা স্বীকার করিবেন। তন্ত্র-প্রচারের সময় দেশ বোধ হয় বড় বৈষ্ম্য-मय इरेम्राष्ट्रिम । भूक्ष मर्स्त मस्ता छी विणि (शिल (कर नहर। शंकांचों छ-গ্রস্ত, অধঃপতিত সমাজ আর চলে না। যে কেই আসিয়া—অসভ্য বা অর্দ্ধসভ্য (य (म व्यामिश्रा— ञजाहात करत ; ताजा হইয়া বসিতে যায়। তথন স্থিতিশীল ফল-বাদী ব্রাহ্মণকুলের চিরোর্বর মন্তিম আর স্থির থাকিতে পারিল না। তাহার ফলে ভন্তপাল্রের কুছক বিস্তৃত হইল। বুঝা গেল যে, দিনকতক স্থীচরিত্রের একটু বাড়াবাড়ি হইলে ক্ষতি নাই—শেষে वाधनिर मागा वाधित। भक्तिक्षिनी अञ्जल्लाना प्रशांत जात नृत्छ-मानिनी, कन्नानवमनी, इत्रहितिनानिनी कानिकात मूर्छि (पशिष्ट वीत शूक्र सब्छ আতম উপস্থিত হয় ৷ যাহা অনন্ত শক্তি (मर्व भातिम ना विनिया किन्न व देशां हि তল্পের দেবী মুহুর্ত্তে তাহা করিল। তল্প-শালে নারীচরিত্র অনেক সময়ে পুরুষ इहेटि ध्ववलठत्रः, कथन वा श्रुक्रायत ममान; शुक्रघाटशका शैन कथन नहर। ওডিনের Odin উপবর্গ অসভ্য ইয়্-(त्रां भी त्र भवरक मारम मिथा रे त्राहिल। বঙ্গভূমে তন্ত্ৰ শান্ত্ৰ, সামাজিক সাম্য व्यक्तरित जना वानीं उ रहेगा हिने।

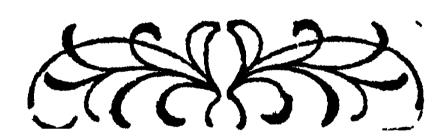
-

বেশনাধ বন কাৰা বন্ধ কিৰিছ হয়, তথন বৈশনাধে সংবেশাৰ পাশ্চাজ্য কানচচ বি উন্নতি আন্নত হইতেহিল। কানিজ বালানী বৃষক, হলমে যে সামা ভাষ ধানপ করিলেন, গৃহে তাহা পূর্ণ হইবার সভাবনা নাই। তাই অবভঠন-বতী ব্রীড়াসভূচিতা বলনারীকে প্রামীশার বেশে দেখিয়া ক্বতবিদ্য যুবক তথন নোহিত হইয়াছিলেন।

' অধরে ধরিলো মধু, গরল লোচনে আমরা; নাছিকি বল এ ভ্রম্ণালে ?'' বড় মধুর, বড় ভাববাঞ্জক আর বড় সাম্যসংস্থাপক। যথন পড়ি যভবার পড়ি, মিষ্ট লাগে! প্রথমে বৃঝি আম্মে মিষ্ট লাগিরাছিল। গার্শনিকপ্রবর জন্ ইুরা-উমিল জীজাভির সাম্য প্রতিপাদন ক্রিয়া প্রবন্ধ লিখিরাছেন;—আর व्यामाद्यम मभूषमम 'अमीमा' छतिय एहि क्रियोट्सम। উष्टबना উष्टब्रहे अक।

শেষ। ইহা ইপ্রশিভের মত বীর্থমর।
এই প্রবন্ধে আমরা ইপ্রশিভের চরিত্র
লবিশেষ আলোচলা করিরাছি;—প্রমীলাচরিত্র সন্ধান করিরাছি;—প্রমীলাচরিত্র সন্ধান করিরা প্রবন্ধ বিস্তৃত্ত
করিতে চাহিনা। তবে সে চরিত্র বে
ইক্রেজিডের মত বীর্থমর তাহা কেহ বোধ হয় অস্বীকার করিবেন না। এই
চরিত্রসাম্য, এই রাক্ষণ দক্ষতীর অত্ন মোহ ময় (প্রেমের কারণ। যাহারা সাম্যকে প্রেমের কারণ। যাহারা সাম্যকে প্রেমের কারণ বলিতে প্রস্তৃত নহেন, একথাটা তাহারা একবার ভাবিরা দেখিষেন।

এি এশিচন্দ্র মজুমদার।



युल्तत ভाषा।

3

সমস্ত দিন পৃথিবী দথ করিরা নির্ভুর রবি নিজেল হইরা অন্তাচলে চলিয়া পড়িরাছে। অগ্নিমর জ্যোতি অয়ে অয়ে প্রথরতা হারাইয়া অনির্দাচনীর মারুর্ব্যে পরিণত হইরাছে। জ্যোতির বর্ণ স্থবর্ণ-নিশ্বিত। স্বর্ণ-নিশ্বিত জ্যোতি ঈবং শ্রির- মাণ, যেন যোড়শীর অ্লর উজ্জল চক্ষে
ভ্রমরক্তক ভ্রম্পলের ছারা পড়িরাছে।
ভাকাশ এবং পৃথিবী হাস্যমর। সেই
হাসিতে ফুলগাছে ফুলের কুঁড়ি একটি
একটি করিরা লেখা লিভেছে। বর্গ
মর্ভ্যের হাসিতে ফুলের জন্ম। ফুলের
কুঁড়ে ক্রিখের হাসির উচ্ছাস—বিখের
হাসিক্ষাকার মূর্তি।

मनिम रहेश जामिएकरह । जटन जटन क्रामत कृष्टिश्वाम के मामन जायबार मास्य मि जिल्ला पाय मा, मुकारेबा भिक्टिल्हा अथन जांत्र मि वृशिष्ठ भारत ना। माञ्च क्विन मिरे श्रानिम (कार्याणिक नारे-व्यथन नव वहकात। वंदन त्म कूँ विश्वनित्र (का-क्षात्र कि इटेटफर्ड कि विनाद ? कि वे राथ चाकारण धकि धकि कत्रिया क्छ नक्क कृष्टिया পড়িয়াছে, जात के गार्य क्न मित्रा এত गूछ। পृथि-नक्षजानित्र मर्था ठक्षीत है। प निर्मान, भीजन, समध्य, भविक हीनि होनिटिए । णात्र मीर्फ पृथिवीर७ निर्माल, भीठल, कृष्टिए प्रिथ, किस रक्मन कतित्रा অসংখ্য ফুল ফুটিরা নির্মাল, শীতল, বলি ভুমি বিখের প্রতিভার কীর্তি। অমধুর, পবিত্র হাসি হাসিতেছে। **७४म जान ८७ क्ॅिं** नारे। ७४न जर रक्मन क्रिया कुँ ए क्रिया कून रहेन (क विनिद्धः । एक कृषिद्धः । ध त्रह्छ (छम कता काहात माशा । व तक्ना (कर कथन एक कतिएक भारत नारे। বিভীয় হগো বিশিষ্ঠ হইয়া বলিয়া-(इन :--

"But yesterday she was a child, today she is an incomprehensible " Woman,"

स्र्वात्र विक्षिणकात्री वालाक पर हटलक संस्थानी पारमांक धरे वरे तक्य जांट्याटकत यशावली जक-भेदिन क्षिक कृषि कृषिना क्न रम। दमहे जबकादमम मदश दकाम

जारम जारम के समामिक स्वाधिक मिल मिल स्थानरम, मिलर्फ, मिलर्फ कारन क्रमा कुँ कि क्रोहिया (सन्ना শক্তির কার্যা দেখিয়া চনৎক্ত হয়: चात्र चाननाटक চরিতার্থ মনে করে। रेहारे कृत कृषियांत्र व्यवानी। थ्यनानी मासूरमञ वृद्धित घडीड वनिमाई वीटक माञ्च मूध—क्षारत्रत **धवर श्राञ्चित्र कार्या।** कून, ट्यांगांटक স্মধ্র, পবিত্র আলোকরাশির মধ্যে কোট তাহা বুঝিতে পারি না। তাই-ভোষার মডন রহস্য, ভোষার মডন कारा, टामात्र मजन मृषा श्थिरीएक जांत्र जाट्य कि 🏞

> **जावात, क्न, जूमि वित्यंत्र श्रमद्वत्र** ক্রি। সেই মধ্যাহ্ন রবির প্রথর भागन गरम कन्न रमि। जारभन भनि-मान नाहे। मानि উত্তপ্ত हहेन्रा উত্তপ্ত क टोट्डब नाव न्थर्भियां व्यर्भिकावी ब स्ख्या (यम मध कतिया (यः गिट्ड ए कृशांत जागांत्र (य मकल १७ १की মাঠের উপর বিচরণ করিতেছিল ভাহার जात (मरे जारीयर जूमियर जारीत विष्-बन कतिएक ना श्रीतिया एक ह जुलकायां म **(कर दक्षणाशांव निवाणांव প্रতিমূর্তিব** नाम मूग्र्वर विनमा चाट्ट वा भन्न कत्रिया तश्तिराष्ट्र । ध्यमन कि एईई भृशांन कूक्त धवर वात्रमणन काषात्र मुक्रारेज्ञाः

পড়িয়াছে তাহার ঠিকানা নাই। নদ হইরা সক্তজ্ঞচিতে, মুগ্ধান্তঃকরণে नही, তড়াগু পুস্করিণীর বারিরাশি এমনই উত্তপ্ত হইয়াছে যে ভৃষাৰ্ক্ত পৰিক ভ্ঞায় ছট্ফট্ করিতেছে তথাপি এক भेषुष कल लहेशा भान कतिएक माहम করিতেছে না এবং মৎস্য কুন্তীর প্রভৃতি জলক্রীড়া আহারাম্বেষণ **ज**मधस्त्री । প্রভৃতি কার্যা করিতে অসমর্থ হইয়া বারিরাশির নিয়তম প্রচেদশে পক্ষের मर्था मूथ लूकारेया रकान मर्ड श्रीव-পরিত্যাগ করিয়া রবির উত্তাপে মৃতবৎ রোগীর ন্যায় ঘরের ভিতর পড়িয়া জनित्रा यारेटल्हा जात করিয়া দেখিতে পারি না—আর সহতে পারি ना—आंत्र विषया कानाहेट भाति ना। काशारकरे वा जानारेव ? मकरनरे ज আমার মতন পুড়িয়া যাইতেছে। বিশ্ব-**अ**क्टि कठिन निर्धुत मः हात्र मृर्क्टि धात्र । করিয়াছে। যেন ত্রহ্মাণ্ডের কোথাও কণা-यां पदा नारे, कुणा नारे, कक्षणा नारे! मठारे कि बकार ए कक्ना नारे ? मठारे कि बकार७ इमग्र नारे। आरह देव कि। ঐ দেখ সেই প্রথম রবি এখন অভাচলে মৃতবৎ পড়িয়া রহিয়াছে। বিশশক্তি বিখের ক্লেশে কাতর হইয়। ध्यंन विष्यंत्र ममख यञ्जन। मृत कतिएछ-८एन। के एएथ जारीय विश्व व्यवन विश्र मिक्त कन्नगान निश्रादम अनुआविष्ठ

গদ্গদ ভাবে বিখের হৃদয়ে ভূবিয়া পড়িতেছে। চারি দিকে শীতণ মধুর वाशु विरुष्टि । निःभक्ति निष्ठक-ভাবে পৃথিবীর বারি-রাশি স্থমধুর• ञ्चीजन चारम निग्निश्च मधूमम, माधूर्या-मय कतिया जूनि ज्हा वृक्त, नजा, কোমল তৃণ হইতে কি এক অমুপম कन्ननाजीज मधुनिमा निर्गज दरेएजहा অমুপ্রাণিত জীববুন্দের প্রাণের প্রাণ রকা করিতেছে। মাহ্য সকল কর্ম হইতে कি এক অপূর্ক রসের লহরী निः एड रहेए एह। अहे ममछ मधुत्र छ। र्हेया, व्यान्डरम् छोड रहेमा ऋष्याम ह्यूथीन है। एमन निर्मान, स्नीडन, स्मधून চন্দ্রকায় মিশিয়া যাইডেছে। আর त्रिशिष्ट्र। আকাশ এবং পৃথিবী ধু ধু সেই মুগ্ধ চক্তিকার প্রাণের প্রাণ ফুলরূপে ফুটিয়া পড়িতেছে। সেই বিখের হাদয়রাপ ফুলের নেশায় মাহ্ব ভোর रहेशा উঠিতেছে। गाञ्च नव ज्लिशा, সব ছাড়িয়া সেই ফুলের ভিতর গলিয়া যাইতেছে। ফুল রদে ভরিয়া উঠিতেছে। অনন্ত আকাশ সমস্ত वाणि (मरे (कामन क्रन (कामन স্থা ঢালিয়া দিতেছে। কোমল উষা-कारन कूछ कूधार्ख लगत, कूछ कूधार्ख मधु मिकका बाँदिक बाँदिक व्यानिया रिशे कतिया भतिज्थ रहेया यारेट एए। प्रा, ध कशरू कूरज्य निभिष्ठ काहार्या छपर्य ञ्था नारे, दक्वम ट्यामात पाट्। कृषि यथार्थ वित्यंत्र समस्यत समग्र! তোমার হদবের গুণে তুমি রাজার উদ্যা

मतिल क्षंटकत त्रामग्रस्ट त्राभिति ना नित्न के द्र क्रूस मिक्कि जियात क्यां । जियाक किवन करिक्रियां ती नन्नानी-मन्न बाड, दनवक्रम, नन्नक्रम • প্রভৃতি গোটাকত[ী] গাছে দেখিতে পাই ना: धवर वृक्ष ७ रिच्छरनात नाम বহুলোকাশ্রয় বট, অখণ প্রভৃতি হুই **हात्रिया शाह्य (मिथिएक शाहे ना । किन्छ** ঐ সকল গাছের অন্তর খুঁ জিলে ভোমাকে

नक्ष र्याप्टे विषया ? তা ত छानि। क्रियाहि, ७४न ত তোমাকে छয়ে छङ् ভোমার कि मांछ? তুমি कि জনা কোট? তোমার সেই স্বাভাবিক লজাশীল, আমি তোমাকে অনেকবার জিজ্ঞাসা করিয়াছি। সন্ধ্যার আধঃছায়া वाथ-कालाक बिछामा कविशाहि। গভীর নিশীথে অনস্ত আকাশের দিব্য मिया, जनक नक्ज-दाकित मिया मिया, जनस পণের পথিক চন্দ্রের দিব্য দিয়া জিজাসা করিয়াছি। নিশাবসানে উদয়া-চলস্থ রাগরণী স্থামগুলের দিকে চাरिया, मতा कथा ना वनित्न के ज्ञाब-পর্মা ভোমাকে পোড়াইরা মারিবে, এই রূপ ভন্ন দেখাইয়া ভোমাকে বিজ্ঞাসা कत्रियाहि। किन्छ जूमि जामारक रकान **উखत्र माख मार्ट।** ट्यामाटक कछ खत ন্ততি করিয়াছি, কত খোসামোদ করি-রাছি, কভ ভিরস্বার করিরাছি। কিছ • তুमि जामारक रकान উত্তর দাও नाहै। কেবল একটিবার মাত্র যথন তোমাকে

त्मध (कांहे, गृंहत्यत श्रांकत्व रकांहे, जग (मधारेमा विनिन्नांक्तिमार्ग (य. छेखत বুকের অমৃত পান করিতেছে, ঐটিকে मातिया एक निव, जथन वाकून इहेया তুমি আমাকে বলিয়াছিলে—আপনি কি বলিতেছেন আমি বুঝিতে পারি-তেছি ना। তाই জিজাসা করি, উত্তর দিতে তোমার এত অনিচ্ছা কেন? উত্তর দিতে কি তোমার ভর দেখিতে পাই কি না বলিতে পারি না। হয় ? তা ত নয়। যখন তোমাকে কুল, তুমি ফোট কেন? আকাশে পোড়াইবার ভয় দেখাইয়া জিজাসা বিনয়নম, প্রাফুলতাময় মুথধানি বই আর किह्रे (पिथ नारे? कान किन किन वित्रा थारकन य जूमि का दिकन, ना कृषियारे टामात्र स्थ। किन्छ त्म कथां ि जांगांत्र मत्न लात्भ ना। त्म কথায় আমি তোমার হৃদয়ের তত্ত্ব পাই ना। ফুটিয়াই যদি তুমি স্থী হইতে, তাহা হইলে তোমার মুখেই ত সে কথা শুনিতে পাইতাম। যার ফুটিয়াই স্থ সে ত আপনার শক্তি, আপনার তেজ আপনি বুঝে; সেত আপনার তেজে আপনি ভেজস্বী, আপনার ভেজে আপনি ফাটিয়া পড়ে; সে ত আপনার স্থথের মেশায় আপনি উন্মন্ত; সেত আপ-নার মদে আপনি মন্ত; সেত ফুর্তি-भीन, बांठान, मांखिक। (म उ खर्व जुष्टे इय, स्थ नात्भन छ एवं भक्त निक्षे

इट्टि भनीत्रक करका किन्द्र ट्यामात्र **छ (म तक्स धाक्क विकास । क्रिम हास्त्र** भी छन, ज्यांगर चारनारक छेगछ एव मा, जाबात क्षेत्रक त्रवित विश्वनश्चकांकी त्रिशिष्ट व्यक्ति द्यामात्र कृति द्वापन व्यक्तिक পাতিয়া দাও, সে বৃক্টুকু সে অহিতে পুড়িরা গেলেও ভূমি ছঃৰিত নও। ভবে, क्न, क्रि कार्वे क्नि १ क्रि व क्थांक **উन्তर किरव ना छा नानि। वृक्टिक** जुमि ज कथात्र जर्ब जान ना,— (कमन করিয়া উত্তর দ্বিত্ব ? কিন্ত ভোষাকে मिथिता विश्वकाश य त्रकम द्वर्षी, जूमि रयमन जकाजरत कि दए कि रहाते, कि वृह्द कि कुछ मकगरकरे मधान जाहरत ट्यांगात शहरतत श्था जानता विश्वा পরিভৃগ্ড কর, তুমি যে রক্ম করিয়া मक्जृमिक्छ होगामन कतिया ट्यान, जूनि दियन जकालदा जाननात्र दिनामन काम (পাড़ाইमा किनिक्त भाम, कारा ভাবিলে निक्त इ ব্বিভে পারি যে সুটিয়া दिणामात्र द्वप नव, क्षेरिवारे दिणामात्र त्रया जूमि यत्रः ध क्या विगटिव ना छ। यानि, बनिए गांत्रिय ना छ। यानि, (कन ना क्षेत्रियारे यारात्र प्रथ, (मरे बगर्ड मस्९, (म बापनारक व्यानि बादन ना त्म मुठाय किय यात्रिया (कांगल कांगिन कृष्टिक शाद्र ना। यून, ध कशक कृतान क्वन ভোমারি ধর্ম, ভোমারি কর্ম, ভোমারি ब्रञ् । जूमिर्दे ध जगर ब्रक्षा क्रिएक, ত्विहे ज नगरकत जान। ত्वि ग्विशे-ऋर्ण चर्ग !

ভাই বুঝি, ফুল, ভুনি চিরকাল ভাব-ज्ञा वर्ग (कह कथन वृशिन ना ; वर्ग **जित्रकान्य कार्यक्र कार्यात्र**ा कृत, ट्यांगारकक क्रिक कर्म कार्यक काता द्विल माः " कृषि वित्रकालहे • ভাৰময়—ভাবেদ ভাঙার। **अगन कार नारे गहा कारा**क (म्बिट्ड शारे मा। शासीया वन, अक्ता वन, नक्षा वन, नकानीनडा रग, गरगडा रग, উद्याग रग, भाक यम, वियोग यम, विभव वम, ठभगछ। वन, मरकाठ वन, मकनरे (ভाষাতে प्रिविष्ठ शाहे। प्रिविष्ठ शाहे वर्षे, कि एकमन कतिया नुकारेए दय छारा কেমন করিয়াই বা षानि न। বুঝাইব ? তোমাতে যথন যে ভার (मिथ, जपन (नरे जाद कांत्र रहेता यारे, ज्यन नमछ बगर (मरे छार ভোর বলিয়া অহুভুত হয়। তবে (कमन कतिया दुवारे ? जान दुवारे गरे वा व्विद्य (क । मक्रान्टे क जामात মতন তোমার ভাবে ভোর। তুমি কুদ্র ফুল, তোমার শক্তি অসীম। (यथारन जूमि, रमधारन जांत्र किहूरे-थाकिएड भारत नां, रमधारन मवरे कृषि। কুত্র ফুল, তুমি অমোঘ মন্ত্র। তোমার ভাবরূপ নিখালে, সক্ষাই গলিয়া ভাবমন रहेना यात्र। পাথরের পাহাড়ে ভুমি হাসিলে পাধরের পাহাড়ও হাসির পাহাড विनिन्ना (वाध इन । कून, जूमिरे श्विवीत काटबन होए। क्रिके श्विवीटक चारक्री मड!

श्चमत्र धन्द्रशिन्धा। अभर्ष भोना- श्रनत। एटन कि, क्न, जूबि मोत्राजत र्यात्र एषा एषि । य मिरक किति यहरे । एल इस्तत । कारे वा कारत कित्रता लिटकरे. (जोन्मर्या (मिथिटा शारे। केटर्क विता? कछ मून क्यांटि याहात (जोतक "চাহিয়া দেখি আকাশ লোক্যাময়। আবার আকাশ অপেকা উর্ভর প্রদেশ, यादा हत्य प्रिटिंग शारे ना, जादाव छावित्रा मिथिल मौन्यग्रमत्र, मोन्यर्गत छिरम विभागत्न हम। ध दमोन्मर्याम व्यर्थ कि? व भी क्या किरम स्म? जातक लाख हरेया विरे कथात. कछ वाजिम्गक छेखन मिन्नारहन। दक्र दक्र विवादहन, त्य वर्ग विष्ण त्यत्र नाम भीनार्यः स्वित्रा विवादहन-—वर्ष विट्णिय भागार्याक कांत्रन या . देशानान। यादारक रम वर्ग कार्ट्स कार्ट्स ञ्चत्र, याहाटल ८म वर्ग नारे लाहा चमत नम। मून ভোমাকে দেখিলে ত এ বুঝিরাছেন যে সৌন্দর্য্য চক্ষে দেখা যার कथा में जिया या विश्व वि ভোষাতে কোন্ वर्ग नाहे ?—नीन, भीक, হরিৎ, শ্বেড, যত বর্ণ আছে এবং যত त्रकरम त्मरे मकन चर्णन मः रयांग धनः मिल्रा प्रेंटिक शादि गक्गरे क कामारक चाह्। তবে কেমন করিয়া বলিব যে वर्ग विरमस्य ७०० (जीमर्ग ? जावांत्र (क्र (क्र व्शियाद्यन (य आकात्र विष्यदेव नाम (मोन्सर्ग-जाकाविष्यं ८मोन्दर्शत केशानान। किन्न, कून, তোমাকে দেখিলে একথাও ভ সভা विनिहां गटन इत्र ना। ट्यामात टकान ं निर्किट जाकात्र नारे, ट्यांगाटक ज्यानक षाकात्र (क्षित्रा थाकि। क्षि (काषाटक

कांत्र (गरे बनारे, कून, कूमि य बाकाद्य स्मिथ कूमि (जरे बाकाद्यरे नारे, किंद्ध (म मूल ७ समात्र। जारे विन, क्न, जूमि क्वन जाता ভাবের শুণে শ্রন্দর এবং লোন্দর্য। ध्यवः जूमि, कूप कून, जूमिरे बन्धरिक **धरे महाउच त्वारेशा (एउ (य चार्ज** এবং মৰ্ভো ৰাহা কিছু স্থশার আছে তাহা क्तिक कार्यत्र कर्णरे ज्ञान । जक्कन है : त्रांख कवि बगिषिशांख खाबग्रहम

It is a sigh made stone!

विनि ध कथा विनयाद्दन जिनि প্রকৃত সৌন্ধ্যতিত বুঝিয়াছেন।—ভিনি मा, क्वन ভাবের খোরে দেখিতে পাওয়া যার। তাই বলি, ভাই সকল, यि खन्तत हरेट ठाए, यि वर्गाउत व्यक्त जिन्दा उपरकान कतिए देख्क इन्ड, তবে ফুলের কাছে যাইন্ড, ফুল टायाटक निवारेना मिटव दय, त्योन्पर्या क्राल नारे, त्मीन्तर्ग ७८०; त्मीन्द्रग षाकादा नारे, गर्रान नारे, त्रांड नारे, भारा नारे, भागपा जादा। क्रान कारह धरे निका गरेश क्रान् छार्व **छत्रिया थाकिछ, दमन्दित द्यागारमञ** स्र्यंत्र मीमा नारे, जामात्त्र अमुडेठक जनस উन्नजिन भर्थ, जनस ज्यशास्त्रत मिरक प्रिया ग्रावेरल्ट ।

किछ मून, टामारक समन्नरभर मिस, ভাবরূপেই দেখি, আর সৌন্ধা-রূপেই দেখি তুমি যে কি রহস্য ভাহা ভ युविया छेठिएक शांत्रिना। (मथ, यथन সন্ধার মৃত্-মধ্র শোভার আরু**ট হই**রা ओ (एवालयमञ्चूथञ्च (भंशालिका-मृत्स উপবেশন করি, তথন আমার মুদ্র দেহের সামান্য সংঘর্ষে রাশি রাশি শেকালিকা বৃস্তচ্যুত হইয়া চারিদিক্ ছাইয়া ফেলে; অথবা বথন প্রাতঃ-कालित मधीवनी ममीत्रण উৎসাহিত हरेया शृह इरेड विर्गिष्ठ हरे, ज्थन •কেবল মাত্র আমার গমনজনিত বায়ু-मक्षानात के आजनभाषिक कामिनीवृक्तः হইতে কত কুদ্র কুদ্র কামিনীফুল ঝর ঝর করিয়া থসিয়া পড়ে। Ð पिरक छ प्रिचि, क्ल, जूमि धमनि कांत्रम, धमनि जमहिसू, धमनि ভঙ্গুর যে শুধু যেন একটু নিশাস গায় লাগিলে, ভালিয়া চুরিয়া কি এক ু রক্ষ হইয়া যাও। কিন্তু আবার ঐ मिथ मिथि ७थान जिमाक कि छिन्न প্রকৃতির দেখিতেছি। এ দেখ আদ यहात्रपूर्ण निषाच-वर्षिका छेठियाटह। অপরাহ্-রবি অদৃশ্য হইরাছে। আকাশ (मच-यूटक मश्कूक। जमश्ये। (मच-पेश्व ভীমরবে গর্জন করিতে করিতে অনন্ত व्याकात्मं अञ्चल्यदिक छाड़ना किश्री र्वज़िंहर्ल्ड : बक बक बाना त्यशं কুদ হইয়া অপ্র মেঘের প্রতি তীব্র क्रोक निर्क्ष क्रिटिह, जात समनि

मिभ्मिगस अनिमा উঠিতেছে विक्रे भारत हमकिया পড़िছেছে। সমু-मिहे कान घटन खेठख योग्टिकाथिङ ভীষণ তরজ সকল নভোমগুলছ মেঘ্-थए७त नाम भन्भत्रक छाएन। कति-তেছে এবং রাগে ফেণা ভাঙ্গিতে ভাঙ্গিতে গর্জন করিয়া চারি দিকে शांविত हरेटल्हा जाकार्म (मघ-शर्जन, नमूख তরজ গর্জন, আকাশ-দমুদ্রে याहिका-शब्दान, जात्र भिर्म नमस् भव्दान-त्राणि एछ म क्रिया विधिका-शकीत छेरकछे চীৎকার—যেন এই মহাপ্রলয়ের অস্ত-प्राम हरेए थानग्रम कि थानग्र जूर्ग ध्वनिज করিতেছে। এই মহাপ্রলয়ে পড়িয়া একধানা প্রকাণ্ড অর্ণব্যান খণ্ড খণ্ড रहेशा याहेट ७ ए । वर्ष वर्ष त्यांचा त्यांचा পাল তরসাঘাতে ছিড়িয়া কুটা কুটা रहेशा याहेट्टए, तफ तफ माखन छानिया কুদ্র কুদ্র ফলকাকারে ভাসিয়া চলি-शां हि। किन्न के एक किन कुन क्व কোথা হইতে আসিয়া ঐ ঝটকা-ভাড়িত ভীষণ ভরকোপরি অসীম সাহসে ভাসিয়া বেড়াইতেছে, প্রলয়যন্ত্রণা দেখিয়া ভিজিয়া উঠিয়াছে সত্য, কিন্তু একটাও পাণ্ড়ি খদে नारे, একটাও পাণ্ড় नत्त्र नारे! क्न, क् वान जूमि কোমল ? তুমি দৃঢ়তম অপেকা দৃঢ়! কে বলে তুমি অসহিষ্ণু তুমি সহিষ্ণুভাষ উচ্চতম আদর্শ! কে वरम তুমি जन-कृष्ठिङ ? जूमि मारुरमन,

অপেক। त्रमा এ अभर्ड आंत्र कि विश्वेगाह किह्रे व्विष्ठ, भाति छि बाह्य। जूनि देवभद्रीरजात बावात! नां, त्वियात्र कमणां नारे, रेष्टां अ **এই समा मास्य म्यांस्यत्र श्रात्र इटेट** मारे। **एक कि**डू न्लंडे प्रिशिष्ट "(कामनञ्जूष कवि जेवः जाहम महिकूछ। পाইডেছি না, यেन कि जक्यांना इहेग्रा এবং শক্তির আদর্শরাণী ধর্মবীর এবং গিয়াছি, যেন এই আবেশময় দুশ্যে कर्जनीत्र, উভদেরই শিল্পোপরি ফুলের মিশিয়া পিয়াছি। এই এক রকম হইয়া माना हाभादेना क्वांमलंडात्र এवः वीत्र- अफिया आहि जात्र कठ कि प्रिथिতिहि, ছের পুরস্বার করিয়া আসিতেছে। যে কত কি গুনিতেছি। গুনিতেছি, वीबद श्रद्ध मञ्जा ममोटक श्रूप्तकृष्ठ इहेवांब (यात्रा रूख, जाहांत्र ८० है। यंत्र। जानी-नकन इत्रं, वीत्रष्ट्रंदन क्ल ध्यमें ट्लामारमत्र निद्य भाषा भाषा !

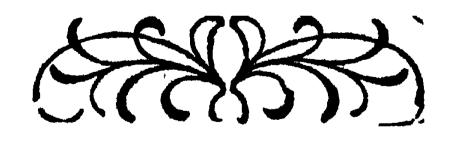
श्विष्ठीर्ग कामरन जक्तां-जभीत्रण भना মন্দ বহিতেছে। গাছের পাতা অল্ল অল্ল নিড়িভেছে। আকাশে নক্ত মিট্ মিট্ করিতেছে। হুই একথানা পাতলা । भागा भागा पाए जाएक जिल्हा याहे-ভেছে। সেই মেঘের ভিতর দিয়া এক রাশি ছায়ারূপী জ্যোৎসা একথানা षादिष्ममम बावत्रा बाकाण, शृशिवी, ' पिभिनंख ঢाकिया (फिनियार्छ। कांगरन

ভূমি বীরছের জীবন্ত শ্রতিমা। ভোমার ময়, মন আবেশময়, পৃথিবী আবেশময়। महाश्रुक्य এ जगर्ड श्रुक्ड हरेवांत्र कानन, श्थिवी, অनङम्ना ज्िशा এक যোগ্য, কেবল ভিনিই মাথান্ন ফুল অপূর্বা, অস্ফুট, স্থমধুর সঙ্গীভধ্বনি পরিতে পারেন। অভএব, ভারত- হইতেছে। সে সঙ্গীত কুদ্র তৃণ হইতে मस्रानगन, यमि তোমরাও মাথায় ফুল নির্গত হইতেছে, কত শত লতা হইতে: পরিতে চাও, ভবে দেহ, মন, প্রাণ নির্গত হইতেছে, কভ ছোট ছোট, भःकन्न कतिन्ना वाहार्ए श्रमरंत्रत कांग- कठ वफ़ वफ़ शाह हरेर्ड निर्श्ड हरे-नज-७८१ এবং बर्गाज्य कंपालिक एक एक मिनवामि इन्डि, कड প্রস্তুর কত পর্বত হইতে নির্গত হই-তেছে, ভুগৰ্ভ হইতে উৰ্নতম আকাশ काम कतिर्छिह, रखामार्गित्र रहें। रयंन इटेंर्ड निर्मेड इटेंर्डिह। रयन जून, লতা, পাতা, গাছ, পাথর পর্বত, खन, खनन मकरन माछित्रा धकचरत একতানে গাহিতেছে—আল আমরা गव এक रूरेमाहि, जांज जांगातित गर्धा हां उफ़ नारे, फेक नीह नारे, जाक षामत्रा विद्रांथणूना, विद्ययणूना, विकात-**म्ना, जांक** जांगता ठकू भारेगाहि, এक हरक नकल नकल व व व व व (पिशिष्टिकि, जांज जांगत्रा लांग शाहे-माहि, जांक जांगना जनउ उक्तारखन প্রাণে মিশিয়াছি। এই মোহকর সঙ্গীতে অসংখ্য ফুল ফুটিয়াছে। শরীর আবেশ- মজিতেছি -আর দেখিতেছি কত

चामतीती, हांत्रांताणी, निर्माण, ख्यात्र, হাস্যমন্ত্ৰ আসিতেছে, যাইতেছে, छेड़िटल्ट्स, छेडिटल्ट्स, नामिटल्ट्स, शत्र-স্পার স্থালিক্স করিতেছে, ফুলের ভিতর मुकारेट छर इ. क्रम मिरिक मिरिक दिश्म ঘুমাইরা পড়িতেছে। কভ শাস, अधीव, नवन, ভाবময় মূর্তি धीदा धीदा, অফুট সঙ্গীত ধ্বনি করিতে করিছে **भूना हरे** एंड नामिया कछ क्रलंब शोह বেষ্টন করিয়া গদ গদ ভাবে ফুল-ভোত্র গাহিতেছে আর ফুল তুলিয়া ফুলকে অঞ্চলি পুরিয়া উপহার দিতেছে। এক **धक्री भविज (मा। स्त्रामम मूर्खि चारछ** আত্তে ফুলের কাছে আসিয়া কি জিজাসা. कतिरण्डा चात्र कि जानि कि छनित्रा छन्नारम উग्राख हरेना जमीम मृत्ना छिन्ना। बाईटिएह, धरः नियम मध्य नामित्रा व्यावक्ष मृष्टि थुनिवा क्निगिक वनिष्ठिष्ट— **এই गও** তোমার সাধের রুণগ্রহ **गও**। তথন সেই সব স্বপ্নমন্ন মূর্ত্তি সেই অপুর্বা चार्यमग्र भून-कानत्न मं। ए। रेश वर-স্বরে এক তানে এক অশুতপূর্ব মূল-च्छाज পড়িया नगर्स गाहिया डेठिन;—

Over hill, over dale,
Thorough bush, thorough brier,
Over park, over pale,
Thorough flood, thorough fire,
We do wander everywhere,
Swifter than the moones sphere.

शांन छनित्रा आगांत চमक इहेन। भामि वृक्षिमाम (य अरे मकन महाशुक्रव स्गरक कडानांत्र हत्क कडानामत्र किथा जनस्मिकि गांध कतिशाष्ट्र, तांश (व्यापि বিবৰ্জিভ হইয়া, 'প্ৰেম-বলে এক-প্ৰাণ্ शिवाद्य, धवः **ट्ट्र**ा এক-আত্মা প্রতিভাবলে এই অসম্পূর্ণ জগতে **धक अर्थ्य आमर्ग जगर शामन कति-**য়াছে। অতএব, ভাই সকল, তোমরা क्लदक खधू छनत्र वा छाव वा दमोन्नधा कर्प (मिथ्रा कांच हहेल ना। जारा इहेटल फ्रलब मन्जूर्व मिक्तित क्रिकाती रहेट भातित्व ना। टायता क्रारक कमनात চকে দেখিও তাহা হইলে ফুল रहेट जनस मिक मास क्रिय वरः रय जगर अथन छधु कन्ननाम बिह्माह मछा मछाहे (महे जगद स्ट्रीड क्रिड नातित्र ।



वानीं कित अग्न। *

বঙ্গদৰ্শনে যে সকল প্ৰবন্ধ প্ৰকাশিত स्य, श्नम् फिछ च्टेरण छाहा रक्षम्पत সমাপোচিত হইয়া থাকে না। "वाकी-कित्र अत्र" किश्रमः एन रजमर्भन ध्वका-শিত হইয়াছিল কিন্তু গ্রন্থের অধিকাংশই वन्नपर्यत्न वाहित्र इत्र नाहे। छेहात्र (य **जर्म क्रामिल इर्गिह्न, लाहा** अ विरम्बक्राल পরিবর্তিত হইয়া পুনমুদ্রিত হইয়াছে। এ অবস্থায়, আমার সমা-লোচ্য গ্ৰন্থ বলদৰ্শনে প্ৰকাশিত হইয়া-हिन विनिन्ना चौकात्र कतिए भाति ना। অতএব পাঠক যদি অনুমতি করেন, তবে ইহার সমালোচনার প্রবৃত্ত হই। পারিব। গ্রন্থকার নিজে টাইটেল পেজে সম্পাদকের অমুমতি পাইরাছি।

ष्ट्रः थ्यत्र विषय्, जमारणाजना जात्र कत्रिया, जामि विनया छेठिएक পারিতেছি ना, ८य এখাनि कान (अगित्र अह। हेरा পদ্যে निधिज नर्ट, खुजबार नमालाहक मच्छानात्र हेशांदक कावर विनद्दन ना । हेरा नाठक नरह जामि निष्ठि जानि, किम ना देश कर्णाशक्षांन विश्व नरहा रेश्राक नर्यम् विनाय भाविनाम ना, (कन ना देशांट नात्रक नारे, नात्रिका नारे, जानवात्रा भारे, टकाउतिश नारे, विवाह नाहे, नूरका ठूबि मात्रामाति भूरना भूनि किष्ट्र नारे। रेहाटण विश्व विश्वामित्वत्र

कथा चाट्ह—किख भूतांव नट्ट—मिधि-जरत्रत्र कथा जाहि, किंच रेजिराम नहि। धक्रो श्रष्टित विवत्न चाह्य किन्न विद्यान नरह; नक्ष्वनीशतिकात्र कथा चारह, किन्द ब्लां जिय नरह : मनुशां क शशु कत्रिवात कथा ब्लाइ, ब्लथ्ड "Origin of species" নহে। হরপ্রসাদ শাস্ত্রী নিশ্চিত একটা কিন্তুত কিমাকার পদা-র্থের স্থষ্ট করিয়াছেন।

ভাল, গ্রন্থের ভাতিনির্বাচন করিতে না পারি, একরকম পরিচয় এক প্রকার পরিচয় দিবার চেষ্টা কন্থি-याद्भा । निथियाद्भा, "The Three Forces, Physical Intellectual and Moral." देशदाक छायात भाषा कतिः তেছি, यमि ইহার কিছু বুঝিয়া থাকি। Force ज किছ (मिलांग ना, (मिलांग কেবল ভিনটি বিরাটমূর্ত্তি—বশিষ্ঠ, বিশ্বা-मिक, वान्तीकि! यनि वन এই छिन्छिह আযার Force, আযার উত্তর, তোমার Force नहेशा गनाजरन (ফनिया माछ. णामि এই जिम्खित छेभामना कतिवः। ट्यांत्र यानवरमवी व्यर्भका व्यामात पूर्वाठाकूत्रांनी अप्तक छान । प्रवाठाकूत्रा-

[&]quot; বাল্মীকির জয়। ভীহরপ্রসাদ শান্ত্রী এম, এ প্রণীত। কলিকাতা, ১৭ নং खरानी हत्र भ एखत (लन; त्रांत्र यद्य मूजिछ। म्ला॥ व्याना।

ণীকে গড়িচে পারি, তাই পূজা করিতে পারি। মানুবদেবী কোথার ?

কথা অনেক দিন হইতে দেশে আছে

—কোন্ কথা নাই ? তিনটি force—
physical, intellectual, moral. তিওল,
সন্ধ, রজঃ, তমঃ; অথবা তমঃ, রজঃ, সন্ধ,
বহুকাল হইতে আছে। ক্রমে তিন গুল
তিম্প্রিতে পরিণত, ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশার।
কিন্তু এই তিম্প্রিতে আর কাল চলে না—
ইহারা কেবল দেবতা হইয়া পড়িয়াছেন।
ত্ই জন মন্দিরে বিস্মা চাল কলা,
মহার্ঘ্য করেন, আর একজন কেবল তুর্গা
প্রতিমার চাল চিত্রে। নমন্ত্রিম্প্রের
তুজ্যং—আমরা জন্তা তিম্র্তির অমুসন্ধান
করি।

যিনি অথও মওলাকার চরাচর ব্যাপ্ত, छाड्रात्र जीभाषभण य एक्शिरेटन, त्म श्वकृत्व अकृत्व मागत्रभादत । देखेदत्राभ रहेट कर्न दक्ष मञ्ज প्यति व रहेट एह, পূলা কর এই বিমৃত্তি Physical, Intellectual Moral !—"(To Physical—आंभारमंत्र এই वांश मण्लाम ! अहे অতুল ঐশ্বা! এই অসংখ্য অভেয় সেনা!" Intellectual—গে এই সেক্ষ-পীয়রের নাটক, এই গেটের কাব্য, **धरे कार्लिय पर्गन धरे रेडेरबाशीय** विकानमञ्ज!! आत Moral? बुवि एध् औष्ठे धर्म। এ जिम्हिं एउ जामा-**(मत्र मन डेडिंग ना—आमत्रा जाननात्मत्र** जना जिम्रिं गिष्व। नमजिम्ख्ति जूडाः ! (मिथ हम, इब्रह्मयाम भाजीव जिम्बि कि थकात।

তুমি যেই হও না কেন, ভোমাকে
জিজ্ঞাসা করি, তুমি কর কি ? তুমি
বলিবে—আমি আপনার আরবস্তের
যোগাড় করি। কে ভোমাকে অরবস্ত্র
দের ? সমাজ। তুর্মি যেই হও, তুমি
সমাজের থাটিরা দাও—সমাজ ভোমাকে
থাইতে দের। যেই যাই করুক, সব
পরের কাল। সকল কাজের শেষ্
ফল সমাজের উপকার।

এই সমাজের উন্নতির জন্য বছ সহস্র वरमत रहेरज, महाख मह्सावः भ (हरी कतिएए । नमार्यत व्यानक देशकिए **इरेग्नाइ। किन्न अथन अभाग्रास्त्र मन ए**र्फ ना। অনেকেই বলে সমাল এখনও বড় অবনত। উন্নভিন্ন এক আধ্টা সোজা উপায় বাহির হয় না কি 🤋 সোভা উপায় গোটা কতক প্রথম ফরালিফ রাষ্ট্র বিপ্লবের ममरम भन्नीका कतिका एक्या इहेगाहिल। তাহার একটার বীজনত্র "Faternity!" **ङा**र्छार । यथन मञ्ज्या मञ्ज्या (पर-भूना इरेटन, यथन **क्वर काराव** कनिहे ८० है। कतिरव ना, यथन मक्टलहे मक्टलब উপকারে ব্রতী: इইবে, তথ্ন স্বাই অপর मदाहरक खान दानित्व, यथन मस्त्याः मस्ता " जारे जारे " मनक बरेत তখনই সমুষ্যসমাজ প্রকৃত উন্নতির পথে माणारेता वह "कारे कारे" महक याहाटक चरित्रा केट्रक, छाहाहे नकरनदरे (हड़ा कत्रा छेहिछ।

कथाणे विष् भाका कथा विषया जागता जाकान किन ना। अध्यस्भन जनका ' जामना यक्ट्रेक् (पश्चित्राहि, जाकाट नाक-

ভাবকে বড় একটা শান্তিময় পদার্থ সকলে এক অবস্থায় দাঁড়াইলৈ—সকলেই चित्रा डि.के—डाहा इहेटन चत्रां व विवादम श्वात भित्रकी मामना (माकलमात्र (मणे)। भग्नमान रहेगा डिहिट्य। डाहा रहेल (जवाम (जनाम हाहरकार्ड जान आरम आत्म जव जल निह्ल हिल्द ना। जामाः দের দেশী পণ্ডিত চানকা ঠাকুর ইহার অপেका সার ব্রিয়াছিলেন; ভাতৃভাবে हरेदव ना— जायुडाव हाहै। जायुवर गक्षपूर्णियु (मिश्टिण इहेर्द। आत्रश মধুর-সর্বভূতেরু!

बरे श्राह्म (यथान "छारे छारे" शष्ट्र बिमूर्ति—बर्के छारात्र विश्वामिक विश्विक (मथान मसूरमा मसूरमा अविष्य, श्रविष (धाम वृत्विव। धहे शविख (धाम, धहे बाक्षांव कि तम इहेरव १ तक्ह वर्णन वाह्यता। भव खन्न कत्रिमा, धक ह्लाधीन कत्र, क्रक चर्षात्र मात्रिज कत्र, क्रक चारेत वह कत्र, मवाहे अकाठात्र, कारकहे अक-थान रहेरव। (म वरमत नर्ज मानिमवित्र, वकी मछात्र विविद्याहितन, देश्नारखन धक ह्वाधीरन ममख ভात्र वर्ष धीरत धीरत विशेष्ठ इहेरल्इ। वर्गन कल इहेन, षारमित्रकात्र प्रिक्ष छात्र निर्धादक छाहे स्विद्धि ए ना (मित्रा, उखत्र छात्र छत्र वात्रि गरेत्रा मिक्वरक त्रक्रत्याटक प्रवारेशा विष्मित क्राहिन। जात এक मर्खास्त्र व्यानन, পश्चिक रहा जामि यादा निवादे भिष, व्यापि (य भिक्न भन्नारे भन्न,

विद्या त्यां इत्र नारे। आमात्मत्र खत्र छारे छारे रहेत्व। मधाकात्न्रे छेत्रात्मत्र हम, य यमि मकन वात्रानी एक जाक्छाव दाभी म शामी ना अहे मल्ला प्रत लाक। যাঁহারা প্রাচীন ভারতবর্ষের মর্গ্র না বুঝেন, ভাঁহারা ঐ ব্রাহ্মণগণকে এই ममञ्च करत्न। यात्र धकमन वरम, "आंगामित वाह्यन नाहे, विमायन नाहे — आद्य दक्षण वाकावणः आयत्र। भटततः चना काँपिएकि , जागना माँ ए। देना এक-বার শুন দেখি। তাহা হইলেই তোমরা ভাই ভাই হইবে।" योख ও শাক্য-সিংহের ন্যায় ধর্মবেতা, সোক্তেতিসের नाष, नौडिटवङा, यात्र स्क्वित्रन याहे रुडेक, जामना धनिमा नहे, त्यं अरे मनजूक। अरे रक्कामान भाजीन এবং বাল্মীকি। এই তিনকে"Physical, Intellectual, এবং Moral" নাম: **(मध्या ठिक हहेमाइ— अगड जागास्त्र** (वांध रुप्र ना।

यादारे ट्रोक, একণে গ্রন্থের মধ্যে थारवर्ष कति। द्वारक वर्ण भूगारान् मञ्या मित्रमा चर्ल यात्र, किन्छ द्यममण्ड তাহারা স্বর্গে যায় না তাহারা ঋতু र्य। अञ्गंब, कान पिवा लाइक बान করে। গ্রন্থের প্রথমদৃশ্য, ঋভুগণ এক त्रात्व, मःभिनिज इरेग्ना भृथिवीप्तर्भत्न व्यागिटण्डिन। कार्गाः एम वाकाला ভाষाय अनुत्भात जूना क्लांध किছू नाहै। সতা ও তেভা যুগের সন্ধিসময়ে এক অমাবস্যার রাত্তে "সহসা ছায়া পথ বিধা विमीर्ग रहेन-डाराज मधा रहेर्ड अर्गानेड मरभाक अञ्चल विश्वि इहेटनन।

উক্ত শরৎ व्यमाविणात्रात्व गरुणा होता- किन्न व्याधुनिककवि क्षेत्राज्य (Real) अथ विधा विषीर्व इंदेश (शंन, **आंत्र छोहांत**े यथा रहेए जगिष्ठमः भाक भाजूगेन वहिः र्गेड इहेरलन । नगर बना ७ डाहारमन भंतीत्रथाखांत्र जालांकिङ रहेल। नक्ता अ কিরণ অন্তহিত হইল, নক্ষত্রগণ চিত্রা-পিতবৎ আকাশপটে বিরাজ করিতে <u> अथ क्रिया क्रियान। अभी वाँक क्रांश्य विनय?</u> वैधिया (विषात, मिथिए कडरे समात: व्याकामनथ बाक्त्र कत्रिया परम परम मागववून हमएकुछ इहेम्रा (शन। (कह নক্তসমূহ ধনিয়া পড়িতেছে।"

अञ्जन हिमानस्य व्यवजीन हरेस्नन। গ্রন্থারন্তে হিমালরের একটি চমৎকার বৰ্ণা আছে। তাহা আমরা উদ্ভ कत्रिगाम ना—डेश वन्नपर्यत ध्वकाणिक ट्रेशाहिन এ जना डेक्ड कतिनाम ना। ঐ বৰ্ণনা পড়িয়া, যে অহিতীয় হিমালয়-বৰ্ণনা আজিও সাহিত্য সাগরে অতুল —ভাহা স্মরণ কর। দেখিবে পাশ্চাভ্য भिकात पार्य वा खान (क्मी क्रानिस्क व्यात्र (मनो व्याधुनित्क कि व्याखन ! क्यात्रवहरवत कवि,—अभरतत कवि-कूरनत्र जामर्ग- जिल्लाहर सोमर्गात्र (Ideal) অবভারণায় অধিতীয়, কেছ कौरांत निकार यारेष शास्त्र ना। नमस्य अस्तरकात्र ताथ इरेए गानिन।

বর্ণনাম কি হৃচতুর! ইউরোপ হইডে षागता এই শিক্ষাই পাইতেছি। षागा দের চির্গার্জিত পবিত্র অতিপ্রকৃত চরিত্র পরিভ্যাগ করিয়া, আমরা ইউরো-भीव जापर्न (पश्चिमा भार्थिव ज्ञभविज প্রকৃত চরিত্রের অমুসরণ করিতেছি। वाशित्वन। अञ्गण मूर्खम्या ज्ञाकाम- देशांक यत्व উक्तिमा। नीतिमा

अञ्गन हिमानम्भात्र व्यवजीन हरेता किछ यथन छीज ब्यां जिर्मात्र अञ्गंग गान कतिरमन। रेन गाम विश्व विसा-শরীরপ্রভার দিগন্ত আলোকিত করিয়া— হিত হইল। গানের ধুয়া "ভাই! ভाই। ভাই। সকলেই ভাই।" গান वां जिट्छ नां शिरनन, छथन पृथिवी ए. कत्रिया सञ्भव वाकां भण्य हिन्या रगरनन —

विनन, धूमरक्कू উठित्राष्ट, क्ट विनन, "कित्ररूपन भरत सङ्गन हिमानत्रभिधत-সমূহ ত্যাগ করিয়া উপরে উঠিতে লাগি-(लन। विणर्शित द्यांथ इहेल, त्रालि-ठक बनाभर्थ चूत्रिटल्ड। क्रा अञ्-गंग यक मृत्रवर्षी रहेटक नागितनन, বোধ হইতে লাগিল, লক্ষ লক্ষ নৃতন নক্তের আবিভাব হইল, ক্রমে আর नक्रज्ञां विश्व दिल ना। (वाथ इहेन, আকাশ প্রকাও এক শাদা মেঘে व्यात्र हरेत्रा উठिन, क्राप्स स्वत्र हात्राभध-गर्ड धारमभ कतिम। (वाथ हरेएड লাগিল, হরিতালী সমস্ত বিশ্ববৃদ্ধাও এশি कतिरव, षांभरतत भाषकारण व्यर्क्न रयमन विदारिमुर्छि नात्रायरनत मूर्थ विय-मःगात्र ध्विष्ठ हरेट ए दिशाहित्गन, ध '

ক্রমে সমস্ত খেত্রবেঘপুঞ্জ হরিওালীগর্ভে ইতে পারিব না? * * পর্বাদান্ত ভ নিশীন হইল। হরিওালীর মধাগহ্বর আয়ত করিয়াছি। তেজ কি? শাল্তে পূর্ণ হইল। বিশ্বসংসার আবার যেমন ত বলে "শক্ষার্যামুদ্ধরে "তার আবার (जमनि. इरेल, जावात नक्क जिल, [®] আবার আকাশ স্থির হইল, আবার ष्याकात्मन (कामन नीनिमा विकाभ रहेल। भृषिवीत्ल खलाल हहेल, कांक, **(काकिम जाकिमा फेठिम।** "

गांन खनिया পृथिवीय नकत्वहे वित्या-हिङ हहेग्राहित्नन वर्षे, किस जिनस्तन शातिव ना कि १ (जसः, मजा। धर्मा, मव छे । जिल्ला क्रिका घित्राहिन। अक्जन वाह्यत्न वनी দিখিলরী রাজা বিখামিত। বিভীয় विमायित वनवान् बाक्यन विभिन्न। छ. कित्राष्ट्रि, कछ अछानिमीरिक विधवारे তীয় নরহত্যাকারী দহ্য বাল্মীকি।

विषामिक रमहे ''छाहे छाहे'' स्माहमग्र গীত শুনিয়া ভাবিতেছেন, যে ভিনি मस्याजािक जारे जारे मश्रद्ध मिना-रेख পात्रियन। "कर्र विश्वामित्। देशत्र मदत्र माजिए ज পात्रिनाम ना! ভূবন অয় ত করি। তাতে কেই বাধা দিতে পারিতেছে না। সব হাত ত করি। তার পর মিলাইব। কাণে বাজিল ভাই छारे। छावित्नन भृथिवीत्छ এक मिन धरेक्रभ गांधकारेट भाकि छट जामि वियामिल-किन्छ भाषित ना कि ? ज काटन व जूनवर कि मक्कम क्ट्रेटन ना १'' ক্রশিষ্ঠ ভাবিতেছেন:—"বুদ্ধির কি করিতেছিলেন—সাক্ষাৎ হওয়াতে পর-गहिमा! धक्वात्र ভाविटिष्ट्न, क्वित्र मिश्र कि काकिई मित्राहि। व्यावात •णाविरङ्ख्न, क्वित्र बाकाल मिणा- निमञ्जन कत्रित्रा निविद्य नहेशा (शतन,— देशाहि, धमन कि जाना जाडि मिना-

मान व्यवमान कि ? (भी दाहिन्। नावव সত্য, কিন্তু ক্ষমতা ত স্বই ব্রাহ্মণের। খুব খেলাই খেলিয়াছি। আবার সংহিতা করিভেছি। তারও এই মানে। যোগ শান্ত, ভারও ঐ মানে। মান হউক, অবমান হউক, কাজ উদ্ধার করিব, মিথা। কাজ সত্য। পারিব না কি ? ঋভুরা কেন আসিলেন ?

वायोकि ভाविতেছেন, 'कछ धूनहे করিয়াছি, এ মহাপাতক কিলে যায় 📍 प बाना किएन निवाहे। पहे एए अबू प्रिनाम। एटे एव शान खनिनाम। তাহাতে হৃদয় জালাইয়া দিল। জামি रात्र (कन जामि मात्रुष स्टेग्नाहिनाम। কোথায় সব ভাই ভাই হব না আমায় (मध्य नवारे भागाय। (इ (मव! (कन भागात थ अधना वृद्धि हरेत्राहिन।' "

গোড়াভেই বশিষ্ঠ বিশ্বামিত্রে একটা षम् वैंबिमा (भन। विश्वं विश्वामिक উভয়ে প্রভাতে হিমালয় অবভরণ স্পারে পরিচিত হইলেন—এবং প্রথমে मिष्टामान इरेन। विश्वामिक वनिर्हरक व्याभनात व्यक्त जेचर्या (प्रशाहतनः,

বশিঠের বড় সমারোহে আডিথাসংকার করিলেন, এবং রত্নরাশি তাছাকে উপর্টোকন দিলেন। বশিঠ
বিদায়কালে, তাহাকে নিমন্ত্রণ করিয়া
পোলেন। বিশামিত্র প্রাক্ষণের তপোবনে নিমন্ত্রণ রাখিতে গোলেন। সিয়া
দেখিয়া বিশ্বিত হইলেন—তাহার ঐখর্যোর অপেকাও বশিঠের ঐখর্যা শ্বরুতর। দেখিয়া:—"বিশ্বামিত্র বলিলেন,
' গ্রহাশর আপনি শ্বরি, বনবাসী,
আপনার এ অতুল ঐশ্ব্য কোথা হইতে
আসিল।"

विश्वि विनिद्यम, 'महात्राक जामात क्रम शांकी जाद्यम, जिनि कामदश्यत. क्रमा, जांकात नाम निक्षनी, जिनि जामात्र ममख केष्ठामक पित्रा थादकन।'

विश्वामिक विनित्नन, 'ठत जज छेश-एोक्टन जामात ज्ञि हरेटर ना, जामात्र टमरे भाक्षि मिटल हरेटर।'

विश्व विशिष्टान, 'आभि यथन छाहात्र मात्र काह हहेए छाहारक गहेत्रा धानि, खथन धामि धाउँछ। कत्रित्रा धानि (प, छहारक कथन काहारकछ पिन ना।' "

विश्व शिक्ष पिरमिन नी—विश्व विव जाननात्र देन देन विश्व जातम् किति-दमन, द्य शिक्ष का जिल्ला महेत्रा हम। जन्म विश्व कि करतन ?—खाक्षनमा वमः क्या। किख निम्मनीदम् का जिल्ला महेत्रा यात्र, कात्र माशा ?—निम्मनीत्र, खाङ्ह-कारत्र जानिज्ञाःश्वर स्मा जानित्रा जनिक्ष हहेर्ड हा नित्रा। विश्व मिळ णांशिक्तित्रंत्र बाँगा भनाविक स्टेगा निम-नीक साफ्ति क्रिया भनावेलन्त ।

বাহ্বল, বিদ্যাবলের কাছে পরাজিত
হইল। ভার পর এখন, বিদ্যাবল,
ধর্মবলের কাছে পরাজিত হইলেই
গ্রহ সম্পূর্ণ ইয়—বালীকির কয় ঘটিরা
যার। কিছ নবীন এহকার—অব্যরিত
প্রতিভার বলে মহাবলবান্—এ সোজা
পথে যাইতে খুণা করিলেন। জামরা
এই গ্রহ পড়িতে পড়িতে জনেক সমরে
লেথকের গতিকে দৃশুসিংহের গতির
সঙ্গে মনে মনে তুলনা করিয়াছি।

বিখামিত দেখিলেন, ''ধিক্ বলং ক্ষিত্র বলং—ব্রশতেকাবলং ,বলং''—
তিনি তথম সাত্রাজ্য পরিত্যাগ করির।
হিমালরে তপস্যা করিতে গেলেন—
তাঁহার কঠোর তপস্যার দেবলণ ব্যক্তিব্যস্ত হইরা উঠিলেন—ব্রহ্মা বর দিতে আসিলেন। বিশামিত্র চান, '' ব্রাহ্মাপর্ব''। কিন্তু বলিষ্ঠাদি ব্রাহ্মাণের বজ্ঞানিক্রই হউক, আর যাই হউক, ব্রহ্মা
কিছুতেই ব্রাহ্মণত দিলেন না। বিশামিত্র
কিছুতেই অনা বর পাইলেন না—
ব্রহ্মাকে ও ব্রহ্মবিগণকে ইাকাইর্যা
দিলেন। বলিলেনঃ—

'ভোষয়া ভোকবাকো প্রবোধ দিয়া আমায় প্রাহ্মণতে বঞ্চিত করিলে। ক্রিড আমি আর প্রাহ্মণতপ্রত্যাদী মহি। আমি প্রহান্ধ চাহি, ভোমাদের খোদা-মোদ ও তপ্রস্যা সার করিব মা, আফি ন্তন প্রিবী নির্মাণ করিব, ভাহার প্রস্থা क्रेव। आगात शृथिवी क्रेटिक प्रःथ मूत्र चकान चात्रकांत्र मृना क्रेण्क शृथिवीटक कतिया निव । बाक्यन प्र कित्र मिन । পড়িতে नाशिलन । রাথ দেখি ভোমরা কেমন পার।"

ু তপোবলে বিশামিত নৃতন পৃথিবী স্থৃষ্টি করিলেন। তাহাতে ছঃখ রহিল ना—बाज्ञन त्रिम ना। বিশামিত্র छाहात्र निष्ठा। शाठक स्विद्यन (व, গ্রন্থাবিত্র এখন আর বিখা-भिज नरहन-- এখन छिनि विभिष्ठे। अधन তিনি বাছৰল নহেন-অথন বিশামিত डिलिविन, विकायन। निमनीत एकादत সাগরবৎ সেনা সকল স্ট হইয়াছিল— विश्वामित्वत हैकात्र नूडन भोत्रकारं. श्रु हहेल। विश्वामिख एक विश्वं क त्रिया, গ্রন্থকার আবার তথনই তাঁহাকে-বালী-कित्र পথে जानिएउएन। विश्वामिक নুতন জগতের নিষ্তা--কিছ মহ্যা। मस्या विषया, जन हे यार्ड मिन, এकिनन कॅानियाहित्नन, "मन इटेन-किंख स्थ करे ?" विश्वामिख अथन काँकिएनन, "गव रहेल, किस ज्य कहे ?" ज्यापत वज शृथिवी हहेए निव श्री ७ जा-"ত্মীর অজন সহিত কান্যকুজনগর উঠা-रेत्रा नरेत्रा जाभनात्र ऋष्टिक हिन्दाना। किस विधामित्यत ज्लारम "निकाहिन, किहून्त शिवा श्वी चात्र यात्र ना-পড়িয়া বাম-- बका ধরিয়া নামাইয়া गरेरमन। जात शत, विश्वानिक निरम योग एडिएक कितिया याहेरकंहिरनम. किस भातिरमन ना। स्तिया स्तिया

विषय बाबीकि, श्रज्जितिक शान শুনিদা অৰ্ধি দহাবৃত্তি ছাড়িয়া দিয়া-ছেন। এখন তিনি পরের হৃংখে বড় কাতর। পরের ছঃথে কাতর বলিয়া তাঁহার হাদমে পবিত্রতা জিমিল। সেই কাতরতাই নীতি—ভাহার প্রকাশ ক-विष। भारतम श्रांक श्रीिकमान् दरेगा वानीक श्रम्दम कवि इहेम्राहित्नन-छात-তীর ক্মপান্ন ভিনি বাক্যেও কবি হই-**(लन। यांहा**त्रा वांत्र त्रवीखनाथ ठांकू-(तत्र "वाक्वीकिथाठिछा"—शिष्त्राट्टन, বা তাহার অভিনয় দেখিয়াছেন, তাঁহারা কবিতার জন্মবৃত্তাস্ত কখন ভূলিতে পারিবেন না। হরপ্রসাদ শান্তী এই পরিচ্ছেদে রবীশ্রনাথ বাবুর অমুগ্রন क्त्रियाट्टन।

याचीकि এখন পৃথিবীর নীতিশিক্ষক —প্রথম কৰি। তিনি পৃথিবীময় গান कतिया विष्ठत्र कट्रन-- नगटवन्ना भि-খান—তিনি ভাই ভাই মন্ত্রের প্রকৃত সাধক। সম্প্রতি কৌশাদীনগরে রাজা यक क्रिट्डिहन—मिर्थान ममख পৃথিবী আহুত ও সমবেত। একটা গণ্ড-গোল বাঁধিয়া উঠিয়াছে—একদল যজ क्तिएक मिर्व आंत्र धकमन मिर्व ना। इरेमल युक्त कत्रिएक खाइछ। निवांत्रक একা বান্সীকি। বান্সীকির অন্ত্র—অশ্র-जन,--वानीमेख वीना। धरे ममम् जनक শূন্য হইতে, খুরিতে ঘুরিতে চেতনাশ্নঃ

বিশামিত্র আসিয়া সেই যজকুণ্ডে গড়ি- ও বিশামিত্র ব্রহ্মার আদেশে দেহভাগ लान। छैर्शत लिहे व्यवशा मिथित्रा कतिलान। विभिन्न मशर्विगुर्धा शान লোকে ভীত ও বিশ্বিত হইল—বালী- গ্রহণ করিলেন—বিশামিত্র ঋভুদিগের कित्र वाकावन वाङ्ग्रा (शन-डाँ हात्र न्डा हहेरनन। बन्ना, वान्नीकिरकछ সকরণ গানে সমস্ত চরাচর বিমুশ্ধ স্বর্গধাতার জন্ত অমুরোধ করিলেন, হইল—লোকের মন ফিরিল—বিবাদ কিছ বালীকি তখন গেলেন না—তাঁহার বিসমাদ নিটিয়া গেল—বাল্মীকির জন্ন কার্য্য শেষ হয় নাই, মহুষ্যে মহুষ্যে र्रेण।

ত্রসায় স্বপায় বিশাসিত জীবন পাই-রিয়া ব্রহ্মার স্ততি ও আপনার অপরাধ ' श्रीकात्र कतिरलन। विश्वं , विश्वामिख ७ वाचोकिट भिन इरेन। वास्वन, বিদ্যাবল, ধর্মবল একত্রিত হইল। ব্রহ্মা श्विष्ठश्रदक जारमभ क्रिस्टिन रय:— " गर्कालाकमध्या खेका ज्ञानन मानत्म नात्राप्रव अयः अवजीर्ग इटेरज्यह्न। তোমরা তাঁহার জিয়াপ্রণালী স্থির করিয়া न्नाथ।" -विश्वामिक विश्व ७ बागीक বশিষ্ঠের আশ্রমে গমন করিয়া সে । বিবরে পরামর্শ করিতে লাগিলেন।

তথন তিনজন শ্বৃষি রামারণ "Plot" নির্মাণ করিতে বসিলেন। বশিষ্ঠ বলি-**टलन, ''द्रामटक शर्मिक कत्र।'' विश्वा-**भिज विगालन, ''छाँ हाटक त्रावनी किन कत्र।" वाणीकि वनितन, "जामित्रामदक আদৰ্শ মহুষ্য করিব।''

রামায়ণ প্রণীত হইল। তার পদ वाम जवडीर्व इट्टल वामावन जिल्ली छ ছইল। ভার পর রামায়ণ গীত ছইল---नातात्रन देवक्टर्छ दमरनन। स्मय विभिन्न

ভ্ৰাতৃভাব তথনও জন্মে নাই। শেষে ত্রনার আদেশে তিনিনৈভোমওলে বিরাট लान। विश्वामिक मिराङ्कान माछ क- मूर्छि पर्नन कतिरानन। वान्योकि रारे বিরাট মৃর্ত্তির স্ততিবাদ করিলেন।

' नमः প्रखामथপृष्ठे उट्छ নমোম্ভতে সর্ব্বতএব সর্ব্ব অনস্থ ীর্যো মিতবিক্রমন্ত;ং সর্বাং সমাপ্নোষি ততোসি সর্বাঃ॥' **" ७ थन** बका विशास ' वामी दि ! তুমি দেখ সকল মাত্র সমান, সব ভাই ভাই, আর সবাই এক। যাও পৃথিবী-ময় এই সাম্য ভ্রাতৃভাব ও একতি গাইয়া (विषाय, जूमि जमत रहेल, जामात्रहे 明明!

বিরাটের মুধ হইতে বিরাটম্বরে श्तनि इरेन 'अत्र ! ' ''

পাঠক গ্রন্থের পরিচয় পাইলেন, এখন हेशांक याश विनाष्ट रम, जिनि निष्यहे बन्न। व्यापक द्याथ एत्र दनिद्यम, व गक्म दक्ष्य लीबानिक कथा वामारणत काना वाटह। याहाता वात्रक बाहाइब खाँहां वा वित्वन, त्य ७--- (क्वन गाँचा। हात्राभथ यः। हित्रा विश हरेग-निम्नीत विशिष्णादि महत्र महत्र (मना

शृष्टे इहेट्ड नाशिन, विश्वामिक वकात्र नाांग विज्ञा जगद एष्टि कतिरनन, ध मकल शोखा नम्र छ कि ? यांश्रामा भाग এकट्रे, स्थिकिंड, छाँदात्रा विगटनन, कु क्रथक। निमनीत প্रভिত্তারে देमत्नात रुष्टि, देहात वर्ष मत्रवाजीत व्यय-কম্পায় জড়বলের উপর মহুষোর আধি-भेडा दाभन। निमनीत এक एकार्य वाक्रापत एडि, जात्र এक एकादत धूमयञ्ज हीरमद कन, वाष्ट्रीयरभाउ, त्रथ, हेजामि, हेजामि। यमि क्ह ज्ञानक विषादि हान; आमन्ना छात्र मद्भ विवास করিয়া সময় নষ্ট করিব না। আমরা विनिव, देश यिन ज्ञाशक दय, उत्व (न्श्रका . রের রূপকের মত, রূপক কাব্যে ভূবিরা गिग्राष्ट्र। **देश**त त्रभक्ष क्रिक्ट अधित ना ।

অই ক্ল গ্রন্থে অনেক দোব আছে।
কাব্যের গঠন সকল স্থানে কোশলযুক্ত
নহে। যথা, বিদ্যাবলের পরাজর, বশিঠে নহে, বিশ্বামিত্রে। বাল্মীকির
গীত গুলিতে কারিগরি নাই। কিন্ত
আমরা এ সকলের কথা কলিব না।
চল্লের কলম্ব যেমন কিরণে ড্বিরা যার,
এও তাই। ইহার গুণ সকল বলিরা
উঠি এমন সময়ও নাই। কাব্যের
অধান উৎকর্ষ—কর্মনার। ইহার কর্মনা
অভিশন্ন মহিনামরী। শ্লুড্লিগের আগমন, বিশ্বামিত্র, বিশ্বামিত্রের স্থাই, বিশ্বামিত্রের অধ্বংপাত, কোশান্ধীর ব্লা,
অত্তে বিরাট দর্শন,—বাহা দেশ সকলই

महिमामग्री कहानांग ममुब्दल । मर्साटभका এই বিখামিত্রই ভয়ানক মূর্ত্তি। রাবণ বা বুজান্থর যে ছাঁচে ঢালা এ সে ছাঁচে **ঢाना।** व्यागता त्रांग्रापत तांदन वा श्र्वात्वत्र वृद्धत्र कथा विन्छिहिना। মধুरुष्टनत রাবণ—হেমচন্ডের বৃত্তাহ্র। त्म ছाँ । विश्व मधुर्मन वा (इमहरसद कार्वात भाजी हेश्यास সাহিত্য। ইংরেজি সাহিত্যের পক্ষে এই বিশ্বক্ষাও মাপা জেঁকো বেড়। গোড়া। রাবণ ও বৃত্ত প্রকাণ্ড মৃত্তি হইলেও মাপা জোকা বেড়া গোড়া। . কেবল দেই প্রাচীন পুরাণপ্রণেতারা व्यथितरमञ्ज, व्यन्छ वित्राप्टेम् छि করিতে জানিতেন; পৃথিবীতে আর কোথাও এমন কোন জাতি জন্ম নাই त्य (महे प्यां हीन जांक्य गिरंग नांक्र মানসিকশক্তি ধরিত। পণ্ডিত হরপ্রসাদ শান্ত্রী ইংরেজিতে স্থানিকত হইয়াও প্রাচীন আর্য্যশাস্ত্রে অতিশয় স্থপঞ্চিত, ভাঁহার মানসিক শক্তির পরিপোষণে পাশ্চাক্তা ও আর্য্য উভয়বিধ সাহিত্যই जूनाक्रात्र श्राट्य कित्राष्ट्र। ध्वः धरे বিশ্বামিত্র প্রণরনকালে তিনি প্রাচীন আর্যাসাহিত্যের বশবভী হইয়াছিলেন। যাঁহাদের রুচি পাশ্চাত্য সমালোচক-मिरात वावशास्यायी, डांशामत कार्ट ध विश्वामित्वत कान जानत इरेटन ना। (यमन कन्नना, ट्यमन वर्गना। वर्गनात्र व्यागद्भाः व्यात्मक शतिहत्रः मित्राहि। क्रांश मयदः गडएकमः रहेट्ड शादा किन

यांकाना विनि,। अरे वक्रमर्परन व्यानक्यांत्र (कान वांकाना अर्कात्र अर वांका ध शक ममर्थिक इरेम्राष्ट्र, ऋडमाः म वम्राम धक्रण खिला । मान्तिक लेकि कथा आत्र दिनदात श्राद्याजन नारे। अष्ट থানি অতি কুদ্ৰ, কিন্ত প্ৰন্থানি বাদালা

जामना अने अरहत बाकामाटक उरकृष्ट जायात्र अक्षि उज्यागजम नहा जान श्रकाण कतिहादस्न प्रमम जामादमन श्रुत्व इय मा।

~ 02650 50000

"अভाবে कि वार्थ नारे ?"

"यङार्व कि वर्ष नारे"—ं शास्त्र रम द्यान व्याकाष्ट्रात म्ना-भर्ष धमनि कतिसा जामृत्त जीवन मूर्खि विभाग ज्थत जिल्लाम जाविताम रख जारामत ।" ভেদিয়া গগনবপু হয়েছে উথিত। গিরি-পদমূলে ভূমি—প্রকাণ্ড প্রান্তর छ्गरीन-जक्रीन-खवार विशेन মরুম্য—ভীমান্তভি—বিশাল কান্তার। নিয়ভাগে এই দৃশ্য—উর্দ্ধে তভোধিক **जा**ठन जाउन (वर्ष माग्नारू गंगन जनानि—जनउ—मृत्ना পড়েছে ছড়ামে। ञ्गीर्च-ञ्रुत्र-(यन ठा रु'ए अधिक অবিশ্রাম—অবিরাম—অনাদি অকর वकी महान् षृणा कतिया हिविड पर्यत्कत त्नजः भर्थ करत्रह स्थिछ। বিফারিত নেত্রে যেন চাহি ক্ষিতি পানে इ्टिट् चमीम मूरना चलाख लाखारन ; रेजिए करिए एयन—''रुष जारामन **क्रिक्टन-क्रिट्ट्रिंग** क्रमि खर्छाद्व **८४७** हिन्द इफ़ाईमा—अनल विकादम गांबनात जरे हिव-जमिन जाकात मनद गमीत श्रन हजारह लोकड

ज रहन महान पृष्णा नग्नन त्राधिग्रा ভীষৰ, কান্তারে সেই দাঁড়াইয়া যুৰা ''স্বভাবে কি অর্থ নাই ?'' কহিল কাতরে। অন্তমান দিবাকর লোভিত বরণে ঢালিয়া কাঞ্চন ভাতি উতরে পশ্চিমে ष्पिश्रा गगत्नद्र रक्न अत्माजन कहिছে रेन्निज कत्रि—" काथा या छ हूछि षाहेम षामान मत्न ष्यश्रीट याहे **८** इस कांखि जाल सम अतिरह ए या श ষ্টবৎ প্রভার যার এত শোভা তব ज र'रक कल्टे त्रमा महार्च तलन व्यथः शास्त्र त्रामि त्रामि त्राराष्ट्र विस्तृ छ। धरे भाराया यम कतिया धात्रन धम नकः व्यथः भारत कर्यस वामात्र।" रामिया प्रवास दयम दिवालय दवरम हुरिट असम मुद्रमा जमरहां छार्य।

डिर्भ मूर्थ कूछिद्यांट्ड निरम्न शंशरंमन्न, करिए जाप्तरत रचन याहिनी जायांत " कांध्र याख तह तह तम् अक्वात--কুত্বম-ভাণ্ডার লুট্ ভূতল হইছে ध्रमिष्ट प्रभक्ष किया टिलामात काइन, क्छ (य कोभन कित क्छह स्कटन কমল কোরক হ'তে এ গন্ধ ছরিত্ কি আর কহিব তোমা, কেডকী মালতী **छे** गंत्र मिका जात शालाल रम्पालि नाटन कफ़्रफ़ जारा पत्र मरन ठाकि द्रारथिष्य न्कारेया संग्राय निधि দরিত সাধুর গুপ্ত স্থামের মতন তা সবে কতই সাধি কতই ভূলামে हित्रा (अटि अहे शक मत्याहन। ८४ थून जा भाव जा निक वादतक অক্ল অতল সিন্ধু সলিলে ভাসিয়া" মধান্তল হ'তে তার শীতল পরশ धानि श्रिक्त पूर्णि, निर्मण निर्मत निভূত পর্বত দেশে বহিছে গোপনে त्रभीत स्पर्यत त्थामत्याजम्, ভাসিয়া ভাসিয়া তার প্রতি কণা হ'তে এনেছি এ শীতি ভাৰ যতনে তুলিয়ে শীতলিতে অঙ্গ ভব্,—আইস গগন "दंशथा याथ इति म्रना तर धरेषात क्य कान (ध्यमानान कत्र हुई बदन। ना दिनि—ना छनि छोहा नमिषक (बर्ग ेष्ट्रेटें गंगन मृत्ना উष्ट्रिंस जामन।" वञ्चना भूमि वक्त छड़ादम ञ्चया कहिएल एक श्रम श्रम भारिमी छावान "" একবার দেখ ছেরে গগন হেখার, मिन्द्रात्र हित्रवान जनत्र जागात्र

এমন শীভলভোরা অকুল বারিধি এমন উদ্যান বন শোভার সাধার শাথার শাথার বার পরবে পরবে यधूत भी छम ছারা রবেছে অভান। वृत्य वृत्य बृत्य यात्र विविध कूळ्न मरन मरन विकामिरह छान मरणाइन এমন ভূধর রাজি জঙ্গমে ভূষিত এমন প্রান্তর মাঠ ছর্কার শোভিত। वीवाविनिक्छ चत्र कन निमानिनी मर्गि रुमया एक निसंत्र छिनी ষড় ঋতু রঙ্গভূষি এমন আৰাস नत्र नात्री পশু शकी পূर्व ध मःमात्र তোমার মানস স্থপু তুষিবার তরে • विश्व ७ भाषा वक्क करत्रि धात्र काथा याख भूना-भरथ कि चारह উहाम मम त्रीरका क्या क्या क्या किर्मेत्र।" হাসিয়া বিশ্বন্ত হাস তীত্র দৃষ্টি করি উগ্রতম বেগে নভঃ যেন শুন্যে ছোটে। थीरत मछ कति यूरा जनमत नित्र, "चडारव कि जर्थ नारे ?" कहिन कांठरत्र। यानि यूरांत्र मूच, रामन मछत्न जिंक इरम्राष्ट्र शांत विचारमन हामा क्य मखरकत रक्ष, ७४ करनदत **अम आ**यति अ जीर्व मिन यम्पा অতি দরিদ্রের বেশ—কিন্তু অবয়বে আয়ত উজ্জল শাস্ত যুগল নয়নে গান্তীর্য্যে প্রশান্ত সেই কাতর বদনে ঝরিয়া পড়িছে মেন মহবের আভা। थनी रुख-त्रामा रुख-कानी किया वीत শঙ্কিত হইবে তুমি সম্ভাষিতে তাম ভয় ভক্তি যুগপৎ অস্তরে তোমার

উঠিবে উপলি,—তুমি শুন্তিত হইবে। বিশিত নয়নে স্থুরছিবে চাহিয়া অভুত सम्वश्व युवात वनत्व। ७३ प्रिथ चर्क चरक वश्रा यूर्वात वित्राधिष्ट छ्लक्ष अक् हे छात्रात्र হায়রে! যেমতি আজ আর্যাবর্ত হলে বিলুপ্ত—চিতোর কিমা রাজস্থান ছারা अथवा निवधी कीर्छि मिकन ভারতে ক্লেশকর দৃশ্য ধরি করিছে বিরাজ। ''चडाद कि चर्थ नारे ?'' विनाउ विनाउ তা निर्घ थान यूना চाहिन গগনে নির্থিয়া ক্ষণকাল কহিল কাতরে "ওই যে প্রকাণ্ড দৃশ্য সন্মুখে আমার व्यनामि—वनस ७३—विश्वा श्रक्ति শিক্ষার জীবন্ত পত্র ভাবিয়া যাহায় ছুটিলাম আজীৰন শূন্য আকাজ্ঞায়— **८**नरे निका १०—७२ घमाउ श्रा क्विण कि भूत्ना चानि—भूत्ना चन्न छात्र! আমার এ তুর্ণিবার আশা অবিশ্রাম নিরাশাই কেবলি কি তার পরিণাম ! . পারিনা দেখিতে আর—পারিনা ভাবিতে প্রকৃতি তোমার অর্থ—অতৃপ্র হাদরে। সহিষ্ণুতা!—সহিষ্ণুতা—বাকি কিবা আর! ছিন্ন করি—ছিন্ন করি—গ্রন্থি হাদবের इञ्चाबा—इःम्हना—मम ख्व ममर्जात ছিন্ন করি ভাসিলাম একা পারাবারে স্থ্ ওই অর্থ তব দেখিতে দেখিতে— ভাসে यथा जिन्ननीरत्र विभथ नाविक ञ्जूब गंगरन जूब छांदा नका कदि ! কিন্ত কি করিমু—সুধু পণ্ডশ্রম সার কিশা নৃাহি বুঝিলাম প্রকৃতি ভোমার

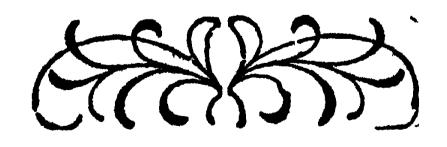
কিবা সে প্রকৃত অর্থ !—কিছ যে আমার मृष्टि माहि চলে আর—হেরি শুনাময় भक्रीन—बावरीन—कर्यरीन भूका ना পात्रि मतिए जामि ना भाति जिष्ठिए भमज्ञा भूना — छ र भूना ज र जा थिक मश्रूर्थ नोविष् भूना--- शकार्ष आवात ै **क्विल जनस भूना—नद्य फित्रिवांत्र ।** ভাবি যেন সরিতেছে শ্ন্য পদম্লে পতন না হয় তবু! ছজে য় বিধাত! রূপা করি অমুভূতি কর অপস্ত, এ চিন্তা হৃদয়ে আরু পারিনা বহিতে नज्वा (पथां अर्थ जाभिज (भवरक ফিরে যাই ছ্রাশার প্রবাহ আমার উপজিল যথা হতে--অথবা আমার रमह वन विधनाथ ! भूना एउन कति আমান্ন কল্লিভ রাজা করিব উদ্ধার অমিত প্ৰভাবে যথা বিশ্বামিত ঋষি স্থিল ব্ৰহ্মাণ্ড নব ম্থি শুন্য পথ।'' नो त्रव रहेल यूवा—कानकान शदत তাজি দীর্ঘাস ধীরে নত কৈল শির। महमा कर्छात त्रव खलप शङीदत भूना-(मभ र'एड (यन रहेन डिथिड; সিহরি চকিত নেত্রে চাহিল যুবক क्टि-(जब-मक्ट्यांम रु'टि नमच्दत উঠিছে কঠোর-রব—ভাবিল বুবক विश्व मध रयन रमरे बाबूड ভाষায়। ক্রমে স্পষ্টভর রব হইল উথিভ— "প্রকৃতি নির্থ নহে দেখ নেত্র তুলি এই যে বিপুল বিশ্ব সন্মুখে ভোমার व्यकांख क मूना-भव विभाग धत्री

चनल- व को वक्न छक्न न डाशिति, नम जाने ऋद्वावत्र व्यक्न क्निधि এই षाउद्या अक्षकात— मिवनत्रकनी এই ঋতু পরকাশু ঋতু অবসানে श्रुत्रिशृर्ग व्यर्थ भ्रुव विश्व व्यर्थगम् । এই গগনেতে লেখা কঠোর সাধনা ধরণীর বক্ষে ওই লেখা সহিষ্ণুতা शवत्नत्र न्त्रार्म (लथा (चात्र छिकीशना ভূধরের অঙ্গে ওই লেখা দৃঢ়ব্রত मिलित जार्क जारक तिथा जाजातीन जीवकृत-चामा तथा उरे प्रथ जामा তক্লতা অঙ্গে ওই লেখা সফলতা **मिवम त्रज्ञी आत्र श्रञ्ज विकार्या** অবস্থার বিচিত্রতা সতও প্রকাশে।?' नी तर रहेल तर—नी तर व्याखत— इहेल नौत्रवजत-ण्ना नज्छल इरेन व्यक्षिक भूना— छक्षेत्र्रथ यूवा উদাস উদ্ভান্ত দৃষ্টে তথনো চাহিয়া म्ना গগনের তলে, দেখিতে দেখিতে যুৰার কাতর মুথ প্রশান্ত হইল জ्विতে नाशिन निष्य भीवस श्रीवस উৎসাহে विশान वकः मीप वाट्यत्र ুহ্ইল প্রশস্ততর অন্তমান রবি নির্থি সে ভীম মূর্ত্তি প্রতিজ্ঞাব্যঞ্জক নিরাশ্রম—নিঃসহায়—একাকি যে যুবা অন্তত ত্ৰুৱ কাৰ্য্য করিবে সাধন तिर कीर्छिधत—तिर अश्व नत्त्र नित्रिथ हेन्छना छ । इति इति इति পশিলেন অন্তাচলে—অফুট প্রদোষ थीरत थीरत म्नारमध्म পिष्न ছড়ারে ক্রমে গাঢ়—গাঢ়তর—গাঢ়তম পেষে

व्यक्षकात्रभूनामका व्यवित्र भीदत व्यनगा काँधारत करम पूरिय कर्र। তথনো यूवक উদ্ধে উদ্ভাস্ত-নয়নে ८ हर यहिल अक्षम य आकार भन्न भारत। দেখিতে দেখিতে দ্র—স্থার আকাশে ক্ষীণ—অতি ক্ষীণ—সুক্ষ আলোক বিকাশি ভাতিল তারকা এক—ছুই—তিন – চারি ক্রমে পুঞ্জ—ক্রমে শত—সহস্র ভারকা উজ্জল—উজ্জলতর—সমুজ্জল হয়ে कोिमटक **উ**क्टिन जुनि—मिथट प्रथिट অফুট নিপ্পভ এক অঙ্গ চন্দ্রমার— প্রকাশিল দুরনভে—ক্রমে স্পষ্টতর অর্নাংশ—ত্রয়াংশ—ত্রুমে পূর্ণ—আয়তনে রজত থালার মত—পূর্ব—জোছনায় श्राद्य जूवन हक्क- जिन शर्गात। হেরিল যুবক শেষে শ্ন্য নভত্ব— গ্রহ—উপগ্রহে পূর্ণ—নহে—শ্ন্য আর— তথন একাগ্রদৃষ্টে—তীর্য্যক নয়নে দেখিতে नाशिन यूवा शशन मखल, विश्वदत्र श्रुतिन हिख—क्न व कार व व्यर्थ-शैन ভावि यह नज्छन ह'रज সরাইয়াছিল নেত্র—সেই শূন্য এবে হেরিল যুবক পূর্ব—গ্রহ উপগ্রহে। শত সহঅ—অযুত—লক্ষ—কোটা কোটা গ্রহে পরিপূর্ণ শুনা বিচিত্র বিস্তার। এমন সময় এক তাপস প্রাচীন मूर्खिमान विश्वाम डेभनीड डर्था। খেত-শশ্বাজি—রজত প্রবাহে পড়িয়াছে কোটি ঢাকি, গৈরিক বসন, लाहिङ हमन लिश— श्रेमेख ननारि বিশাল দক্ষিণ করে গুত কমওলু '

वां करत्र एष्टां धिक विभाग जिभूग ভ प्रकत मृर्छि 'देवन निष्क महार्याश তাপদের বেশে আজ সমুথে যুবার। আয়ত লোচন কিন্তু শান্তির সাগর शनक शनक जांत्र सति ए अजम। এত যে ভীষণ মূর্ত্তি দীপ্ত উগ্রভেজে দৃষ্টিতে ঝরিছে কিন্তু " অভয় অভয়।" " মহেন্দ্র ! " গম্ভীরে ডাকি কহিল ভাপস " यजादवत वर्ष कृषि वृतिदन कि धरव ?" মহেন্দ্র চকিতে ফিরি হেরিল তাপদে— পূর্ণচক্রমার প্রভা পড়িয়া তিশুলে জুলিয়া উঠিছে যেন ত্রিফলা ভাহার रेशतिक वमरन रमष्टे উच्चन कित्र পড়িয়া त्रकांक दबन देहन मृणामान वनारि म পूर्वाणा हि इहेगा भिष्ठ विष्यात्र मीख देश्य छमान व्यदनभ काँ निशा छेठिन यूवा तम मूर्खि निश्रि । তাপদ कश्मि श्रन, " वृक्षिण मरस्य ? " जनख— बहु जं वरे शिष्ट हर्ज़ित् माधनात्र कार्या देश-- मटब एडे नम् ।

८णांक इ: ४ ८कांख यांत्र हात्रा नित्राणांत्र क्त व्यवश्व ख्व श्वित ह'त्वा . প্রকৃতির এই অর্থ দেখিতে দেখিতে হও অগ্রদর তব সাধনার পথে। পুরস্কার ভার—শুনো ওল্লু স্টেমভ গ্রহ উপগ্রহে শেষে হবে পরিণত। " मिथिट मिथिट श्री शिन मिनारेगा প্রকৃতির শুন্য অকে—বিশ্বয়ে ষুবক टोि दिक चा थ्रह निद्ध कतिन पर्नन किन्छ जागरमञ्ज चात्र महिन मन्त्रान थीरत थीरत ज्ञिज्य वित्रा ज्थम প্রকৃতির চিত্রপটে রহিল চাহিয়া। গগনে ভূতলে জলে লতার পাতার ं যেখানে নিরখে যুবা হেরে অর্থ ভায়। তোমরাও বঙ্গবাসি! যুবকের সনে প্রকৃতির এই অর্থ দেখিতে দেখিতে হও অগ্রসর সবে আকাজ্ঞার পথে পুরস্বার তার—শুন্যে ওই স্টিমত जनर जमीम द्रारका रूप পরিণত। नेभान-



शालायो।

कार्यत मृजाम्बद्ध यदकिथिए वद्या इक्षाट्स, धवाक्षे छाद्यापत विवाद्यत পরিচর দিতে ইচ্ছা হইতেছে। কোলের অনেক শাখা আছে। আমার স্মরণ নাই, त्नांध एय त्यन छेत्रांछ, मूखा, त्थत्र खयात এবং দোদাদ এই চারি জাতি তাহার मर्था व्यथान। हेरात वक काजित्र বিবাহে আমি বর্ষাতী হইয়া কতক দুর গিশাছিলাম। বরকর্তা আমার পাল্কি लहेशा (शन, किन्छ चामांत्र निमञ्जन कतिन . না; ভাবিলাম, না করুক, আমি রবাহত यादेव। ८७३ অভিপ্রায়ে অপরায়ে পথে माँ ए। देश थाकिलाम । किছू क्रन পরে দেখি পাল্কিতে বর আসিতেছে। সঙ্গেদশ वात्र खन পूक्ष जात्र পाँ हम खन यूवडी, यूवजीवा अवशाबी। श्रक्रायवा आयाम (कर्रे ডाकिन ना, जीत्नाक्त ठकूनज्जा আছে, ভাহারা হাসিয়া আমায় ডাকিল, অ।মিও হাসিয়া তাহাদের সঙ্গে চলিলাম, क्छ अधिक मूत्र यारेट भातिनाम ना, তাহারা যেরূপ বুক ফুলাইয়া, মুখ जूनिया, वायू ঠেनिया महामस्य हिनाउ-्हिन पामि इर्सन राजानि पामात्र भ দস্ত, সে: শক্তি কোথায়? স্থতরাং কভক দুর 'গিয়া পিছাইলাম; তাহারা তাহা लक्षा कतिल ना , হয় ত দেখিয়াও रमिन ना; जाभि वाँ हिनाम। जथन পৰপ্রাত্তে এক প্রস্তরত্ত পে বদিয়া ঘর্ম

মুছিতে লাগিলাম আর রাগভরে পাতুরে त्यरम खनारक शानि मिर्ड नाशिनाम। তাহাদিগকে সেপাই বলিলাম, সিদ্ধেশ্বরীর পাল বলিলাম, আর কত কি বলিলাম। আর একবার বহু পূর্বে এইরূপ গালি দিয়া-हिनाम। এক দিন বেলা ছই প্রহরের সময় विवादगादफ्त व्यापादन " निमिश्वेन नक " হইতে গজেলগমনে আমি আসিতেছিলাম —তথন রেলওয়ে ছিলনা স্মৃতরাং এখন-কার মত বেগে পথ চলা বাঙ্গালির মধ্যে বড় ফেসন হয় নাই—আসিতে আসিতে পশ্চাতে একটা অল্ল টক টক শব্দ শুনিতে পাইলাম। ফিরিয়া দেখি গবর্ণর জেলেরল কাউন্দলের অমুক মেম্বারের কুলক্তা একা আসিতেছেন। আমি তথন বালক, ষোড়শ বৎসরের অধিক্ আমার বয়স নহে, স্থতরাং বয়সের মত স্থির করি-লাম জীলোকের নিকট পিছাইয়া পড়া हरेरव ना, घडधव यथामाधा हिलाइ লাগিলাম। হয়ত যুবতীও তাহা বুঝি-लान। आत्र धकरू अधिक वयम इहेल এদিকে ভাঁহার মন যাইত না। তিনি নিজে অলবয়স্বা; আমার অপেকা কিঞ্চিৎ-माख वर्षारकाष्ठी, ञ्च बताः এই উপলক্ষে বাইচ থেলার আমোদ তাঁহার মনে আসা मछव। (मरे जना এक पूरिन जिनि जिति वंश्टि नाशित्न। (प्रथिष्ठ (प्रथिष्ठ পশ্চিমে মেঘের মত আফাল, ছাড়াইয়া

(शरनन, रयन रमहे मक्त अकरू "इरमा" बित्रा (शरणन, — चवणा जारा गरन गरने, ভাঁহার ওষ্ঠপ্রাম্ভে একটু হাসি ছিল खादारे विगए छि। चामि निष्क ठ इरेना निकछेक व्यम्भ विनया ज्लाबी एक छे भन्न जाग कित्रमा नाना कथा बिनाट লাগিলাম। যাহারা এত জোরে পথ চলে ভাহারা আবার কোমলাজী ? (थानाम्राह्या वरण छाहारमत जनकमाम महारेवान निभिष्ठ वात्रु शीरत वीदन वटर। कना शाष्ट्र सङ्, जात्र जोत्रन शाष्ट्र मभोत्रव ?

८म मकल द्रारभन्न कथा अथन योक, रय बाद्र (महे त्रार्ग। कारणत कथा इहेरक मध्य ध्रानम ख्रेमिक हम। ध्रानम कथान ছিল। তাহাদের সকল ভাতির মধ্যে এক-त्रश विवाह नरह। এक कां जि कांन আছে, ভাহারা উরাড কি, কি ভাহা স্বরণ नारे, তাহাদের বিবাহপ্রথা অতি পুরা-छन। তাহাদের অত্যেক গ্রামের প্রাত্তে ध्यक्षानि कन्निया वर्ष चत्र थाटक। टमरे चरत मन्ताति भेत धरक धरक श्रीरंभत সমুদার কুমারীরা আসিয়া উপস্থিত হয়, হুইলে আর তাহারা পিতৃগৃহে রাজি যাপন ক্রিতে পায় না। সকলে উপস্থিত रुरेशा भवन कतिरम श्राटमब किरी-हिल युवाता कारम कारम मकरन रमहे चरत्रत्र निक्टि चानिया त्रनिक्छ। चात्रस करत्र ; क्ट भीज भाग, क्ट नुजा करत्र, **८कर या तर्मा करता या क्यातीत** विवार्धक नमन दन नारे तम जवारव निजा

বার। কিছ যাহাদের সময় উপস্থিত कांदात्रा वमखकारलत्र शिक्षणीय नाम स्नि-(मश्राकां कार्य में के कार्य क वकाञाहिए तमरे गीप्र छनिए थारक। दत्र ७ थाकिए ना भातिया (भव ठालेति উত্তর দেয়, কেহ বা গালি পর্যাপ্তও रमय। गालि चात्र ठाउँ। উভয়ে প্রভেদ चन्न, विष्णव यूवजीत मूथविनिर्गज रहेल यूरात कर्ष छछत्रहे छशादर्ग। कूमातीता भानि जात्र कतिर क्यारत्र वानरम ৰাভিন্না উঠে।

वर्कता खिलिहार क्मान क्मानीन - वाक्षाजुति रहेएज बारक, भ्य जाहारमत्र ঠিক নহে। কোলের প্রেম প্রীভের वक जनक त्राप्य ना। यत्नानी छ कथा हि ঠিক্। নৃত্য, হাস্য উপহাস্যের পর পরস্পর মনোনীত হইলে, সঙ্গী সজিনীরা णाहा कानाकानि कतिर्छ थाटक। क्रांट्स গ্রামে রাষ্ট্র হইরা পড়ে। রাষ্ট্রকথা শুনিরা উভয় পক্ষের পিতৃকুল সাবধান হইতে थारक । जावधानका क्यना विषय नरह। क्यातीत जाजीत वज्रा वज्र ৰাদ কাটে, তীর ধর্ক সংগ্রহ করে; **अञ्चलक्टा मान (एग्र। आंत्र अन-**बत्रक क्यादित आधीत वसूदक शांनि मिटि थाटक। ही एकांत्र आंत्र आंका-गरनत्र भीमा थाटक ना। जानात्र अणिटक উভয় পক্ষে পোপদে গোপনে বিবাহের षाद्यांबन्ध बात्र्य क्रत्र।

रागि रागि मृत्थ (वभ विनाम कतिएक मकरण वृक्षिया हात्रि शार्ष मिष्गाम, स्त ७ ছোট छिनी वन इटेड न्७न फ्न कानिया माथाय भवादेया ्रक्य, त्यभ विनेत्राम इट्टल क्रूमात्री छेठिया গাগরি লইয়া একা জল আনিতে যায়। चना मित्नत मक नरह, व मित्न धीरत धीरत यात्र, তবু মাথার গাগরি টলে। বনের धादा जन, दयन कड़ र पूत ! क्यांत्री यारे-তেছে আর অনিমেষলোচনে বনের দিকে চাহিতেছে। চাহিতে চাহিতে বনের গ্ই একটা ভাল ছুলিয়া উঠিল, ভাহার পর अक नवसूना, मशा स्वरणत मङ, लाका है एक · नाय। हेट उन इहेट वहिर्गड हरेन, मत्न मत्न रम ७ छ्रो ठातिरी लगत्र अ छू छित्रा चानिन। (कान-कू भातीत त्री क त्रक कतित्रा यूना ज्यमि हृष्टिन। কুমারী স্থভরাং এ অবস্থায় চীৎ-কার করিতে বাধ্য, চীৎকারও সে করিতে লাগিল। হাত পাও আছ-ড়াইল। এবং চড়টা চাপড়টা যুবা-(क्छ मात्रिण; नक्षा छाण (मधात्र मा! भूक्षतृष्टित नाम छाहारमत्र काष्ण (स " यात्र यात्र" तत्व व्यानिया अख्या युवात जाजी प्रता । निक छ जथारन रन 'बारम मूकारेग्राहिन छाहात्राध वाहित रहेग्रा विवारह। छङ्गनरक बात्रध विखत। नथरत्रांव कतिन। भिष यूष बाइक वाठे ठोका, मन ठोका, कथन कथन

हरेग। यूक किलाशिक्तर वन याजात मक, সকলের তীর আকাশম্থীণ কিন্তু শুনি-য়াছি তুই একবার নাকি সভা সভাই माथा काठाकाछिও হই या शियाटह। बाहाह रूडेक (भव यूरकत भन्न काभण रहेग्रा যায় এবং তৎক্ষণাৎ উভয় পক্ষ আহার করিতে বদে।

धरेक्रे कना। इत्र क्वारे छाहारम् বিবাহ। আর ছতন্ত্র কোন মন্ত্র তন্ত্র নাই। तिक विवाद वरन। এक সময় পৃথিবীর সৰ্বতি এই বিবাহ প্রচলিভ ছিল। चार्यारमञ्जदम्दर्भ छी चाहादत्रत म्यय बदत्रत পুঠে ৰাউটিৰেষ্টিভ নানা ওলনের কর-कमल (य जिंश्लार्भ इस छाड़ा ७ वह मात्र-পিট প্রথার অৰশেষ। হিন্দুস্থান অঞ্চল মাথা হইতে গাগরি পড়িয়া গেল। কুমা- বরকন্যার মাসি পিসি একতা জুটিয়া नाना छन्नीएछ, नाना ছत्न, रमहूयांचाना-**(त्रत्र काषांत्र शतक्येत्र क्य शांक क्रिवार्त्र** মীতি আছে তাহাও এই মারপিট প্রথার न्जन मःकात। देः त्रकामत वत्रकना গিৰ্জা হইতে গাড়ীতে উঠিবার সময় কুমারীর চীৎকারে ভাহার আত্মীরের৷ জুতাবৃষ্টি হয় ভাহাও এই পূর্বপ্রথার অন্তর্গত। *

(क्लाप्तव छेरम्य म्ह्लार्भका

ना देश चनाजि विवाद।

পনর টাকা পর্যান্তও ব্যয় হয়। বাঙ্গা-भीत পক্ষে ইহা অতি সামানা किন্ত বন্যের পক্ষে অতিরিক্ত। এত টাকা তাহারা **टकाथा भारेटव १ डाहां एमत এक भग्ना** मक्षत्र गारे, कान छे পार्जन ७ नारे, ञ्चलं र বায় নির্বাহ করিবার নিমিত্ত কর্জ করিতে হয়। তুই চারি গ্রাম অন্তর একজন করিয়া हिन्द्रांनी गरांकन वाम करत, তाहातारे कर्क (मन्न। এই हिन्त्र नीना महाजन कि महानिनां एम विषय भागात विषय मत्मर जाएह। जारात्मत्र निक्रे धक-বার কর্জ করিলে আর উদ্ধার নাই। যে একবার পাঁচ টাকা মাত্র কর্জ করিল সে সেই দিন হইতে আপন গৃহে আর মত গোলাম হইল। মহাজন গোলাম-किছूरे नरेया यारेट भारेट ना, यारा উপাৰ্জন করিবে তাহা মহাদ্দক जानिया मिट्ड रहेट्य। थाडरकत्र जूमिट्ड करत्र, त्यां वरह, मर्ख्य मर्द्य यात्र। ত্ই মণ কার্পাদ কি চারি মণ যব জন্মি- আপনার সংসারের সঙ্গে আর তাহার রাছে; মহাজনের গৃহে তাহা আনীত কোন সমন্ত থাকে না। সংসারও তাহা-हरेरव ; जिनि जाश अवन कतिरवन, পরীকা করিবেন, কত কি করিবেন, শেষ হিসাব করিয়া ৰলিবেন যে আশল পাঁচ টাকার মধ্যে এই কার্পাদে কেবল এক টাকা শোধ গেল, আর চারি টাকা বাকি থাকিল। থাতক যে আজা বলিয়া চলিয়া যায়। কিন্তু তাহার পরিবার খায় कि? চাষে यादा अभिताहिन महाअन ं छारा नमूमम नरेन। थां उक रिनाव ं चारन ना, এक इरेट एम ग्राना क्रिट পারে না, সকলের উপর তাহার সম্পূর্ণ विधान'।॰ महाजन य जनगात्र कतिय

ইহা তাহার বৃদ্ধিতে আইদে না। স্তরাং महाज्ञात्र कार्ल विक हहेग। छाहात्र भन পরিবার আহার পায় না, আংশির মহা-ब्यान निक्रे थात्रां भी कर्ब्य कता আবশাক, হুতরাং থাত্কি জন্মের 🛵 महाजदनत निक्षे विक्वी व्हेरन। याहा দে উপার্জন করিবে তাহা মহাজনের। यश्चन ভाष्टारक (कवन यৎসামান) (थात्रांकि मिर्व। এই তাহার এ करमात वरमावस ।

क्टिक्ट व्यट्ट जिल्ला क्रिक्ट क्रिक्ट লিখিয়া দেয়। সামকনামা অর্থাৎ দাস-' थे छ। । एग है श नि थिया मिन एम ब्री छि-क् किवल आहात दिनन, दिनानाम, विना-বেভনে ভাঁহার সমুদদ কর্ম করে; চাষ (पत्र जज्ञाकार्य भी घर दलान भात्र।

কোলদের এই হুর্দশা অভি সাধা-রণ, ভাহাদের কেবল এক উপায় আছে— भनात्रन। অনেকেই পলাইয়া রক্ষা भाषा (य ना भनाहेन (म ज्याप्र म ज মহাজনের নিকট বিক্রীত থাকিল।

 भूटखत्र विवाह मिट्छ शिक्रा ८व ८कवन - (कारनज्ञ की वनवाळा वृथा হয় এমত नरह, चामारतत वांचानित मरश चरनरकत ত্দিশা পুত্রের বিবাহ উপলক্ষে অথবা পিতৃ गाতृ आह উপদক্ষে। गकलिह गरन गरन जारनन जागि व ए लाक, चामि "धूमधाम" ना कदित्व लाटक আধার নিশা করিবে। স্তরাং কর্জ कतिया अनरे वज्ञाकष तका करतन ভাহার পর যথাসর্বস্থ বিক্রের করিয়া সে ं के इरेट देशा बात रहा। श्रीय (पथा यात्र "जामि धनवान्" विषया लाश्य जियान जित्रात (भेष पात्रिजा-দশায় জীবন শেষ করিতে হয়।

कारनदा मकरलहे विवाह करत्र। वानामा मनामामिनी, এथान चाहारे कालापत महिन्ने चिने घे घे छ । গুজুরান চলে, তাহাই বাঙ্গালায় বিবাহ এত সাধারণ। কিন্তু পালামৌ অঞ্চলে হিন্দু স্থানী মহাজনেরা তথায় বাস করিবার পূর্বে কোলদের এত অরাভাব ছিল ना। তাহাই বিবাহ সাধারণ হইয়াছিল। এক্ষণে মহাজনেরা তাহাদের সর্বস্থ লয়। ভাহাদের অল্লাভাব হইয়াছে, স্থভরাং বিবাহ আর পূর্ব্বমত সাধারণ পাকিবে না विषया (वाश हम ।

रकारनत ममाज अकरन रय जनस्त्र चार्ह (पथा यात्र जाहार उपथारन महा-छटनत आवभाक नारे, यि हिम्द्रानी সভাতা তথার প্রবিষ্ট না হইত তাহা रहेल जमानि कालत मरश श्रालत खेशा উৎপত্তি হইত না। श्रापंत्र ममन्न हन्न नाहे। मस्या रम উन्नजित्र विनय चारह। नमारकत चर्चावजः (य जवस् हम नाहे कृजिम

উপায়ে সে অবস্থা ঘটাইতে গেলে, **अथ्**वा में एक प्राप्त नियंशिक अमस्य অসভ্য দেশে প্রবিষ্ট করাইতে গেলে, ফল ভাল হয় না। আমাদের বালালায় এ কথার অনেক পরিচয় পাওয়া याहेट्डिছ। এक मगत्र हेन्डिम महास्रामता थान पारनद मंडा नियम व्यमंडा विवारिक व्यादम कत्राहेग्रा व्यानक व्यनिष्ठ घरोहेन्। ছিল। একশ্রে হিন্তানী মহাজনের।

कांत्न व ववध् यामि कथन (मिथ সম্পূর্ণ অরাভাব, ধ্রেখানে বিবাহ এরপে দেখিতে আশ্চর্যা! বাঙ্গালায় ত্রস্ত সাধারণ কেন, ভবিষয়ে সমাজতত্ত্বিদেরা ছুঁড়িরা ধূলাখেলা করিয়া বেড়াইতেছে, कि वर्णन जानि ना। किन्न रवाध् इय छाईरक भिरोहेर छह, भरत्रत शांकरक গালি দিভেছে, পাড়ার ভালথাগীদের मक्त कांपन कब्रिट एह, विवाद कथा উঠিলে ছুँ জ়ি গালি দিয়া পলাইতেছে। তাহার পর একরাত্তে ভাবান্তর। বিবা-হের পরদিন প্রাতে আর সে পূর্কমত ছরস্ত ছুঁড়ি নাই। এক রাত্রে ভাহার व्यान्ध्या পরিবর্ত্তন হইয়া গিয়াছে। আমি একটা এইরূপ নববধূ দেখিয়াছি। তাহার পরিচয় দিতে ইচ্ছা হয়।

> বিবাহের রাত্রি আমোদে গেল। পর দিন প্রাতে উঠিয়া নববধু ছোট ভাইকে आमन कतिल, निक्छ मा ছिলেन नववधू यात्र यूथ প্রতি এক वात ठाहिल, गात ठएक जल जातिल, नवंवधू त्र्थावनं कत्रिल, काँ पिन ना। তাহার পর ধীরে ধীরে এক নির্জ্জন

वर्णां का का का का वर्ष वर्ष वर्ष **টে**न টেলিগ্রাফ টেলিফোন ইত্যাদি হইতে পারে, তবে সেই নির্দ্ধীবকে সমীব করিতে পারিলে কি নাহয় ? ইংরেভের মত হিন্দুরা ট্রেণ টেলিগ্রাফে পরিভৃপ্ত নহে। তাহাদের মনে শক্তির আদর্শ আরও উনত। হিন্দু আকাশপথে চলিতে চায়, চক্রলোকে যাইতে চায়; बफ़्रार हरेरा रेक्श्या निक्रां हरेरा চায়, বাক্সিদ্ধ হইতে চায়, আরও কত কি হইতে চায়। ইই র সন্তাবনা-শুন্যতা হিন্দুর মনে একেবারে আইদে न। हिन्दूत यन मर्स्यकियान्। यत्नत्र সর্বশক্তিমন্তার পরিচয় হিন্দু পাইয়াছে, পরিচয়ে বিশ্বাস করিয়াছে। কে সে विश्वारमत्र ष्यनाथा कतिरव ? हिन्तूरक (क বুঝাইবে যে তোমার আকাজ্ঞা সভাব-বিক্লম, জগতের ক্ষমতাতীত ? হিন্দু তৎ-क्रगा९ हामित्न, बिलाद ''वाश्र, जगरजत ক্ষমতা কি পর্যান্ত? কোথায় তাহার সীমা ? আজ তুমি যে ব্যাপার জগতের ক্ষমতাতীত বলিতেছ, কাল সে ব্যাপার ক্ষমতার অধীনে আসিতেছে। কাল তুমি বলিয়াছ, তারে সম্বাদ অসম্ভব, আজ তুমি নিজে তারে সম্বাদ দিতেছ। তোমার মন জড়দেহের অধীন, কাম क्लांध त्नांच नरेया कांगांत मन, खारे তোমার এত ভ্রম। মনের অধীনত্ব ঘুচাও, তাহার জড়ের ভাগ নষ্ট কর,

তোমার ক্ষমতা আরম্ভ হইবে। নির্জীব জড়জগৎকে সজীব কর, তোমার ক্ষমতা অসীম হইবে। "তাহারা বলেন, নির্জীব জড়জগৎ সজীব হয় অন্তর্জগতের সংখ্যোগে। সেই সংযোগের নাম যোগ। যোগীর বোগ।

অন্তর্জগতে বহির্জগতে সংযোগ!
অর্থাৎ জগৎসঙ্গম! এ প্রকাণ্ড ব্যাপার
হিন্দু ভিন্ন কে ব্ঝিতে চেষ্টা করিবে?
তাহারা বলেন, যোগী ভিন্ন কে বা
তাহা ব্ঝাইবে? কিন্তু যোগীরা তাহাঁ
গোপন করেন। আপনারাণ্ড গোপনে
থাকেন। ছই এক জন বিলাতী লোক
যাঁহারা এখন যোগ যোগী মানিতে
আরপ্ত করিয়াছেন তাঁহাদেরও এই
বিখাস!

অনেক হিন্দুর দৃঢ় বিশ্বাস, নির্মীব জগৎ নিত্য সনীব হইতেছে। নিত্য আশ্রুয়া কাণ্ড উদ্ভাবিত হইতেছে। লড় জগতের উপাসকগণ তাহা দেখিতে পায় না, তাহারা দেখিবার অধিকারী নহে, দেখিলে তাহারা ভোজ বাজি মনে করে। ভোজবাজি! যাহা তাহা-দের বহিরিক্রিয়ের অতীত তাহাই ভোজবাজি। যাহা তাহাদের বৃদ্ধির অতীত তাহাই ভোজবাজি। ভূকৈলাসের যোগী ভোজ বাজি। দেখিয়াও বিশ্বাস হয় না এই জন্য ভোজ বাজি।